त्रिपुटी

श्री काकासाहब, श्री अप्पासाहब और श्री कमलनयन

[फोटो : मॉडर्न फोटो स्टूडिओ, झांझीबार]

हमारे

अुस पारके पड़ोसी

काकासाहब कालेलकर

अनुवादक

रामनारायण चौधरी

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर

अहमदाबाद–१४

अपने मीठे और आत्मीय सत्कारसे
हमारी यात्राको आनन्दपूर्ण बनानेवाले
पूर्व अफ्रीकाके
तीनों रंगके
असंख्य भाओी-बहनोंको
कृतज्ञतापूर्वक समर्पित

आगामी कलका महाद्वीप

[गुजराती आवृत्तिकी प्रस्तावनासे अुद्धृत]

पुस्तक लिखनेका आज तक मैंने कभी प्रयत्न नहीं किया। अिसलिअे अुसे लिखते समय कैसी अुत्तेजना, कैसा अुत्साह मालूम होता है, अिसका मुझे अनुभव नहीं है। लेकिन प्रस्तावना लिखनेके अिस प्रयत्नके कारण मुझे कितनी ही रातें जागकर काटनी पड़ी हैं!

*

मेरे लिअे तो यह अेक अनोखा मान है, अेक विशेष अधिकार है। साथ ही, मेरे लिअे यह अेक अद्वितीय अवसर भी है।

*

अेक वार अफ्रीकाका परिचय हो जानेके वाद अिस महाद्वीप और अिसके लोगोंके वारेमें वात करनेका कोअी भी मौका हाथसे जाने ही नहीं दिया जा सकता। और समर्थन करनेके लिअे काकासाहव पासमें हों और कहनेका मौका मिले, यह तो जीवनका वड़ा सौभाग्य ही माना जायगा।

अफ्रीकाके कुछ भागमें काकासाहवके साथ प्रवास करनेका सौभाग्य मुझे मिला था — मैं अुन्हें सव जगह घुमाकर यह प्रदेश 'दिखानेका' प्रयत्न करता था! और जैसा कि हमेशा होता है, अिस सौदेसे अुलटा मुझे ही लाभ हुआ। अिस 'आगामी कलके महाद्वीप'की भूमि पर जिस मानव-समूहका विशाल नाटक खेला जा रहा है, अुसके सूक्ष्मसे सूक्ष्म और गहरेसे गहरे रहस्योंका तेजीसे और अत्यन्त वुद्धिमत्तासे काकासाहवको आकलन करते देखकर मैं मंत्रमुग्ध हो गया।

वहुत कम लोगोंको अिस वातका पता होगा कि सहाराके दक्षिणमें और दक्षिण अफ्रीकाके अुत्तरमें स्थित अफ्रीका महाद्वीपका भूभाग युरोपसे लगभग तीन गुना वड़ा है और वहां अनन्त और अपार सम्पत्ति सुप्त अवस्थामें पड़ी हुअी है। वहुत थोड़े लोग जानते हैं कि अिस भूभागमें करीव दस करोड़ मनुष्य अैसे हैं, जो आजके प्रगतिशील युग तक अपनी प्रागैतिहासिक कालकी सामाजिक, आर्थिक या सांस्कृतिक प्राचीन परम्परामें ही रहते आये हैं और वाहरके संघर्षके फलस्वरूप अभी अभी ही अुससे वाहर निकलनेके लिअे थोड़े छटपटाने लगे हैं।

किसी भी प्रजाके लिअे ठेठ प्रागैतिहासिक कालसे अेकदम अणु-युग तककी हनुमान-छलांग मारना वड़ा कठिन काम है। अिसलिअे हम सवका यह कर्तव्य है कि अिस काममें अफ्रीकाके मूल निवासियोंकी हम मदद करें — वह भी अैसी मदद करें जिससे अफ्रीका और अुसके निवासी संसारके अितिहासके प्रवाहमें आकर अुसे अधिक शांति और सुलहवाला, अधिक प्रगतिशील और (सवसे अधिक महत्त्वकी वात तो यह कि) अधिक मानवतापूर्ण वना सकें।

जैसा कि काकासाहव कहते हैं, अफ्रीकाके निवासी असाधारण प्राणवान मनुष्य हैं। अिस विषयमें मुझे जरा भी शक नहीं कि मानव-जीवनके हर क्षेत्रमें पुरुषार्थ करके संसारकी प्रगति और स्थिरतामें वड़ा असरकारक हिस्सा लेनेकी योग्यता अुनमें है। पूर्व और पश्चिमके हम लोग अुन्हें यह हिस्सा लेने देंगे या स्वार्थी और संकुचित दृष्टिसे नअी कठिनाअियां और झगड़े खड़े करके दुनियामें फैली हुअी अन्धाधुन्धीको और वढ़ायेंगे, यही अेक वड़ा प्रश्न है।

हम हिन्दुस्तानियोंको अफ्रीकामें वड़ी जिम्मेदारी और महान कर्तव्य पूरा करना है। यह अीश्वरका ही संकेत है। मेरा खयाल है कि काकासाहव जैसे 'द्रष्टाओं' की मुलाकातों और सम्पर्कसे हमें अिस महाद्वीप और अुसके निवासियोंके प्रति रही अपनी जिम्मेदारियों और कर्तव्योंका भान होगा और हम अुन्हें पूरा करना सीखेंगे।

यह पुस्तक वहुत लोग पढ़ेंगे, अिसमें मुझे कोअी शक नहीं है। मुझे अैसी भी आशा है कि वह कुछ लोगोंको प्रेरणा देकर कार्यपरायण भी वनायेगी। क्योंकि अिस दीवानी दुनियामें योग्य विचारसे प्रेरित योग्य आचार द्वारा ही हम शांति और संतोष प्राप्त कर सकेंगे।

मुझे आशा है कि अिस पुस्तकका हिन्दीमें अनुवाद होगा और सारा भारत अुसे पढ़ेगा। यह जरूरी है कि हमारे अिन 'पासके किनारेके पड़ोसियों' से हम भलीभांति परिचित हों। अव हम वहुत छोटी दुनियामें रहते हैं; और दुनियाके दूसरे भागमें — खास करके निकटवर्ती भविष्यके अिस महाद्वीपमें अर्थात् अफ्रीकामें जो कुछ होगा, अुसके अच्छे या वुरे परिणाम हमें पूरी तरह भोगने होंगे।

अप्पा पंत

नया मिशन

हमारी मुसाफिरीके शुरूमें ही अगर कोअी चीज मुझे अखरी हो, तो वह थी अुस कंपनीका नाम, जिसके जहाजमें हमने यात्रा की। हिन्दुस्तानके स्वतंत्र हो जानेके बाद भी यह कंपनी अपना नाम 'ब्रिटिश अिंडिया स्टीम नेविगेशन कंपनी' क्यों रखे? नाममें थोड़ासा परिवर्तन कर दे तो भी बस है। 'ब्रिटेन-अिंडिया स्टीम नेविगेशन कंपनी' कहे, तो हमें कोअी अेतराज नहीं। लेकिन अब हम अपनी खुदकी अिन्डो-अफ्रीकन स्टीम नेविगेशन कंपनी क्यों न खड़ी करें? पुरानी कंपनीके साथ अमुक सालका करार किया हो, तो कमसे कम अितना तो देखना ही चाहिये कि अुस कंपनीके अधिकारी हमारे लोगोंके साथ घमंड और तिरस्कारका बरताव न करें। अगर करारका पालन ठीक ठीक न किया जाय, तो करार रद कर देना चाहिये।

बम्बअी और मार्मागोवाका किनारा छोड़नेके बाद आठ दिन तक न तो जमीनका कोअी टुकड़ा दिखाअी दिया, न कोअी पहाड़की चोटी। हम सीधे मोम्बासा पहुंच गये। तुरंत मनमें यह विचार आया कि यहांके लोग हमारे अुस पारके पड़ोसी ही हैं। यहांकी लहरें वहांके किनारेसे टकराती हैं और वहांकी लहरें यहांके किनारेसे आकर टकराती हैं। तुरंत अुनसे आत्मीयताका संबंध बंध गया। और यह खयाल आया कि यह आत्मीयता कोअी आजकी नहीं; अिस जमानेकी नहीं; हमारा पड़ोस हजारों सालका पुराना है। अफ्रीकामें मैंने जो कुछ देखा, जो कुछ विचारा और जो कुछ कहा, वह सब अिस पड़ोसी-धर्मसे प्रेरित होकर ही।

पूर्व अफ्रीका मैं गया तो था 'देश देखने' के कुतूहलसे और गांधी-स्मारक कॉलेजके बारेमें सलाह देनेके लिअे। लेकिन वहांसे लौटा पड़ोसी-धर्मसे बंधकर। अफ्रीकी लोगोंके साथका पड़ोसी-धर्म, अफ्रीकामें बसे हुअे हिन्दुस्तानियोंके साथकी आत्मीयता और वहांके अंग्रेजोंके साथका कॉमनवेल्थका संबंध — तीनों मनमें मजबूत हो गये हैं। 'हम आजाद हो गये; अब अंग्रेजोंसे हमारा क्या संबंध है' — अिस तरहकी जो वृत्ति मनमें पैदा हुअी थी वह अफ्रीका जाकर मिट गअी। दो जातियोंका

हमारा संबंध अभी टूटा नहीं है। हमारा अेक-दूसरेके साथ अवश्य संबंध है और देना-पावना भी है, अिसका विश्वास हुआ।

अंग्रेज लोग — बल्कि युरोपके सारे राष्ट्र अेक समय सारी दुनियामें मिशनरी भेजकर औसाओ धर्मका प्रचार करते थे। यह वृत्ति आज भी बंद नहीं हुअी है, धीमी जरूर पड़ी है। अीसाअी संस्कृतिकी अेकता कभीकी मिट चुकी है। पश्चिमके राष्ट्र अब अेक-दूसरेसे अलग पड़ गये हैं। अिसलिअे अंग्रेज आज तक जैसा काम धर्मके नाम पर मिशनरियोंके जरिये करते थे, वैसा ही काम वे अपनी संस्कृतिकी भूमिका पर ब्रिटेनके साहित्य, संगीत, कला वगैराके प्रचार द्वारा करनेका प्रयत्न कर रहे हैं। अिसके लिअे अुन लोगोंने 'ब्रिटिश कौन्सिल' नामकी अेक जबरदस्त संस्था कायम की है और अुसे अपार धन भी दिया है। विधान या नियमोंकी सख्ती भी अुसमें नहीं है। अुसके कार्यकर्ताओंको जैसा सूझे वैसा काम वे कर सकते हैं। अिस संस्थाका मुख्य अुद्देश्य यह है कि अनेक देशोंके नौजवानोंके बीच और प्रतिष्ठित, संस्कारी और प्रभावशाली लोगोंके बीच काम करके अुन देशोंके लोगोंके मन और दिल ब्रिटिश संस्कृतिके लिअे अनुकूल बनाये जायं और ब्रिटेन तथा अुन देशोंके बीच सद्भाव कायम किया जाय। पश्चिमके अनेक देशोंने अब अैसी संस्थायें कायम की हैं। अैसी संस्थाओंको अुन अुन देशोंकी सरकारोंकी मदद होने पर भी वे संस्थायें सरकारी नहीं होतीं। अुनके कार्यके फलस्वरूप विभिन्न देशोंके बीच राजनीतिक मिठास भी पैदा होती है, फिर भी वे संस्थायें राजनीतिक नहीं होतीं। धर्म-प्रचारका अुद्देश्य तो अुनका होता ही नहीं।

अिस तरहकी अेक संस्था हमारे देशकी तरफसे भी कायम हुअी है। अुसका नाम है Indian Council of Cultural Relations — (I. C. C. R.)। हमारे सारे विश्वविद्यालयोंके और सांस्कृतिक काम करनेवाली संस्थाओंके प्रतिनिधि अुसमें हैं। अिस समय अुस संस्थाने अफगानिस्तान, अीरान, टर्की, मिस्र वगैरा देशोंमें अपना काम शुरू किया है। अरबी भाषामें हम अेक सामयिक पत्र भी निकालते हैं। अिन सारे देशोंके कुछ विद्यार्थी हमारे विश्वविद्यालयोंमें हमारी

छात्रवृत्ति लेकर अध्ययन करते हैं। हमारे देशकी संस्कृति, हमारा राजनीतिक दृष्टिकोण और दूसरे राष्ट्रोंके वारेमें हमारी दिलचस्पी समझानेके लिअे कितने ही नेता अुन अुन देशोंमें घूम आते हैं।

दक्षिण पूर्वकी ओरके ब्रह्मदेश, स्याम, थाअीलैण्ड, अिंडोनेशिया वगैरा देशोंके लिअे भी अेक विभाग खोलनेकी तैयारी चल रही है।

मुझे लगा कि अफ्रीकाके लिअे भी हमें अेक अैसा ही विभाग खोलना चाहिये। अिस दिशामें मेरे प्रयत्न चल रहे हैं और अुनका अच्छा स्वागत भी हुआ है।* दुनियाकी परिस्थितिको जाननेवाले और हमारी संस्कृतिको सामने रख सकनेवाले लोग अफ्रीका जायें, अफ्रीकी लोगोंके नेता हमारे यहां आकर हमारे मेहमान वनें और हमारा रहन-सहन अपनी आंखोंसे देखें, अुनके प्रति हमारे मनमें रहे सद्भावके वे साक्षी वनें — अिसके लिअे प्रयत्न शुरू हो गये हैं। हिन्दुस्तानके कमिश्नरके नाते श्री अप्पासाहव पंतने वहां अिस तरहका बड़ा अच्छा काम किया है।

पोरबंदरवाले सेठ श्री नानजीभाअी कालिदासने मुझे अफ्रीका भेजकर वहांकी स्थिति समझनेका और सेवा करनेका मौका दिया, अिसलिअे अव यह अेक जिम्मेदारी मुझ पर आ गअी है।

अफ्रीकाके अुत्साही युवक और विद्यार्थी भी जब हमारे देशमें आवें, तव यह जरूरी है कि छुट्टीके दिनोंमें या त्योहारोंके मौके पर हम अुन्हें मेहमानके तौर पर अपने घरोंमें बुलावें और अुन्हें यह अनुभव करावें कि हमारे दिलोंमें रंगभेद या धर्मद्वेष नहीं है। अुन लोगोंका दृष्टिकोण, अुनकी संस्कृति और अुनकी आकांक्षायें सहानुभूतिपूर्वक समझनेका मौका हमें घर बैठे मिले, तो हमें अुस लाभको खोना नहीं चाहिये। अुनके जीवन और रहन-सहनसे परिचित होने पर हमें जो सर्वसमाजिता और अुदारता अपनेमें वढ़ानी पड़ेगी, वह लाभ भी कोअी छोटा-मोटा नहीं कहा जा सकता। स्वतंत्र देशकी संस्कारी और समर्थ प्रजा किसी भी देशकी प्रजासे अलग रह ही नहीं सकती।

काका कालेलकर

---

* यह कहते खुशी होती है कि मेरा सुझाव I. C. C. R. को पसंद आया और अुसने अपनी कौंसिलका अफ्रीकी विभाग कुछ दिन हुअे खोल दिया है।
— का. का.

हिन्दी पाठकोंके लिअे

पूर्व अफ्रीकाकी ढाअी महीनेकी मुसाफिरीमें मैंने देखा कि वहां पर जो दो लाख भारतीय रहते हैं, अुनमें से करीब ८० फीसदी गुजरात, सौराष्ट्र और कच्छके हिन्दू-मुसलमान हैं। वे सब घरमें गुजराती भाषा बोलते हैं। अतः अुनके लिअे और अुनके भारतवासी स्नेही-संबंधियोंके लिअे मैंने यह पुस्तक गुजरातीमें लिखी। किन्तु पूर्व अफ्रीकाका सवाल सारे भारतवर्षका सवाल है। अिसलिअे यह हिन्दी अनुवाद शाया किया गया है। थोड़े ही दिनोंमें अिसकी अंग्रेजी आवृत्ति भी संक्षिप्त रूपमें प्रकाशित होगी।*

१–१२–१९५१ काका कालेलकर

* अिसकी अंग्रेजी आवृत्ति 'Our Next-Shore Neighbours' नवजीवन द्वारा प्रकाशित हो चुकी है।

अनुक्रमणिका

हमारे

अुस पारके पड़ोसी

१

अफ्रीकाका महत्त्व

पृथ्वीकी भूमध्य रेखा पर अधिकांश समुद्र ही समुद्र है। अेशिया, यूरोप और अुत्तर अमेरिकाके विशाल भूखंड अुत्तर गोलार्धमें फैले हुअे हैं। आस्ट्रेलिया और दक्षिण अमेरिकाका वड़ा हिस्सा दक्षिण गोलार्धमें है। अिनमें अेक अफ्रीका ही अैसा भूखंड है, जो पृथ्वीकी भूमध्य रेखाके दोनों तरफ समानान्तर फैला हुआ है। यह भूमध्य रेखा थोड़ी दक्षिण अमेरिकामें और अुससे थोड़ी ज्यादा अफ्रीकामें आअी है। (सुमात्रा, वोर्नियो, वगैरा द्वीप भूमध्य रेखा पर हैं जरूर, लेकिन वे विलकुल छोटे हैं। अुनकी गिनती न करें, तो चल सकता है।) भूमध्य रेखाके आसपासकी अफ्रीकाकी भूमिमें व्रिटिश अीस्ट अफ्रीका और वेल्जियम कांगो नामक दो प्रदेश पाये जाते हैं। जलवायुकी दृष्टिसे, मानव संस्कृतिके विकासकी दृष्टिसे और भारतके प्राचीन, आधुनिक और भावी अितिहासकी दृष्टिसे भी अफ्रीकाका यह प्रदेश वहुत वड़ा महत्त्व रखता है।

सारे व्रिटिश अीस्ट अफ्रीकामें अेक या दूसरे रूपमें अंग्रेजोंका ही राज्य चलता है। भारत परका अपना अधिकार छोड़ देनेके कारण ही अंग्रेज अव अीस्ट अफ्रीकामें अपने राज्यको ज्यादा मजबूत वनाना चाहते हैं। अिसलिअे वे अफ्रीकी प्रजा और वहां वसनेवाली हिन्दुस्तानी प्रजाके प्रश्न पर ज्यादा ध्यान देने लगे हैं। हमारे लोगोंने पूर्व अफ्रीकामें काफी अच्छा स्थान प्राप्त कर लिया है। और अफ्रीकी प्रजा तो अब जाग्रत होकर अधिक शिक्षण और अधिक अधिकारोंकी मांग करने लगी है।

अिस प्रदेशके दक्षिणमें सुदूर दक्षिण अफ्रीकामें गोरी और रंगीन प्रजाका प्रश्न ज्यों-ज्यों कठिन और पेचीदा होता जाता है, त्यों-त्यों अुसका असर पूर्व अफ्रीका पर भी पड़ने लगा है।

अिसके साथ सारी दुनियाकी राजनीतिका सम्बंध अधिकाधिक बढ़ते जानेके कारण संयुक्त-राष्ट्र-संघ भी अफ्रीकाके विविध प्रश्नों पर ज्यादा-ज्यादा ध्यान देने लगा है।

हिन्दुस्तानके आजाद होनेके बाद ब्रिटिश प्रजाने अुसे अपने कामनवेल्थमें दाखिल होनेका निमंत्रण दिया और हिन्दुस्तानने अुसे स्वीकार कर लिया। दुनियाकी राजनीतिमें यह कदम बहुत बड़ा महत्त्व रखता है। हिन्दुस्तान और पूर्व अफ्रीका दोनों देश कामनवेल्थके सदस्य हैं, अिसलिअे वहांके प्रश्नोंका हल अेक खास ढंगसे ही होनेकी संभावना पैदा हुअी है।

अैसी हालतमें अफ्रीका, यूरोप और अेशियाकी तीनों महाप्रजाओंका जो विशाल और असीम सहकार पूर्व अफ्रीकामें चल रहा है, वह मानव-जातिके भविष्यकी दृष्टिसे अत्यन्त महत्त्वका है। पूर्व अफ्रीकामें दो-ढाअी महीने रहनेका जो सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ, अुस बीच किये हुअे प्रवासकी झलकमात्र करानेवाला वर्णन यहां देनेका विचार है। हिन्दुस्तानके हितका व्यापक विचार करते हुअे अफ्रीकाके बारेमें हमारी भाषाओंमें सैकड़ों पुस्तकें लिखी जानी चाहिये। अिसके पीछे ठोस अध्ययन, मानव-हितकी विशाल दृष्टि, अर्थरचना और राजनीतिकी सच्ची समझ और मानववंशके विज्ञान (अेन्थ्रोपॉलॉजी) में गहरी दिलचस्पीके साथ-साथ पृथ्वीके स्तरकी रचनाको समझानेवाले भूस्तर-शास्त्रका ठोस ज्ञान भी होना चाहिये। अफ्रीकाके साथका हमारा सम्बन्ध हम जानते हैं, अुससे ज्यादा प्राचीन, ज्यादा गहरा और ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। हिन्दुस्तानने आजका आकार ग्रहण किया, अुसे लाखों वर्ष हो गये। अुसके पहले आजका अरब सागर नहीं था। आजका गुजरात, राजस्थान, गंगा-यमुनाका प्रदेश, बिहार और बंगालका सारा भूप्रदेश समुद्रके गर्भमें था। आजके लकद्वीप और मालद्वीप बड़े-बड़े पहाड़ोंके शिखर रहे होंगे। और आजका दक्षिण हिन्दुस्तान अिस प्रदेशके जरिये अफ्रीकाके किनारे स्थित मेडागास्कर द्वीपके साथ जुड़ा हुआ था। जिन प्राचीन जानवरोंकी हड्डियां अफ्रीकामें मिलती हैं, अुन्हींकी हड्डियां दक्षिण हिन्दुस्तानमें भी पाअी जाती हैं। कुछ विशेषज्ञोंका यह अनुमान है कि अफ्रीकाकी कितनी ही

जातियां दक्षिण हिन्दुस्तानसे ही वहां गअी होनी चाहिये। आजके हिन्दुस्तान और अफ्रीकाकी रचनाके वाद वैदिक और पौराणिक कालमें हमारे देशवासी मिस्र होकर नील नदीके अुद्गम तक और वहांके चंद्रगिरि नामके पहाड़ तक पहुंचे थे, अैसे अुल्लेख हमारे प्राचीन पुराणोंमें मिलते हैं। मिस्र देशकी अति प्राचीन संस्कृति, ग्रीसकी यूनानी संस्कृति, सिन्धु नदीके किनारे विकसित सिन्धवी संस्कृति और अिन तीनोंके वीच खिली हुअी अनेक शाखाओंवाली खाल्डियन संस्कृति — अिन सबका परस्पर परिचय और संवंध था। यद्यपि अुस समयका अितिहास अुपलव्ध नहीं है, फिर भी प्राचीन अवशेषोंके आधार पर अत्यन्त प्राचीन समयके अितिहासको शृंखलावद्ध करनेके प्रयत्न सफल होते जाते हैं। और अिस तरह प्राचीनतम अितिहासका प्रकाश मनुष्यके स्वभाव और रहन-सहन पर पड़ता जाता है।

यह सारा ज्ञान अभी तक केवल कुतूहलका ही विषय था, किन्तु अव मानव-जातिको विनाशसे वचाकर अेक विश्वपरिवारकी स्थापना करनेके महाप्रयत्नमें अिस ज्ञानका वहुत वड़ा अुपयोग किया जा सकता है। अिसलिअे अिस प्राचीन अितिहासका सारे देशोंके जनसाधारण तक पहुंचना वहुत जरूरी हो गया है। दुनियाके अितिहासकार और मानव-हितचिन्तक अिस नअी दृष्टिका विकास करते जा रहे हैं। हमारी प्रजाका अिस दिशामें पिछड़ा रहना अुसे महंगा पड़ जायगा।

मेरे अिस संक्षिप्त प्रवास-वर्णनमें यह सव नहीं आ सकता। दो महीनोंमें मैंने जो कुछ देखा, अनुभव किया और सोचा, अुसीको यहां थोड़ेमें पेश करनेका खयाल है। अिसमें किसी पाठकको रस आवे और वह ज्यादा गहरा अध्ययन करनेके लिअे प्रेरित हो, तो मुझे संतोष होगा। कमसे कम प्रवास-वर्णन लिखनेका अुत्साह ही लोगोंमें वढ़े और भाषामें अिस प्रकारका साहित्य खिले, तो भी मुझे पूर्ण संतोष होगा। हमारे देशवासियोंने अभी तक कोअी कम प्रवास नहीं किये हैं। अुन्हें जानने, सीखने और विचार करनेके काफी मौके मिले हैं और आगे तो ये मौके वढ़ते ही जायेंगे। अिनका लाभ सारी प्रजाको अवश्य मिलना चाहिये। वात अितनी ही है कि आदत न होनेके कारण

अभी तक हमारे लोगोंको अिस विषयमें कुछ लिखनेका सूझा ही नहीं। अेक वार यह दृष्टि पैदा हो और लिखनेका रस वढ़े, फिर तो स्वभावतः विशाल, विविध और कीमती साहित्य तैयार होने लगेगा। अैसा साहित्य भारतकी किस भाषामें तैयार होगा, यह प्रश्न गौण है। भारतकी किसी अेक भाषामें कोअी अच्छी व ठोस पुस्तक तैयार हुअी कि दूसरी भाषाओंमें अुसके अनुवाद आसानीसे किये जा सकेंगे। खास प्रश्न तो विशाल और व्यापक रसका है। वह जव पैदा होता है, तव प्रजा जागे विना रह ही नहीं सकती। और जगी हुअी प्रजा अपने मिशनको पहचान कर अुसे सिद्ध करनेका प्रयत्न करती ही है। भारतके भविष्यके अैसे स्वप्न मुझे आनन्द देते हैं।

अफ्रीकाका प्रवास करनेके पीछे मेरा क्या अुद्देश्य था, अैसा प्रश्न कअी व्यक्तियों द्वारा मुझसे पूछा गया है। यात्राके लिअे निकलनेसे पहले यात्राके दिनोंमें और यात्राके अन्तमें भी अिस प्रश्नका अुत्तर मुझे देना ही पड़ा है।

कथनकी सत्यताकी रक्षाके लिअे मैंने हमेशा कहा है कि मेरा पहला अुद्देश्य — भले वह मुख्य न हो — केवल देश-दर्शनका ही है। जिस तरह पुराने भावुक लोग श्रद्धा और भक्तिसे मन्दिरोंमें देव-दर्शनके लिअे जाते हैं, अुसी तरह और अुसी श्रद्धा-भक्तिसे मैं देश-दर्शनके लिअे जाता हूं। जब तक मैं केवल भारत-भूमिको ही पुण्यभूमि मानता था, तव तक अीश्वरने मुझे परदेश जानेका सुअवसर नहीं दिया। जब मनोवृत्ति कुछ अुदार बनी, मानवताका खयाल पैदा हुआ और वुद्ध भगवानके अुपदेशके प्रति मनमें भक्ति जागी, अुसके वाद ही मुझे ब्रह्मदेश जानेका मौका मिला। और पूज्य गांधीजीके साथ जब सिलोन (लंका) गया था, तव भी वौद्ध धर्मका आकर्षण होनेके कारण सिलोन कोअी पराया देश-सा महसूस ही नहीं हुआ।

हिन्दू संस्कृतिका सच्चा रहस्य समझनेके वाद और संसारके सारे धर्मोंके प्रति समता और आदरका भाव पैदा होनेके वाद अव जैसे सारे धर्म मुझे सच्चे, अच्छे और अपने ही लगते हैं, वैसे ही संसारके सारे देश मुझे भारत-भूमिके जैसे ही पवित्र और पूज्य मालूम होते हैं। अतः जिस

भक्तिभावसे मैं सेतुबन्ध रामेश्वरसे लेकर हिमाचल तककी यात्रा कर सका, अुसी भक्तिभावसे अफ्रीका देखनेकी अिच्छा हुअी। दुनियाकी सारी नदियां मेरे ही सगे-सम्बन्धियोंकी लोकमातायें हैं; हरअेक सरोवर मानस सरोवर जितना ही पवित्र है; हरअेक पर्वत हिमालय जितना ही देवतात्मा है; हरअेक नदीका अुद्गम अीश्वरके आशीर्वाद जैसा ही शुभ और श्रेयस्कर है; अैसी दृढ़ भावना लेकर ही मैं अफ्रीका देखनेके लिअे निकला।

जापान और आसाममें भूकंप होता है, ज्वालामुखी फटते हैं, वगैरा बातें जाननेके बाद भूकंपशास्त्रमें — सिसमोग्राफीमें रस पैदा हुआ। अुससे संबन्धित तरह-तरहके यंत्र अलीबागकी वेधशालामें देखे, तबसे यह जाननेका कुतूहल जगा कि अफ्रीका खंडकी भूमि कैसे बनी होगी।

गुलामोंके व्यापारके कारण बदनाम लेकिन लौंगकी पैदाअिशसे सुगंधित बना हुआ झांझीबार हमारे कच्छ-काठियावाड़के हिन्दू-मुसलमानोंकी पुरुषार्थ भूमि है, यह जाननेके कारण भी झांझीबारकी यात्राका संकल्प मनमें अुठा था।

पूर्व अफ्रीकाके खारे और मीठे तालाबोंकी विशेषतायें भी मुझे अपनी ओर खींच रही थीं। अुत्तरकी तरफ बहनेवाली सरो-जा (सरोवरसे पैदा होनेवाली) नील नदीका अुद्गम स्थान देखनेकी अिच्छा गंगोत्रीके दर्शनों जितनी ही अुत्कट थी और अिसीलिअे अुस स्थानको मैंने गंगोत्रीकी तरह नीलोत्रीका नाम दिया।

राजरत्न श्री नानजी कालिदाससे अुनके और अफ्रीकामें रहनेवाले हमारे दूसरे लोगोंके पुरुषार्थ और पराक्रमकी बातें सुनकर यह कुतूहल बढ़ा था कि वह देश कैसा होगा और अुसकी शकल बदलनेमें हमारे लोगोंने कैसा हिस्सा लिया होगा।

अफ्रीकाके मूल निवासी अपनी खोअी हुअी आजादी पुनः प्राप्त करनेके लिअे कैसी कोशिश करते हैं, गोरे लोग अुन पर कैसा राज्य करते हैं, रंगभेदके आधार पर प्रदेशभेद पैदा करनेकी लीला वहां कैसी चलती

अभी तक हमारे लोगोंको अिस विषयमें कुछ लिखनेका सूझा ही नहीं। अेक वार यह दृष्टि पैदा हो और लिखनेका रस वढ़े, फिर तो स्वभावतः विशाल, विविध और कीमती साहित्य तैयार होने लगेगा। अैसा साहित्य भारतकी किस भाषामें तैयार होगा, यह प्रश्न गौण है। भारतकी किसी अेक भाषामें कोअी अच्छी व ठोस पुस्तक तैयार हुअी कि दूसरी भाषाओंमें अुसके अनुवाद आसानीसे किये जा सकेंगे। खास प्रश्न तो विशाल और व्यापक रसका है। वह जव पैदा होता है, तव प्रजा जागे विना रह ही नहीं सकती। और जगी हुअी प्रजा अपने मिशनको पहचान कर अुसे सिद्ध करनेका प्रयत्न करती ही है। भारतके भविष्यके अैसे स्वप्न मुझे आनन्द देते हैं।

अफ्रीकाका प्रवास करनेके पीछे मेरा क्या अुद्देश्य था, अैसा प्रश्न कअी व्यक्तियों द्वारा मुझसे पूछा गया है। यात्राके लिअे निकलनेसे पहले यात्राके दिनोंमें और यात्राके अन्तमें भी अिस प्रश्नका अुत्तर मुझे देना ही पड़ा है।

कथनकी सत्यताकी रक्षाके लिअे मैंने हमेशा कहा है कि मेरा पहला अुद्देश्य — भले वह मुख्य न हो — केवल देश-दर्शनका ही है। जिस तरह पुराने भावुक लोग श्रद्धा और भक्तिसे मन्दिरोंमें देव-दर्शनके लिअे जाते हैं, अुसी तरह और अुसी श्रद्धा-भक्तिसे मैं देश-दर्शनके लिअे जाता हूं। जव तक मैं केवल भारत-भूमिको ही पुण्यभूमि मानता था, तव तक अीश्वरने मुझे परदेश जानेका सुअवसर नहीं दिया। जव मनोवृत्ति कुछ अुदार वनी, मानवताका खयाल पैदा हुआ और वुद्ध भगवानके अुपदेशके प्रति मनमें भक्ति जागी, अुसके वाद ही मुझे व्रह्मदेश जानेका मौका मिला। और पूज्य गांधीजीके साथ जव सिलोन (लंका) गया था, तव भी बौद्ध धर्मका आकर्षण होनेके कारण सिलोन कोअी पराया देश-सा महसूस ही नहीं हुआ।

हिन्दू संस्कृतिका सच्चा रहस्य समझनेके वाद और संसारके सारे धर्मोंके प्रति समता और आदरका भाव पैदा होनेके वाद अव जैसे सारे धर्म मुझे सच्चे, अच्छे और अपने ही लगते हैं, वैसे ही संसारके सारे देश मुझे भारत-भूमिके जैसे ही पवित्र और पूज्य मालूम होते हैं। अतः जिस

भक्तिभावसे मैं सेतुबन्ध रामेश्वरसे लेकर हिमाचल तककी यात्रा कर सका, अुसी भक्तिभावसे अफ्रीका देखनेकी अिच्छा हुअी। दुनियाकी सारी नदियां मेरे ही सगे-सम्बन्धियोंकी लोकमातायें हैं; हरअेक सरोवर मानस सरोवर जितना ही पवित्र है; हरअेक पर्वत हिमालय जितना ही देवतात्मा है; हरअेक नदीका अुद्गम अीश्वरके आशीर्वाद जैसा ही शुभ और श्रेयस्कर है; अैसी दृढ़ भावना लेकर ही मैं अफ्रीका देखनेके लिअे निकला।

जापान और आसाममें भूकंप होता है, ज्वालामुखी फटते हैं, वगैरा बातें जाननेके बाद भूकंपशास्त्रमें — सिसमोग्राफीमें रस पैदा हुआ। अुससे संबन्धित तरह-तरहके यंत्र अलीबागकी वेधशालामें देखे, तबसे यह जाननेका कुतूहल जगा कि अफ्रीका खंडकी भूमि कैसे बनी होगी।

गुलामोंके व्यापारके कारण बदनाम लेकिन लौंगकी पैदाअिशसे सुगंधित बना हुआ झांझीबार हमारे कच्छ-काठियावाड़के हिन्दू-मुसलमानोंकी पुरुषार्थ भूमि है, यह जाननेके कारण भी झांझीबारकी यात्राका संकल्प मनमें अुठा था।

पूर्व अफ्रीकाके खारे और मीठे तालाबोंकी विशेषतायें भी मुझे अपनी ओर खींच रही थीं। अुत्तरकी तरफ बहनेवाली सरो-जा (सरोवरसे पैदा होनेवाली) नील नदीका अुद्गम स्थान देखनेकी अिच्छा गंगोत्रीके दर्शनों जितनी ही अुत्कट थी और अिसीलिअे अुस स्थानको मैंने गंगोत्रीकी तरह नीलोत्रीका नाम दिया।

राजरत्न श्री नानजी कालिदाससे अुनके और अफ्रीकामें रहनेवाले हमारे दूसरे लोगोंके पुरुषार्थ और पराक्रमकी बातें सुनकर यह कुतूहल बढ़ा था कि वह देश कैसा होगा और अुसकी शकल बदलनेमें हमारे लोगोंने कैसा हिस्सा लिया होगा।

अफ्रीकाके मूल निवासी अपनी खोअी हुअी आजादी पुनः प्राप्त करनेके लिअे कैसी कोशिश करते हैं, गोरे लोग अुन पर कैसा राज्य करते हैं, रंगभेदके आधार पर प्रदेशभेद पैदा करनेकी लीला वहां कैसी चलती

है, यह सब अखबारों और यात्रियों द्वारा जाननेको मिला था। अिसलिअे मनमें यह विचार अुठा कि मानव-व्यापारकी यह विशाल रंगभूमि अेक बार देखनी ही चाहिये।

दस-बारह वर्ष पहले श्री शिवाभाअी अमीन पूर्व अफ्रीकासे आये थे। अुन्होंने अफ्रीकी लोगोंके प्रति हिन्दुस्तानके कर्तव्यके बारेमें महत्त्वपूर्ण बातें की थीं, 'फेसिंग माअुन्ट केनिया' नामक पुस्तक पढ़नेके लिअे भेजी थी और अेक बार पूर्व अफ्रीका देख जानेकी सिफारिश की थी। यद्यपि अुस समय मैंने अुनकी बात नहीं मानी, लेकिन मनमें संस्कार तो जमे हुअे थे ही। अिन सब कारणोंसे दक्षिण अफ्रीका जानेके मौकेसे लाभ अुठाकर पूर्व अफ्रीका देखनेकी अिच्छा हुअी। अिसके अलावा, श्री अप्पासाहब पंत और श्री नानजी कालिदासने अफ्रीकामें गांधी स्मारकके रूपमें अेक कॉलेज कायम करनेकी और अुसे अफ्रीकाके काले, यूरोपके गोरे और अेशियाके गेहुंअे रंगके सभी विद्यार्थियोंके लिअे खुला रखनेकी योजना मुझे समझाअी और कहा: "अिस कल्पनाको पक्का रूप देने और लोगोंको समझानेके लिअे आपकी मदद जरूरी है।" अिस योजनाके लिअे जरूरी पैसा अिकट्ठा करनेकी जिम्मेदारी स्वभावत: मेरी नहीं थी। लेकिन लोकहितकी दृष्टिसे तथा शिक्षाके विकासकी दृष्टिसे योजनाको जांचकर अुसके बारेमें अपना मत देनेका और लोगोंको अिस योजनाके अनुकूल बनानेका काम मैं कर सकता था। मैं जानता था कि यह काम सार्वजनिक भाषणोंके बनिस्बत खानगी बातचीत और चर्चाके जरिये ज्यादा अच्छा हो सकता है। अिसलिअे मैंने अैसा ही करनेका सोचा और पूर्व अफ्रीकाकी अनेक शिक्षा-संस्थायें देख लेनेका निश्चय किया। भारत सरकारने अिसी विषयमें सलाह देनेके लिअे दो विशेषज्ञ वहां भेजे थे। अुनकी रिपोर्ट भी मंगा कर मैंने पढ़ी थी।

हमारे देशके कुछ धर्मोपदेशक कभी-कभी पूर्व अफ्रीका जाते हैं। अुनके प्रचारके फलस्वरूप हिन्दुस्तानी लोगोंकी नैतिक-सामाजिक स्थिति कितनी सुधरी है, यह देखनेकी भी अिच्छा थी। क्योंकि कुछ लोगोंके मुंहसे अुनकी स्थितिके बारेमें मैंने चिन्ताजनक बातें सुनी थीं।

अैसे अनेक कारणोंसे अफ्रीकाकी यात्रा करनेका मैंने निश्चय किया। तीन महीनोंके अन्तमें आज कह सकता हूं कि अिन तीनों महीनोंमें मुझे बहुत देखनेको मिला, अुससे भी अधिक जाननेको मिला। मैं गांधीजीकी दृष्टिसे अफ्रीकाकी स्थितिकी जांच कर सका। और मुझे लगता है कि अिससे दुनियाकी आजकी स्थिति समझनेकी मेरी शक्ति बहुत बढ़ी है। साधारण तौर पर की हुअी दो-तीन महीनेकी यात्रामें जितना अनुभव और जानकारी प्राप्त की जा सकती है, अुससे भी ज्यादा मैं प्राप्त कर सका हूं। क्योंकि अिस यात्रामें मुझे अनेक लोगोंसे अनेक प्रकारका जितना सहकार मिला, अुतना शायद ही किसीको मिल सकता है। आज तक मैंने गुजराती भाषाकी जो भी थोड़ी बहुत सेवा की होगी, अुसके फलस्वरूप मुझे पूर्व अफ्रीकाके असंख्य गुजराती हिन्दू-मुस्लिम घरोंमें प्रेमका स्थान मिला। अफ्रीकामें मैं गुजराती भाषाकी सांस्कृतिक शक्तिका विशेष दर्शन कर सका।

२

तैयारी

पूर्व अफ्रीका देखनेका अवसर बड़े विचित्र ढंगसे मुझे मिला। नअी दिल्लीमें गांधी-स्मारक-संग्रह (म्यूजियम) तैयार कर देनेकी जिम्मेदारी स्मारक-निधिने मुझे सौंपी। अिसलिअे महात्मा गांधीके जीवनसे संबंध रखनेवाली वस्तुअें, अुनके जीवन-प्रसंगके बयान वगैरा अिकट्ठे करनेका काम मेरे सिर आया। यह सारी सामग्री कालक्रमके हिसाबसे अिकट्ठी करनेके लिअे पहले सौराष्ट्रका और बादमें दक्षिण अफ्रीकाका प्रवास करना स्वाभाविक था। मुझे लगा कि पूर्व अफ्रीका होकर दक्षिण अफ्रीका जानेमें सुविधा रहेगी। विश्वशांति परिषदके कारण भारत आये हुअे श्री मणिलाल गांधीके साथ अिस सारे प्रवासकी योजना सोच ली। अुन्होंने मेरा यह विचार भारत सरकारके कमिश्नर और मेरे पुराने मित्र श्री अप्पासाहब पंतके सामने नैरोबीमें जाहिर किया। अुन्होंने अुसका हार्दिक स्वागत किया, क्योंकि

वे अेक मानवहितोंकी चिन्ता रखनेवाले राजनीतिज्ञकी योग्यता और कुशलतासे पूर्व अफ्रीकाके सवालोंका हल खोज रहे थे और अिस संबंधमें अनेक योजनायें तैयार कर रहे थे। अिसलिअे न सिर्फ अुन्होंने मेरे विचारका ही स्वागत किया, वल्कि अैसा आग्रह शुरू किया कि दक्षिण अफ्रीका जव जाना होगा तव होगा, लेकिन पूर्व अफ्रीका तो आपको तुरन्त आ ही जाना चाहिये।

पूर्व अफ्रीकामें ५० वर्षसे भी ज्यादा रहकर केवल अपनी कार्य-कुशलतासे करोड़पति वने हुअे और सार्वजनिक कामोंके लिअे अनेक दान देनेवाले श्री नानजीभाअी कालिदाससे अप्पासाहवने मेरे संकल्पके वारेमें वात की होगी। अुन्होंने हिन्दुस्तान पहुंचते ही मुझे पूर्व अफ्रीका आनेका आमंत्रण दिया और आर्थिक दृष्टिसे मुझे निश्चिन्त कर दिया।

अपने अनेक कामोंके कारण मैं अिस आमंत्रणको आगे ही आगे ढकेलता गया। लेकिन जव गांधीजीके जन्मस्थान पोरवंदरमें नानजीभाअी द्वारा स्थापित कीर्ति-मंदिर देखने मैं वहां गया, तव अुन्होंने परमिटके लिअे कागजात तैयार कराकर हमारी सहियां लीं और हमें — मुझे और चि० कुमारी सरोजिनी नानावटीको — पूर्व अफ्रीका भेज ही दिया!

शान्तिनिकेतन और सेवाग्राममें हो रही विश्वशांति परिषदमें दिसम्वरका महीना वीता। जनवरीका महीना विहारके प्रवासमें विताना पड़ा। २६ जनवरीके स्वातंत्र्य-दिवसके अुत्सवके लिअे दिल्लीमें न रहकर मध्यप्रदेशके ५० हजार आदिवासियोंके अेक विराट सम्मेलनमें हाजिर रहा। और फरवरीका महीना हिन्दुस्तानकी अीशान्य सीमा पर सदियाके आसपास वहांके आवोर, मिशमी वगैरा वनप्रदेशके लोगोंके वीच घूमनेमें पूरा किया। अितना सव करनेके वाद ही मैं पोरवन्दर जा सका था। वहां पूर्व अफ्रीका जानेका निश्चय कर लेने पर भी अप्रैलमें राष्ट्रीय सप्ताहके दिनोंमें अनुगुल (अुड़ीसा) में जो अखिल भारतीय सर्वोदय सम्मेलन होनेवाला था, अुसे भला कैसे टाला जाता? वह काम अप्रैलमें पूरा करनेके वाद ही प्रवासकी तैयारी शुरू की।

आजकल जिस किसी देशमें जाना हो, वहांके लोगोंको निर्भय करनेके लिअे कुछ खास रोगोंके अिंजेक्शन लेने होते हैं। और वहांसे

लौटते समय भी वहांके कोओी रोग हम साथ न ले आवें अिस हेतु यानी अपने देशके लोगोंको विदेशके रोगोंसे बचानेके लिअे भी कुछ खास अिंजेक्शन लेने पड़ते हैं। अिस तरह हमने कालरा, शीतला और यलो फीवर — अिन तीनों रोगोंके अिंजेक्शनोंकी मुसीबत भुगत ली। भारतमें अब हमारी सरकार हो जानेसे पासपोर्ट पानेमें कोओी कठिनाओी नहीं हुअी।

निश्चित कब निकल सकेंगे, यह समय पर तय नहीं हो सका। अिसलिअे 'कंपाला' बोटमें हमें दूसरे दर्जेकी सुविधाओंसे ही संतोष करना पड़ा। ये सुविधायें हर तरहसे अच्छी थीं और पैसे भी बच गये। ८ मअी, १९५० को हमने हिन्दुस्तान छोड़ा — नहीं, ८ मअीको स्टीमरमें बैठे, लेकिन स्वदेश छोड़ा तभी कहा जायगा, जब हमने ९ मअीको मुरगांव (मार्मागोवा) का बन्दरगाह छोड़ा।

अैसा नहीं कि अिससे पहले मैंने कभी समुद्रयात्रा की ही नहीं थी। स्वदेश कभी छोड़ा नहीं था, अैसा भी नहीं कह सकता। कलकत्तासे तीन दिनकी यात्रा करके रंगून पहुंचा था और अुसी रास्ते लौटा भी था। अेक बार बम्बअीसे कराची और कराचीसे बंबअी भी जहाजसे ही गया था। और अेक बार तो बम्बअीसे कोलम्बोकी समुद्रयात्रा भी पूज्य गांधीजीके साथ की थी। लेकिन किसी वक्त यह भावना मनमें नहीं आअी थी कि स्वदेश छोड़कर दूर जा रहा हूं। क्योंकि यह भावना बचपनसे ही बंधी हुअी थी कि ब्रह्मदेश क्या और लंका क्या, दोनों हमारे ही देशके दो सुन्दर अंग हैं। अिसलिअे वहांके लोगोंकी रहन-सहनमें बहुत ज्यादा फर्क होते हुअे भी अुस समय यह विचार नहीं आया कि मैं परदेश जाता हूं या गया हूं।

अिस वक्त हमारे यहांका पासपोर्ट वगैरा लेना और पूर्व अफ्रीकाकी सरकारसे परमिट लेना जरूरी होनेसे यह भावना मन पर जबरन बैठा दी गअी कि मैं परदेश जा रहा हूं।

महेता ब्रदर्सके कर्मचारियों द्वारा हमारी सुख-सुविधाका पूरा ध्यान रखा गया था, अिसलिअे हमें तो सिर्फ स्टीमरमें जाकर बैठ ही जाना था।

कपड़ोंका सवाल परेशानी पैदा करनेवाला था। श्री नानजीभाअीने कहा कि जैसे कपड़े आप यहां पहनते हैं, वैसे ही वहां भी पहनेंगे तो चलेगा। चि० वालने वड़े आग्रहसे कहा कि धोती वगैरा कपड़े परदेशमें विलकुल काम नहीं देंगे। वहां आपको पायजामा, पेन्ट वगैरा पहनने ही चाहिये। चि० सतीशने अुसका समर्थन किया। श्री देवदास गांधीने कहा कि हमारी धोती परदेशमें नहीं चलेगी, क्योंकि वहां पांवोंकी पिंडलियोंका खुला रहना असभ्य माना जाता है। धोतीके वदले मद्रासी ढंगसे लुंगी पहनें, तो हमारी विशिष्टता भी रह जायगी और परदेशके शिष्टाचारका भी पालन होगा। मेरी यह परेशानी देखकर हमारी पार्लमेंटके स्पीकर श्री दादासाहव मावलंकरने यह फैसला दिया कि जहां केवल हिन्दुस्तानी ही अिकट्ठे हुअे हों या खानगीमें मिलना-जुलना हो, वहां धोतीसे काम चलाया जाय। परन्तु जव परदेशके लोगोंसे मिलना हो या किसी महत्त्वपूर्ण सभा अथवा पार्टीमें जाना हो, तव हमारी सर्वमान्य हो चली राष्ट्रीय पोशाक ही पहननी चाहिये — और वह पोशाक है चूड़ीदार पायजामा, वन्द कॉलरवाली अचकन और सिर पर गांधी-टोपी।

दादासाहवकी यह सूचना मुझे हर तरहसे अुचित मालूम हुअी। हमारे वीचका मतभेद दूर हुआ और देखते-देखते मैं चूड़ीदार पायजामा पहननेकी कलामें पारंगत हो गया!

भोजनके वारेमें मैंने तय किया कि परदेश जानेके वाद शक्कर न खानेका अपना वरसोंका आग्रह मुझे छोड़ देना चाहिये। वहां दूध तो गायका ही मिलता है, अिसलिअे दूधका सवाल ही नहीं अुठता। फिर भी मनमें तय कर लिया कि परदेशमें दूध-घी वगैरा जैसा मिले वैसा ही लिया जाय। शामको सात वजेके वाद न खानेका नियम भी मैंने छोड़ दिया। सिर्फ अेक निश्चय स्वभावतः कायम रखा कि परदेशमें होते हुअे भी मांस, मुर्गा, मछली, अंडे वगैरा कुछ नहीं लूंगा। शरावका तो सवाल ही नहीं अुठ सकता था। अिस तरह मद्य-मांससे सुरक्षित रहें, तो काफी है। वाकी नियमोंका आग्रह परदेशमें न रखा जाय।

कहते हैं। यह पिचिंग लम्बे समय तक जारी रहे, तो आदमीको अच्छा नहीं लगता। लेकिन अुसे रोका कैसे जाय? झूले झूलकर अुकता गये हों, तो झूला बन्द करके अुस परसे अुतरा जा सकता है। लेकिन यहां तो अेक बार जहाज पर बैठे कि आठ दिन तक अुसके हिलने-डुलनेको स्वीकार किये सिवा कोअी चारा ही नहीं। कभी-कभी शंका होती थी कि दोनों गतियोंके मिश्रणसे कहीं चक्कर तो नहीं आने लगेंगे? मनमें यह भी डर घर कर लेता कि चक्करकी शंका पैदा हुअी, अिसी-लिअे चक्कर आयंगे। खाते समय स्वाद लेकर रसपूर्वक खाते हों, तो भी यह शंका बनी रहती कि खाया हुआ पेटमें टिकेगा या नहीं? अिस शंकाको मिटाना आसान नहीं था। जो भी हो, हमने तो अपने आठों दिन खूब आनन्दमें बिताये। लोगोंने डरा दिया था कि आखिरी चार दिन कठिन जायेंगे। लेकिन हमें तो अैसा कुछ मालूम नहीं हुआ। जिस दिन हमने भूमध्य रेखा पार की, अुस दिन कुछ समय तक हवा खूब तेज चली। लेकिन अुससे हम अुदास, गमगीन नहीं हुअे।

अपने चारों तरफ जब पानी फैला दिखता है, तब कुछ समय तक मजा आता है। बादमें सारा वातावरण गंभीर बन जाता है। लेकिन जब यह गंभीरता कम हो जाती है, तो आंखें घबराने लगती हैं। हमारी पूरी सृष्टि अुस जहाजमें ही समा गअी! विशाल समुद्रकी तुलनामें वह कितनी छोटी और तुच्छ मालूम होती थी! वह भी समुद्रकी दया पर जीनेवाली। और अुस सृष्टिको छोड़कर बाकी सब पानी ही पानी। अितने पानीका आखिर अुद्देश्य क्या है? जमीनका पट चाहे जितना विशाल हो, तो भी अैसा नहीं लगता कि अितनी जमीन किस लिअे बनाअी गअी होगी? विशाल, व्यापक और अनन्त आकाश देखकर भी अैसा नहीं लगता कि अितने बड़े आकाशका निर्माण किस लिअे हुआ होगा? लेकिन समुद्रका पानी देखकर यह विचार अुठे बिना नहीं रहता। जमीनसे परिचित आंखोंको जब अपने चारों ओर पानीका अखंड विस्तार देखना पड़ता है, तब वे घबरा जाती हैं और अन्तमें अूबकर क्षितिज पर छाये हुअे बादलोंको देखकर आराम पाती हैं। लेकिन कअी बार ये बादल बिना आकारके और अर्थहीन

होते हैं। आकाश जब मेघाच्छन्न हो जाता है, तब तो अुनकी अुदासी असह्य हो अुठती है। अीश्वरकी कृपा है कि आखिरकार अिस घबराहटका भी अन्त आता है और खुली आंखें भी अन्तर्मुख होकर गहरे विचारमें तल्लीन हो जाती हैं।

रातमें और खास कर बड़े तड़के तारे देखनेमें मजा आता था। लेकिन 'पूरा आसमान तो हरगिज न देखने देंगे', अैसा कहकर बच्चोंकी तरह बादल आसमानके मुंह पर अपने हाथ घुमाते रहते थे। अुनकी दयासे जिस समय आकाशका जितना हिस्सा दीखता, अुसीको पढ़ लेनेका हमारा काम रहता।

गुरुवारका प्रातःकाल होगा। जहाज सीधा चल रहा था और अुसके मुख्य स्तंभके बिलकुल पीछे शर्मिष्ठा चमक रही थी। स्तंभकी आड़में भाद्रपदाकी चौरस आकृति किसी तरह जम गअी थी। नीचे अुतरते हुअे ध्रुव तारेके पास देवयानीका अुदय हो रहा था। पौने पांच बजे और श्रवण सिर पर दिखाअी देनेवाले मंगलके स्थान पर लटकने लगा। हंस, अभिजित और पारिजात तीनों मिलकर अेक सुन्दर चंदोवा बना रहे थे। बाअीं तरफ गुरु, चन्द्र और शुक्र अेक कतारमें आ गये थे। चन्द्रकी चांदनी अितनी मंद थी कि अुसे छांछकी अुपमा भी नहीं दी जा सकती। सामने देखने पर बाअीं ओर वृश्चिक अपने तीनों नक्षत्र अनुराधा, ज्येष्ठा और मूलके साथ लटक रहा था। जब कि दाअीं ओर स्वाति अस्त हो रही थी। बेचारा ध्रुवमत्स्य (ध्रुव और अुसके पासके छह तारोंका समूह) लगभग क्षितिजसे मिल गया था।

दूसरे दिन चन्द्रका पक्षपात शुक्रकी तरफ हो गया। रातमें सप्तर्षिके दर्शन करके हम सोये, अुस समय पुनर्वसुकी छोटीसी नावको हमारे साथ दक्षिणकी यात्रा पर रवाना हुअी देखकर बड़ा आनन्द होता था। पुनर्वसुकी नौकामें बैठनेकी चित्राकी तमन्ना अभी पूरी नहीं हुअी है। शायद मघा नक्षत्रकी अीर्ष्या अिसमें रुकावट डालती होगी! शनिवारके दिन चन्द्र और शुक्रका जोड़ा शोभा पाता था। आखिर आखिरमें अिन दोनोंने नीला रंग धारण कर लिया। भाद्रपदाकी चौड़ी चोंगी यहां खूब अूंची चढ़ी हुअी दीखती थी। ध्रुव कलसे ही लुप्त हुआ है।

सवेरे जब अुषा स्वागत करनेके लिअे मंद हास्य करती है, तब सारे क्षितिज पर चांदी जैसी चमकती किनारी बन जाती है। अुसके बाद समुद्र प्रसन्न मुद्रामें हंसने लगता है और अुषाको प्रगट होनेका मौका देता है।

शनिवारको सामनेसे आता हुआ अेक जहाज दिखाअी दिया। अुसने अपने दीयेका प्रकाश चमकाकर हमारे जहाजके साथ शिष्टाचार दिखाया। हमारे जहाजने भी अुसका अुत्तर दिया ही होगा। दोनों जहाज बहुत समीप आ जाते, तो दोनों सीटी बजाते; लेकिन जहां सीटीकी आवाज नहीं पहुंचती, वहां प्रकाश दिखाकर काम चलाना पड़ता है। पूरे चार दिनके बाद हमारे जहाजके जैसी ही दूसरी अेक सृष्टिको जीवन-पट पर विहार करते देखकर अत्यन्त आनन्द हुआ। हमारे जहाजके लोग अफ्रीकाके सपने देख रहे थे। सामनेवाले जहाजके मुसाफिर मातृभूमि हिन्दुस्तानके सपने देख रहे होंगे। हर जहाजके मुसाफिरोंके मनमें चल रहे संकल्प-विकल्पोंका अेकन्दर हिसाब लगाया जाय तो कैसा मजा आये!

जहाज पर यात्रियोंकी तीन जातियां होती हैं। प्रतिष्ठाकी अस्पृश्यता भोगनेवाले होते हैं पहले दर्जेके यात्री। अुन्हें ज्यादा सुविधायें मिलें तो कोअी चिन्ता नहीं, लेकिन अुनका बड़प्पन अिस बातमें है कि अुनके राज्यमें दूसरा कोअी प्रवेश भी नहीं कर सकता। अूपरी डेकका बहुत बड़ा भाग अुनके आराम और खेलकूदके लिअे 'रिजर्व' होता है। दूसरे दर्जेके यात्री भी काफी अच्छी सुविधा भोगते हैं। लेकिन तीसरे दर्जेकी यात्रियोंकी गिनती तो मनुष्योंमें होती ही नहीं। अुनके झुंडके झुंड पशुओंकी तरह चाहे जहां ठूंस दिये जाते हैं। आठ दिन तक मनुष्यको पशु-जीवन बिताना पड़े, यह कोअी मामूली मुसीबत नहीं है।

और अब दूसरे और तीसरेके बीचमें ड्योढ़ा दर्जा निकाला गया है। वह पशु और मनुष्यके बीचका वानर वर्ग कहा जा सकता है। अुसमें भीड़ तो खूब होती है, लेकिन यही गनीमत है कि यात्री मनुष्यकी तरह सो सकते हैं।

हम जहाज पर हैं, अैसा कुछ लोगोंको मालूम हुआ, तो वे हमसे बातें करने आने लगे। अुसमें भी हमारे सुबह-शाम प्रार्थना करनेके

समाचार जब जहाजके खलासियों तक पहुंचे, तो अुन्होंने हमें नीचेके डेक पर शामको प्रार्थना करनेके लिअे बुलाया। लगभग सारे खलासी सूरत जिलेके थे। भजनके पूरे रसिया। वे अनेक भजन जानते और स्वर-तालके साथ गा सकते हैं। अुनकी भजन-मंडली जब जमती, तब वे सारे दिनकी थकान और जीवनकी सारी चितायें भूल जाते। आसमानी रंगकी पोशाक पहनकर सारे दिन यंत्रकी तरह काम करनेवाले यही लोग हैं, अैसा जानते हुअे भी यह सच नहीं लगता। अुनके समक्ष मैंने अनेक प्रवचन किये। मैंने अुन्हें यह भी समझाया कि जमीन पर ही दीवालें चुनी जा सकती हैं। समुद्र पर नहीं। अिस-लिअे खलासियोंके यहां जात-पांतकी दीवारें नहीं रहनी चाहियें। दरिया पर तो अुन्हें दरियादिल बनना चाहिये।

हम लोग अिस तरह प्रार्थना और भजनमें तल्लीन रहते थे, अुसी बीच जहाजके बहुतसे गोवानी लोगोंने अेक रातको स्त्री-पुरुषोंके नाचका आयोजन किया। अिसके लिअे अुन्होंने जो चंदा किया, अुसमें हमें भी शरीक किया। अिसलिअे हम हकदार दर्शक बने!

गोवाके अीसाअियोंमें युरेशियन शायद ही देखनेको मिलेंगे। धर्मसे अीसाअी लेकिन खूनसे शुद्ध भारतीय अैसे लोगोंने पश्चिमके जो संस्कार अपनाये हैं, अुनका असर देखने लायक होता है। कितने ही युगल संयमपूर्वक नृत्यकलाका आनन्द ले रहे थे। कुछ जोड़े अैसे गंभीर, अलिप्त और यांत्रिक ढंगसे नाच रहे थे, मानो कोअी सामाजिक विधि पूरी कर रहे हों। जब कि दूसरी कुछ जोड़ियां नृत्यके नियमोंके अनुसार बन सके अुतनी छूट लेकर नृत्यमें और अेक-दूसरेमें लीन दिखाअी देती थीं। अेक दो जोड़ियोंकी अुमर और अूंचाअी अितनी विषम थी कि मनमें यही विचार आता था कि अितनी बड़ी विडम्बनाका भोग अुन्हींको कैसे बनना पड़ा। संकरी जगहमें अितने सारे लोगोंका नाच जैसे तैसे पूरा हुआ। अन्त तक जागनेकी अिच्छा न होनेसे ११ बजनेसे पहले ही हम लोग सो गये।

हमारा जहाज पश्चिमकी ओर यानी पृथ्वीकी गतिसे अुल्टी दिशामें चलता था, अिसलिअे हमें लगभग रोज ही घड़ीके कांटे घुमाने

पड़ते थे। जहाजकी तरफसे सूचना मिलती कि 'मध्यरात्रिमें आधा घंटा कम करो' या 'अेक घंटा कम करो'। सृष्टिके नियमको समझकर हम अितना नुकसान अुठानेको तैयार थे! अफ्रीका पहुंचने तक हमने ढाअी घंटे खोये। (बेल्जियम कांगो जाने पर अेक घंटा और खोना पड़ा, अिसका वर्णन यथास्थान आयेगा।)

भूगोलके तथ्य विस्तारसे न जाननेवाले पाठकोंके लिअे अितना कह देना जरूरी है कि रेखांशकी हर १५ डिग्री पर अेक घंटा घटाना या बढ़ाना पड़ता है। प्रशांत महासागरमें जब जहाज अेशिया और अमेरिकाके बीच १८० रेखांश पर होते हैं, तब अुन्हें आते या जाते अेक पूरा दिन बढ़ाना या घटाना पड़ता है। अिस रेखांशको अंग्रेजीमें 'डेट लाअिन' कहते हैं। जिस तरह हमारे यहां अधिक मास आता है, अुसी तरह 'डेट लाअिन' पर जाते हुअे अेक अधिक दिन आता है और आते हुअे अेक दिनका क्षय होता है।

आठ दिनसे न तो कोअी अखबार, न डाक, न मुलाकाती और न कोअी शहर या गांव देखनेको मिला — यहां तक कि पहाड़ या द्वीप भी सपनेकी संपत हो गये थे। अैसी हालतमें जब घंटेके घंटे और दिनके दिन चुपचाप बीत जाते हैं, तब वार और तारीखका भी ठिकाना नहीं रहता। हमारे जहाजकी अूंचाअीका हिसाब करते हुअे जब मैंने अिस बातकी जांच की कि हमारे आसपास क्षितिज तक कितना समुद्र फैला हुआ है, तो जहाजवालोंसे पता चला कि हमारी आंखें अेक बारमें चारों तरफ २५० वर्ग मीलमें फैला हुआ समुद्र देख या पी सकती थीं। कितनी बड़ी शांति! और वह भी डोलती, झूलती, बहती और फिर भी स्थिर। आकाशके आशीर्वादके नीचे शांतिका साम्राज्य फैला था। Swelling and rolling peace — abiding and abounding.

कौन जाने किस तरह अिस शांतिके अनुभवके साथ मुझमें मानव-प्रेम अुमड़ रहा था और सारी मानव-जातिसे 'स्वस्ति, स्वस्ति, स्वस्ति' कह रहा था। मानव-जातिका अितिहास आज भी अेकंदर सुन्दर नहीं बन पाया है। अिसी समुद्रने कितने ही अन्याय और अत्याचार

देखे होंगे; कितने ही गुलामोंकी ठंडी आहें यहांकी हवामें मिली होंगी; और कितनी ही प्रार्थनायें सूर्य, चन्द्र और तारों तक पहुंचकर भी व्यर्थ गओी होंगी। लेकिन अितना होते हुअे भी अगर मनुष्यके वहे हुअे खूनसे समुद्रमें लाली नहीं आअी, दुःखियोंकी आहोंसे यहांकी हवा कलुषित नहीं हुअी और लोगोंकी निराशासे आकाशके नक्षत्रों और तारागणोंकी ज्योति मंद नहीं पड़ी, तो मनुष्य-जातिका थोड़ासा अितिहास पढ़कर मेरा मानव-प्रेम किस लिअे संकुचित या कम हो? यदि मैं अपने असंख्य दोषोंको भूलकर अपने पर प्रेम कर सकता हूं और अपने विषयमें अनेक आशायें वांध सकता हूं, तो मेरे ही अनंत प्रतिविम्वरूप मानव-जातिको मेरा पूरा प्रेम क्यों न मिले?

अैसी भावनाके साथ अफ्रीकाकी भूमि पर मनुष्य-जातिके चल रहे त्रिखंड (अेशिया, यूरोप और अफ्रीका) सहकारको देखनेके लिअे मैं मोम्वासा पहुंचा।

अिन आठ दिनोंमें खूव पढ़ने और लिखनेकी जो आशा रखी थी, वह पूरी नहीं हुअी। लेकिन ये आठ दिन जीवनके दर्शन, चिन्तन और मननसे भरपूर थे।

४

प्रवेशद्वार

मैंने माना था कि मोम्वासा अुतर कर सीधे नैरोवी जाना होगा। मोम्वासामें चार-पांच दिन रहनेका श्री अप्पासाहवने किस लिअे तय किया होगा, यह मेरे खयालमें नहीं आया था। मोम्वासाके वारेमें मेरी अितनी ही कल्पना थी कि वह पूर्व अफ्रीकाका अेक मुख्य वन्दरगाह और व्यापारका केन्द्र है। अिसलिअे जव ११ मअीके सुन्दर प्रभातमें हम मोम्वासा पहुंचे और अुसका हराभरा आकर्षक किनारा देखा, तो हमारे आश्चर्यका पार न रहा। हम कुल आठ जन थे। मेरे साथ चि० सरोजका आना पहलेसे ही तय हो चुका था। आखिर-आखिरमें श्री शरद पंड्याने साथ आनेकी अिच्छा वताअी। पासपोर्ट, परमिट वगैराकी

व्यवस्था भी तारसे हो सकी। अिस तरह हम तीन हो गये। श्री अप्पासाहवके आमंत्रण और भारत सरकारकी अनुमतिसे श्री कमलनयन वजाज भी पूर्व अफ्रीका देखनेके लिअे रवाना हुअे थे। अुन्होंने जहाजमें हमारे साथ रहनेके लिअे अपना कार्यक्रम वदला और कुछ असुविधा अुठाकर भी हमारे स्टीमरमें ही जगह प्राप्त की। अपने वच्चोंको देशाटनसे मिलनेवाली शिक्षाका महत्त्व पूरी तरह समझनेके कारण श्री कमलनयनने चि० राहुल और छोटी वच्ची सुमनको भी साथ लिया। अिसके अलावा, खाने-पीनेमें सुविधा रहे, अिस खयालसे अुन्होंने दो नौकर भी साथ ले लिअे थे। अिस तरह हमारा आठ आदमियोंका काफिला अफ्रीकाकी भूमि पर अुतरनेके लिअे अक्षरशः अुत्कंठ हो गया था। हम तो क्या, लगभग सारे ही मुसाफिर अफ्रीकाके जिराफकी तरह अफ्रीकाके दर्शनके लिअे अुत्-कंठ होकर (गर्दन अूंची अुठाकर) जहाजके कठघरेके पास अिकट्ठे हो गये थे। आखिर-आखिरमें अेक विघ्न पैदा हुआ। जहाज पर किसी वच्चेको छोटी माता निकली थी। अिसलिअे जहाजको क्वारेन्टाअिनमें रखनेकी वात चली। पहले और दूसरे दर्जेके यात्री हर वातमें सुरक्षित होते हैं, और हम ठहरे भारत सरकारके कमिश्नरके मेहमान! हमें सारी सुविधायें समय पर आसानीसे मिल सकीं। हमें जो रुकना पड़ा, वह दूसरोंकी तुलनामें कुछ भी नहीं था। अुतनेमें नहा-धोकर हमने नाश्ता भी कर लिया। श्री अप्पासाहवकी तरफसे अुनके प्राअिवेट सेक्रेटरी श्री तात्यासाहव अिनामदार सवेरे ही वन्दरगाह पर आ पहुंचे थे। अुतरनेका समय हुआ कि खुद अप्पासाहव पंत भी जहाज पर आ पहुंचे और प्रेमसे मिले। दूसरे लोगोंको जहाज पर चढ़नेकी अिजाज़त मिले, अिसके पहले ही अेक पत्र-प्रतिनिधि वन्दरगाहके ड़ॉक्टरके साथ जहाज पर आ गये और अपने धर्मके प्रति वफादारी वताकर अुन्होंने मुझसे अेक संदेश मांगा। मैंने अुन्हें नीचेका सन्देश लिख दिया, जिसे अुन्होंने अुसी दिन कअी अखवारोंमें छपा दिया था:

> "मैं अफ्रीकाके किनारे पर आज पहली ही वार पांव रख रहा हूं। मैं अिस भूमिको हिन्दुस्तान जितनी ही पवित्र मानता हूं। अिस अफ्रीकामें ही दुनियाको महात्मा गांधीका पहला

परिचय मिला। अिस अफ्रीका खंडमें दुनियाके तीन खंडोंके मानव परस्पर सहकारके लिअे आकर अिकट्ठा हुअे हैं और अुस विश्ववन्धुत्वको सिद्ध करनेका प्रयत्न कर रहे हैं, जो मानव-जातिका अंतिम भविष्य है। अैसी भूमि पर पैर रखते हुअे मैं अुन अफ्रीकन लोगोंको प्रणाम करता हूं, जिनकी यह मातृभूमि है।"

अुतरते ही हम श्री नानजीभाअीके सुन्दर और विशाल भवनमें जा पहुंचे। अुस दिन हमें पूरा आराम लेने दिया गया। शामको मोटरकी मददसे सारा शहर देख डाला — खास करके वन्दरगाहका भाग, किलेका भाग और वाजार वगैरा। समुद्र किनारे चलते-चलते दीप-स्तंभ देखा, सरकारी मकान देखे, प्रवालके कीड़ों द्वारा वनाये हुअे पोले पत्थर देखे। और दूसरे दिनसे शुरू होनेवाले भरेपूरे कार्यक्रमके लिअे तैयार हो गये।

पहली ही वार देखकर मैं समझ गया कि मोम्वासा जैसे यूरोपियनोंका है, वैसे भारतीयोंका भी है। अुन्होंने यहां काफी चमकीले सार्वजनिक जीवनका विकास किया है। और अुनके आश्रयमें यहांके मूल निवासी अफ्रीकन लोग नये संस्कार ग्रहण करके नअी सभ्यताके अच्छे-वुरे सव तत्त्व ग्रहण कर रहे हैं।

मोम्वासा अेक टापू ही कहा जायगा। अुसके दोनों तरफ जो दो खाड़ियां हैं अुनमें से अुत्तर दिशाकी खाड़ीमें अरवस्तान और हिन्दुस्तानसे आनेवाले छोटे जहाज लंगर डालते हैं। अिन जहाजोंको यहां 'ढाअू' कहते हैं। दक्षिण दिशाकी खाड़ीमें वड़े-वड़े स्टीमर आकर ठहरते हैं। अिस तरफके वन्दरगाहका नाम किलिन्डिनी है। चाहे जिस ओरसे देखिये, समुद्रकी शोभा फीकी पड़ती ही नहीं। शहर नये और पुरानेका मिश्रण है।

मोम्वासा वहुत पुराना वन्दरगाह है। लगभग दो हजार वर्ष पहले लोगोंने यह खोज निकाला था कि सालके अमुक महीनोंमें हवा अीशान्य कोणसे नैॠत्य कोणकी तरफ वहती है और अुस मौसमके खतम होनेके वाद दूसरे कुछ खास महीनोंमें अिससे अुलटी हवा चलती है। अितनी

शोध हो जानेसे अरबस्तान और हिन्दुस्तानके बहादुर नाविक दिसम्बरसे अप्रैल तकके महीनोंमें अपने-अपने देशसे सीधे अफ्रीकाके किनारे आने लगे और यहांका व्यापार पूरा करके अगस्तके आसपास वे लौट जाते। अिस तरह यातायात शुरू होनेसे यहांका व्यापार खूब चमका। अिससे चीजों और संस्कारोंके लेन-देनका अुत्तम साधन अुत्पन्न हुआ और दुनियाका अितिहास बदला। जहाजोंके लिअे मोम्बासा अुत्तम बन्दरगाह है, अिसलिअे अुस पर अधिकार करनेके लिये अरब और पुर्तगाली लोगोंके बीच सदियों तक खूब झगड़ा चला। पुर्तगालवालोंने सन् १६०० से पहले यहां अेक किला बनवाया और अुसका नाम फोर्ट जीसस रखा। अपना नाम अेक लड़ाअीमें काम आनेवाले किलेको दिया गया जानकर शांतिके पैगम्बर अीसाको कैसा लगा होगा? आजकल अिस किलेसे जेलका काम लिया जाता है और झांझीबारके सुलतानका झंडा आज भी अुस पर फहराता रहता है।

यहांके बहुतेरे मकान प्रवालके कीड़ों द्वारा बनाये हुअे पत्थरोंके होते हैं। प्रथम विश्वयुद्धके दिनोंमें अेक बार भारतसे कुछ जहाज यहां आये थे। अुनके पास काफी माल नहीं था, अिसलिअे जहाजोंके लिअे जरूरी बोझके (बेलास्टके) रूपमें पत्थर भर कर लाये गये थे। अुन पत्थरोंसे अेक मुहल्लेके अनेक मकानोंकी नींव चुनी गयी थी। अिस तरह भारतके पत्थरों पर खड़े मकान अफ्रीकामें देखकर मेरे मनमें अनेक विचार पैदा हुअे और चले गये। यदि सौ-अेक साल तक दुनियामें शांति बनी रही, तो मोम्बासाका बन्दरगाह भी हमारे बम्बअी जैसा ही विकास करेगा।

मोम्बासामें हम लोग ६ दिन रहे। अिस बीच हमारा खास काम वहांकी शिक्षण-संस्थायें देखनेका था। सारे अफ्रीकामें तीन प्रकारकी शिक्षण-संस्थायें तो हैं ही। गोरे अलग पढ़ते हैं, अफ्रीकन लोग अलग पढ़ते हैं और हिन्दुस्तानी अलग पढ़ते हैं। हिन्दुस्तानियोंमें धर्मभेद और जातिभेद तो होंगे ही, होते हैं। मुसलमानोंमें भी आगाखानी (अिस्माअिली), अिशनासरी वगैरा भेद हैं। फिर, हिन्दुओंमें लुहाणा, बीसा, ओसवाल, जैन, पाटीदार वगैरा भेद होने ही चाहिये। यह हुअी

गुजरातियोंकी बात। अिसके अलावा, पंजाबियोंकी सिक्ख शालायें भी हैं। अिन लोगोंमें भी यों ही पड़े हुअे दो पन्थ पाये जाते हैं।

और गोवाके किरिस्तांव लोग खुदको अलग मानकर अलग संस्था चलाते हैं, सो अलग। लड़कियोंकी शिक्षा देनेवाली संस्थायें कम हैं, लेकिन हैं जरूर। और अुनमें भी जात-पांतके भेद तो हैं ही। अिन संस्थाओंमें जाति या धर्मके नाते शिक्षाका कोअी भेद नहीं है। प्रार्थना या धर्मोपदेशोंमें अमुक आग्रह पाये जाते हैं। अिससे धार्मिकता बढ़नेके बजाय पंथाभिमान और साम्प्रदायिकता ही बढ़ी हुअी देखनेमें आती है। 'वे लोग अिस तरह मानते हैं, हम अुस तरह नहीं मानते; हमारी मान्यतायें और विश्वास अुनसे अलग हैं, अिसलिअे हम अुनसे अलग है'— अितना बच्चोंके मन पर बैठा दिया कि धर्मकी रक्षा हो गअी! अुस पर भी खूबी यह कि ये सब विश्वास पालनेके लिअे नहीं, माननेके लिअे ही होते हैं।

अैसी दलीलें की जाती हैं कि दूसरी जातिके लड़के हमारी जातिके बच्चोंके साथ पढ़ें, तो हमारी जातिके बच्चोंके संस्कार बिगड़ जायंगे और भ्रष्ट हो जायंगे। लेकिन वे संस्कार कौनसे हैं, यह कोअी निश्चित नहीं कह सकता। रहन-सहन तो सबकी अेकसी ही होती है। सच पूछा जाय तो ये सारे पंथ, अुनकी जातियां और अुपजातियां अलग-अलग कुटुम्ब-समूह ही हैं। और संकुचित दृष्टि रख कर अपने-अपने समूहके स्वार्थ सिद्ध करनेके लिअे ही अुत्सुक रहते हैं। जो लोग आपसमें शादी-ब्याह कर सकते हैं, अुनकी अेक जाति होती है। अुस जातिके धनी लोग अिस बातका ध्यान रखते हैं कि अपने दान-धर्मका लाभ अपनी जातिवालोंको ही मिले और अुसके लिअे धर्म, संस्कृति और अध्यात्मवादकी बातें सामने रखते हैं।

अिस जात-पांतके भेदोंके कारण हिन्दुओंका कोअी अेक समाज रहा ही नहीं। केवल अनेक और भिन्न समाजोंकी अेक खास संख्याको हिन्दू नामसे पुकारा जाता है। हम अभिमानके साथ यह कहते हैं कि विविधतामें अेकता हिन्दू धर्मका लक्षण है, लेकिन प्रत्यक्ष व्यवहारमें विविधता पर

ही सारा जोर लगाया जाता है। अगर कोअी अेकता टिकी रही हो, तो वह अेकसी अज्ञानता, अदूरदृष्टि और झक्कीपनमें ही दिखाअी देती है!

कुछ लोग जात-पांतके बंधनोंको तोड़कर केवल चार वर्ण रखनेकी हिमायत करते हैं। आज ये चार वर्ण नाममात्रके ही हैं — वे नाम नहीं, केवल विशेषण ही रह गये हैं। वर्णोंकी आजकी कल्पना पर विचार करते हुअे अुनका अुपयोग केवल मनुष्यके जीवनको अेकांगी बनानेके लिअे ही है। जब तक हम जाति और वर्ण दोनोंको खतम नहीं कर देते, तब तक हमारी मनुष्यता पूर्ण रूपसे प्रकट नहीं हो सकेगी। अनेक जगह मैंने लोगोंसे कहा कि हमारे धर्मशास्त्रोंके अनुसार सतयुगकी स्थिति अुत्तम होती है। अुस युगमें अेक ही अीश्वर और अेक ही वर्ण हो सकता है, अैसा हमारे धर्मशास्त्रोंमें कहा गया है। लोग बिगड़े, युगका ह्रास हुआ, अिसलिअे लाचार होकर अनेक वर्णों और जात-पांतके भेद पैदा करने पड़े। लोगोंके सामने मैं राजा भर्तृहरिका यह वचन भी अुद्धृत करता था — 'ज्ञातिश्चेद् अनलेन किम्?' — जाति हो तो भला आगकी क्या जरूरत? यदि आपके पास जातिके झगड़े हों, तो समाजको जलाकर खाक कर डालनेके लिअे दूसरी कोअी आग लानेकी जरूरत नहीं।

और अफ्रीका जैसे दूरके देशमें रहन-सहनके बारेमें जात-पांतके बन्धन कोअी पालता भी नहीं। घर-घर अफ्रीकन नौकर रखे जाते हैं, जो कपड़े धोते हैं, पानी भरते हैं, खाना बनाते हैं और बच्चोंको संभालते हैं। अूंचे वर्गके यानी खर्चीली रहन-सहनवाले लोगोंके यहां कम-ज्यादा मात्रामें अंडों, मांस और मदिराका व्यवहार होता है। अिसमें अपवाद भी है। लेकिन अपवादकी संख्याका पता न लगानेमें ही बुद्धिमानी है। यहां मेरा अुद्देश्य सामाजिक जीवन पर टीका करनेका नहीं, बल्कि यह शंका अुठानेका ही है कि अैसा जीवन जीनेवाले लोग जात-पांतके भेदों और अुनके अलग संस्कारोंकी बात कैसे करते होंगे।

अलग-अलग शिक्षण-संस्थायें होनेसे पैसा व्यर्थ बरबाद होता है और शिक्षाका अुद्देश्य पूरा नहीं होता। शिक्षित लोगोंमें शिक्षाके

संस्कार कोअी देख नहीं सकता, लेकिन बड़े-बड़े सुन्दर मकान आसानीसे देखे जा सकते हैं। दानशूर लोग मकान बनवानेके लिअे खुले हाथों पैसा देते हैं। पूर्व अफ्रीकामें अनेक विद्यालयोंकी अिमारतें देखकर औीर्ष्यासी होती है। लेकिन अुन सुन्दर अिमारतोंमें मिलनेवाली शिक्षाकी दीन दशा देखकर दुःख हुअे बिना नहीं रहता। कुछ संस्थाओंका प्रबन्ध अच्छा है, लेकिन सब जगह अेक ही शिकायत सुननेमें आती है कि शिक्षक नहीं मिलते। और मिले हुअे टिकते नहीं। शिक्षकोंका कहना है कि माता-पिता और संस्थाके व्यवस्थापक अितना ज्यादा हस्तक्षेप करते हैं कि बालकोंमें किसी तरहका अनुशासन या लगन पैदा की ही नहीं जा सकती।

जहां-जहां अच्छे शिक्षक हैं, वहां शिक्षाका वातावरण तुरन्त मालूम होता है। लेकिन कुल मिलाकर यही कहना पड़ेगा कि पूर्व अफ्रीकामें हमारे लोगोंकी शिक्षा अच्छी हालतमें नहीं है।

सच कहा जाय तो हमारे लोगोंको सारे पूर्व अफ्रीकाके लिअे अेक स्वतंत्र शिक्षा-मंडल कायम करना चाहिये। अुसमें अुत्तम शिक्षाशास्त्री, अनुभवी समाजनेता और दूरंदेशीसे सलाह देनेवाले राष्ट्रपुरुष ही हों। जात-पांत या धर्मके भेदभावोंको छोड़कर सारी शिक्षण-संस्थायें अैसे शिक्षा-मंडलके हाथमें सौंप दी जानी चाहिये। हर संस्थाका बजट भले अलग रहे। किसी संस्थाका कुछ खास बातोंके लिअे आग्रह हो, तो अुनकी रक्षा करनेका वचन भी अैसा मंडल दे दे। लेकिन सारी संस्थायें अेक मंडलके मातहत काम करें, तो ही शिक्षाकी दशा सुधर सकती है। अैसे मंडलकी प्रेरणा मिले, तो शिक्षक भी तेजस्वी बनेंगे और शिक्षा स्वावलम्बी होगी।

अेक बात देखकर मुझे विशेष संतोष हुआ। यहांकी हिन्दू और मुसलमान दोनों शिक्षा-संस्थाओंमें शिक्षा गुजरातीके जरिये ही दी जाती है। सच पूछा जाय तो कच्छ, काठियावाड़ और गुजरातसे आनेवाले हिन्दू और मुसलमानोंका अेक ही समाज है। व्यापारमें तो वे अेक दूसरेके साथ जुड़े हुअे हैं ही। सामाजिक दृष्टिसे भी कुछ हिन्दू-मुस्लिम परिवारोंमें अैसा मीठा सम्बन्ध है, मानो वे अेक ही हों। हिन्दुस्तानके

टुकड़े हुअे अिसलिअे हमें भी यहां अपने संमिश्र जीवनके टुकड़े करने ही चाहिये, अैसा समझकर अनेक स्थानोंमें हिन्दू-मुसलमानोंके बीच वैरभाव पैदा किया गया है। अुसकी शुरुआत किसने की और किसने बादमें जवाब दिया, अिस सवालको लेकर भी मतभेद और झगड़े चलते हैं। क्योंकि दोनों पक्ष यह मानते हैं कि अैसा भेद पैदा करनेकी दरअसल कोअी जरूरत नहीं थी और अैसे भेदसे दोनोंको बेहद नुकसान भी हो रहा है।

मैंने अुन लोगोंको कअी जगह कहा कि मैं भारतसे आया, तब मुझे कअी रोगोंके अिंजेक्शन लेने पड़े थे। सचमुच हमारे लोग हिन्दुस्तानसे जब यहां आयें, तो अुन्हें वहांके हिन्दू-मुसलमान झगड़ारूपी रोगका अिंजेक्शन लेकर ही यहां आना चाहिये। कुछ जगहों पर जैसे सारा सामान धुअेंकी कोठरीमें रखकर 'डिसअिन्फेक्ट' किया जाता है, वैसे ही हिन्दुस्तानसे आनेवाले अखबार भी डिसअिन्फेक्ट करके ही पढ़ने चाहिये। तभी हम अिस जहरसे बच सकेंगे।

हमारे लोगोंने पूर्व अफ्रीकामें अपने राजनीतिक अधिकारोंकी रक्षा करनेके लिअे जगह-जगह अिण्डियन अेसोसियेशनोंकी स्थापना की। अब कुछ लोगोंको अिस 'अिण्डियन' शब्दसे अेतराज होता है। यह अंधापन अिस हद तक पहुंच गया है कि पक्षाभिमानी लोगोंकी जिद है कि जिस तरह हिन्दुस्तानके टुकड़े पड़े, अुसी तरह अिण्डियन अेसोसियेशनोंके भी टुकड़े होने चाहिये और अुनके फंडका बंटवारा होना चाहिये।

जिन शिक्षण-संस्थाओंमें हिन्दू-मुस्लिम बच्चे अेक साथ पढ़ते हैं, वहां कहीं-कहीं अिस बात पर जोर दिया जाता है कि शिक्षकोंकी नियुक्तिमें हिन्दू-मुस्लिम अनुपातका ध्यान रखना चाहिये! व्यवस्था-मंडलमें भी जातीय अनुपातका सवाल पैदा होता ही है। हर जगह दोनों समाजोंके नेता निश्चित रूपसे यह बात कहते हैं कि "हमारे मनमें अभी तक अैसा भेदभाव था ही नहीं। सामनेवाले पक्षकी नीयत बिगड़ी, अिसलिअे आत्मरक्षाके खातिर हमें सावधान होना पड़ा और कड़े अुपाय काममें लेने पड़े।"

भाषाके बारेमें गुजरातीके कारण जो अेकता कायम है, वहां भी मुट्ठीभर पंजाबी लोग राष्ट्रभाषाको आगे करके झगड़ा पैदा कर रहे हैं। पंजाबी मुसलमान अुर्दूके हामी हैं, जब कि पंजाबके सिक्ख हिन्दीका आग्रह रखते हैं। सिक्ख लोगोंने शिक्षा-विभागके साथ बातचीत करके गुरुमुखीको शिक्षाका माध्यम स्वीकार करवाया है।

पूर्व अफ्रीकामें महाराष्ट्री लोग अितने कम हैं कि वे भाषाके झगड़ेमें भाग नहीं ले सकते। वे सब अपने बच्चोंको गुजराती स्कूलोंमें भेजते हैं। अुन्हें गुजरातीके जरिये शिक्षा दी जाती है। और अिससे अुन्हें कोअी नुकसान नहीं हुआ है। मराठी भाषाके संस्कार कायम रखनेका काम वे घरोंमें आसानीसे कर सकते हैं। पंजाबी लोग भी यदि अिसी नीति पर चलें, तो यहांकी शिक्षाका सवाल आसानीसे हल हो जाय। यहांके लगभग ९० प्रतिशत हिन्दुस्तानी लोग गुजराती जानते ही हैं। अगर हिन्दुस्तानकी राष्ट्रभाषा हिन्दी है, पाकिस्तानकी अुर्दू है, तो पूर्व अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी लोगोंकी सुभीतेकी भाषा गुजराती है। धर्मके नाम पर जिस तरह हमारे झगड़े चलते हैं, अुसी तरह अगर हम भाषाके नाम पर भी अंधे बनकर झगड़े चलायेंगे, तो हमारा हिन्दुस्तानी समाज हर तरहसे छिन्न-भिन्न हो जायगा।

प्रवास-वर्णनके आरंभमें ही दो महीनोंके अपने अनुभवोंका निचोड़ मैंने दे दिया है, क्योंकि हर जगह अुसकी थोड़ी-थोड़ी चर्चा करनेमें असुविधा होगी।

डॉ० कर्वे मोम्बासामें खास ध्यान खींचनेवाले सज्जन हैं। वे महर्षि अण्णासाहब कर्वेके सुपुत्र हैं। बातें करते समय वे पूरे व्यवहार-वादी दिखाअी देते हैं, लेकिन बरसोंसे वे पंड्या क्लिनिक नामक अेक अच्छेसे अच्छा अस्पताल नितान्त सेवाभावसे चला रहे हैं। पंड्या परिवार समाज-सेवा और दानके लिअे मशहूर है। अुनके अुदार दानके कारण ही अिस अस्पतालको 'पंड्या क्लिनिक' नाम दिया गया है। डॉ० कर्वे अिस संस्थाके सब कुछ हैं। महायुद्धके दिनोंमें खलासियोंके आरामगाहके लिअे बनाअी गअी अेक बड़ी अिमारत भाड़े लेकर अुसमें यह अस्पताल चलाया जाता है। डॉ० कर्वेने बड़े प्रेमसे पूरी संस्था हमें

तफसीलवार दिखाअी। अुनके मुंहसे अुनके पिताके अनेक जीवन प्रसंग सुननेमें मुझे बड़ा आनन्द आया। अण्णासाहबके जीवनकी कुछ विशेषतायें मैं डॉ० कर्वेसे ही जान सका। अण्णासाहब अेक बार यहां आये थे और बहुत दिनों तक अुन्होंने यहां आराम लिया था।

दूसरे अेक जानने जैसे डॉक्टर हैं डॉ० शेठ। अुनकी पत्नी मेरे बहुत पुराने मित्र और प्रकाशक काशीनाथ रघुनाथ मित्रकी पुत्री हैं।

श्री अप्पासाहब पंतके मिलनसार स्वभावके कारण और अुनके अधिकारके कारण पूर्व अफ्रीकाके सभी हिन्दुस्तानी अुनकी ओर आकर्षित हुअे हैं। हमारा सारा कार्यक्रम अुन्हींके द्वारा बनाया होनेके कारण हर जगहके सारे प्रतिष्ठित लोग हमारे स्वागतमें भाग लेते थे। अच्छे-अच्छे स्थानीय कार्यकर्ता कौन हैं, यह हमें खोजना नहीं पड़ता था। कुछ लोगोंसे मैंने सुना कि "अप्पासाहब पंत हिन्दू हैं, अुनसे हम किस लिअे मिलें?" अैसी भावना रखकर अिस देशके बहुतसे मुसलमान नेता शुरूमें अुनसे दूर-दूर रहते थे। बादमें जब अुन्हें मालूम हुआ कि अप्पासाहबके मनमें हिन्दू-मुस्लिमका कोअी भेद ही नहीं है, वे सबके हैं, सबको अपना समझते हैं, सभीकी सेवा करनेके लिअे तैयार रहते हैं और गांधीजी तथा जवाहरलाल नेहरूकी अुदार नीति अपनानेवाले अूंचे दर्जेके राष्ट्रवादी हैं, तब वे धीरे-धीरे अप्पासाहबके प्रति आकर्षित होने लगे। आज वे जितने हिन्दुओंको प्रिय हैं, अुतने ही मुसलमानोंको भी प्रिय हैं। अुन्हें अपने यहां मेहमानके तौर पर बुलानेमें हर आदमी बड़े गौरवका अनुभव करता है। वे जब मुसाफिरीके लिअे निकलते हैं, तब कितने ही लोग अपनी-अपनी मोटरें लेकर अुनके साथ जाते हैं, ताकि अुनके थोड़े सहवासका मौका मिले।

अिसका अेक मनोरंजक अुदाहरण यहां देने जैसा है। अेक बार अप्पासाहब युगान्डामें मुसाफिरी कर रहे थे। अुस समय अुनके साथ अैसी ११ मोटरें अिकट्ठी हो गअी थीं। यह देखकर वहांके अफ्रीकन लोग कहने लगे "युगान्डाके हमारे 'कबाका' (राजा) की जब सवारी निकलती है, तब अुनके साथ चार-पांच मोटरें होती हैं। ये हिन्दुस्तानके

कबाका बहुत बड़े होने चाहिये। देखो, अिनकी सवारी ११ मोटरोंमें निकलती है।"

अप्पासाहब जैसे मीठे बोलनेवाले हैं, वैसा ही स्पष्ट बोलनेवाले भी हैं। और अिसलिअे पूर्व अफ्रीकाके तमाम गोरे लोगों पर अुनकी अच्छी छाप पड़ी हुअी है। हर चीज किस ढंगसे रखनेसे लोगोंको अपने अनुकूल बनाया जा सकता है, अिसकी कला अुनके पास है। अिसलिअे वे किसी भी आदमीसे सच्ची बात निकलवा लेनेमें सफल हो जाते हैं। अेक आदमीने अेक वाक्यमें अुनका शब्दचित्र दिया था —

It is impossible for anyone to be mean in his presence.*

अप्पासाहब यानी अखंड प्रवृत्तिके अवतार। यहां आये अुन्हें तीनेक साल हुअे होंगे। अितने अरसेमें अुन्होंने ४० हजार मीलकी मुसाफिरी कर डाली है। अिस देशके छोटे-बड़े सभीको वे पहचानते हैं। अंग्रेज अुनसे बड़े खुश हैं। अफ्रीकन लोग अुनके प्रति आदरसे और बड़ी आशासे देखते हैं। और हिन्दुस्तानी लोग तो यह कहते थकते ही नहीं कि "अप्पासाहब आये और अिस देशमें हमारी अिज्जत बढ़ी। अुन्होंने हमें नअी दृष्टि प्रदान की है। अब यहांके लोग हिन्दुस्तानकी प्रतिष्ठा और महत्त्वको समझने लगे हैं। हमें अेक ही चिंता है कि जब हिन्दुस्तानकी सरकार अिन्हें यहांसे कोअी बड़े काम पर भेज देगी, तब हमारा क्या होगा!" अप्पासाहबको अपनी प्रतिष्ठाका जरा भी खयाल नहीं है। अुनकी नम्रता, अुनका मानव-प्रेम और हरअेक आदमीकी खामियोंको दरगुजर करनेकी अुनकी अुदारता अुन्हें लोगोंके हृदयमें स्थायी स्थान दिलाती है। पुस्तकें पढ़कर जितना ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, अुससे अधिक और गहरा ज्ञान वे अनेक तरहके अधिकारी पुरुषोंके परिचयसे प्राप्त करते हैं। अुनकी दृष्टि तुरन्त मिलनेवाले लाभ पर नहीं रहती। लेकिन मानव-हितके शुभ कार्य पीढ़ी पर पीढ़ी कैसा असर करते रहते हैं, अिसका अुन्हें अच्छी तरह खयाल है।

* अुनके सामने कोअी भी व्यक्ति नीचता कर ही नहीं सकता।

अिसलिअे कुशल और दूरदर्शी किसानकी तरह वे भांति-भांतिके महावृक्षोंके बीज बोते जाते हैं और सावधानीसे अुन्हें सींचते भी हैं।

मोम्बासाकी अेक बहुत छोटी और मामूलीसी मालूम होनेवाली शिक्षण-संस्थाकी तरफ मेरा खास ध्यान गया। पूर्व अफ्रीकामें अिस समय शिक्षाकी अितनी कमी है कि अुसका रेशनिंग चलता है। स्कूलोंमें हफ्तेमें तीन दिन अमुक विद्यार्थी पढ़ते हैं और दूसरे तीन दिन दूसरे विद्यार्थी पढ़ते हैं। सुबह अमुक विद्यार्थियोंके वर्ग चलते हैं और शामको दूसरे विद्यार्थियोंकी बारी आती है। अैसा कअी जगह करना पड़ता है। अैसी हालतमें जो विद्यार्थी लगातार दो बार नापास हो जायं, अुन्हें स्कूलसे निकाल दिया जाय, तो अिसमें आश्चर्यकी क्या बात है?

अैसे अभागे विद्यार्थियोंको अिकट्ठे करके अुन्हें जितनी बने अुतनी शिक्षा देनेके लिअे डॉ० शेठके प्रयत्नसे अेक संस्था खोली गअी है। अिसमें हिन्दुस्तानी विद्यार्थियोंके साथ तीन अफ्रीकन विद्यार्थी भी पढ़ते हैं। पिछड़े हुअे, जड़ और पस्त-हिम्मत बने विद्यार्थियोंमें भी शिक्षा-ग्रहण करनेका अुत्साह और तेज होता है। साधारण शिक्षण-संस्थाओंमें अुन्हें सफलता नहीं मिलती, अिसका दोष बहुत बार अुनका नहीं, बल्कि परिस्थिति और शिक्षा-पद्धतिका होता है। सब कोअी जानते हैं कि अिटलीके अैसे ही लड़के-लड़कियोंको पढ़ाते-पढ़ाते श्रीमती मॉन्टेसोरीने अपनी विश्वविख्यात शिक्षा-पद्धतिका विकास किया था। मोम्बासाका यह 'अिंडियन रिपब्लिक स्कूल' समाजके सामने यह सिद्ध करके दिखा सकता है कि समाज द्वारा परित्यक्त मानवोंमें भी अुत्तम तत्त्व हो सकते हैं।

क्लिनिकवाले डॉ० कर्वेने दूसरी अेक स्वावलम्बी सहकारी प्रवृत्ति शुरू की है। गरीब हिन्दुस्तानियोंके लिअे अच्छे-अच्छे मकान बनवाने और सस्ते किराये पर देनेकी वह प्रवृत्ति है। अिस तरह कितने ही गरीब परिवार स्वच्छ और अिज्जतकी ज़िन्दगी बिता सके हैं। हमने वे मकान देखे हैं। जो स्वच्छता और प्रसन्नता मकानोंके कमरोंमें दिखाअी देती थी, वही कमरोंमें रहनेवाली बहनों और बच्चोंके चेहरों पर भी हमें दिखाअी दी। स्वच्छ और सुन्दर मकान आत्मगौरव और

स्वाभिमानका वातावरण पैदा करते हैं। नीरोग शरीरमें नीरोग मन रहता है, अिस कहावतको व्यापक बनाकर हम कह सकते हैं कि सुन्दर मकान हो, तो भीतर रहनेवाले मनुष्योंके मन और जीवन भी बहुत हद तक सुन्दर बन सकते हैं।

मोम्बासामें दो-तीन लायब्रेरियां हमें पसन्द आने जैसी थीं। अेक पुस्तकालयमें पारसियोंकी अवेस्तागाथा पर हालमें ही लिखी हुअी कवि खबरदारकी विद्वत्तापूर्ण पुस्तक भी देखनेको मिली।

नम्रभावसे सात्त्विक वातावरण पैदा करनेवाले और गांधीजीके विचारोंका थियोसाफीके साथ समन्वय करके लोगोंके सामने रखनेवाले श्री मास्टरका व्यक्तित्व मोम्बासामें सहज ही लोगोंको आकर्षित करता है। अुनके धार्मिक गौरवका असर आसपासके समाज पर अच्छा पड़ा है।

जात-पांत आदि किसी प्रकारका भेद रखे विना समाजकी सेवा करनेवाली सोशियल सर्विस लीग यहांकी पुरानी संस्था है। मोम्बासाके अेक धनी अरबी व्यापारीने संस्थाकी मदद करके अुसे अपने रहनेका मकान दे दिया है।

मोम्बासा पहुंचते ही यहांकी जिस दूसरी प्रवृत्तिकी तरफ मेरा ध्यान गया, वह है बालमन्दिरोंकी स्थापना। मैंने सुना है कि स्व० गिजुभाअी बधेकाके लगभग ४० विद्यार्थी अफ्रीकामें जगह-जगह बाल-शिक्षाका महत्त्वपूर्ण काम कर रहे हैं। अिन लोगोंको शायद यह पता न हो कि स्व० गिजुभाअीने अपना शिक्षाका मिशन पहचाना, अुसके पहले वे पूर्व अफ्रीकामें वकालत करने आये थे और स्वाहिली भाषा भी सीखे थे। यहीं अुन्हें समझमें आया कि बालकोंको पढ़ाने और अुनके स्वातंत्र्यकी वकालत करनेमें ही अपने जीवनकी सार्थकता है।

गुजरात विद्यापीठके अेक पुराने विद्यार्थी कवि सोमाभाअी भावसार और अुनकी पत्नी मोम्बासाकी बाल-शिक्षामें ओतप्रोत हो गये हैं। गिजुभाअीकी शैलीमें अुन्होंने 'अमर गांधी' नामक अेक छोटीसी पुस्तिका लिखी है। अिस पुस्तिकाका स्वाहिली और लुगान्डी भाषामें अनुवाद हो जानेसे वह अमर हो गअी है।

आगाखानी वालमन्दिर भी वड़े सुन्दर ढंगसे चलता है। वहांके वालकोंकी टीपटाप और प्रसन्नता खास तौर पर ध्यान खींचनेवाली है। आगाखानी प्रवृत्ति पर मुझे आगे चलकर लिखना है, अिसलिअे यहांके टेकनिकल कॉलेज जैसी महत्त्वकी शिक्षण-संस्थाका भी यहां अुल्लेख नहीं करूंगा।

मुसलमान कार्यकर्ताओंमें विशेष आकर्षक थे श्री कादरभाओी। अनेक तरहके कामोंमें भाग लेते-लेते वे वूढ़े हो गये हैं। अेक समय अुन्हें श्री आगाखानकी वड़ी मदद थी। संस्था चलानेकी कलामें कादरभाओी अपना सानी नहीं रखते। अुनका अुत्साह आज भी वूढ़ा नहीं हुआ है।

अफ्रीकन लोगोंसे मिलनेके लिअे मैं पहलेसे ही वड़ा अुत्सुक था, लेकिन वे कहीं दिखाओी नहीं पड़ते थे। युनाअिटेड केनिया क्लवमें अुन्हें देखनेका मौका मिला। वहां गोरे भी आये थे और अफ्रीकन लोग भी थे। और वातोंके साथ-साथ मैंने अुनसे वंशव्यवस्थाके प्रश्न — 'रेशियल अेडजस्टमेन्ट' — के वारेमें दो शब्द कहे, जिसका अुन पर वहुत अच्छा असर पड़ा।

मैंने कहा: "आर्य, अनार्य, द्राविड़, आदिवासी, शक, हूण, चीनी, पारसी, पठान, मुगल, पोर्तुगीज, फ्रेन्च, यहूदी, अंग्रेज, वगैरा अनेक जातियां भारतमें आकर वसी हैं। मानो सारे मानववंशोंको भारतमें अिकट्ठे करनेकी ओीश्वरकी योजना ही हो। ये सव लोग आपसमें मिलकर सहयोगसे कैसे रहें, अिसके अनेक प्रयोग हमने हजारों वर्षोंसे अपने देशमें किये हैं। अिस संवंधमें हमने कुछ गंभीर भूलें भी की हैं, जिनके लिअे हमें कुछ कम नुकसान नहीं अुठाना पड़ा। हमने ढेड़-भंगियोंके मोहल्ले खड़े किये। अूंच-नीचका भाव पैदा किया और वढ़ाया। वहिष्कारका शस्त्र आजमाया और अंतमें देखा कि कभी-कभी मूल रोगसे भी आजमाया हुआ अिलाज ही अधिक घातक सिद्ध होता है। परंतु हमारे ॠषि-मुनियोंने शुरूमें हमें अेक संजीवन मंत्र दिया था कि कितने ही प्रयोग करो, परन्तु हिंसाका आश्रय न लो। हमारी आस्तिकताने सर्प-सत्र जैसे घातक प्रयोग तुरन्त रोक दिये। आज

हमारे यहां चमड़ीके भेदके कारण अलग जातियां कायम नहीं की जातीं। स्वतंत्र होते ही हमने अस्पृश्यताको दफना दिया। हरिजनोंके लिअे हमारे कुअें और भोजनालय, हमारी पाठशालाअें और हमारे मंदिर पूरी तरह खुल गये हैं। हमारे अिस अनुभवसे अफ्रीकामें बसनेवाले तीनों महाद्वीपोंके लोग बहुत कुछ सीख सकते हैं।"

गोवाके ओसाओी लोग सबसे अलग रहते हैं। अुनके यहां जाकर भी मैंने अुन्हें समझाया कि 'आप अपनी मातृभाषा कोंकणीकी अुपेक्षा करते हैं, यह शाप आपको सता रहा है। आपको तमाम हिन्दुस्तानियोंके साथ मिल जाना चाहिये।' गोवाका राजनीतिक सवाल मैंने जानबूझकर नहीं छेड़ा। क्योंकि मैं जानता था कि अुन लोगोंमें तीव्र मतभेद है। कुछ लोग पुर्तगालका जुआ अुतार फेंककर भारतीय संघमें मिलना चाहते हैं और कुछ लोग पुर्तगालके साथका सम्बन्ध कायम रखना चाहते हैं और अपनी संस्कृति अलग होनेका दावा करते हैं।

विदेशोंमें रहनेवाली हमारी बहनें संगठित होकर काम न करें, तो वह अेक आश्चर्य ही माना जायगा। क्योंकि अिन दिनों स्वदेशमें भी बहनोंने जात-पांत और धर्मका भेद मिटाकर शुद्ध राष्ट्रीय वृत्ति और मानवताकी दृष्टिसे अनेक संगठन करके दिखा दिये हैं। अधिकारोंके बंटवारेके लोभमें फंसकर जब हिन्दू-मुसलमान अेक दूसरेके दुश्मन बननेको तैयार हो गये थे, तब भी दोनों जातियोंकी बहनोंने बड़ी अिन्सानियत दिखाओी थी। मोम्बासामें स्त्रियोंकी अेक अच्छीसी संस्था चल रही है और श्रीमती सोंधी अुसका सुन्दर नेतृत्व कर रही हैं। यहांकी बहनोंके सामने मैंने अपना संदेश पहले-पहल सुनाया कि बहनोंको मानवताके विकासकी दृष्टिसे अफ्रीकी स्त्रियों और बच्चोंको अपनाना चाहिये और अुनकी भी सेवा करनी चाहिये। अैसे नये कदम अुठानेमें बहनोंको पहले पहले संकोच होना स्वाभाविक है। परन्तु बहनोंके प्रधानतया हृदयधर्मी होनेके कारण वे अैसे कदम स्वाभाविक तौर पर बरदाश्त कर सकती हैं और अिस कामको आगे बढ़ानेमें अुन्हें कठिनाओी नहीं आती। जो बहनें शादी होते ही पतिके घरके अनजान लोगोंको अपना सकती हैं, अुनके

लिअे अिस देशकी स्त्रियों और वच्चोंको अपनानेकी वात मुश्किल न होनी चाहिये।

अिस तरह मोम्वासामें जो दिन वीते वड़े कीमती निकले।

थोड़ेमें कहा जा सकता है कि पूर्वी अफ्रीकाके अिस प्रवेशद्वारमें ही यहांके ज्यादातर सवालों और अुनके पीछे काम करनेवाली शक्तियोंका दर्शन हो गया और अिसलिअे खुली आंखों और जागरूक मनके साथ हम सारी यात्रा कर सके।

५

नैरोबी

नैरोबी केवल केनियाकी ही नहीं, वल्कि अेक तरहसे सारी व्रिटिश पूर्व अफ्रीकाकी राजधानी मानी जाती है।

मोम्बासा, टांगा, झांझीबार, दारेस्सलाम और लिंडी वगैरा स्थान समुद्रके किनारे होनेके कारण वहांकी हवा कुछ गरम रहती है। गोरे लोगोंको यह माफिक नहीं आती। हमारे यहांके लोग भी ठंडे प्रदेशमें थके विना जितना काम कर सकते हैं, अुतना गरम प्रदेशमें नहीं कर सकते। अफ्रीकामें जहां-जहां अच्छी ठंडी हवा है, वहीं गोरे लोगोंने कैसे भी अुपाय करके अुस जमीनको अपने कब्जेमें कर लिया है। हिन्दुस्तानमें भी महावलेश्वर, शिलांग, शिमला, दार्जिलिंग और चेरापूंजी वगैरा स्थान अंग्रेजोंने कैसी युक्ति और चालवाजीसे अधिकारमें लिअे थे, अिसका अितिहास भुलाया नहीं जा सकता।

अफ्रीकी महाद्वीपमें वसे हुअे गोरोंका केनिया मानो स्कॉटलैंड है। यहांके गोरोंके घमंडके अुदाहरण अितने प्रसिद्ध हैं कि अुसकी वात यहां फिर छेड़नेकी जरूरत नहीं। यहांके अफ्रीकी निवासियोंको भी यह ठंडा प्रदेश वहुत प्रिय होनेके कारण वे अंग्रेजोंको अिस कार्रवाअी और लूटके लिअे कभी माफ नहीं कर सकते। अफ्रीकामें सारी सत्ता ज्यों त्यों करके गोरोंके ही हाथमें रखनी चाहिये, अिस वारेमें अधिकसे अधिक

प्रयत्न करनेवाले गोरे अिस केनियामें ही हैं। और अिसलिअे दक्षिण अफ्रीकाके मलानकी नीतिके प्रति अुन्हें बड़ी सहानुभूति है।

मैंने देखा कि यहां जमीन लेकर बसे हुअे गोरोंके जबरदस्त असर तले होने पर भी केनियाके गोरे राजकर्मचारी अितने कट्टर नहीं हैं। अुनमें चाहे समझदारी अधिक हो या अिन्सानियत, वे कुछ और ही ढंगसे बोलते हैं। अंग्रेजोंके राष्ट्रीय नेता भी समय-समय पर केनियाके गोरे जमींदारोंसे कहते हैं कि पिछले महायुद्धके बादकी नअी दुनियामें अुनका घमंड अब चल नहीं सकता। फिर भी हम यह बात नहीं भूल सकते कि केनियाके गोरे जमींदार गैर-मामूली ताकत और असर दोनों रखते हैं।

अंग्रेज जहां जाते हैं वहां तमाम जमीन सुघड़ और सुंदर बनाते ही हैं। मकान, रास्ते, पानीकी सहूलियत, बिजली, फलफूलोंके बगीचे आदि तमाम सुविधायें वे बड़ी लगनसे पैदा करते हैं और जीवनको हर प्रकार सुखकर बनाते हैं।

हमारे यहांके लोगोंको अिस ढंगसे रहनेकी आदत नहीं होती। अच्छे-अच्छे मालदार लोग भी कुछ रुपयेके जोर और प्रतिष्ठाके लोभसे अैसी ही सुविधायें और अैशआरामके साधन पैदा तो करते हैं, परंतु अिस व्यवस्थाको वे कायमी नहीं रख सकते। अैसी स्थितिमें अगर अंग्रेज हमारे साथ रहें, तो कौनसी नीति अपनायें? म्युनिसिपैलिटीके कड़े कानून बनाकर अदालतकी मददसे अुन पर अमल करायें? या यह कहकर कि 'हमें अलग रहने दो, तुम्हें जैसी पसंद हो वैसी व्यवस्था अपने हिन्दुस्तानी विभागमें कर लो' आबादीके दो हिस्से कर लें? जिन लोगोंमें वर्णका अभिमान नहीं होता, वे पहली नीति पसंद करते हैं और अुससे पैदा होनेवाली तमाम मुश्किलें और कड़वाहट बरदाश्त कर लेते हैं। जब कि वे लोग, जिनके दिलोंमें भारतीयों और अफ्रीकी लोगोंके प्रति प्रबल तिरस्कार होता है और जो रोज अुठकर नअी-नअी कड़वाहट मोल लेनेमें विश्वास नहीं रखते, दूसरी नीति पसंद करते हैं। और आपसमें बातें करते हुअे हमेशा कहते हैं — 'Let these wretches stew themselves in their

own juice.' वर्णद्वेष अेक वार जगा कि रेलवेके अलग डिव्वे और ट्रामकी अलग वैठकें वगैरा व्यवस्था तक वह पहुंच ही जायगा।

अेक वात हमें स्वीकार करनी चाहिये कि हमारे यहांके लोग स्वच्छता और शुद्धिके नाम पर पानी वेहद काममें लेते हैं और जहां तहां कीचड़ कर डालते हैं और नंगे पैर चलनेके कारण जहां तहां गंदगी फैलाते हैं। हमारे भोजनालय, हमारे पाखाने और हमारे नहानेके कमरे जैसे होने चाहिये वैसे नहीं होते। वच्चोंकी किस तरह रक्षा की जाय और अुन्हें कैसे स्वच्छ रखा जाय, अुन्हें टट्टी कहां फिराया जाय आदि वातोंमें मध्यम वर्गकी स्त्रियां भी वड़ी लापरवाह होती हैं। समाजके नेता अैसी आदतोंके लिअे अपने लोगोंकी खानगी तौर पर वहुत निन्दा करते हैं। परंतु लोगोंके वीचमें जाकर अुन्हें धीरजसे समझानेका काम कोअी नहीं करता। अितना कहना काफी नहीं कि फलां रिवाज वुरा है। पुरानी आदतोंके वजाय अच्छी कौनसी आदतें डालनी चाहिये और नये ढंगसे सुघड़ता कायम रखनेके लिअे क्या क्या करना चाहिये और कौन कौनसी सुविधायें कायम करनी चाहिये, यह सव अुन्हें व्यौरेके साथ और कअी दफा समझाना चाहिये। अितना ही नहीं, वल्कि अच्छे अुदाहरणोंका पदार्थपाठ भी अुनके सामने पेश करना चाहिये। मनुष्य सुवह अुठकर रास्ते पर दतून करे और जोर-जोरसे आवाज करके गला साफ़ करे, तो यह समझनेमें हरगिज कठिनाअी नहीं आ सकती कि यह रिवाज असामाजिक है।

अैसे तमाम जरूरी सुधार सारी जातिमें जारी करनेके वजाय हमारे यहांके लोगोंने अंग्रेजोंकी पोशाक, अुनके खानपानके तरीके और अुनकी सामाजिक सभ्यताकी भाषा अपना ली। परिणामस्वरूप हम लोगोंमें अंग्रेजोंका अनुकरण करनेवाली अेक नअी जाति अुत्पन्न हो गअी है और रुपये-पैसेसे समर्थ होनेके कारण वाकीके समाजसे वह अलग रह सकती है। अिसमें से अनेक सामाजिक और आन्तर-सामाजिक पेचीदगियां पैदा हो गअी हैं, जिनका हल किसीने अभी तक नहीं ढूंढा।

हमने ता० २१ की शामको मोम्वासा छोड़ा। रातको गाड़ीमें डाअिनिंग कारमें हमने भोजन किया। गोरोंके वीचमें खाना खाते हुअे

हमें कोअी मुश्किल पेश नहीं आअी। हममें से ज्यादातर शाकाहारी थे, परन्तु अुनके बारेमें पहलेसे ही बाकायदा सूचनायें दे दी गअी थीं।

सवेरा होनेसे पहले हम केनियाकी अूंची भूमि (हाअी लैंड्स) पर पहुंच गये थे। ठंडी हवा मीठी चुटकियां ले रही थी और आसपासका अुपजाअू प्रदेश आंखोंको संतोष दे रहा था। मोम्बासा और नैरोबीके बीच अेक भी बड़ा स्टेशन नहीं है। हमने जब 'आथी' नदी पार की, तब मुझे आश्चर्य हुआ कि अितने छोटेसे प्रवाहको नदी कैसे कहते हैं। मैं तो अुसे प्रवाह या नाला कहते हुअे भी संकोच करूं।

नैरोबी पहुंचनेसे पहले ही हमारी ट्रेन वहांके अभयारण्य — नेशनल पार्क — में से गुजरी। अपने डिब्बेकी खिड़कीमें से हम कितने ही जानवरोंको देख सके। अप्पासाहबकी दृष्टि बहुत तेज होनेके कारण वे कितनी ही दूरके जानवरोंको झट देख लेते और हमें बताते। अिनमें 'अेन्टी-अेयरक्राफ्ट गन' जैसी लम्बी गरदनवाले जिराफ, अूंट या हंससे अुधार ली हुअी गर्दनवाले अुड़ना भूले हुअे शुतुर्मुर्ग, अपने सींगोंका अभिमान रखनेवाले हिरण आदि अनेक जानवर हमने देखे।

स्टेशन पर पहुंचते ही बरसातने हमारा शुभ स्वागत किया। हमें श्री तात्यासाहब अिनामदारके यहां ठहरना था। और वे खुद हमारे साथ थे अिसलिअे अुनकी पत्नी शकुन्तलाबहन और अुनकी लड़कियां हमें लेने स्टेशन पर आअी थीं। चि० सरोजका अेक पारसी बालमित्र श्री जाल कन्ट्राक्टर अुससे मिलनेके लिअे कभीसे तरस रहा था। वह भी स्टेशन पर आया। स्थानीय नेता तो सभी थे। स्टेशनकी जान-पहचान कितनी ही जरूरी हो, परन्तु अुपयोगी साबित नहीं होती। सौ पचास लोगोंके नाम जल्दी-जल्दी बोले हुअे सुने जायं और अुनके चेहरोंके क्षणिक चित्र अेकके बाद अेक आंखों द्वारा लिये जायं, तो यह सब किसी कामका नहीं होता। यह परिचय मेहमानोंके सिवा और सबके लिअे ही बड़े कामका होता है।

नरोबीमें अिस बार हम कुल ७ दिन रहे। अिन सात दिनोंमें कार्यक्रम अितना अधिक भरा हुआ था कि अुसे सारा याद रखना आसान नहीं। मन पर जो संस्कार पड़े, अुन सबकी दिमागमें मक्खनके

जैसी मुलायम खिचड़ी वन गअी। ये संस्मरण वहुत स्वादिष्ठ तो हैं, परन्तु अुन्हें अलग-अलग करना असंभव है।

राजधानीके अिस शहरमें वहुतसे युरोपियन मिले। यहांके गवर्नर सर फिलिप मिचेल होशियार आदमी हैं। साम्राज्यके प्रखर राजनीतिज्ञोंमें अिनकी गिनती होती है। परन्तु अिस समय वे छुट्टी पर गये हुअे थे। अुनका काम अुनके चीफ सेक्रेटरी संभालते थे। अुनकी मुलाकातके दौरानमें जो खास वात मेरे जाननेमें आअी, वह अफ्रीकाकी प्राकृतिक परेशानीके वारेमें थी। अुन्होंने कहा: "अफ्रीकाकी भूमि वहुत अुपजाअू है, परन्तु यहां पानीकी कमी सदा भुगतनी पड़ती है। यह कमी न होती तो यहां आजसे कअी गुनी आवादी रह सकती थी।" मैंने कहा: "आपके यहां वरसात कम नहीं पड़ती। अिस वरसातका पानी जगह-जगह तालावोंमें रोक रखा जाय, तो वहुतसी दिक्कतें दूर हो जायं। हिन्दुस्तानके पुराने राजा यही करते थे। नहरें खोदनेके वजाय अुन्होंने तालाव वनवाने पर अधिक ध्यान दिया था।" मेरी अिस सूचनाका विचार करते हुअे अुन्होंने जो कठिनाअियां वताअीं, अुन्हें मैं वरावर सुन न सका। वे साहव वहुत ही वारीक आवाजसे वोलते थे और मेरी कानकी मुश्किल छोटी-मोटी नहीं है। वहुत वर्षोंसे दाहिने कानसे सुन ही नहीं सकता और वायें कानसे जरा कम सुनाअी देता है। परिणाम-स्वरूप जहां वहुत लोग अिकट्ठे हुअे हों, वहां मुझे खूव संभलकर वैठना पड़ता है। मेरी यह चिंता रहती है कि दायीं तरफ कोअी महत्त्वका मनुष्य न वैठे; और सभा या भोजके व्यवस्थापक खास महत्त्वके लोगोंको मेरी दायीं तरफ विठाते हैं। परिणामस्वरूप मुझे कमरको टेढ़ी करके वायां कान आगे लाना पड़ता है। अिससे वायीं तरफ वैठनेवाले मनुष्यका तिरस्कारसा हो जाता है। कोअी परिचित हो तव तो चिंता नहीं होती, अन्यथा वड़ी परेशानी पैदा हो जाती है। हर मौके पर कितने लोगोंको समझाने वैठूं कि सुननेको कान मेरे पास अेक ही है! वातचीतमें भी व्याख्यानकी तरह जोर-जोरसे वोलनेवाले लोग दूसरे लोगोंको भले ही अटपटे मालूम होते हों, मेरे लिअे अुनका 'दाक्षिण्य' वड़ा सुविधाजनक होता है।

अेक अधिकारीने — बहुत करके वे यहांके न्यायाधीश होंगे — मध्य अेशिया और अफगानिस्तानकी तरफके अपने अनुभव कहे। अेक बार वहांके चोरोंने अुन्हें लूटा। वे अकेले और सामने बहुतसे डाकू थे, अिसलिअे अिन्होंने 'गांधीजीकी अहिंसक नीति' अपनायी। अुन्होंने चोरोंसे कहा: "मेरा सब कुछ ले लो, मगर मुझे सताओ मत।" बादमें अुन्होंने यह और कहा: "मुझे अपनी पतलून तो काममें लेने दोगे न?" चोरोंने मंजूर किया। फिर कहने लगे: "और मेरा टोप मेरे सिर पर न हो तो मुझे चक्कर आ जाय। तेज धूपसे मैं बीमार पड़ जाअूं। अिसलिअे मर्जी हो तो वह भी मुझे दे दो।" वह भी तय हो जानेके बाद चोर साहबको साथ ले गये। अिनकी सज्जनतासे वे अितने खुश हुअे कि अुन्होंने अिस गोरे मेहमानको अपने घर खानेके लिअे रख लिया और दूसरे दिन अुन्हें अपने प्रदेशकी सीमा तक सही सलामत पहुंचा दिया!

जिस गोरे अफसरके हाथमें हिन्दुस्तानी लोगोंकी शिक्षा है, अुसके साथ मेरी बहुत बातें हुअीं। वर्धा शिक्षाके स्वरूपके बारेमें हमने तफसीलसे बातें कीं। अप्पासाहबकी लगनके कारण कअी बार गोरों, थोड़ेसे अफ्रीकियों और हमारे भारतीयोंका मिलाजुला श्रोतृमंडल हमें मिलता था। अफ्रीकाकी भूमि पर तीनों महाद्वीपोंके सहयोगके विषयमें जब मैं बोलता, तब तीनोंको मेरी बात स्वागतके योग्य प्रतीत होती। परन्तु यह सहयोग असलमें तभी सिद्ध होगा, जब गोरे लोकशासक होनेका अपना अभिमान छोड़ दें और गौर वर्णकी महत्ता भूल जायं, हिन्दुस्तानके लोग अिस सहयोगके लिअे तभी योग्य होंगे, जब वे अपनेको केवल भारतके नहीं परन्तु अफ्रीकाके भी स्थायी निवासी मानें और अफ्रीकी लोगोंसे मित्रता पैदा करें तथा अफ्रीकी लोग आलस्य छोड़कर शिक्षामें तेजीसे आगे बढ़ें और अहिंसक शक्ति पैदा करके दिखा दें।

तीनों जातियोंके सहयोगकी संभावना बताते हुअे मैं कहता था कि अंग्रेज राष्ट्रने अिस दिशामें पहला कदम अुठाया है। हिन्दुस्तानकी पूरी आजादी स्वीकार करनेके बाद ब्रिटिश लोगोंने हिन्दुस्तानको (और अिसी तरह लंका और पाकिस्तानको भी) अपने कॉमन-

वेल्थमें समान हकोंके साथ अेक सदस्यके रूपमें शरीक होनेका निमंत्रण दिया। गांधीजीने हमारे देशको सलाह दी कि यह निमंत्रण स्वीकार करने लायक है। अब तक ब्रिटिश साम्राज्य या ब्रिटिश कॉमनवेल्थ सिर्फ ब्रिटिश लोगोंका — गोरे लोगोंका — अेक कौटुम्बिक साझा था। कनाडा, दक्षिण अफ्रीका, पूर्वी अफ्रीका, न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया सब जगह ब्रिटिश लोगोंका राज्य था। भिन्न जाति, भिन्न वर्ण, भिन्न देश और भिन्न संस्कृतिवाले लंका, पाकिस्तान और हिन्दुस्तानके लोगोंको अपने कॉमनवेल्थमें समान अधिकार देकर अुन्होंने अेक बड़ा कदम अुठाया है, जिसकी मिसाल आजकलके अितिहासमें कहीं भी नहीं मिलती। अब कॉमनवेल्थका बंधन नस्ल या वंशका बंधन नहीं परन्तु अेक प्रजासत्ताक आदर्शका बंधन है।

गोरी जातिका यह कदम आखिरी नहीं, परन्तु नव-संगठनका पहला कदम है। समय पाकर अिसमें नअी जातियों और नये राज्योंके शामिल होनेकी गुंजाअिश है। अैसा संगठन हिन्दुस्तानके अितिहासके अनुकूल है। अब जब हम स्वेच्छापूर्वक काफी विचार करके अिस कॉमनवेल्थमें शरीक हुअे हैं, तब हमें अिस कॉमनवेल्थके वफादार रहना चाहिये। वफादारीका यह अर्थ नहीं है कि अिसके स्याह-सफेद सभी कामोंमें हम अिसका साथ दें। वफादारीका सच्चा अर्थ यह है कि अिस कॉमनवेल्थके प्रति हम सदा मित्रभाव रखें, सच्चे अर्थमें और सच्चे रास्तेसे अुसकी अुन्नति चाहें और अच्छे कामोंमें अुसे मदद दें और अुसकी मदद लें।

शासकोंके साथ सद्भावपूर्ण बर्ताव रखना जैसे हमारा फर्ज है, वैसे ही और अुससे भी अधिक यहांके मूल निवासी अफ्रीकी लोगोंके साथ प्रेमपूर्वक सेवकके तौर पर बर्ताव करना हमारा कर्तव्य है। हम अिन लोगोंकी भाषा घरके नौकरोंको हुक्म देने भरको ही सीखते हैं, यह काफी नहीं। हमें अुनकी भाषा अितनी सीखनी चाहिये कि हम अुनके दुःख-सुखमें शरीक हो सकें, अुनके दुःखमें अुन्हें दिलासा दे सकें, अुनके सुखमें अुन्हें बढ़ावा दे सकें और आत्मोन्नतिके अुनके सारे प्रयत्नोंमें हम अुनके मददगार बन सकें। शिक्षाके मामलेमें हमें हर तरह

अुनका मददगार वनना चाहिये। हमारी दान-वृत्तिको अब हिन्दुस्तानकी ओर न वहाकर अुस प्रवाहको अपने वच्चों और अिस देशके वच्चोंकी अर्थात् अफ्रीकियोंकी शिक्षाकी ओर मोड़ना चाहिये, जिससे हमारा जीवन यहांके लोगोंको आशीर्वाद स्वरूप लगे और हमारी जड़ें यहांकी भूमिमें मजबूत हो जायं। हम न यहांके आदिम भूमिजन हैं और न यहांके शासक हैं। हम तो सेवाके द्वारा ही यहांके निवासी होनेका अपना अधिकार सावित कर सकते हैं। न संख्याके वल पर और न सत्ताके वल पर, परन्तु अपनी अुपयोगिताके वल पर ही हम अपनी शक्ति पैदा कर सकते हैं।

स्वतंत्र हिन्दुस्ताननें मित्रताकी निशानीके तौर पर और पड़ोसी धर्मके अेक अंगके रूपमें, अफ्रीकी विद्यार्थियोंको हिन्दुस्तानमें जाकर पढ़नेके लिअे चार छात्रवृत्तियां दी हैं। अिसी तरह यहां रहनेवाले भारतीयोंने और वारह छात्रवृत्तियां अफ्रीकियोंके लिअे दी हैं। अफ्रीकी लोग जानते हैं कि यह सव श्री अप्पासाहवके प्रयत्नसे हुआ है। अव जो खादी-विद्या सीखना चाहते हों, अुनके लिअे वर्धाके चरखा-संघने ६ छात्रवृत्तियां देनेका निश्चय किया है। और हिन्दुस्तान जाकर जो राष्ट्रभाषा सीखना चाहें, अुनके लिअे हिन्दुस्तानी प्रचार सभाकी तरफसे तीन छात्रवृत्तियां देनेकी मैंने घोषणा की। अैसी सक्रिय कारंवाअियोंके कारण ही यहांके अफ्रीकी लोग हिन्दुस्तानके प्रति सद्भाव और आशाकी दृष्टिसे देखने लगे हैं।

कुछ अंग्रेज यहां अफ्रीकी लोगोंको अब समझा रहे हैं कि, 'ये हिन्दुस्तानी लोग तुमसे मनमाना नफा लेते हैं और यह सारा नफा स्वदेश ले जाते हैं। ये जोंकें जव तक हैं तव तक तुम सिर अूंचा नहीं कर सकोगे।' यह वात सच है कि यहांके हमारे लोग कमानेके लिअे ही यहां आये थे, अिसलिअे जितना नफा खींचा जा सकता हो अुतना खींचते थे। जैसे अंग्रेज हिन्दुस्तानका रुपया विलायत ले जाते थे, अुसी तरह, भले ही थोड़ी मात्रामें सही, हमारे यहांके लोग यहांका रुपया स्वदेश ले जाते थे, यह वात भी सच है। हर साल हिन्दुस्तानसे कितने ही साधु और वहांकी संस्थाओंके प्रतिनिधि यहांसे मदद ले गये हैं।

परंतु हम लोगोंके संपर्कमें यहांके लोग बहुत कुछ सीखे भी हैं। अुन्होंने बढ़अी और दर्जी वगैराके छोटे-मोटे धंधे सीखे। रुअीकी खेती अुन्होंने सफलतापूर्वक बढ़ाअी। जहां अंग्रेज पहुंच भी न सके, अैसे दूर-दूरके जंगली अिलाकोंमें हम लोगोंने हिम्मतके साथ जाकर दुकानें खोलीं और अपने बालबच्चोंको ले जाकर जंगलके अफ्रीकियोंके बीच बस गये। कुछ जंगली लोगोंको अेक अेक शिलिंगमें अेक अेक पायजामा देकर हम लोगोंने अुन्हें अपनी नग्नता ढंकना सिखाया। और अब तो कुछ अफ्रीकी हम लोगोंके साथ रहकर दुकानें भी करने लगे हैं। हम लोग अुन्हें अपने मुनीमके रूपमें विश्वासपूर्वक रखते हैं और अिस प्रकार अुनकी और अपनी आमदनी बढ़ाते हैं। अगर हम लोग बदली हुअी परिस्थितिको पहचान कर अफ्रीकियोंकी जागृतिमें मददगार बनें, अपना लोभ कम कर दें और अफ्रीकियोंको अनेक प्रकारसे शिक्षित बनायें, तो हमारा यहां रहना सफल हो।

कुछ लोगोंने मुझे खानगीमें कहा: "आपकी बात हम शिरोधार्य करनेको तैयार हैं। यहांके लोगोंके लिअे हम भरसक करके रहेंगे। परन्तु हमारा अनुभव कहता है कि यहांके लोग बिलकुल कृतघ्न हैं। अुनके लिअे कितना भी कीजिये, तो भी समय पर आंख बदलते अुन्हें देर नहीं लगती।" मैं अुनसे कहता हूं कि यह बात सच निकली, तो भी मुझे अिससे जरा भी आश्चर्य नहीं होगा। जिनका देश लूटा गया है, जिन्हें पराबलम्बी और भयभीत दशामें हमेशा रहना पड़ता है, मध्यकालमें जिन्हें पकड़कर गुलाम बनाकर बेचा जाता था, अुनके लिअे कृतज्ञता भी कअी बार आत्मघातक सिद्ध होती है। हमारे यहां भी मुसलमानों और हरिजनोंके लिअे अैसी ही शिकायतें हम सुनते थे। मराठीमें 'गुलाम' शब्द बदमाश या अक्लमंदके अर्थमें अिस्तेमाल किया जाता था — कभी निंदाके तौर पर और कभी कद्रके रूपमें। यह बताता है कि गुलामोंको बदमाशी सीखे बगैर छुटकारा नहीं था। अेक बार अिन लोगोंको स्वावलम्बी बन जाने दीजिये, फिर देखिये अुनमें धीरे-धीरे अिन्सानियतके तमाम लक्षण प्रगट हो जायंगे।

परंतु मैं यह माननेके लिअे तैयार नहीं कि ये लोग कृतघ्न हैं। कितने धीरजसे वे गोरोंके तरह-तरहके अन्याय सहन करते आये हैं? हम अैरण लेकर सूअीका दान करें और अितने पर ही यह अुम्मीद रखें कि वे हमारे प्रति अुपकारवद्ध रहें, तो यह किस तरह ठीक माना जा सकता है? अब तक अुनकी रहन-सहन विलकुल सादी थी। संतोप अुनकी जीवन-पद्धतिका प्रधान गुण है। मिट्टी और फूसके झोंपड़ोंमें वे रहते हैं। अितने विशाल देशमें अुन्होंने अेक भी बड़ा मकान, मंदिर या राजमहल नहीं वनाया। मजदूरी लेकर काम करना अुनके स्वभावमें नहीं। अिन लोगोंको हमारे जैसे वना देनेके लिअे सरकारने अुन पर 'मुंड-कर' (Poll tax) लगा दिया है। कमायें तो ही वे सरकारके शिकंजेसे बच सकते हैं। अुनकी संतोषप्रधान संस्कृतिसे अुन्हें विचलित करनेके लिअे जहां अितने प्रयत्न हो रहे हों, वहां अुन लोगोंका जीवन स्वाभाविक रह ही नहीं सकता।

अितने अधिक मिशनरी अिनकी सेवा करते करते मर मिटते हैं। अुन्होंने कभी यह शिकायत नहीं की कि ये लोग कृतघ्न हैं। अिस्लामका और अीसाअी धर्मका स्वीकार करने पर भी अिन लोगोंमें किसी प्रकारकी कट्टरता नहीं आअी। अिन बातोंको समझनेके लिअे हमें समाजशास्त्रकी गहरी दृष्टि पैदा करनी चाहिये। और अुनके लिअे जो कुछ करें, वह सच्चे धर्मनिष्ठ बनकर निष्काम भावसे करना चाहिये। जहां ॠण चुकानेके लिअे सेवा करनेकी वात हो, वहां सामनेवाला कृतघ्न है या कृतज्ञ, यह देखा ही नहीं जाता; सद्‌गुणों पर किसी भी जातिका ठेका नहीं होता। जहां आत्मा है वहां तमाम सद्‌गुणोंका अुत्कर्ष होगा ही। अर्थात् समय पाकर।

नैरोबीके पास कोअी ३० मील दूर अेक अफ्रीकी नेता श्री पीटर कोअिनांगे रहते हैं। ये भाअी हाल हीमें हिन्दुस्तानका सब जगह दौरा करके आये हैं। भारत सरकारने अुनके लिअे सब सुविधायें कर दी थीं। हम अुनसे मिलने अुनके यहां गये। आदमी बड़ा पितृभक्त है। अुन्होंने अपने पिताका परिचय कराया। अुनकी ६ मातायें अपने-अपने बच्चोंके साथ अलग-अलग झोंपड़ियोंमें किस तरह रहती हैं, यह सब

अुन्होंने बताया। पीटर कोअिनांगेने अपनी किकूयू जातिके लिअे दो दो सौ पाठशालयें चलाअी हैं। सरकारसे वे मदद नहीं लेते। गोरोंकी नौकरी करने या सरकारी नौकरीमें स्थान प्राप्त करनेका अुद्देश्य न रखते हुअे अपनी जातिकी सेवा करनेकी योग्यता हासिल हो, अिस किस्मकी शिक्षा अिन पाठशालाओंमें दी जाती है। अुसी स्थान पर हमें अेक अफ्रीकी बहन मिली — वांजीकू। अुन्होंने कातना-बुनना सीखकर अपने कपड़े तैयार किये हैं। हम अुनके स्थान पर गये, तब अुन्होंने अेक हिन्दी पाठ पढ़कर सुनाया और अपनी लिखी हुअी थोड़ीसी हिन्दी भी दिखाअी!

पूर्व अफ्रीकामें हम लोगोंका सबसे बड़ा सवाल है आन्तरिक अेकताका। हिन्दू-मुस्लिम अेकता जो पहलेसे मौजूद थी, अुसे हमने अकारण तोड़ दिया और पराये लोगोंके सामने हम हंसीके पात्र बने। मैंने अुनसे कहा कि हिन्दुस्तानका पागलपन हिन्दुस्तानमें रहने दीजिये। यह मान लें कि वहां लड़नेका कारण था, तो भी वह कारण यहां नहीं है। अुदाहरणके लिअे मैंने कहा कि हिन्दुस्तान अुत्तर गोलार्धमें है, पूर्व अफ्रीक़ाका बड़ा भाग दक्षिण गोलार्धमें है। हिन्दुस्तानमें जब जाड़ा होता है, तब अिधर गर्मी होती है। वहां गर्मी हो, तब यहां सर्दी होती है। अैसी स्थितिमें हिन्दुस्तानमें जाड़ा होनेके कारण यहां गर्मी होने पर भी हम गर्म कपड़ा ओढकर बैठें और वहां गर्मी पड़नेकी खबर लगते ही यहां हम पंखा चलायें और ठंडके मारे कांपने लगें, अिसमें कोअी अर्थ है? यहां आपसमें लड़कर हम क्या ले लेंगे? मिलकर रहेंगे तो हिन्दुस्तानके लिअे अुदाहरण-स्वरूप बनेंगे। अेकता रखेंगे तो ही तीनों महाद्वीपोंके लोगोंके बीच भाअीचारा पैदा करनेकी कला हमारे हाथमें आयेगी। अिस प्रदेशमें रहनेवाले हमारे मुसलमान करीब सबके सब भारतके ही नागरिक हैं, पाकिस्तानी नहीं।

युरोपियन लोगोंके साथ बातें करते समय अेक सवाल हमसे बहुत बार पूछा जाता था।

हिन्दुस्तानमें कम्युनिज्म — साम्यवादका जोर बढ़नेकी कितनी संभावना है?

मैं अुनसे कहता था कि साम्यवादके लिअे हिन्दुस्तानमें जरा भी गुंजाअिश नहीं है, मगर अुसके खास कारण हैं। आप अंग्रेज लोगोंने समयानुसार हिन्दुस्तान छोड़नेका फैसला न किया होता, तो हमारे यहां साम्यवाद जरूर फूट निकलता। गांधीजीकी पैदा की हुअी हमारे देशकी अहिंसक शक्तिको आप पहचान सके, आपने अुसकी कद्र की और हमारी स्वतंत्रताको आपने मंजूर किया, अिसका हिन्दुस्तान पर भारी असर हुआ। आपके प्रति जो द्वेप था वह मिट ही गया, लोगोंको यह भी विश्वास हो गया कि गांधीजीके मार्गसे ही देशकी अुन्नति होगी।

और भी कारण हैं। जहां सामाजिक, वांशिक या आर्थिक अन्याय हैं और गरीबोंमें अुनसे मुक्त होनेकी आशा नष्ट हो जाती है, वहीं साम्यवाद फूट निकलता है। हमारे यहां हमने हजारों वर्प पुरानी छुआछूतको सपाटेसे नष्ट कर दिया और सामाजिक न्याय स्थापित किया। छोटे-बड़े असंख्य राजाओंने सिर परका मुकुट अुतार कर प्रजाके चरणोंमें रख दिया। जमींदारी प्रथाका भी अन्त करनेके लिअे हम तैयार हो गये हैं और जमींदार भी अुचित मुआवजा लेकर जमीन छोड़ देनेको तैयार हो गये हैं। और हरअेक बालिगको मताधिकार देकर दुनियामें बेमिसाल विशाल निर्वाचक मंडल हम लोगोंने तैयार किया है। अैसी-अैसी जबरदस्त कार्रवाअियोंके कारण लोगोंमें विश्वास जम गया है कि नेहरू सरकारके हाथों न्याय जरूर मिलेगा। अिसलिअे हमारे यहां साम्यवादके लिअे गुंजाअिश नहीं है। जिस-जिस जगह सरकारी अिन्तजाम ढीला था, वहां-वहां साम्यवादी लोग बखेड़ा कर सके। लोगोंमें सीधा प्रचार करके आनेवाले चुनावोंमें जीत जानेकी हिम्मत साम्यवादके पास होती, तो वह बखेड़े और धांधलबाजीकी झंझटमें हरगिज न पड़ता। जहां सामाजिक, वांशिक और आर्थिक न्याय होता है, वहां साम्यवादका डर नहीं रहता। साम्यवाद समूह-जीवनके रोगकी ही अेक निशानी है।

अेक दिन हमने कबेटे जाकर वहांकी सरकारी अुद्योगशाला देखी। अिस अुद्योगशालामें अफ्रीकी लड़कोंको बढ़अीगिरी, लुहारी, टीनका काम, राजका काम, बिजलीका काम, दर्जीका काम, मोचीका

काम वगैरा धंधे सिखाये जाते हैं। पाठ्यक्रम अेकसे तीन वर्षका रखा गया है। सभी छात्र लगनसे काम करते दिखाअी दिये। कामकी सफाअी भी अच्छी थी। शिक्षक सभी गोरे कारीगर थे। अैसा लगता था कि कुछ अच्छे शिक्षाकार भी होंगे। मैंने अेक आदमीसे खानगीमें पूछा कि, "क्या यह खयाल सच्चा है कि अफ्रीकी लड़के दूसरी जातियोंके विद्यार्थियोंसे वुद्धिमें कम या मंद होते हैं?" अुन्होंने जरा सोच कर कहा कि, "आम तौर पर यह वात सच है। परंतु जो होशियार होते हैं वे गैर-मामूली होशियार होते हैं। तीन सालकी शिक्षाके अंतमें सभी स्वावलंबी वन जाते हैं और अच्छे-अच्छे काम जुटा लेते हैं।"

पंजावसे आये हुअे सिक्ख लोगोंसे मैंने कहा कि कवेटे जैसी संस्थायें यहां वढ़ेंगी तो आपका काम यहां नहीं रहेगा। अभीसे अिन लोगोंको अपने कारखानोंमें काम देते जाअिये, ताकि अुनके और हमारे वीच प्रेम संवंध कायम रह सके। अगर हमें यह देश छोड़ना ही पड़े, तो हम यह संतोष लेकर जायं कि हम अिन लोगोंको स्वावलम्वी वनाकर ही जा रहे हैं, हम अिनका आशीर्वाद लेकर ही जा रहे हैं।

नैरोवीका अेक वड़ा आकर्षण है यहांके जंगली शिकारी जानवरोंका अभयारण्य। यह भाग खासा लम्वा चौड़ा ४० चौरस मीलका है। जहां-जहां घाटियां हैं वहां-वहां थोड़ेसे पेड़ हैं, वाकी सारा भाग घासका खुला मैदान है। अिस प्रदेशमें जानवरोंको मारने, छेड़ने या सतानेकी सख्त मनाही है। यह नियम सिर्फ मनुष्यों पर ही लागू है। जानवर आपसमें जंगलके कानूनकी रूसे जैसा चाहें वर्ताव कर सकते हैं। अेक जानवरसे दूसरे जानवरकी रक्षा करनेके लिअे भी मनुष्य जाति दखल नहीं दे सकती। अिस अरण्यमें सिंह हैं, परन्तु वे पेट भरने जितना ही शिकार करते हैं। सिंहको भूख न हो तो वह नजदीक आये हुअे जानवरको भी नहीं मारेगा। अिस अभयारण्यमें अनेक प्रकारके चतुष्पाद, श्वापद, सर्प जैसे अनेक सरीसृप और तरह-तरहके पक्षी रहते हैं। वहुत कोशिश करने पर भी अिस वार सिंह हमारे देखनेमें नहीं आया। वैसे, हिरण और गायके लक्षणोंवाले वुद्दू नामक जानवर, 'जिव्रा' नामसे परिचित चित्राश्व,

जिराफ वगैरा अनेक पशु हमें देखनेको मिले। अेक हिप्पोको हमने कीचड़में लोटपोट होते देखा। असंख्य प्रकारके हिरण यहां घूम रहे थे। सिंहके होनेसे वे अुदास नहीं थे। शुतुर्मुर्ग जब नीचा सिर किये चरते हों, तब पहचानना मुश्किल होता है। परन्तु जब वे सिर अुठा कर अिधर अुधर देखने लगें, तब अुनका गर्व देखने लायक होता है। वे अिस ढंगसे दौड़ते हैं मानो अपने पांखोंके नीचे भारी कीमती माल छिपा रखा हो!

नेशनल पार्कमें मोटरमें बैठकर दौड़नेमें हमें अपनी कुतुहल वृत्ति ही प्रेरक होती थी। परन्तु भाअी सूर्यकान्त जैसे हमारे मेजबानोंको, जो असंख्य बार सारा पार्क रौंद चुके थे, हमारे संतोषका ही संतोष था। अुनसे अिन जंगली जानवरोंकी खासियतें सुनते और पुराने प्रसंगोंका रसपूर्ण वर्णन किये जाते समय हमारा आनन्द द्विगुणित हो जाता था। मेरे खयालसे अिन वर्णनोंके बिना पशु-दर्शन ज्यादातर फीका ही रहता।

वापस लौटते समय हमें जो बन्दर दिखाअी दिये, अुनकी हस्ती तमाम जानवरोंमें अलग ही मालूम होती थी। मनुष्यको नजदीक देखकर सभी जानवर हट जाते हैं; परन्तु बन्दर मानो हमें देखकर आलोचना करते हों और हमें तुच्छ समझते हों, अैसा मुंह बनाकर ही हटते हैं।

हमें कअी तरहके जानवरोंको वन्य दशामें देखनेसे आनन्द होता है। देश-देशान्तरके और तरह तरहके मनुष्योंको अिस प्रकार आकर अपना दर्शन देते हुअे देखकर श्वापदोंको क्या खयाल होता होगा? अभयारण्यमें आनेवाले सभी मनुष्य सज्जन और तृप्त होते हैं, कोअी हमें मारता नहीं, यह देखकर भी अुन्हें आश्चर्य होता होगा।

अरण्यवासी श्वापदोंका जीवन देखकर मेरे मनमें अेक विचार आया। सलामती और शांति प्राप्त करनेके लिअे मनुष्यने सामूहिक जीवनका संगठन किया। राज्य-व्यवस्थाकी स्थापना की। राजा, न्यायाधीश, सेनापति, सेनाअें और पुलिस खड़ी की। लोगों पर जबरदस्त कर लगाया। अनेक कानून बनाये, व्यक्तिकी स्वतंत्रता

पर प्रहार किये, फिर भी हम कितनी हिंसा टाल सके? कितनी शांति स्थापित कर सके? अिन पशुओंकी तरह मनुष्य भी वन्य और अराजक दशामें रहे होते, तो क्या आजसे ज्यादा भयभीत हालतमें रहे होते? हमें समझाया जाता है कि आज जितनी मारकाट होती है, मारपीट और लूट होती है, वह अराजक स्थितिकी अपेक्षा बहुत कम है। परन्तु समय-समय पर जो भीषण और अति भीषण युद्ध सहन करने पड़ते हैं और अुनमें जो मनुष्य-हत्या, लूटमार और बर्बादी की जाती है अुसका हिसाब लगायें, तो यही कहना पड़ेगा कि राज्यतंत्र स्थापित करके मनुष्य-हत्या अधिक ही हुअी है। और न्याय-व्यवस्थाका विचार करने पर भी यह नहीं कहा जा सकता कि अराजक स्थिति कम संतोषजनक है। मनुष्यके हृदयमें जो स्वाभाविक न्यायबुद्धि है, अुसकी अपेक्षा पुलिस और न्यायमंदिरों द्वारा मनुष्य-जातिको अधिक न्याय मिलता है, यह मानना भी कठिन है। अभयारण्यमें पशु-पक्षियोंको विश्वासपूर्वक रहते, चरते और फिरते देखकर मुझे तो विश्वास हो गया कि मनुष्य-समाजसे अिसी जगह पर निर्भयता अधिक है। और किसी भी जातिकी संख्या बढ़ जाय, तो अुसका अिलाज भी वन्य जीवनमें अपने आप किया हुआ होता है। डार्विनका जीवन कलहका सिद्धान्त और प्रिंस क्रोपॉटकिनका परस्पर सहयोगका सिद्धान्त दोनों जान लेनेके बाद मनुष्यको अेक बार वन्य जीवन और मानवीय राज्य-जीवनका फिर नये सिरेसे विचार करना चाहिये।

* * *

देवताओंका जन्म कब हुआ और किस ढंगसे हुआ, अिसका विचार करनेवाले अपने पूर्वजोंके मानसिक पराक्रमसे जैसे हम विस्मित और चकित होते हैं, अुसी तरह अिस पृथ्वीकी रचना या महासागर और विशाल महाद्वीपोंकी रचनाकी भी कल्पना करनेवाले और अुसके लिअे विज्ञानका सबूत पेश करनेवाले विद्वानोंकी कल्पनाशक्ति और हिम्मत हमें आश्चर्य-चकित कर डालती है।

अफ्रीका महाद्वीप छोटा-मोटा देश नहीं है। अुसका सिर लगभग पांच हजार मील चौड़ा है और अुसका अुत्तरी दक्षिणी विस्तार अिससे

जरा अधिक है। अिस महाद्वीपकी रचना किस प्रकार हुअी होगी, अिसका विचार करते समय जैसे सहारा और कलाहारीके दो रेगिस्तानोंका विचार करना पड़ता है, अुसी प्रकार पूर्व अफ्रीकाकी जमीनमें जो प्रचंड ददारें पड़ी हैं अुनका भी विचार करना पड़ता है। सैकड़ों मील लम्बी, ४० से ६० मील तक चौड़ी और डेढ़से ढाअी हजार फुट गहरी दो दरारें—'रिफ्ट्स' किस तरह पैदा हुअी होंगी, अिसकी कल्पना अनेक भूगर्भ-शास्त्री करते हैं। किसीका मानना है कि हिन्द महासागरके पूर्वी किनारे परका दवाव किसी भी कारणसे घट जानेसे ये दरारें पैदा हुअी हैं। दूसरे लोग कहते हैं कि ज्वालामुखीके फटने और पृथ्वीकी सतहमें कोअी गड़वड़ होनेसे ये दरारें अुत्पन्न हो पाअी हैं। कुछ भी हो, ये दरारें आज असली रूपमें नहीं हैं। समय-समय पर ज्वालामुखियोंके फटनेसे हरअेक दरारके टुकड़े हो गये हैं। आलबर्ट अेडवर्ड, कीव्हू, टांगानिका, रुकवा और न्यान्जा वगैरा तमाम सरोवर मिलकर अेक दरार थी। दूसरी तरफ पूर्वी दरार अियासी, नेट्रन, मागड़ी, नैवाशा, हेनिंगटन, वेरिंगो और रुडोल्फ वगैरा सरोवरोंसे लगाकर लाल समुद्र होती हुअी फिलस्तीनके मृत समुद्र तक जाती है। और अिन दो दरारोंके चिमटेके वीच पकड़ा हुआ हो, अिस प्रकार विक्टोरिया (अमृत) सरोवर युगान्डा और केनियाके वीच विराजमान है।

अिस पूर्वी दरारका कुछ भाग समतल होनेसे अिसमें मनुष्य और प्राणियोंकी वड़ी आबादी समाअी हुअी है। अिसे देखनेका मौका कैसे छोड़ा जाता? पिछले युद्धके अिटैलियन कैदियोंसे नैरोबीके आसपास वहुतसे रास्ते तैयार कराये गये। अिस रास्ते दरारकी अेक किनारी पर हम अुतर गये और वहांसे कोअी ३० मील दूर स्थित सामनेकी किनारी और वीचकी तलहटीमें अुभरी हुअी कुछ मृत ज्वालामुखीकी पहाड़ियां हम देख सके। कुछ लाख वर्ष पहले जव यह दरार पहले-पहल पड़ी तव कितनी वड़ी आवाज हुअी होगी, अिसकी कल्पना करने पर काल-वुद्धिने कहा कि अुस समयकी आवाज सुननेके लिअे न कोअी मनुष्य था, न कोअी जानवर। भयानक नभो-विदारक शव्द हुआ होगा परन्तु डरनेके लिअे वहां कोअी था ही नहीं! आवाज हुअी और

वह अनन्त आकाशमें विलीन हो गअी। आसपासकी जड़ सृष्टिने मूल शब्दकी प्रतिध्वनियां बरदाश्त की होंगी। और वे भी अनन्त आकाशमें विलीन हो गअी होंगी। आज अिस दरारके केवल अवशेष ही रह गये हैं और अुनमें वनस्पति-सृष्टि, पशु-सृष्टि और मनुष्य-सृष्टि अपने अपने जीवनका आनन्द लेने लगी हैं। अिस 'रिफ्ट' का दृश्य सचमुच भव्य है। भूगर्भ-शास्त्रकी जिसे थोड़ीसी भी कल्पना और दिलचस्पी है, अुसकी कल्पनाके लिअे यह दृश्य बड़ा ही अुत्तेजक है।

दूसरे दिन अिस दरारके दूसरे प्रदेशमें हम पुराना अुत्खनन देखने गये। अिस स्थानको 'ओरलेगोसाअिली' कहते हैं। वहां अेक प्राचीन सरोवरकी तलहटी दस दस हजार वर्षमें कैसे भरती गअी और अुस समयके जानवरोंकी हड्डियां किस प्रकार छोटी बड़ी होती गअीं, यह हमने जान लिया।

मिट्टीके, ज्वालामुखीकी राखके, रेतके और हड्डियोंके जो अलग-अलग पर्त अेक पर अेक जमते हैं, अुनका हिसाब करके प्राग्-अैतिहासिक बातोंका कालक्रम तय किया जाता है। हमें सब कुछ समझानेवाले भाअी कहते थे कि बीचमें दस हजार वर्ष तक बरसातकी अेक बूंद तक नहीं पड़ पाअी। परिणामस्वरूप सारी प्राणी-सृष्टि मर गअी। अुसके बाद जब नअी सृष्टि पैदा हुअी तब फिरसे जानवर पैदा हुअे और जैसे-जैसे खुराककी कमी दूर होती गयी, वे प्राणी बड़े भी होते गये।

अैसी जगह जो प्राचीन अवशेष अथवा अुनके 'फोसिल' मिलते हैं, अुन्हें अुठा कर ले जाना अपराध है या नहीं? साधारण मनुष्य अिन अवशेषोंका कोअी भी अुपयोग नहीं कर सकते। निरर्थक कुतूहल तृप्त करनेके लिअे अैसे प्राग्-अैतिहासिक महत्त्वकी सामग्री अुठा कर ले जाना मानवी ज्ञानके प्रति महाद्रोह है। संबंधित देशोंकी सरकारोंको अैसी तमाम सामग्री संभाल कर रखनी चाहिये और दुनियाके समर्थ विद्वानोंकी अन्तर्राष्ट्रीय जातिको अिस सामग्रीका अुपयोग करनेकी छूट देनी चाहिये।

अिस प्रदेशमें जाते और आते रास्तेमें हमने तरह-तरहके अनेक श्वापद देखे। अुनमें भी खास तौर पर जो जिराफ बिलकुल नजदीकसे

देखनेको मिले, अुनकी शान भुलाअी नहीं जा सकती। अुनके सिरके सींग अितने छोटे होते हैं, मानो बायनोक्यूलर चश्मेकी तरह आंखोंके अूपरसे सिर पर चढ़ा दिये गये हों! जिराफ प्राणी अितना अूंचा और लम्बग्रीव होता है, परन्तु अुसके चेहरे परसे अैसा नहीं लगता कि खुद अुसे यह अटपटा लगता हो। क्या अिन जानवरोंको सचमुच अपने पूर्वजोंके हजारों वर्षके अितिहासका पता होगा? काल भगवानके अुदरमें प्रवेश करके कल्पनाकी नजरसे देखनेकी शक्ति मनुष्य-जातिके पास ही है। बाकीके प्राणियोंके लिअे वर्तमान काल ही सत्य होता है। भूत और भविष्य काल अुनके लिअे मायाकी तरह ही होगा। और अिसलिअे वे निश्चिन्त होकर प्राचीन अवशेषोंके बीच भी चल सकते हैं।

'रिफ्ट' वेली और ओरलेगोसाअिली, अिन दो स्थानोंके दर्शनसे ताजी हुअी जिज्ञासाको लेकर हम नैरोबीका 'कॉरिन्डन' म्यूजियम देखने और खास तौर पर अुसे अनेक प्रकारसे सजा कर अुपयुक्त बनानेवाले विद्वान डॉक्टर लेकीसे मिलने गये।

मैंने सुना कि अिसी म्यूजियममें अेक गांधी विभाग खोलनेवाले हैं, मगर अभी तक मैंने यह नहीं पूछा कि अिसमें क्या क्या रखा जायगा और अुसकी व्यवस्था कैसी होगी? गांधी म्यूजियम मेरा क्षेत्र होनेसे अिस कल्पनाके प्रेरकोंसे मिलकर अुसकी तफसील जान लूंगा।

नैरोबीका कॉरिन्डन म्यूजियम सामान्य संग्रहालय नहीं है। अुसमें सारे अफ्रीका महाद्वीपका रहस्य प्रगट हुआ है। डॉक्टर लेकी दुनियाके अेक प्रखर भूगर्भ-शास्त्री हैं। अुन्होंने बड़े-बड़े शोध किये हैं। अुन्होंने अफ्रीका महाद्वीपका लाखों और करोड़ों वर्षका अितिहास अनेक अुत्खननोंमें से खोज निकाला है। केवल मनुष्योंके ही नहीं, परन्तु छोटे बड़े असंख्य प्राणियोंके अितिहासका श्रेय आज अुन्हींको है। खुदाअी करते करते अुन्हें कुछ खोपड़ियां अैसी मिली हैं कि जो बन्दर और मनुष्यके बीचकी कड़ी पूरी कर देती हैं। बड़े अभिमानके साथ अुन्होंने वह खोपड़ी आलमारीसे निकाल कर हमारे हाथमें रखी और हमें बताने लगे: "देखिये, यह आंखके अूपरकी भौंहकी अुभर आअी हुअी हड्डी . . . । यह देखिये मनुष्यका मस्तिष्क समा जाय अैसा अिस

खोपड़ीका वड़ा पोलापन।" वातों ही वातोंमें अेक चित्रकी तरफ अुंगली दिखाकर अुन्होंने कहा कि: "यह जो वंशवृक्ष मैंने तैयार किया है, अिसके लिअे कुछ जानकारी हिन्दुस्तानसे ही मिल सकती है। अपने हिन्दुस्तानके भूस्तर-शास्त्रियोंसे कहिये कि अिसमें मेरी मदद करें, क्योंकि यह काम सारी मानव-जातिका है।"

मैंने अुनसे कहा: "आप जो चाहते हैं अुस वातकी खोज हिमालयसे पहलेकी शिवालिक पहाड़ियोंमें ही हो सकती है।" "मैं भी यही मानता हूं" अुन्होंने अनुमोदन किया। यही चर्चा आगे चलने पर मैंने कहा: "मेरे जन्मसे पहले व्रूसफुट नामक अेक भूगर्भ-शास्त्री दक्षिण भारतमें दौरा करता था। अुसे अेक राक्षसी मनुष्यका जवड़ा मिला था। मेरे पिताजीने अुस जवड़ेका जो फोटो लिया था वह मैंने देखा था।"

"व्रूसफुटका नाम मैंने सुना है। अुनको जो जवड़ा मिला था, वह अव कहां होगा?" अुन्होंने मुझे पूछा। मैंने कहा कि, "अुस समय मेरा जन्म भी नहीं हुआ था। शायद मद्रास म्यूजियममें वह पड़ा होगा। छुटपनमें वह फोटो मेरे पास था। वहुत लोगोंने अुसे देखा है।"

डॉ० लेकीने कहा कि "मनुष्य शरीरसे वड़ा हो या छोटा, यह सव खुराक पर निर्भर करता है। गेंडा या हिप्पो जैसा प्राणी भी खुराककी कमीके कारण दस वीस हजार वर्षके भीतर चूहे जैसा छोटा वन जाता है।"

दो-अेक घंटे हमारी वातें हुअीं। अुस वीच अरण्योंके सिलसिलेमें वनस्पतिशास्त्र, तितलियोंका शास्त्र, प्रकृतिमें होनेवाली 'मिमिक्री', पशुपक्षियोंके प्रकार वगैरा कितने ही विषय आ गये। साहवका काम करनेका कमरा देखने लायक था। पुस्तकों, रिपोर्टों, नोटवुकों और तसवीरों आदि अनेक वस्तुओंके ढेर जहां तहां पड़े हुअे थे! अुनके कपड़ोंका भी ठिकाना नहीं था। सारे समय अपने काममें मस्त, और कुछ अुन्हें सूझता ही नहीं था। अपने शास्त्रमें अखंडरूपसे रमे रहते थे। जिस जातिमें अैसे मस्त लोग पैदा होते हैं, अुस जातिका मुख सदा अुज्ज्वल रहेगा।

म्यूजियमकी रचना विचारपूर्वक की गअी थी। भिन्न-भिन्न जातिके जानवर अपने स्वाभाविक वातावरणमें रखे गये थे। यह देखकर मुझे बंबअीका प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम याद आ गया। मैं मानता हूं कि हरअेक देशके मुख्य-मुख्य म्यूजियमोंके वस्तुपालोंको सरकारी खर्चसे दूसरे बड़े-बड़े म्यूजियम देखने भेजना चाहिये। और अुनसे अैसा साहित्य तैयार कराना चाहिये, जिसे साधारण आदमी समझ सकें।

अेक दिन भाअी सूर्यकान्तने मुझे आकर पूछा: "काकासाहब, आपने यहांका किकूयू सरोवर देखा है?" मैंने कहा: "नहीं, मेरे सामने किसीने अुसकी बात तक नहीं की।" "आपको अुसे खास तौर पर देखना चाहिये। अूपर जमीन है और नीचे सरोवर है। आप अुस पर चल सकते हैं। परन्तु वह जमीन अिस तरह झूलती है जैसे रबरकी बनी हो।"

मुझे बंबअीकी मलबार हिल परका हैंगिंग गार्डन याद आ गया। अितनी तो मैं कल्पना कर ही सका कि किकूयू सरोवरमें अुससे अधिक विशेषता होगी, परन्तु अुसकी स्पष्ट कल्पना नहीं हुअी। अेक सुबह सूर्यकान्तभाअी हमें वहां ले गये। किकूयू स्टेशनसे वह अेक फर्लांग भी दूर नहीं होगा, परन्तु नैरोबीसे वह ग्यारह मील दूर है। वहां जाते हुअे रास्तेमें हमें किलिमांजारो पहाड़के सुन्दर शिखरके स्पष्ट दर्शन हुअे। दो-तीन दिन पहले युनाअिटेड केनिया क्लबमें प्रवेश करनेसे पहले श्री अप्पा-साहब अपनी मोटरमें मुझे जल्दीसे ले गये थे और अुन्होंने मुझे सूर्यास्तके गेरुआ रंगसे रंगा हुआ किलिमांजारोका शिखर बताया था। दो-तीन मिनिट देखा होगा कि अितनेमें सूर्यनारायणने अपनी किरण-कृपा समेट ली और अुसी क्षण शिखरकी शोभा विलीन हो गअी।

आज बढ़ते हुअे प्रकाशमें किलिमांजारोके शिखरका दर्शन हमने जी भर कर किया। बड़े हाथीकी पीठ हो या किसी औलियाका कमंडल औंधा रख दिया गया हो, अिस तरह वह शिखर शोभा दे रहा था। हमारे देशमें पर्वत-शिखरोंकी कमी नहीं है। और कितने ही शिखर तो बहुत ही सुन्दर होते हैं। परन्तु किलिमांजारो तो किलिमांजारो ही है।

हम किकूयू पहुंचे और सरोवरके किनारे मोटरसे अुतरे। किसी बड़े विशाल तालावका पानी सूख गया हो और अुसकी तहके कीचड़में काअी और घास अुग आअी हो, अैसा दृश्य था। श्री सूर्यकान्तभाअीने कहा कि, "अिस जमीनके नीचे पानी है। अुस कोनेमें जो पंप दिखाअी देता है अुसकी मददसे अिस तालावका पानी खींचकर नैरोवीके कुछ भागोंको पानी दिया जाता है। अितना पानी खिचता है, तो भी तालावका पानी खूटता नहीं।"

डरते-डरते हमने तालावके अूपरकी जमीन पर पैर रखा और आगे चले। जमीन लव-लव-लव हिलने लगी। हमें लगता कि पैरोंकी नीचेकी जमीन अव फट जायगी और पैर पानीमें चले जायंगे। कहीं-कहीं पैर दो अिंच अिस तरह अंदर भी चले जाते जैसे कीचड़में फंस गये हों। हम चलते-चलते सरोवरके वीच तक गये और वाअीं तरफ मुड़ कर वापस आ गये। बीच-बीचमें छोटे-छोटे कुअें जैसे खड्डे थे, जिनमें से नीचेका पानी दिखाअी देता था। पानीके अूपरकी जमीनकी तह आठ नौ अिंचसे ज्यादा मोटी नहीं होगी। सूर्यकान्तभाअीने अेक लोकोक्ति सुनाअी कि पुराने जमानेमें कुछ अफ्रीकी लड़के अिनामकी लालचसे अेक किनारे पर पानीमें डुवकी मार कर सरोवरके अंदरसे तैरते-तैरते दूसरे किनारे पर आ जाते थे। अितनी देर सांस रोक कर तैरना आसान बात नहीं थी। अेक वार अेक लड़का अिसी तरह डुवकी मार कर गया। वह शायद अंदरके जालमें फंस गया होगा या अुसका दम टूट गया होगा। वह अूपर आया ही नहीं। तवसे सरोवरमें अिस तरह डुवकी लगानेकी मनाही कर दी गअी है।

सरोवरका आकार टेढ़ामेढ़ा तिकोना है। अिसे कुदरतका अेक चमत्कार कहा जा सकता है। सरोवरोंका स्वभाव अपना मुख अुज्ज्वल और शांत रखकर आकाशके अनंत तारोंको प्रतिविम्वित करनेका होता है। यह स्वभाव छोड़कर घास-मिट्टीका घूंघट निकालना अिस सरोवरको कहांसे सूझा? या आसपासकी पहाड़ियोंने सासपन चला कर अिस वेचारी लड़कीको अिस तरह घूंघट निकालनेको

मजबूर किया होगा? क्या यह लड़की अितनी ज्यादा अुच्छृंखल थी कि और किसी भी सरोवरको नहीं और अिसको पर्दा करना पड़ा?

दोपहरको लंच और रातको डिनर और बीच-बीचमें चाय-नाश्ताका हमारा रोजमर्राका क्रम था। कहीं हम यह न भूल जायं कि हम हिन्दुस्तानसे आये हुअे 'बड़े आदमी' हैं, अिसलिअे यह सारी व्यवस्था थी। हर बार हमें कुछ न कुछ बोलना पड़ता था। श्री अप्पासाहबने कह रखा था कि हर जगह नये-नये लोग आते हैं, अिसलिअे आप अपना संदेश अुन्हें देनेके लिअे अेक ही रिकार्ड चलाते रहें तो भी हर्ज नहीं। मगर मुझे यह आता नहीं। चीज भले अेक ही हो, परन्तु नये लोगोंको देखकर अुस चीजको नये ढंगसे पेश करनेकी अिच्छा होती है। और कुछ लोग तो सब जगह हमारे साथ होते ही थे। अुन्हें अेक ही चीज, अेक ही भाषामें बार-बार सुननी पड़े यह भी मुझे अटपटा लगता था। परन्तु प्रचारकोंको अिस मामलेमें ढीठ बनना ही पड़ता है। किसी भी शोभा या शृंगारके बिना अपनी बात लोगोंके सामने सीधी रखनेकी कला गांधीजीने पैदा करके दिखा दी। परन्तु अिस सादगीमें भी अुनका अनुकरण करना आसान नहीं। मैंने निश्चय किया कि अपने विचारों संबंधी अपनी अुत्कटता पर विश्वास रखकर समय पर जो सूझे वही बोल दिया जाय।

अेक बार मुझे खास विषय दिया गया Non-Violence in Peace and War — शांतिकाल और युद्धकाल दोनोंमें अहिंसाका पालन।

विषय जरा विचित्र जरूर था। कुछ लोगोंका खयाल है कि युद्ध शुरू कर देनेके बाद अहिंसाकी गुंजाअिश ही कहां है? Non-Violence in War — युद्धमें अहिंसा परस्पर-विरोधी चीज है।

अुधर कुछ दूसरे लोग कहते हैं कि जहां हिंसा हो रही हो, वहीं अहिंसाके प्रचारकी गुंजाअिश है। शांतिके दिनोंमें सभी लोग अहिंसक होते हैं। शांतिका अर्थ ही यह है। तब शांतिके दिनोंमें अहिंसाके पालन या प्रचारका अर्थ क्या?

असलमें मनुष्य-जीवन आज अितना कृत्रिम बन गया है कि युद्धके दिन हों या शांतिके दिन हों, शांतिकी साधना अुग्र या अुत्कट रूपमें करनी पड़ती है।

गांधीजीकी अहिंसा कायरोंकी अहिंसा नहीं है। असलमें गांधीजीने कोअी खास बात सिखाअी है, तो वह पूर्ण अहिंसावाला तेजस्वी प्रतिकार है। युद्धके अेवजमें सफलतापूर्वक अिस्तेमाल की जा सकनेवाली अहिंसा ही गांधीजीका सत्याग्रह है। लड़ाअीमें भाग लेनेवाले बहादुर लोग खुद मरनेको तैयार होते हैं और सामनेवाले आदमियोंको मारनेकी कोशिश करते हैं। मरनेकी तैयारी रखना सत्याग्रहीका काम है, मारनेकी तैयारी करना जल्लादका काम है। सत्याग्रही और जल्लाद अेकत्र होकर क्षत्रिय वीर बनते हैं। अिस क्षात्रधर्मका गांधीजीने शुद्धीकरण किया। जल्लादको निकाल दिया और शुद्ध सत्याग्रहीको रख लिया। अिसीका नाम है Non-Violence in War.

परन्तु रोज अुठकर सत्याग्रहका हथियार नहीं चलाना पड़ता। सत्याग्रह हो या हत्याग्रह, दोनोंका प्रसंग ही न आये अैसा निष्पाप जीवन बितानेका नाम है Non-Violence in Peace अिसके लिअे मनुष्य-जातिको अपना सारा जीवनक्रम ही बदलनेकी जरूरत है।

आज हमारा जीवन अन्याय, अत्याचार और द्वेष पर आधारित है। सामाजिक अूंच-नीचपन और अपने-परायेका भाव, आर्थिक बंटवारेमें असमानता, राजनीतिक निरंकुशता और वांशिक तिरस्कार — 'रेस हेट्रेड' — मानव-जीवनके मुख्य दोष हैं। जब तक ये दोष बने हुअे हैं, तब तक हिंसाके लिअे स्थान रहेगा ही।

अेक बार कुछ विदेशी लोग साबरमतीमें गांधीजीसे मिलने आये थे। बहुत करके युद्धविरोधी शांतिवादी होंगे। गांधीजीने अुनसे कहा कि युद्धोंसे मैं घबराता नहीं। युद्धोंमें किया जानेवाला रक्तपात मुख्य हिंसा नहीं है। युरोप, अमरीकाका दैनिक जीवन ही हिंसा पर अवलंबित है। सामाजिक और आर्थिक अन्याय हदसे बढ़ जाता है, तब युद्ध फट पड़ते हैं। जैसे मनुष्यको बुखार आता है। अैसी हालतमें बुखार बीमारी नहीं होता, परन्तु हाजमा और खून बिगड़ जानेकी निशानी

होता है। अिसी तरह जब सामाजिक न्याय और सामंजस्य बिगड़ता है, तब अुसके चिह्नस्वरूप युद्ध फूट निकलते हैं।

मनुष्य मनुष्य-जातिको चूसता है, निचोड़ता है, जबरदस्त आदमी गरीब आदमी पर अपनी हुकूमत चलाता है, यही असली हिंसा है। अिसे हम मिटा सकें और अपना जीवन स्वावलम्बी और निष्पाप बना लें तो युद्ध करने ही न पड़ें। जहां कोअी किसीको निचोड़ता नहीं, वहां जबरदस्त और जेरदस्तका भेद मिट जाता है। अत्यंत गरीबी और अत्यंत अमीरी अेक ही साथ चलती हैं। अगर हम समाजमें से गरीबीकी जड़ अुखाड़ दें, तो अमर्यादित अमीरी अपने आप गायब हो जायगी। मेरी शिक्षा यह है कि अन्यायका प्रतिकार करके न्यायकी स्थापना करनेके लिअे हम हिंसाको काममें लेना छोड़ दें और अहिंसक सत्याग्रहको अपना लें। और साथ ही साथ हम अपने जीवनमें अैसा फेरबदल कर लें कि न हम क़िसीको लूटें और न कोअी हमें लूट सके। अैसा जीवन बितानेके लिअे हमें भोग-तृष्णाका संयम करना चाहिये। विलासकी वस्तुओंके पीछे पड़ना छोड़ देना चाहिये। किसी भी चीजको काममें लानेसे पहले हमें विचार करना चाहिये कि अिस चीजको तैयार करनेमें अिन्सानकी कितनी मेहनत खर्च हुअी है और यह भी सोचना चाहिये कि अिस चीजके तैयार करने और जुटानेमें कितना पाप अिकट्ठा हुआ है।

दुनियाके लोग जीवनका मानदंड — स्टैन्डर्ड ऑफ लिविंग — अूंचा करनेकी कोशिश कर रहे हैं। परन्तु भौतिक मानदंड अूंचा करनेमें वे नैतिक मानदंड — मॉरल स्टैन्डर्ड — गिरा देते हैं और मनुष्यता खो बैठते हैं। हिन्दुस्तानके ऋषि-मुनियोंने ही नहीं, परन्तु राजाओं और सम्राटोंने भी देख लिया था कि भोगविलासका अंत नहीं है। राजा ययातिने अपनी सारी जिन्दगी भोगविलासमें बिताअी — अरे, अपने लड़केकी जवानी अुधार लेकर भी अुसने मौज अुड़ाअी, फिर भी अुसकी तृप्ति न हुअी। अंतमें अंतर्मुख होकर वह बोला, "अिस दुनियामें जितने तिल और चावल हैं, धन-धान्य और पशु-पक्षी हैं और जितने दास-दासी और युवतियां हैं, अुन सबको अिकट्ठा

कर लें तो भी वे अेक मनुष्यकी तृप्ति होनेके लिअे काफी नहीं। अिसलिअे वासना-निवृत्ति ही सच्चा अुपाय है; वही जीवनका रहस्य है।" यह तो हुअी पौराणिक कहानी। अितिहास-कालमें सम्राट् अशोकने भी यही अनुभव किया और अुसने राज्य-विस्तारका काम छोड़कर धर्म-विस्तारका काम हाथमें लिया।

भोगविलासमें मनुष्य तभी रम सकता है, जब वह दूसरोंके सुख-दुःखके प्रति बेपरवाह हो जाय। अहिंसाके मूलमें विश्वबंधुत्वका आदर्श है, राष्ट्रपूजाका नहीं।

आजकलके राष्ट्र शांति-रक्षाके लिअे 'बैलेंस ऑफ पावर' अुत्पन्न करना चाहते हैं। अेकके स्वार्थके विरुद्ध दूसरेके स्वार्थको, अेकके सामर्थ्यके विरुद्ध दूसरेके सामर्थ्यको तौल कर शांति स्थापित हो ही नहीं सकती। तराजू बाजारू चीज है, अुससे शांति निर्माण नहीं होती। प्रेम और बंधुत्व ही अुसे पैदा कर सकता है। जो कानून हम कुटुम्बके भीतर काममें लेते हैं, वही राष्ट्रोंके बीच अिस्तेमाल करना चाहिये।

हिन्दुस्तानके लिअे अहिंसाका संदेश युगों पुराना है। गांधीजीने अिस सिद्धान्तको राष्ट्रोंके बीच लागू करके बता दिया।

दुनियामें बन्धुताकी बातें बहुत होती हैं। परन्तु हरअेक राष्ट्र कहता है कि हमें बन्धुता तभी मंजूर होगी, जब बड़े भाअीका स्थान हमें मिले।

असलमें बड़ा भाअीपन तभी तक निभता है, जब तक बड़ा भाअी छोटे भाअीके लिअे त्याग करनेको तैयार होता है। छोटा भाअी बड़े भाअीकी आज्ञामें रहे, तब तक बड़ा भाअी छोटे भाअीका कान पकड़ सकता है। मगर यही छोटा भाअी जब बिगड़ता है और घरसे निकल कर रास्ते पर जा खड़ा होता है, तब बड़ा भाअी अुसका कान छोड़ कर पैर पकड़ता है, और अुससे क्षमा मांगकर अुसे घरमें लाता है। यह प्रेमका मार्ग, अहिंसाका मार्ग गांधीजीने राष्ट्र आन्दोलनमें काममें लेकर बता दिया है।

आजकी दुनिया विज्ञानके जोर पर अनेक प्रकारसे समर्थ बन गअी है। परन्तु वह गांधीजीका रास्ता न ले, तो अुसका नाश ही

होनेवाला है। अुसने मनुष्यता खो दी है। अगर गांधीजीके मार्ग पर दुनिया न सुधरी और अुसने अमर्यादित सहिष्णुता और असीम धीरज पैदा नहीं की, तो दुनिया आत्महत्या ही करेगी।

मेरा भाषण पूरा होनेके बाद अेक आदमीने पूछा कि, "अगर कोअी सिंह अेक गाय पर वार करे, तो गाय अहिंसा किस तरह पाल सकती है?" अैसे सवाल सदा ही पूछे जाते हैं। मैंने अितना ही कहा: "पशु पशुधर्मके अनुसार चलेंगे। मनुष्यको अपना जीवनधर्म पशुओंसे नहीं सीखना पड़ता। हम किस लिअे पशुओंको अपना गुरु बनायें?"

६

थीका

श्री मेघजीभाअी शाह पूर्व अफ्रीकाके अेक होशियार व्यापारी हैं। वे अपना अेक कारखाना दिखानेके लिअे हमें थीका ले गये। यह स्थान नैरोबीसे ३४ मील दूर है। वहां मेघजीभाअीका वॉटलकी छालसे अर्क निकालनेका कारखाना है। रास्ता बहुत अच्छा है। दोनों तरफ सायसल अर्थात् रेडेअनसकी खेती है। हमारे यहां खेतोंकी बाड़में अनन्नास या केतकीके पत्तों जैसे लम्बे-लम्बे कांटेदार पत्तोंके पेड़ अुगते हैं। तलवार जैसे ये लम्बे पत्ते जब पक जाते हैं, तो अुन्हें तोड़ कर पानीमें सड़ाया जाता है। सड़ा हुआ भाग सूखकर झटकानेके बाद जो रेशे रहते हैं अुनके बड़े-बड़े रस्से बनाते हैं। ये रस्से पानीमें गलते नहीं और बड़े मजबूत होते हैं, अिसलिअे अिस रेशेकी अितनी कीमत है। अिस पेड़को दक्षिण महाराष्ट्रमें रेडेअनस कहते हैं। अंग्रेजीमें अिसे सायसल कहते हैं। पूर्व अफ्रीकामें अिस सायसलकी खेती बहुत बड़े पैमाने पर होती है।

वॉटल-बार्क बबूलकी छाल जैसी अेक छाल है। चमड़ा कमानेमें अिसका अर्क बहुत अुपयोगी होता है। वॉटलकी छाल अिकट्ठी करके

अुसके टुकड़ोंको अुबाल कर अुसका अर्क निकाला जाता है और अिस अर्कको सुखाकर अुसकी सूखी सलाअियां तैयार की जाती हैं। थीकामें अेक पहाड़ीकी गोदमें, काव्यमय स्थान पर वॉटल-ब्रार्कका अर्क निकालनेका कारखाना है। हमने यह सब विस्तारसे देखा। अपने कारखानेके लोगोंके लिअे मेघजीभाअीने जो संतोषजनक सुविधाअें कायम की हैं, वे भी हमने देखीं।

लौटते हुअे हम थीकाके पासके दो प्रपात देखने गये। अुनमें से अेक प्रपात जहांसे सबसे बढ़िया ढंगसे दिखाअी दे सकता था, वहां गोरे लोगोंने अेक होटल बनाया है। अैसी जगहों पर पश्चिमके लोगोंको जीवनका आनन्द लूटनेकी सूझती है, जब कि हम लोग अैसे स्थानोंको तीर्थधाम बनाकर वहां अीश्वरका चिन्तन करना पसन्द करते हैं। लेकिन यात्राका धाम तय होते ही वहां मंदिर और धर्मशालाअें आ ही जायंगी। अुनके साथ लोगोंके झुंड, बाजार और तरह-तरहकी गंदगी भी — भौतिक और सामाजिक दोनों तरहकी। यहांकी बढ़ियासे बढ़िया जगह होटलके कब्जेमें चली जानेसे वहां सुन्दर बगीचा बनाया गया है। नहानेके लिअे अेक बड़ा कृत्रिम तालाब बनाया गया है। अुसके आसपास कपड़े बदलनेके और गर्म पानीसे नहानेके कमरे भी बनाये गये हैं। भोगविलासके तमाम साधन अिकट्ठे किये गये हैं। मगर मामूली आदमी वहां नहीं जा सकता। सिर्फ मालदार और अुनमें भी गोरे लोग ही यह सब आनन्द लूट सकते हैं। दोनों प्रकारके अच्छे पहलू जमा करके अिसे अेक आदर्श स्थान नहीं बनाया जा सकता?

आवश्यक अनुमति लेकर हम ये दोनों प्रपात देख आये। अेकका नाम थीका है और दूसरेका चानिया।

पानीका प्रपात नशेकी-सी चीज है। जितना ज्यादा खड़े रहिये, अुतना वहीं रह जानेका मन करता है। दोनों प्रपात काफी मस्तीमें थे। मिट्टीके कारण पानीमें ललाअी आ गअी थी। परन्तु जहां प्रपात गिरता है वहां अैसा चमकता हुआ पीलापन दिखाअी देता था, जैसे सोनेका ही प्रपात गिर रहा हो!

७

नैरोबीका हमारा घर

जब तक नैरोबी छोड़ा नहीं, तब तक हमें अैसा नहीं लगा कि हमारी अफ्रीकाकी यात्रा शुरू हो गअी। मोम्बासा सिर्फ प्रवेशद्वार था। नैरोबी आये तभी लगा कि हम अफ्रीकामें आये हैं। नैरोबी छोड़ा तब लगा कि हम अफ्रीकाकी यात्रामें निकले हैं। तब तक हम मानो अपने घरमें ही थे।

अिसका मुख्य कारण थे हमारे मेजबान श्री तात्यासाहब अिनामदार, अप्पासाहब पन्तके निजी मंत्री। श्री अिनामदारके साथ मेरा परिचय बहुत पुराना था। सन् १९३६ में जब अहमदाबादमें गुजराती साहित्य परिषद हुअी थी और पूज्य गांधीजी अुस परिषदके अध्यक्ष थे; तब मैं था कलाविभागका अध्यक्ष। अुस समय श्री अिनामदार अीडर राज्यमें शिक्षा-विभागके संचालक होंगे। अुन्होंने वहांकी स्थापत्य-कला पर अेक सुन्दर निबन्ध लिखकर छपाया था, जो मुझे खूब पसन्द आया था। अिसी कारण हम नजदीक आये। अुसके बाद हरिपुरा कांग्रेसमें हम फिर मिले। अिनामदारने देशदेशान्तरकी शिक्षा-पद्धतिका अध्ययन करनेके लिअे जापान और युरोपका सफर किया था। औंधके राज-परिवारके साथ अुनका सम्बन्ध है। अिसलिअे श्री अप्पासाहब पन्त जब भारत सरकारकी तरफसे पूर्व अफ्रीकाके कमिश्नर मुकर्रर हुअे, तब स्वाभाविक तौर पर श्री अिनामदार अुनके निजी मंत्रीके रूपमें अुनके साथ आये। मैं मानता हूं कि अप्पासाहबके बचपनमें श्री अिनामदारने शिक्षाशास्त्रीकी हैसियतसे अुन पर देखरेख रखी होगी।

नैरोबीमें श्री कमलनयन बजाज सकुटुम्ब अप्पासाहबके यहां रहे। स्वराज्य आन्दोलनके अन्तमें देशी राज्योंके सवालके हलके सिलसिलेमें वे दोनों अेक-दूसरेके काफी सम्पर्कमें आये थे, अिसलिअे अुनका साथ रहना ही यथायोग्य था और मैं श्री अिनामदारके यहां रहूं यह भी अुतना ही ठीक था। अुनके घरमें घुसते ही सौभाग्यवती शकुन्तला-बहनने हमें घरका बना लिया। 'हम' यानी मेरी पत्नी समान मन्त्री

चि० सरोजिनी नाणावटी और मेरे साथ आये हुअे श्री शरद पंड्या।- श्री अिनामदारकी लड़कियोंने भी कोअी संकोच रखे विना हमें अपने घरमें स्थापित कर दिया। कुछ कुछ शरमाये हों तो अुनके छोटे भाअी विनयकुमार। आजकल सब जगह यही देखा जाता है कि लड़कियोंकी अपेक्षा जवान लड़के ही ज्यादा शरमाते हैं! धीरे-धीरे विनयकुमार भी हमारे साथ घुलमिल गये। अिसका मुख्य कारण था अुनकी सेवावृत्ति। विनयकुमार तो वे जरूर थे ही, परन्तु तरह-तरहकी सेवा करते हुअे विनय कहां तक टिकती? अुन्होंने पहले शरदके साथ दोस्ती की, फिर मेरे साथ वातें करने लगे। चि० अुषा तो पहले ही दिन हमारी लाड़ली बन गअी। प्रार्थनामें भजन गाती, खाते समय हम पर देखरेख रखती। चि० रजनी थोड़े ही दिनोंमें अुच्च शिक्षाके लिअे हिन्दुस्तान चली गअी। नैरोबीसे मोम्बासा तक रेलसे और वहांसे बम्बअी तक जहाजमें अुसने अकेले ही प्रवास किया। पुराने ढंगकी स्त्रियां अैसी हिम्मत नही करतीं। आज-कलकी लड़कियोंको सफरके लिअे कोअी साथी मांगनेमें शर्म आती है।

तात्यासाहबकी बड़ी लड़की चि० लताने समाजसेवाकी विद्याकी शिक्षा पाअी है, अिसलिअे वह नैरोबीमें ठोस काम करनेकी तैयारी कर रही है।

अिनामदारके यहां दो बिल्लियां, अेक बड़ा कुत्ता 'वाघ्या' और अेक नीला तोता है। तोतेका काम था घरमें आनेवालोंका स्वागत करनेका। और कुत्तेका काम घरकी रखवाली करनेका। कुत्ता अपने नामके अनुसार सचमुच शेर है। घरके लोग कहें कि 'फलां आदमी पर न भौंको, वे घरके बन् गये हैं,' तो फिर वह तुरन्त दोस्ती करने लगता है। बिल्लियोंने दो सिरेके दो रंग पसन्द किये हैं। अिसलिअे अेकका नाम मैंने रखा अमावस्या और दूसरीका पूर्णिमा। बिल्लियां स्वभावसे प्रेमेच्छुक होती हैं। सबसे लाड़ वसूल करती ही जाती हैं।

अैसे घरमें से सफरके लिअे निकलते समय जी भारी होना स्वाभाविक था। परन्तु तात्या खुद हमारे साथ आनेवाले थे, अिसलिअे विशेष बुरा न लगा।

८

दो व्योमकाव्योंका समकोण

नैरोबीसे हवाअी जहाजमें बैठकर हम निकले टांगा जानेको। परन्तु मोम्बासामें हमें हवाअी जहाज बदलना था, अिसलिअे पहले हम नैरोबीसे सीधे समुद्रकी तरफ अुड़े।

विमानयात्रा यानी व्योमकाव्यका आनन्द। जब हम रवाना हुअे, तब मुश्किलसे सूरज अुगा था। नीचे गोरोंकी छोटी बड़ी बाड़ियां और अफ्रीकी लोगोंके झोंपड़े दिखाअी देते थे। दोनों जातियां खुले जीवनकी रसिया; मगर अफ्रीकी कमसे कम सुविधाओंसे सन्तुष्ट, जब कि गोरे तरह-तरहके सुभीते पैदा करनेमें शूर हैं। हवाअी जहाजसे नीचेकी ओर देखने पर पहाड़ोंके सिर पर दौड़ते रास्ते और सिरसे नीचे अुतरते हुअे पानीके प्रवाह — सभी कुछ सुन्दर मालूम होता था। अफ्रीकाकी सारी ही जमीन पुराणकालके ज्वालामुखीके अुत्पातसे बनी हुअी है। अिस तरफ जमीन सिंदूर जैसी लाल और अुसके अूपर हरी हरी वनश्री — मानो अिन्द्रलोकके रसिकोंके लिअे खास तौर पर बनाअी गअी विशाल रंगभूमि हो।

जिसे केवल भूगोल-विद्यामें ही दिलचस्पी है, अुसके लिअे भी विमानयात्रा अेक अपूर्व अवसर होता है। अूंची-नीची जमीनकी रचना, पानीका विस्तार, नदियोंका टेढ़ापन और जंगलोंकी समृद्धि प्रत्यक्ष आंखों देखनेको मिले बिना भूगोलवेत्ताकी आत्मा तृप्त नहीं होती। परन्तु जो आदमी बचपनसे कुदरतकी अुपासना करता आया है, कुदरतके दर्शनसे ही जिसकी आत्मा विकसित होती आयी है और कुदरतके द्वारा ही जो भगवानके दर्शन करनेकी कोशिश करता आया है, अुसके लिअे हवाअी जहाजका सफर अेक आध्यात्मिक महोत्सव ही है।

विमानमें चढ़ते ही अच्छीसे अच्छी जगह देखकर मैं अपनी आंखें खिड़कीके कांचसे लगा देता हूं। और भूखे-प्यासेकी तरह सारी दृश्य सृष्टिका पान करता रहता हूं।

बाअीं तरफ सबसे पहले अिस प्रदेशके देशनायक गिरिराज माअुंट केनिया दिखाअी दिये। अुन पर अेक हद तक वृक्ष वनस्पतिकी समृद्धि अुछलती हुअी दिखाअी देती है। अुसके बाद जहां ठंड बढ़ती है, सनसनाती हुअी हवा किसी भी वनस्पतिको टिकने नहीं देती — वहां सब कुछ कोरमकोर होता है। केनियाको प्रणाम करके नजर दक्षिणकी तरफ फिराअी। वहां पहले पहाड़ोंमें अुत्तम माना जानेवाला मेरु पर्वत दिखाअी दिया। (भगवान स्वयं ही स्वीकार करते हैं 'मेरुः शिखरिणाम् अहम्।') अुस पर नजर जरा ठहरी कि अितनेमें दूर, बहुत दूर अफ्रीकाका गौरवस्वरूप अद्वितीय किलिमांजारो दिखाअी दिया। कोरी आंखोंसे जी भरकर देखनेके बाद मैंने अुसे दूरबीनके जोरसे अधिक पास खींच लिया। किलिमांजारोकी बगलमें ही अुसका अेक पड़ोसी है — मानो सेवा करनेके लिअे तत्पर खड़ा हुआ कोअी किंकर हो। किलिमांजारोके सिर पर श्वेत मुकुट होनेके कारण अैसा सहज ही लग सकता है कि सारे अफ्रीकी महाद्वीपका राज्यपद अुसीका है। दूसरे अुसका शिखर सफेद गुम्बजकी तरह अंडाकार दिखाअी देता है। परन्तु असलमें अुसके सिर पर ज्वालामुखीका द्रोण (क्रेटर) है। किसी-किसी तरफसे जब विपरीत दिशाके किनारेका सिरा दिखाअी देता है, तो विश्वास होता है कि अूपर द्रोण जरूर होगा। डॉ० लेकीने हमसे कहा था कि किलिमांजारोके ज्वालामुखीके अन्दरकी गर्मी धीरे-धीरे बढ़ती जा रही है और अिसलिअे अन्दरकी तरफका बर्फ धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। अगर यही हाल रहा तो किसी समय यह ज्वालामुखी फिरसे सजीव हो सकता है।

'यह कब होगा?'

'यह नहीं कहा जा सकता। वह २०-२५ वर्षके भीतर भी फट सकता है, या दो सौ, चार सौ वर्षके बाद भी फट सकता है।' भूगर्भ-शास्त्रियोंके पास संख्याकी कंजूसी नहीं होती। जैन पुराणोंकी तरह हजारोंकी संख्याकी अिनके यहां गिनती ही नहीं होती।

हमारा विमान आगे चला और देखते-देखते बाअीं तरफ बादलोंके टोले अुमड़ आये। सूर्यकी किरणोंके कारण दाअीं तरफ कोहरेमें अिन्द्र-धनुषका अेक पूरा गोलाकार बन गया। और अुसके केन्द्रमें हमारे

हवाओी जहाजकी छाया! मानो कोओी देवदूत आकाशमार्गसे हम जैसे मनुष्योंको अिन्द्रलोकमें पहुंचानेके लिअे तैयार हुआ है।

थोड़ी ही देरमें दूर सामनेकी तरफ हिन्द महासागर दिखाओी देने लगा। दर्शन होते ही अुस महापुरुषको मैंने प्रणाम किया, क्योंकि अुसकी लहरें मेरी जन्मभूमिको स्पर्श करती हैं। हवामें हम जरा नीचे अुतरे और मोम्बासाका टापू स्पष्ट दिखाओी देने लगा। हवाओी जहाजोंका यह नियम होता है कि अेक बड़ी प्रदक्षिणा किये बगैर जमीनको स्पर्श नहीं किया जा सकता, अिसलिअे नीचे अुतरते-अुतरते आसपासकी सारी शोभा सब तरफसे देखनेको मिल जाती है। वहां थोड़ासा आराम करके हमने छोटा-सा नया विमान लिया। अुसमें दस आदमी ही बैठ सकते थे। अुनमें से पांच तो हमी थे। नैरोबीसे मोम्बासाका रास्ता पश्चिमसे पूर्वको था। मोम्बासासे टांगाका रास्ता अुससे समकोण बनाकर अुत्तरसे दक्षिणको जाता था। अब अेक नया ही दृश्यकाव्य नजरके सामने अुपस्थित हुआ। बाअीं तरफ समुद्रके अद्भुत रंग — घड़ी भरमें गहरा नीला रंग तो घड़ी भरमें हरा! दूर पेम्बाका टापू दिखाओी दिया। अुसमें आसपासके समुद्रका हराथोथा जैसा हरा रंग, अुसके बाद नारियलके सिरके जैसा काला हरा रंग और कोओी अूंची पहाड़ी आ जाती थी तब अुसका सिंदूरी रंग — अिन सबकी शोभा आकर्षित करती थी। दांअी तरफ किनारेके फेनकी सफेद चंचल रेखा नाच रही थी। टांगाके आसपास जमीनमें घुसे हुअे समुद्रके हाथकी तरह 'बैकवाटर्स' चमकते हैं।

देखते देखते जर्मन निर्मित चौकोर शहर टांगा दिखाओी दिया और हमने दुबारा चक्कर काटकर अुसकी सख्त जमीन पर पैर रखा।

टांगा

हवाअी जहाजके बन्दरगाह यानी विमानके अड्डे पर श्री आदमभाअी करीमजी अपने बालक लतीफके साथ आये थे। टांगासे थोड़ी दूर लिसोटो नामक अेक ठंडा शहर है। वहां मेरे अेक स्नेहीके सम्बन्धी डॉ० दिव्यकृष्ण रहते हैं। वे खुद टांगा नहीं आ सकते थे, अिसलिअे अुन्होंने अपनी पत्नी और लड़केको भेजा था। ये लोग भी हवाअी अड्डे पर आकर मिले।

यहां भी हमारी मंडली दो-तीन घरोंमें बंट गअी। श्री अप्पासाहब और कमलनयन आदमजीके यहां ठहरे। हमारा डेरा टांगाके प्रसिद्ध वकील मनुभाअी देसाअीके यहां था। जाते ही कअी मिलनेवाले आ गये। अुनमें बढ़िया अंग्रेजी बोलनेवाले और अिस अिलाकेकी हालतको अच्छी तरह जाननेवाले दो अफ्रीकी भाअी भी थे। अुनके साथ बहुत बातें हुअीं। हिन्दुस्तानकी सहानुभूतिके कारण अफ्रीकी लोगोंमें बहुतसी आशाअें पैदा हो गअी हैं। 'अब हम बिलकुल अनाथ नहीं हैं। अेक समर्थ पड़ोसी हमारे जीवनमें दिलचस्पी ले रहा है।' अैसा अिस जातिको अनुभव होने लगा है और अिसी-लिअे आअिंदा अिन लोगोंके प्रति हमारा रवैया बदलना चाहिये। जबसे अिन लोगोंने यह बात सुनी है कि गांधी स्मारक कॉलेज खुलेगा, तबसे वे अुसकी स्थापनाकी बाट देख रहे हैं।

पहले-पहल रीगल सिनेमामें अेक सार्वजनिक सभा हुअी। अिस सभाके बिखरते ही तुरन्त बहनोंने अुस स्थान पर कब्जा कर लिया। अुनके सामने भी हमारा व्याख्यान हुआ। अिसके साथ ही आर्यकन्या मंडलकी तरफसे लड़कियोंके नृत्य-संगीत वगैरा रखे गये थे। यहां महा-राष्ट्रीय और गुजराती बहनोंने मिलकर संगीत कलाका अच्छा वायुमंडल जमा लिया है।

रातको अिंडियन अेसोसियेशनकी तरफसे जो भोज रखा गया था अुसमें गोरे भी आये थे।

दूसरे दिन आदमभाओी करीमजी और अुनकी पत्नी जेबुन्निसाबहनके साथ हम अुनका चायका बगीचा देखने गये। यह बगीचा टांगासे ६०-७० मील दूर स्थित अुसुम्बरा पहाड़की चोटी पर है। पहाड़की वन्य शोभा देखते-देखते हम पुरानी सरकार द्वारा विकसित परन्तु अब कुछ बिगड़ते हुअे वानस्पत्यम् (बोटेनिकल गार्डन) तक पहुंचे। वहां हमें मैंगोस्टीनका अेक फल मिला। हममें से कुछ लोगोंने अुसे देखा या चखा नहीं था। कलकत्तेमें यह फल खूब मिलता है। पूर्व अेशियाकी तरफका यह स्वादिष्ठ मेवा है।

हर जगह नअी-पुरानी संस्थाओंके कारण हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न पैदा होता ही है। व्यक्तिगत रूपसे हिन्दू-मुसलमान खूब प्रेमसे मिल-जुलकर रहते हैं। पर संस्थाका नाम आया कि तुरन्त कअी सवाल खड़े हो जाते हैं। यहां मेरे हाथों अेक 'अिंडियन कल्चरल सोसायटी' (हिन्दुस्तानी संस्कृति मंडल) का अुद्घाटन हुआ। अुसका विधान तैयार करनेमें भी मुझे दिलचस्पी लेनी पड़ी।

तीसरे दिन सवेरे मैं आग्रहपूर्वक 'वॉर सिमेटरी' — जंगी श्मशान-भूमि देखने गया, क्योंकि मैं जानता था कि पिछले महायुद्धके समय हिन्दुस्तानके अनेक सिपाहियोंने यहां अपने प्राण अर्पण किये थे। १९१५ में मारे गये अिन चार पांच सौ लोगोंमें ग्वालियरकी तरफके महाराष्ट्री, राजस्थानके राजपूत, काश्मीर-जम्मूकी तरफके हिन्दू, मुसलमान, डोगरे और कुछ मद्रासी थे। अफ्रीकाकी भूमि पर जिस जगह मेरे देशभाअियोंने अपना खून बहाया, अुस स्थानके बारेमें मेरे मनमें आदरकी भावना जाग्रत हुअी। अिसीलिअे अिन वीरोंकी श्मशानभूमि देखनेका मेरा आग्रह था। दारेस्सलाममें भी भारतीय वीरोंकी अैसी ही अेक श्मशानभूमि है।

टांगा छोड़नेसे पहले हम वहांका करीमजी स्कूल देखने गये। वहांके प्रिंसिपल मि० पैरी मुझे अुत्तम शिक्षाशास्त्री मालूम हुअे।

हवाअी जहाजने जब फिरसे हमें लाद कर अुठाया, तब अेक ओर समुद्र तथा दूसरी ओर कलके देखे हुअे अुसुंबरा पहाड़को देखते समय परिचयका आनन्द होता था।

१०

शान्तिधाम दारेस्सलाम

अब हम झांझीबार होकर दारेस्सलाम जानेको निकले। रास्तेमें फिर वही हराभरा दृश्य। आज भी समुद्रमें छोटे बड़े कअी टापू दिखाअी देते थे। अुनमें से कुछ पानीके बाहर सिर अूंचा कर सके थे और नारियल आदि वनस्पति सृष्टिका भार वहन करते थे; जब कि कुछ द्वीप अभी तक पानीके बाहर सिर नहीं निकाल सके थे। अिन सबको मैंने **पन्नालाल** नाम दिया है। मेरा विश्वास है कि देवताओंमें रसिकता हो, तो वे अिनमें से अेक अेक द्वीपको अुठाकर अपनी-अपनी अुंगलीके लिअे अुसकी अंगूठी बना लेंगे। द्वीप जरा बड़ा हो तो अुसके बीचमें चमकता हुआ भाग होगा ही, जिसका रंग गेरुअे और सिंदूरके बीचका ही माना जायगा। अुड़ते-अुड़ते हम अैसी जगह आये, ज़हां नीचे समुद्र और दोनों तरफ जमीनके किनारे दिखाअी देते थे। बाअीं ओर झांझीबारका टापू और दांअी तरफ अफ्रीकाका महाद्वीप। जंगबार (झांझीबार) के अूपर पहुंचे तो नीचेसे विद्युत्-संकेत मिला कि नीचे कोअी मुसाफिर नहीं, जो हमारे विमानमें सवार होना चाहता हो। हमारे विमानमें भी जंगबारमें अुतरने-वाला कोअी था नहीं, अिसलिअे हमारे विमानीने कहा, "हम यहां नहीं अुतरेंगे। जंगबार देखना हो तो अूपरसे देख लीजिये।" अुसने विमानका बायां पंख ठीक नीचे झुकाया कि तुरंत हम घनी आबादीवाले जंगबार शहरका पूरा दर्शन कर सके। हमें संतुष्ट हुआ देखकर विमानीने अपना विमान फौरन सीधा कर लिया और हम दारेस्सलामकी तरफ वायुवेगसे बढ़े। देखते-देखते दारेस्सलामका अविस्मरणीय समुद्र-तट आंखके सामने विशाल होने लगा। हम सारा शहर पार करके दूसरे किनारे पर अुतरे और दारेस्सलामके अपने अनेक मेजबानोंके अधीन हुअे।

दारेस्सलाम टांगानिका प्रदेशकी राजधानी है। जर्मन लोगोंने टांगाकी तरह यहां भी अपनी नगर-रचना कला खूब आजमाअी है। अुसके बाद भी समुद्रके किनारेका यह शहर देखते-देखते बढ़ता रहा।

यहांके अेक गोरे नगरसेठने बातों ही बातोंमें कहा: "रिक्शा चल लायक जो छोटे रास्ते शुरूमें तैयार किये गये थे, वे अब असुविधाजनक हो रहे हैं। अुस समय किसने कल्पना की थी कि दारेस्सलामके रास्तों पर दिन-रात बड़ी-बड़ी मोटरें दौड़ने लगेंगी?" मैंने हंसते हुअे अुनसे कहा: "हमारे यहां बच्चोंके लिअे कपड़े बनाये जाते हैं, तब जल्दी-जल्दी बढ़नेवाले शरीरोंका हिसाब रखकर ही कपड़े ब्योंते जाते हैं।" सफरमें जैसे नैरोबी हमें अपना घर जैसा लगा, अुसी तरह दारेस्सलाम भी हमारा घर बन गया। क्योंकि दारेस्सलामको मुख्य केन्द्र बनाकर हम अेक बार ठेठ दक्षिणमें लिण्डी तक हो आये। फिर यहांसे निकल कर जंगबार हो आये और बादमें थोड़ासा आराम करके हमने टांगानिका अिलाकेमें प्रवेश करनेके लिअे मोरोगोरो और डोडोमाकी रेलवे यात्रा की। अिस प्रकार तीन बार दारेस्सलाम जानेका काम पड़नेसे वह घर जैसा बन गया। परन्तु अिससे भी अधिक हमारा डेरा अेक अत्यन्त सात्त्विक, धर्मपरायण और प्रेमी कुटुम्बमें रखा जानेके कारण हमारे लिअे दारेस्सलाम सब तरह घर जैसा बन गया। श्री जयन्तीलाल शाह और अुनकी पत्नी मुक्ताबहन दोनोंने हमें घरका बुजुर्ग बना दिया। अुनके घरकी रहन-सहन हमें सब तरह अनुकूल रही। घरके छोटे बच्चोंने भी हमें पूरी तरह अपना लिया। श्री जयन्तीभाअी थियोसोफिस्ट हैं, अिसलिअे हमारी सुबह-शामकी प्रार्थनामें सारे कुटुम्बी आत्मीय भावसे शरीक हो जाते। पहले दिन अुनके मकानकी छत पर ही प्रार्थना की। प्रार्थनाके समय ही पूर्वी समुद्रमें से नहा-धोकर अूपर निकले हुअे सूर्यनारायणके पावन दर्शन हम कर सके, अिसलिअे अुस स्थानके प्रति भक्तिभाव जाग्रत हुआ। दूसरे दिन प्रार्थनाकी जगह वहांसे हटाकर नीचेके दीवानखानेमें रखी गअी, क्योंकि बाहरके कअी लोग अुसमें शरीक होनेके लिअे आने लगे। आखिरी दिनोंमें शहरके हिन्दू मंदिरोंके व्यवस्थापकोंने मांग की कि आप अपनी प्रार्थना हमारे यहां क्यों न करें। बहुतसे नगर-निवासी अुसका लाभ अुठा सकेंगे। हमने अुनसे कहलाया: "चूंकि हम सर्व-धर्म-समानताको मानते हैं, अिसलिअे हमारी प्रार्थनामें

कुरानशरीफकी आयतें भी होती हैं और अीसाअी आदि दूसरे धर्मोंके स्तोत्र भी होते हैं। हिन्दू धर्ममें भाषाभेद और धर्मभेदकी आपत्ति नहीं होती, परन्तु आपमें से किसीके मनमें आजकलके वातावरणके कारण आपत्ति हो तो नाहक दिल खट्टे हो जायंगे। अिसलिअे हमारी सर्व-धर्मी प्रार्थनाकी आपके यहां गुंजाअिश हो तो ही हम आपके मंदिरमें आ सकेंगे।" अुन लोगोंने तुरन्त विना संकोचके विश्वास दिलाया, "हमें जरा भी अेतराज नहीं। सव लोग आपकी सर्व-धर्मी प्रार्थनाका स्वागत करेंगे।" हिन्दू समाजकी अिस अुदारतासे मुझे आश्चर्य कुछ न हुआ, मगर आनन्द जरूर हुआ। हिन्दुस्तानमें नोआखलीमें गांधीजीकी प्रार्थनामें मुसलमानोंने रामधुन पर अेतराज किया था और दिल्लीमें हिन्दुओंने 'अल्फातिहा' पर आपत्ति की थी। ये दोनों प्रसंग मुझे याद आये। गांधीजीकी सर्व-धर्म-समानताके कारण दोनों जगहके अेतराज मिट गये थे, यह वात भी मुझे याद आयी। परधर्मके वारेमें हिन्दू धर्ममें कभी असहिष्णुता थी ही नहीं। मैं जानता हूं कि आअिंदा भी वह जड़ नहीं पकड़ेगी। अिसलिअे मुझे दारेस्सलामका सुंदर वातावरण देखकर आनन्द होने पर भी आश्चर्य न हुआ।

पूर्व अफ्रीकामें जो हिन्दुस्तानी मुसलमान हैं, अुनमें से ज्यादातर नामदार आगाखानके अनुयायी हैं। वे अपनेको अिस्माअिली कहते हैं। जो आगाखानी नहीं हैं, अुन्हें यहां अिस्नाशरी कहते हैं। यहां जो पंजावसे आकर वसे हुअे मुसलमान हैं, वे अलग हैं। जिनका वतन पाकिस्तानमें है, अैसे मुसलमान यहां नहींके वरावर हैं। अधिकांश कच्छ-काठियावाड़के ही हैं। वे घरोंमें गुजराती वोलते हैं, पाठशालाओंमें गुजरातीके मार्फत ही पढ़ते हैं। आगाखानी मुसलमानोंके रीति-रिवाज दूसरे मुसलमानोंसे कुछ अलग होते हैं। वे हजरत अलीको मानते हैं। मक्काकी यात्राके वारेमें अुन्हें आग्रह नहीं है। माननीय आगाखान असलमें अीरानकी तरफके हैं। आजकल ज्यादातर विलायतमें रहते हैं। अुनका घोड़ोंका शौक सारी दुनिया जानती है। घुड़दौड़में आगाखानके घोड़े सवसे अच्छे माने जाते हैं। माननीय आगाखान जैसे अिस्माअिली लोगोंके धर्मगुरु हैं, वैसे ही व्रिटिश साम्राज्यमें वे अेक अच्छे खासे राजनीतिक पुरुष

माने जाते हैं। अुनका असर बहुत है और अुसे अिस्तेमाल करके वे अपने अनुयायियोंकी बढ़तीके लिअे सदा तत्पर रहते हैं। पूर्व अफ्रीकामें अिस्माअिली जमात सबसे अधिक संगठित है और हमेशा माननीय आगाखानकी सलाहके अनुसार ही चलती है।

कुछ वर्ष पहले यहांके अिस्माअिली लोगोंने माननीय आगाखानकी ६० वर्षकी हीरक जयन्ती मनाअी। अिसके लिअे अुन्होंने दुनिया भरसे हीरे अिकट्ठे करके माननीय महोदयकी हीरक-तुला की। और अुन हीरोंकी जितनी कीमत हुअी, वह अुन्हें भेंट कर दी गअी। अलबत्ता, हीरे अपनी-अपनी जगह वापस चले गये।

गुरुभक्तिका यह ढंग लोक-विलक्षण कहा जायगा। माननीय आगाखानने अिस रकमके बड़े भागका ट्रस्ट बनाकर यहांकी अपनी कौमको ही सौंप दिया और अुस रुपयेसे अब अिस कौमके अुत्कर्षके लिअे अनेक योजनायें अमलमें लाअी जा रही हैं। किसी गरीब किन्तु होशियार खोजाको पूंजी चाहिये, तो वह भी अिसमें से बिना व्याज मिल सकती है। अितनी बड़ी रकमका संचालन ट्रस्टके द्वारा होता हो, तो कुछ लोग अुसकी नीतिके बारेमें आलोचना करेंगे ही। परन्तु सब बातोंको देखते हुअे अिस कोषसे यहांकी खोजा कौम अेकदम आगे बढ़ गअी है।

ना० आगाखान अेकाग्र निष्ठासे अपनी कौमके दुन्यवी हानि-लाभका विचार करके अुसे दूरंदेशी भरी सलाह देते हैं। अुदाहरणके लिअे, यहांके अपने लोगोंसे अुन्होंने कहा कि, "झांझीबारमें अब ज्यादा भीड़ करके नहीं रहना चाहिये। वहांके वैभवकी अब मर्यादा आ पहुंची है। अब अधिक लोगोंके वहां रहनेमें सार नहीं है। अब आपको अधिकसे अधिक संख्यामें टांगानिका जाना चाहिये। वह प्रदेश बहुत विशाल है और अुसमें भावी अुत्कर्षके बढ़िया साधन हैं।"

अुन्होंने अपने लोगोंको यह भी सलाह दी कि, "लड़के-लड़कियोंकी शिक्षाकी तरफ ज्यादा ध्यान दीजिये। अिन सबको अंग्रेजी पढ़ाअिये। मानो अंग्रेजी मातृभाषा ही हो, अितने अुत्साहसे यह भाषा सीख लीजिये। यह वांछनीय है कि लड़कियां पुराने ढंगकी पोशाक छोड़कर फ्रॉक पहनें। जितने अधिक लोग विलायत जाकर पढ़ आवें अुतना अच्छा।"

अिसमें आश्चर्य नहीं कि मुसलमान होनेके ही कारण यहांके मुसलमानोंकी भावना और निष्ठा पाकिस्तानकी ओर है। अब तक हिन्दुस्तानीकी हैसियतसे वे यहांके अिंडियन असोसियेशनोंमें खुलकर शरीक होते थे और अुनमें प्रमुख भाग लेते थे। अब वे अपनेको अलग मानते हैं। सुना है ना० आगाखानने अुन्हें सलाह दी है कि अब वे हिन्दुस्तान-पाकिस्तानके झगड़ेमें न पड़ें, हिन्दुस्तानके लोगोंका विरोध न करें, मगर अपनी निजी अुन्नति पर सारा ध्यान दें।

ना० आगाखानका प्रयत्न अफ्रीकामें बसनेवाले दूसरे मुसलमानोंको भी अपनानेका है। अिस देशके मूल निवासी अफ्रीकी लोग अरबोंके असरके कारण खासी संख्यामें मुसलमान बन गये हैं। कहा जाता है कि अिन लोगोंको भी संगठित करनेकी ना० आगाखानकी मुराद है।

ना० आगाखानके अनुयायी अिस्माअिली लोगोंके रीति-रिवाजोंमें कुछ रिवाज हिन्दुओं जैसे हैं। वे घरोंमें गुजराती बोलते हैं और रोज-मर्राके व्यवहारमें कट्टर नहीं हैं। अिसलिअे अुनके साथ मिठासके साथ रहनेमें हिन्दू लोगोंको कोअी कठिनाअी नहीं होती। कच्छ-काठियावाड़की तरफके होनेके कारण अुनका और गुजराती हिन्दुओंका संबंध ज्यादातर अत्यंत मीठा होता है। यह अेकता दोनोंके लिअे लाभदायक है। अिसलिअे मैंने यहांके तमाम लोगोंको सलाह दी कि "'हिन्दुस्तानकी राष्ट्रभाषा हिन्दी है; पाकिस्तानकी अुर्दू है; और महात्माजी दोनोंकी मिली-जुली हिन्दुस्तानी चलाना चाहते हैं'— अिस विवाद या झगड़ेमें न पड़कर गुजराती द्वारा जो अेकता सिद्ध हुअी है और मीठा संबंध बना है अुसीको अधिक मजबूत कीजिये और शक्तिके अनुसार हिन्दी और अुर्दू दोनोंका अध्ययन कीजिये। और मुख्य बात यह है कि भाषाके झगड़ेमें पड़ना ही न चाहिये। अंग्रेजी सीखे बगैर यहां काम नहीं चल सकता। शिक्षामें जैसे आगे बढ़ा जा सके वैसे बढ़िये और यहांकी जो अफ्रीकी जनता है अुसे हर तरह अपनाना अपना फर्ज समझिये।

"गांधीजीकी शिक्षा है कि सब धर्म सच्चे हैं। सारे मजहब अच्छे हैं। अिसलिअे हमें अिस्लाम और अीसाअी धर्म दोनोंके प्रति सद्भाव बढ़ाना चाहिये। अिन दोनोंकी असली तालीम हमारे धर्मकी शिक्षासे

अलग नहीं है। सभी ऑश्वरभक्ति और सदाचारमें विश्वास रखते हैं। सभी विषयवासना पर विजय प्राप्त करनेके हामी हैं। और भगवान सभीका होनेके कारण सभी मनुष्यता बढ़ानेके लिऑ बंधे हुऑ हैं। ऑिस-लिऑ हमें धर्मभेदकी तरफ बिलकुल ध्यान न देकर सबके साथ भाऑीचारा बढ़ाना चाहिये। किसी भी तरहका पक्षपात मनमें न लाया जाय। दूसरे लोग संकुचित संगठन करें, तो ऑुनसे द्वेष न किया जाय। परन्तु अपनी ऑुदारताका असर ऑुनपर डालते रहें।"

पूर्व अफ्रीकाके कुछ ऑीसाऑी मिशनरियोंने अफ्रीकी लोगोंकी बहुत गहरी सेवा की है। यहां तक कि ऐसे मिशनरियोंकी सेवाके प्रतापसे अफ्रीकी लोगोंमें बहुत जागृति हुऑी है और ऑिसलिऑ यहांके अंग्रेज शासक ऑिस प्रकारके मिशनरियोंके कामके बारेमें किसी अंशमें सशंक और नाराज रहते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि, "ऑिन मिशनरियोंकी सेवाके बदौलत ही अफ्रीकी ऑीसाऑी गोरोंसे समानताकी बातें करते हैं। ऑिससे ऑिस्लाम अच्छा, शासनके विरुद्ध झगड़ा तो नहीं करता।" ऑिस्लामके बारेमें यह कैसी राय!

ना० आगाखानकी जो हीरक-तुला हुऑी, वह ऑिसी दारेस्सलाममें हुऑी थी। यहां ऑिस्लामी लोगोंकी संख्या अच्छी है। वे संगठित हैं। लड़के-लड़कियोंकी शिक्षा पर वे विपुल धन खर्च करते हैं। पाठ-शालाओंमें अनुशासन अच्छा रहे, ऑिसलिऑ अंग्रेज शिक्षक-शिक्षिकाऐं रखनेका भी ऑुनका आग्रह रहता है। कितनी ही छोटी-छोटी ऑुम्रकी खोजा लड़कियोंको अध्यापिकायें बनकर क़क्षाओंको पढ़ाते मैंने देखा। यहां ऐक बात दर्ज करनी ही चाहिये कि यह शिकायत आगाखानी स्कूलोंके बारेमें भी सुनी जाती है कि 'अच्छे शिक्षक मिलते नहीं; जो मिलते हैं वे टिकते नहीं। नतीजा यह होता है कि पैसा खर्च करने पर भी शिक्षा खराब होती है।' मां-बाप जानते नहीं कि खुद रुपयेके पीछे लगे होनेके कारण वे ही सर्वत्र पैसेका वाता-वरण फैलाते हैं। जैसे दुनियाभरके मां-बापकी यह ऑिच्छा पूरी नहीं होती कि हम भले ही कैसे भी हों तो भी हमारे बच्चे धर्मनिष्ठ और चरित्रवान होने चाहिये, ऑुसी तरह शिक्षकोंके बारेमें बिलकुल

अुदासीन मां-बापके हाथोंमें जिन संस्थाओंका अधिकार है अुन संस्थाओंमें अच्छे शिक्षक टिकेंगे नहीं, और शिक्षाका वातावरण बनेगा नहीं। पाठशालाओंकी शिक्षाका वायुमंडल मां-बाप किस तरह बिगाड़ते हैं और अुसे कैसे चुपचाप सहन करना पड़ता है, अिसकी शिकायत यहांके केवल देशी शिक्षक ही नहीं करते, अंग्रेज भी करते हैं।

मोम्बासामें मुसलमानोंके लिअे अेक बड़ी संस्था काम कर रही है — 'मोम्बासा अिन्स्टिटयूट ऑफ मुस्लिम अेज्युकेशन'। वहांके अेक गोरे अध्यापकसे मैंने यों ही कहा कि, "पूर्व अफ्रीकाके लिअे मुस्लिम युनिवर्सिटी बनानेका अिरादा सुना जाता है।" अुसने हंस कर कहा कि, "अिसमें शक नहीं कि शिक्षाका यह अेक बड़ा केन्द्र होगा, परन्तु अेक ही जातिकी शिक्षाके लिअे बंधी हुअी संस्थाको युनिवर्सिटी शब्द कैसे लागू किया जा सकता है? युनिवर्सिटी तो युनिवर्सल ही होनी चाहिये न?"

समय और अुत्साहके अभावमें मैंने अुनसे यह कहनेका विचार छोड़ दिया कि हिन्दुस्तानमें बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी है, अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी है और जामिया मिलिया अिस्लामिया भी है। अिन युनिवर्सिटियोंमें दूसरी जातियोंके विद्यार्थी लिये जाते हैं, परन्तु अिन संस्थाओंका संगठन जातीय ढंग पर ही किया गया है।

मोम्बासाकी 'अिन्स्टिटयूट ऑफ मुस्लिम अेज्युकेशन' में औद्योगिक शिक्षाको प्रमुख स्थान दिया गया है। थोड़े ही दिनोंमें वहां जहाजरानीका कॉलेज खुलनेवाला है। समुद्रका किनारा, अच्छे-अच्छे मकान, होशियार अध्यापक, विशाल भूमि और विपुल धन — जब अितनी सुविधायें मिली हुअी हैं, तो फिर संस्थाका विकास होना ही चाहिये।

अिस संस्थाके लिअे ना० आगाखानने बहुत बड़ा दान दिया है और पूर्व अफ्रीकाकी सरकारने वचन दिया है कि अिस प्रकार जितनी रकम आपकी तरफसे अिकट्ठी होगी अुतनी ही सरकारकी ओरसे, कॉलोनियल डेवलपमेण्ट फंडकी तरफसे दी जायगी।

अिसमें शक नहीं कि यह अिन्स्टिटयूट जब धुआंधार काम करेगी और पूर्व अफ्रीकाकी मुस्लिम संस्थाअें अुसके साथ शरीक होंगी, तब यह शिक्षाका अेक जबरदस्त केन्द्र बन जायगी।

दारेस्सलाममें भी मैंने अनेक शिक्षासंस्थाओंसे और भारतवासियोंके नेताओंसे जोर देकर कहा कि हमारी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा अच्छी बुनियाद पर नहीं है, यह मैं अच्छी तरह जानता हूं। शिक्षाको जीवनकार्य बनाये हुअे शिक्षक भी आज हमारे पास नहीं, यह भी मैं जानता हूं। परन्तु हमारी मुख्य कठिनाअी यह है कि यहां अुच्च शिक्षाका कोअी साधन नहीं है। अुच्च शिक्षाके अभावमें हमारी सारी जाति, शिक्षाकी दृष्टिसे, वामन अवतारकी तरह बौनी हो गअी है। हिन्दुस्तानसे भी अच्छे शिक्षक कितने लायेंगे? वहांसे बहुत लोग नहीं आयेंगे। यहांके अिस सहारामें बाहरसे नदी बहानेसे यहां कुछ नहीं अुगनेवाला है। यहीं पर अुच्च शिक्षाकी सुविधा करेंगे, तो ही अन्तमें हम यहां अपने बीचसे अच्छे शिक्षक पैदा कर सकेंगे। हमें दीर्घदृष्टिवाले मंजे हुअे नेता भी अिसी शिक्षासे मिलेंगे। हम अपनी संस्थायें जातीय आधार पर खड़ी न करें। अच्छेसे अच्छे अध्यापक जहांसे मिलें वहींसे हम अेकत्र करेंगे। अच्छे अंग्रेज मिलेंगे तो अुन्हें भी ले लेंगे। भारत सरकारसे अच्छे विद्वानोंको अुधार लेंगे और अुच्च शिक्षाकी अेक संस्था खोलेंगे। शुरू-शुरूमें अुसमें विद्यार्थी थोड़े होंगे, परन्तु देखते-देखते यह संस्था बढ़ेगी। अफ्रीकी लोगोंके लिअे अिस संस्थामें खास सहूलियत रखेंगे। हमारे बच्चे तो होंगे ही। और मेरा विश्वास है कि भले ही बहुत ही थोड़ी संख्यामें सही, कुछ अंग्रेज युवक भी हमारी संस्थामें अवश्य भरती होंगे। अिस खयालसे नहीं कि और कहीं अच्छी सुविधा नहीं है, बल्कि अिस नैतिक कारणसे कि यहां तीनों जातियोंके — काले, गोरे और गेहुंअे रंगके विद्यार्थियोंको समानभावसे अुच्च शिक्षा दी जाती है, कुछ गोरे मां-बाप ही अपने बच्चोंको यहां भेजेंगे और कुछ नवयुवक मां-बापके विरोधके बावजूद भी आयेंगे। गोरे विद्यार्थियोंकी तादाद नहीं के बराबर होगी। मगर जो आयेंगे अुनका अुद्धार होगा। और कोअी नहीं आयेगा तो भी हमारा कुछ बिगड़ेगा नहीं। हम अेक अच्छीसे अच्छी संस्था चला कर दिखायेंगे। अिस संस्थाके साथ गांधीजीका नाम जोड़नेमें कोअी आपत्ति होनेका कारण नहीं। यह सही है कि अुसमें गांधीजीकी शिक्षा-पद्धति तुरंत जारी नहीं होगी। गांधीजीकी पद्धति

युरोप-अमरीकाके कुछ समर्थ शिक्षाशास्त्रियोंके गले अुतर गअी है। अिसका असर हिन्दुस्तानसे नहीं, परन्तु युरोप-अमरीकासे यहां आयेगा। गांधीजीका नाम होगा तो कुछ नैतिक अूंचाअी और गरीव दलित जनताके अुद्धारका आदर्श अुसमें रहेगा। हम जितना रुपया जमा करेंगे, अुतनी मदद सरकार भी हमें दिलायेगी।

हमारे वच्चोंको हिन्दुस्तान या विलायत भेजनेसे यहांके प्रश्न हल नहीं होंगे। नअी और अुच्च शिक्षा द्वारा हम यहां नअी संस्कृति स्थापित करेंगे। अेक कॉलेज कायम हो जायगा, तो अुसके आसपास अनेक प्रवृत्तियां गुंथ जायंगी। गांधी-टैगोर व्याख्यानमाला जारी करेंगे। यहांकी जातियोंकी भाषाओंमें अच्छा साहित्य तैयार करा कर अुन भाषाओंकी संस्कारशक्ति वढ़ायेंगे। जिस जातिकी भाषा समर्थ हुअी, वह जाति भी समर्थ होगी ही। क्योंकि भाषा और साहित्य जातिका आध्यात्मिक दूध है। यहांकी व्रिटिश नीतिकी संकीर्णता मुझे मालूम है। वह हमें अन्त तक नहीं सता सकेगी। आजकलकी दुनियाकी हालत ही अैसी है कि संकुचित नीति भविष्यमें अुन्हें नहीं पुसायेगी। अगर हम अफ्रीकी जनताकी सच्ची सेवा करेंगे, तो हमारी जड़ें यहां अवश्य मजवूत होंगी। शर्त यह है कि हमें नग्न स्वार्थ छोड़ देना चाहिये और यहांकी जनताके हितोंको प्रधानता देनी चाहिये।

गांधी स्मारक कॉलेजकी कल्पनाके प्रति लोग धीरे-धीरे अनुकूल होते जा रहे हैं। मुझे विश्वास है कि यह काम अवश्य शुरू होगा और अुसके द्वारा वहुत अच्छे परिणाम निकलेंगे। परन्तु अच्छे कामोंमें विघ्न भी अधिक होते हैं।

दारेस्सलाम हिन्द महासागरके पश्चिमी किनारेका आभूषण है। जैसे वम्वअीमें चौपाटीका गोल समुद्र कोलावाके प्रकाश-स्तंभसे लगा कर मलावार हिल तक फैला हुआ है, वही वात दारेस्सलामकी भी है। समुद्र-स्नानके लिअे यहां अितनी अच्छी जगहें हैं और वहांके समुद्रके रंग अितने सौम्य, सुन्दर और विविध दिखाअी पड़ते हैं कि अुन स्थानोंको छोड़नेका जी ही नहीं करता। हिन्दुस्तानमें कारवारका वन्दरगाह भी

अैसा ही सुन्दर है, यद्यपि वहांका दीपस्तंभ यहांकी अपेक्षा अधिक शोभा देता है। अुत्तर पूर्वके समुद्र तट पर ओशियन रोड है। यह रास्ता जहां समुद्रकी तरफ आगे जाता है, वहां हमारे यहांके लोगोंने अेक सुंदर बंगला वना कर अिस स्थानकी कद्र की है। अिस समय वहां ओशन ब्रीझके नामसे अेक युरोपियन होटल चलता है। आरामके लिअे यहांके किनारेकी अपेक्षा अधिक अच्छी जगह शायद ही कहीं मिल सके। दारेस्स्लाममें जहां तहां नारियलके पेड़ नीचेके मनुष्योंको आशीर्वाद देते हुअे खड़े दिखाअी पड़ते हैं। जहां-तहां अच्छे नये मकान बन रहे हैं। और अिस प्रकार शहरकी शोभा और सुविधायें वढ़ती जा रही हैं। कांगोके वेल्जियन लोगोंने यही बंदरगाह अपने लिअे पसंद किया है। अुनका अिलाका मध्य अफ्रीकाके पश्चिमकी तरफ है। परन्तु पश्चिमकी तरफ अुन्हें समुद्र तट नहींके बराबर ही मिला है। बेल्जियन कांगोके पूर्वकी ओर टांगानिकाका लंबा सरोवर है। अुसका आकार लाल मिर्चके जैसा लंवा पतला है। अिस सरोवरके पूर्वी किनारे पर जो किगोमा बंदरगाह है, अुसके और दारेस्सलामके बीच सात सौ मीलकी अेक सीधी रेलवे जाती है। यह रेलवे सारे टांगानिका प्रदेशको अुत्तर और दक्षिणमें विभाजित करती है। युद्धके समय रक्षाकी दृष्टिसे यह रेलवे बड़े ही महत्त्वकी है। रुआंडा-अुरुंडी अिलाकेकी तरफ या अुसुम्बरा शहरकी तरफ जानेके लिअे यही रास्ता सुभीतेका है।

दारेस्सलाममें अफ्रीकी बालकोंकी शिक्षाकी दो सरकारी संस्थाअें हमने देखीं। लड़कोंकी संस्थामें पढ़ाअीका काम अुनसे सख्तीके साथ कराया जाता है। वहांके मुख्य अध्यापकने बातों ही बातोंमें कहा, "जो लड़के चौदहवें वर्षमें शादी करते हैं, अुन लड़कोंको अिसी अुम्रमें अपने भविष्यका खयाल करके लगनके साथ पढ़ना ही चाहिये। क्या आपको अैसा नहीं लगता? बच्चे हैं कह कर दरगुजर किया जाय, तो वे कभी अूंचे नहीं अुठेंगे और अपनी सारी शक्ति प्रकट नहीं कर सकेंगे। पढ़ाया जाय प्रेमपूर्वक, परन्तु लड़के पढ़ाअीमें ढिलाअी करें तो सहन नहीं करना चाहिये।" अुस गोरे शिक्षककी बात सच थी। अुसके विद्यार्थी लगनसे पढ़ भी रहे थे।

जब हम लड़कियोंकी पाठशाला देखने गये, तब वहां खेलनेकी छुट्टी थी। कुछ लड़कियां खाने बैठी थीं, कुछ खेल रही थीं। अुनके घुंघराले बाल और अुस्तरेसे निकाली हुअी मांगें खास तौर पर देखने लायक थीं। दुनियाके दूसरे मनुष्योंसे अफ्रीकी लोगोंके बाल बिलकुल भिन्न होते हैं। अुनमें भी सुन्दरता लानेका ये लोग बहुत प्रयत्न करते हैं। और अुसमें सफलता मिलती ही न हो, सो बात नहीं। यहांके हरअेक प्रदेशकी बाल संवारनेकी पद्धति अलग है। ये सब प्रकार फोटो-आल्बममें अेकत्र किये जायं, तो अफ्रीकी रसिकताका अेक सुन्दर संग्रह तैयार हो जाय। अफ्रीकी लोग दूसरी जातियोंके साथ विवाह करें, तो अुनकी संतानकी चमड़ीका रंग बदल जाय। परन्तु कहा जाता है कि बालोंके मामलेमें अफ्रीकी असर स्थायी दिखाअी देता है। अैसी रायें कहां तक सच होती हैं, यह कोअी नहीं देखता। कुछ सिद्धान्त अिसीलिअे बिना जांच किये स्वीकार कर लिये जाते हैं कि लोगोंको वे आकर्षक लगते हैं।

अफ्रीकी लोगोंके लिअे सरकारकी तरफसे कअी स्थानों पर वेलफेअर सेन्टर्स खुले हुअे हैं, जहां ये लोग आजादीके साथ अिकट्ठे होते हैं, खेल खेलते हैं, अखबार पढ़ते हैं, रात्रिवर्ग चलाते हैं और जीमें आये तो वहां शराबका सेवन भी कर सकते हैं।

सारे पूर्व अफ्रीकामें शराब खुले तौर पर अिस्तेमाल की जाती है। हमारे यहांके लोगोंने भी अिस रिवाजमें वहां बड़ी प्रगति की है! कुछ अच्छे और प्रतिष्ठित लोग जब सूर्यास्तके समय शराब पीते हैं और मस्त होकर बातें करते हैं तब हमें अजीबसा लगता है। सभी कहते हैं कि कुछ लोग अपवादस्वरूप नहीं पीते। कौन अपवादस्वरूप हैं और कौन नियमके अधीन हैं, यह जांच करने या जान लेनेकी मैंने हिम्मत नहीं की। मैंने यही माननेमें सुविधा समझी कि जो हमारे सम्पर्कमें आते जाते हैं अुनमें से अधिकांश नहीं पीते।

हमारे सम्मानमें जो भोज रखे जाते, अुनमें युरोपियन लोगोंको भी आमंत्रण होनेके कारण अुनके लिअे शराबकी सुविधा रखी जाती थी; और फिर हमारे यहांके लोगोंमें भी जैसी जिसकी रुचि होती, वह अुसी तरह करता था। यह यहांका सर्वमान्य रिवाज है। जब मेरे जैसा कोअी

आता है तब अिन लोगोंको यह प्रश्न पूछनेमें मजा आता है कि "आप यह सब कैसे निभा लेते हैं?" मैं यह कहकर संतोष कर लेता कि "विदेशमें सारा समाज जिस रिवाजको मानता है, मैं अुसका काजी बनने नहीं आया हूं। मैं अपने सिद्धान्तका पालन करके संतोष रखता हूं। मद्यपान-निषेधका मिशन लेकर आया होता, तो दूसरा ढंग अख्तियार करता।" दारेस्सलामको ध्यानमें रखकर यह सब नहीं लिखा है। युगांडामें यह सवाल खास तौर पर विशेष महत्त्वका बताया गया था।

अफ्रीकन वेलफेअर सेण्टरोंमें ग्रामोफोन चलता देखकर मैंने अफ्रीकी संगीतकी मांग की। अफ्रीकी भाषाओंमें लिखे गये गीत और युरोपियन राग — अैसे प्रकार मिशनरी लोगोंने बहुतसे चलाये हैं। अिनका संगीत अुच्च कोटिका होता है। अमरीकामें प्रशंसित 'निग्रो स्पिरीच्युअल्स' के बारेमें हम जानते हैं। मुझे यहां अफ्रीकी भाषा, अफ्रीकी छन्द, और राग भी अफ्रीकी, अैसा संगीत चाहिये था। अेक ही रेकॉर्ड अिस प्रकारकी थी और अुसमें भी राग शुद्ध अफ्रीकी नहीं था। अरबी संगीतका असर अुसमें स्पष्ट जान पड़ता था।

हरअेक जाति अपने संगीतमें अपनी आत्मा अुंडेलती है और अपने सारे अितिहासका हृदय पर जो असर हुआ हो, अुसे अपने संगीतके द्वारा व्यक्त करती है। अिसलिअे अफ्रीकी लोगोंका संगीत सुननेको मैं अुत्सुक था। जहां जहां कुछ भी अवसर मिला, वहीं मैंने अफ्रीकी संगीत सुननेका प्रयत्न किया। और जानकार लोगोंसे अुनकी राय पूछी। अफ्रीकी रागोंमें युद्ध संबंधी कोअी राग होता है या नहीं, रणमदके स्वर अुसमें मिलते हैं या नहीं, अिसकी मैंने जांच की। लोगोंने कहा कि वीररसके स्वर तो नहीं मिलते, परन्तु अुत्सवों और त्यौहारों वगैराके राग, विवाह-गीत और विजयगीत मिलते हैं। मैंने जो थोड़ासा संगीत सुना, अुसमें विषाद और निराशाके स्वर स्पष्ट दिखाअी देते थे। अरबी असर होने पर भी यह विशेषता कायम थी। श्री जयंतीभाअीने कुछ अफ्रीकी रेकॉर्ड लाकर सुनाये। अुन परसे अूपरकी राय मजबूत हुअी। परन्तु दूसरी तरहका संगीत अफ्रीकी लोगोंके पास नहीं है, यह कहने जितना अनुभव मुझे नहीं है। संगीतका मर्म समझनेवाले लोगोंको अफ्रीकी संगीतका

गहरा अध्ययन करना चाहिये। हमारे यहां संगीतशास्त्रकी जितनी अुपासना हुअी, अुतनी अुसके मर्मकी नहीं हुअी। अिसलिअे वहुत लोग 'साअिकोलॉजी ऑफ म्युजिक' से अपरिचित रहते हैं।

दारेस्सलाममें अेक अच्छा-सा अफ्रीकी म्यूजियम है। म्यूजियम है तो छोटा, परन्तु अत्यंत कीमती है।

अफ्रीकी लोग जव शिकारको जाते हैं, तव नोक पर जहरसे वुझाये हुअे तीर लेकर जाते हैं। पुराने जमानेके तीरोंकी नोक भी लकड़ीकी होती थी और हमारी तकलीकी नोककी तरह अुसमें आंकड़ा रहता था। तीर जानवरको लगा कि अुसका सिरा तुरन्त टूट जाता है, वह जानवरके शरीरमें घर कर लेता है और नोकके जहरसे जानवर मर जाता है। मुझे कहा गया कि म्यूजियमके वस्तुपालने अफ्रीकामें काम आनेवाले अैसे जहरोंका गहरा अध्ययन किया है।

अफ्रीकाके मध्यभागकी किसी गुफामें चालीस हजार वर्ष पहलेका जो अेक चित्र चित्रित है, अुसकी नकल अिस म्यूजियममें रखी गअी है। पशुओंकी हूवहू शकलें और शिकारके प्रसंग अिस चित्रकी खासियत है।

अफ्रीकाकी सारी संस्कृति ग्रामीण ढंगकी है। अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक सब जगह झोंपड़े ही झोंपड़े दिखाअी देते हैं। अींट-चूने या पत्थरका अेक भी मकान प्राचीन अफ्रीकियोंने नहीं बनाया। चमड़े या वल्कलके अुनके कपड़े, लकड़ीमें खोदी हुअी नावें, कौड़ियों, कांचके टुकड़ों और मणियोंकी कारीगरी, लकड़ी और चमड़ेके अुनके वाजे, अैसी वहुतसी चीजें देखनेको मिलीं। कुल मिलाकर अव तक हम कोअी पांच म्यूजियम ही देख सके।

पूर्व अफ्रीकामें जहां-जहां महाराष्ट्री मिले, वहीं अुच्च अभिरुचि-वाला संगीत, अच्छासा नाट्य और अहिंसाके सिद्धांतके प्रति अश्रद्धा सुननेको मिली। महाराष्ट्री लोग गांधीजीकी वात समझनेका पूरा प्रयत्न करते हैं। परन्तु अेक खास पक्षके नेताओंके अखंड प्रचारका असर अुनके मस्तिष्क पर अितना हो गया है कि वे किसी भी तरह अिस वातको नहीं मान सकते कि गांधीजीका आदर्शवाद व्यावहारिक भी है। अुन्हें धीरजके साथ समझानेकी जरूरत है।

दारेस्सलामका व्यायाम मंडल वहांके युवकोंमें अच्छा काम कर रहा है। व्यायाम मंडलमें सेवाका वातावरण होने और शरीर-संवर्धनकी तरफ ध्यान दिया जानेके कारण धर्मोपदेशकी अपेक्षा भी व्यायाम मंडलोंके जरिये चरित्रकी दृढ़ता अधिक अच्छी तरह संपादित होती है।

अिसी शहरमें अेक अफ्रीकी संस्थाने हमें पार्टी दी थी। अुसमें सदाकी भांति भाषण होनेके बाद बढ़िया प्रश्नोत्तर हुअे। गांधीजीके सिद्धान्तोंको समझनेके लिअे और हिन्दुस्तानका रुख जान लेनेके लिअे हर जगह अफ्रीकी लोग बड़े अुत्सुक होते हैं। "आप लड़ाअी किये बगैर और खून बहाये बिना कैसे स्वतंत्र हो सके? आपकी यह कला हमें सिखाअिये।" अिस तरह हर जगह अफ्रीकी लोग हमसे पूछते। यहां आनेके लिअे परमिट देते समय यहांकी सरकारने हम पर किसी किस्मकी शर्त नहीं लगाअी थी, यह सच है। परन्तु अिसी कारण मेहमानकी हैसियतसे मेरे लिअे मर्यादाअें रखना जरूरी था। अिसलिअे अिस प्रकारकी शंका भी मुझे पैदा नहीं करनी थी कि यहां आकर अफ्रीकी लोगोंको मैं यहांकी सरकारके विरुद्ध भड़काता हूं। अिसके सिवा माखनसिंह नामक अेक हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट पर अिन दिनों अेक मुकदमा चल रहा था, जिससे सारा वातावरण क्षुब्ध हो गया था। अिन सब बातोंका विचार करके मैंने हर जगह गांधीजीके रचनात्मक कार्योंका महत्त्व समझाकर संतोष मान लिया। रचनात्मक कार्योंसे जनताकी शक्ति किस तरह बढ़ती है, अुसमें आत्मविश्वास कैसे आता है और जनताका संगठन करना किस प्रकार सरल हो जाता है, यह सब कहकर ही मैं रुक जाता था। सत्याग्रह या असहयोगकी बात मैं जान-बूझकर नहीं कहता था। गांधीजीका अंग्रेजी साहित्य सर्वत्र मिलता ही है। गरज होगी तो ये लोग पढ़ लेंगे।

मैं मानता हूं कि अिस देशमें अब भी कुछ समय तक गोरोंके लिअे स्थान है। हिन्दुस्तानकी स्वतंत्रता मान लेनेके बाद अंग्रेजोंका अंतिम आधार अफ्रीका ही है। अगर ये लोग भविष्यको पहचान कर अफ्रीकाके लोगोंके साथ और यहांके भारतीयोंके साथ अच्छा बर्ताव करें,

हुअी ये मूर्तियां अफ्रीकी जीवनकी प्रतिनिधि हैं। अुनके कान, अुनकी आंखें, अुनके होठ, अुनकी ठोड़ी — चारों जगह अुनके स्वभावका प्रतिबिम्ब पड़ता है। युरोपियन लोग अफ्रीकी लोगोंकी मूर्तियां लकड़ीमें खोदकर अपने घरोंमें रखते हैं और अुनके हाथोंमें थाली या तश्तरी देते हैं। यह मुझे बिलकुल पसन्द नहीं। यह जाति हमेशाके लिअे घरके बॉय या नौकर बननेके लिअे पैदा नहीं हुअी। नौकरकी मूर्ति रखनी ही हो तो अपनी जातिकी मूर्ति ही अच्छी। अिसकी अपेक्षा हाथमें तीर और ढाल लेकर शिकार करते हुअे जंगली अफ्रीकियोंकी मूर्तियां हजार दर्जे अच्छी।

११

प्रार्थना-प्रवचन

महात्मा गांधीने अेक बार आश्रमकी व्याख्या करते हुअे कहा था कि, "प्रार्थना पर — सामूहिक प्रार्थना पर जिन लोगोंका विश्वास है, अुनका संघ ही आश्रम है।" किसी भी धर्मका आदमी आश्रमकी प्रार्थनामें शरीक हो सकता है। कोअी खास तरहकी प्रार्थना ही करनी चाहिये, अैसा आग्रह नहीं है। जिसने सभी धर्मोंको अपनाया, अुसे सभी धर्मोंकी प्रार्थनाअें गानेमें संकोच नहीं होता। थियोसोफीने भी सब धर्मोंके सिद्धान्तोंका आदरपूर्वक अध्ययन करने पर बहुत जोर दिया है। अिसलिअे हमारी आश्रमकी प्रार्थनाके प्रति थियोसोफिस्ट लोगोंका सद्भाव विशेष होता है। मोम्बासामें श्री मास्टरकी गांधी सोसायटीमें, दारेस्सलाममें श्री जयन्तीभाअीके वातावरणमें और जंगबारमें अुनके पिताजीके चलाये हुअे थियोसोफिकल प्रार्थना-मंदिरमें जो प्रार्थनायें हमने कीं, वे सचमुच सामूहिक प्रार्थनायें थीं। क्योंकि अनेक लोग अुनमें भक्तिभावसे शरीक होते थे। अिन प्रार्थनाओंके साथ जो प्रवचन किये गये, अुनका सार यहां दिये देता हूं।

प्रार्थना अेक दृष्टिसे देखा जाय तो हृदयका स्नान है और दूसरी तरहसे देखा जाय तो दिलकी खुराक भी है। प्रार्थनाके वातावरणमें

अगर हम तल्लीन हो सकें, तो हृदयमें जमे हुअे अनेक कुसंस्कार और मलिन संकल्प धीरे-धीरे मिट जाते हैं और शुभ संकल्प मजबूत और विकसित होते जाते हैं। प्रार्थनामें हम कुछ मांगें या न मांगें, भगवानकी सन्निधिमें खड़े रहनेसे सारा वायुमंडल अपने आप पवित्र होता जाता है। कितनी ही परेशानियां अपने आप हल हो जाती हैं और समूहमें की गअी प्रार्थना द्वारा अुसमें सम्मिलित होनेवाले लोगोंके बीच अेक प्रकारकी आत्मीयता और आत्म-परायणता पैदा हो सकती है। समाज अनेक तरहसे गिरा हुआ हो, हारा हुआ हो और छिन्न-भिन्न हो गया हो, तो भी अुसमें नया चेतन पैदा करनेमें प्रार्थना समर्थ है। प्रार्थना मनुष्य-जातिकी आखिरी पूंजी है। और कुछ भी बाकी न रहा हो, तो भी प्रार्थना हमें धीरज और नअी आशा प्रदान कर सकती है। अिसलिअे मनुष्यको सद्भावपूर्वक प्रार्थनाका रिवाज कायम रखना चाहिये। अगर प्रार्थनाकी आदत हो तो कठिन अवसर पर अुसीकी अचूक शरण लेना सूझता है। और अिस प्रकार जैसे समुद्रमें डूबनेवाले मनुष्यके लिअे रबरके कड़े या कॉर्कके जैकट कामे आते हैं, वैसे ही प्रार्थना काम आती है। हरअेक कुटुम्बमें और कुछ नहीं तो रोज अेक बार सवेरे या शामको सब लोगोंको साथ मिलकर प्रार्थना करनेका रिवाज रखना चाहिये। और अुसके अन्तमें, अुसी पवित्र वातावरणमें घरके सुख-दुःखकी और मेल या झगड़ेकी बातें छेड़नी चाहिये। हरअेक खानदानके लिअे यह बड़ी शिक्षा है। जैसे व्यक्तिकी आत्मा होती है वैसे ही कुटुम्ब, जाति या संस्थामें भी हम आत्मा जाग्रत कर सकते हैं।

अिसी तरह हमारे मंदिर भी सारे समुदायकी आत्माकी जागृतिके लिअे अिस्तेमाल किये जा सकते हैं। मंदिरोंमें मूर्ति हो या न हो, यह गौण चीज है। परन्तु मूर्तिकी पूजाके साथ आचार धर्मका झगड़ा पैदा हो जाता है। यह नहीं कहा जा सकता कि मूर्तिको नहलाने-खिलानेमें कोअी खास धार्मिक वृत्ति पैदा होती ही है। हिन्दू समाजमें जहां खानेकी बात आअी, वहां चौका-बेचौका, छुआछूत और अूंच-नीचका भाव वगैरा असंख्य बातें पैदा हो जाती हैं। शुद्ध और नित्यतृप्त भगवानके लिअे नहाने-खानेकी बात न भी रखें तो काम चल सकता है। भोग

तथा जानवरोंके लिअे रुग्णालय भी हो। हरअेक धर्मके त्यौहार अुचित परिवर्तनके साथ मंदिरों द्वारा मनाये जा सकते हैं। अिस प्रकार हरअेक मंदिरको धर्मसेवाकी अेक अद्यतन (अप-टु-डेट) संस्था वनाया जा सकता है।

हमारा धर्म सनातनके नामसे पुकारा जाता है। सनातनका अर्थ है हमेशाका। कोअी भी वस्तु सड़े नहीं, विगड़े नहीं और स्वच्छ और ताजी रहे, तभी अुसे हमेशाकी या टिकाअू कहा जा सकता है। सनातन अर्थात् नित्य नूतन। जैसे वहती हुअी हवा शुद्ध हवा होती है, वहता हुआ पानी स्वच्छ होता है, अुसी तरह समय-समय पर जिसमें सुधार और फेरवदल होते रहते हैं वही सनातन धर्म माना जाता है। हम अिसी प्रकार करते भी आये हैं। वीचमें यह काम रुक गया, क्योंकि विचार-जागृति मन्द पड़ गअी और रूढ़िधर्मने जोर पकड़ लिया। अव हमें धर्मके संस्करणकी, सुधारकी प्रवृत्ति फिरसे अपनानी चाहिये।

पामर लोगोंने तेज धर्मसे डर कर अेवजी धर्म चलाया। "गोदानके वदले सवा रुपया दे दो।" ... "त्यागके वजाय दानसे काम चला लो।" ... "जीवन परिवर्तनके स्थान पर नाममात्रका प्रायश्चित्त सुझा दो।" अैसे अनेक अेवजी धर्म हमने चला दिये हैं। नतीजा यह हुआ कि धर्म मंद और निःसत्त्व हो गया। सत्यनारायणकी ही अुपासनाको देखिये। अुसमें सत्यनिष्ठा पर जोर दिया है। वचनपालनका माहात्म्य वताया है। परन्तु यह सब मन पर जमा देनेके लिअे डर और लालचकी दो हीन असामाजिक वृत्तियोंकी शरण ली गअी है। "सत्यको छोड़ोगे — धोखा दोगे तो अमुक अमुक हानि होगी। सत्यको मानोगे तो फलां लाभ होगा," अैसी वनावटी फलश्रुति वताकर लोगोंको सत्यनिष्ठ नहीं वनाया जा सकता। सत्यनिष्ठाके कारण ही मनुष्य सत्यका पालन करे तो ही वह अुन्नत होगा।

धार्मिक कहानियां हमें वताती हैं कि भगवान कभी-कभी चाहे जैसा रूप धारण करके हमारी परीक्षा लेते हैं। "वह कुष्ठ रोगीका रूप धारण करेगा, भिखारी वनकर आयेगा। वह यवनके रूपमें प्रगट होगा और हमारी धर्मनिष्ठाकी जांच करेगा।" अैसी कहानी सुनने वादके

मनुष्य अनजान या विचित्र आगन्तुकसे डरता है। हम यह क्यों न समझ लें कि हरअेक मनुष्य अीश्वरका ही रूप है? हरअेक मानवके द्वारा प्रतिक्षण अीश्वर हमें कसौटी पर चढ़ाता है। अैसी भावना दृढ़ हो जाय तो हर क्षण और हर प्रसंग नित्य साधना और अखंड आनन्दका बन जायगा।

भीतर देखने पर अीश्वर अन्तर्यामी है। बाहर देखें तो वह जगत्-स्वरूप है। अीश्वरने अनेक अवतार धारण किये, अुससे पहले भगवानका सबसे पहला, सबसे बड़ा और सनातन अवतार तो यह सृष्टि ही है। भगवान हमें सृष्टिके रूपमें अखंड दर्शन देते हैं। गीता हमें यही विश्वात्मैक्यका धर्म सिखाती है।

गीता हमारा सर्वोच्च धर्मग्रंथ है, परन्तु हम अुसे केवल हिन्दू धर्मका ही न समझें। गीता-धर्म सिर्फ हिन्दुओंका धर्म नहीं है, वह विश्वधर्म है। हम गीताके हैं। गीता सबकी है, सिर्फ हमारी नहीं। गीता-धर्म सुननेके लिअे हम तमाम दुनियाको बुलायें। अिसकी दीक्षा देनेकी भी बात नहीं है। वह जिसके हृदयमें अुदय हो अुसका अुद्धार हो जाय, अिसीलिअे हम गीतामंदिर न बनाने लगें। गीता सभी धर्मोंमें प्रवेश कर सकती है। गीता केवल माननेका धर्म नहीं, परन्तु आचरण करनेका धर्म है। अुसमें ज्ञानी, भक्त, योगी, पंडित, त्रिगुणातीत और स्थिरप्रज्ञके जो लक्षण दिये हैं वे सब अेक ही हैं। मनुष्य-जातिके लिअे वे सर्वमान्य आदर्श हैं। समाज बना रहे और सर्वांगीण अुन्नति करे, अिसके लिअे जो सद्गुण मनुष्यको पैदा करने जरूरी हैं, गीतामें वे सब दैवी सम्पत्तिके वर्णनमें दे दिये हैं। अिसलिअे गीता समाजधर्म भी है और मोक्षधर्म भी। अभ्युदय और निःश्रेयस — अिहलोककी अुन्नति और आत्माका अुद्धार दोनों अेक साथ प्राप्त करनेकी कुंजी गीताने मनुष्य-जातिको दी है। अिसीलिअे गीताधर्मी लोगोंने श्रीकृष्णको 'जगद्-गुरु' कहा है।

हमने समाजधर्मके रूपमें चातुर्वर्ण्यकी स्थापना की। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार समाजोपयोगी वृत्तियां हैं। कुछ लोगोंमें अेक वृत्ति प्रधान होती है, कुछमें दूसरी। परन्तु हरअेक मनुष्यको ये चारों वृत्तियां अिकट्ठी ही अपनेमें पैदा करनी पड़ेंगी। नहीं तो मनुष्यका जीवन

अेकांगी और पंगु हो जायगा। अकेला ब्राह्मण, अकेला क्षत्रिय, अकेला वैश्य या अकेला शूद्र सम्पूर्ण मनुष्य नहीं है। गांधीजीमें ये चारों वृत्तियां अिकट्ठी विकसित हुअी थीं। हमें अब चार अलग-अलग वर्ण और असंख्य जातियां छोड़ देनी चाहियें और हरअेक व्यक्तिमें मानवताके सम्पूर्ण विकासका आग्रह रखना चाहिये। गीताका संन्यास, संन्यास आश्रम नहीं, परन्तु ब्रह्मचारी, गृहस्थ आदि सभी लोगोंके लिअे आवश्यक अलिप्त और अनासक्त वृत्ति है।

और अब तो हमें सभी धर्मोंका आदरपूर्वक अध्ययन करके सब धर्मोंको अपनाना है। अलग-अलग धर्मोंके बीचका झगड़ा सिर्फ चर्चा और तुलनासे नहीं मिटेगा। सभी धर्मोंको स्वीकार करनेसे सच्ची धार्मिकता अूपर निखर आयेगी और विधि-विधानका मैल नीचे बैठ जायगा। हमारा बनाया हुआ अूंच-नीचका और अपने-परायेका भाव धर्मका अंग नहीं है, परन्तु निरा अधर्म है। छुआछूतके साथ अूंच-नीचका भाव भी हमें निकाल देना चाहिये। हिन्दुस्तानसे अितनी दूर आ गये हैं तो हमें शुद्ध धर्मका चिन्तन करना चाहिये और सामाजिक दोष निकाल देने चाहिये। रोटी-बेटी व्यवहारके पुराने नियम अब कामके नहीं हैं। जहां सभी धर्म हम अपने मानते हों, वहां धर्म-परिवर्तन करनेकी कोअी जरूरत भी नहीं और अुसमें कोअी पाप भी नहीं।

हमारे तमाम कामोंमें सर्वोदयकी दृष्टि होनी चाहिये। जो सबसे पीछे है अुसे आगे लानेका विशेष प्रयत्न होना चाहिये। अेकके साथ अन्याय करके दूसरेका भला करने लगेंगे, तो वह सर्वोदय धर्मका द्रोह होगा। अिस तरह विश्वबन्धुत्वका हनन होता है। आत्मशुद्धि भी सामाजिक कर्तव्य ही है। अहिंसाके बिना समाजकी धारणा नहीं हो सकती और सत्यनारायणका दर्शन भी नहीं हो सकता।

१२

किटुंडा

भूमध्य रेखा पार करते समय जैसे मनमें गंभीर भाव प्रगट हुआ था, वैसे ही अब तो दक्षिणमें लिंडी बन्दरगाह तक और मूंगफलीके विराट प्रयोगवाले नचिंग्वे तक ठेठ दक्षिणमें पहुंचनेवाला हूं; अिस खयालसे भी मन गंभीर हो गया। ६ जूनको हमने पहली बार दारेस्सलाम छोड़ा। लिंडी तकका २०० मीलका सफर समुद्रके किनारे-किनारे मोटर द्वारा हो सकता था। परन्तु हमें वक्त बचाना था अिसलिअे पन्त दम्पती, कमलनयन, छोटा राहुल, चि० सरोज और मैं सवेरे दारेस्सलामसे विमान मार्गसे रवाना हुअे। यह आसमानी रास्ता पहले जमीन परसे और फिर समुद्र परसे जाता था। अिसलिअे समुद्रका बढ़िया गुलाबी रंग, बीच-बीचमें छोटे-बड़े द्वीप आते तब पन्नेका हरा रंग, माफिया, सोंगोसोंगो वगैरा द्वीपोंकी शोभा आदि सब कुछ अपेक्षानुसार था। दाअीं तरफ पहले किसूजू दिखाअी दिया। अुसके बाद रुफीजी नदीके असंख्य सुन्दर मोड़ और समुद्रसे मिलनेके अुसके अनेक मुख देखकर आनन्द ही आनन्द हो गया। सचमुच अिस नदीको रूपवती कहना चाहिये। अिसके बाद दो-तीन छोटी-छोटी नदियां समुद्रसे मिलती नजर आअीं। और अब लगभग नामशेष रह गये किलवा नामक दो बन्दरगाह दिखाअी पड़े। अेक है किलवा-किविंजी और दूसरा है किलवा-किसिवानी। अिस दूसरे बन्दरगाहसे पुराने समयमें न्यासा सरोवर तक जानेका रास्ता था। यह सारी शोभा देखते देखते हम लिंडी हवाअी अड्डे तक पहुंच गये। लिंडी बन्दरगाह और शहरसे यह विमान केन्द्र लगभग १४ मील दूर है। लिंडीका बन्दरगाह भूमध्य रेखासे दस डिग्री दक्षिणमें है। बन्दरगाह बहुत ही शान्त माना जाता है। लुकलेडी नामकी अेक छोटीसी नदी खूब चौड़ी होकर वहां समुद्रसे मिलती है।

लिंडीमें खानावाना खाकर शाम पड़ते ही अेशियन लोगोंकी अेक सभा करके हम नदीके अुस पार किटुंडा पहाड़ी पर रातको सोने गये। शामकी सभामें हिन्दुस्तानके हिन्दू-मुसलमानोंके सिवा बहुतसे

सुख अनुभव कर रही थीं। अन्तमें भगवान सूर्यनारायण अूपर आये और अुन्होंने अपनी किरणोंसे अुन सबको जगाया। करस्पर्शसे प्रसन्न हुअी खाड़ी तुरन्त चमकने लगी। पहाड़ियोंका मुख अुज्ज्वल हुआ और अुन्होंने हमें अपनी ओर यात्रा करनेका आमंत्रण दिया।

आठ बजे रवाना होकर सायसलके अनेक खेत देखते देखते और सायसलकी परवरिशकी तफसील सुनते सुनते हम २८ मील पहुंचे। वहां श्री धीरूभाअी पोपटकी अेक सायसल फैक्टरी थी, अुसे देखने गये। अिससे पहले नचिंग्वे ग्राअुन्डनट स्कीमके लिअे सामान ले जानेके लिअे जो अेक छोटासा बन्दरगाह तैयार किया गया है वह हमने देखा। वहांसे नअी रेलवे बन रही है और पम्प करके पेट्रोल भेजा जाता है। चाहे जैसे जंगलमें विज्ञानके साधन लाकर वहांसे चाहे जहां सही सलामत ले जानेकी गोरे लोगोंकी तत्परता प्रशंसनीय है। और अुनके अैसे काम सफलतापूर्वक पूरे करनेमें यहांके हमारे हिन्दी लोगोंकी अुपयोगिता, लगन और बहादुरी भी अुतनी ही स्तुत्य है। नअी सृष्टि पैदा करके वहां व्यवस्था स्थापित करनी हो, तब गोरे लोगोंका किया हुआ प्रबन्ध समझ लेने और अुसे वफादारीके साथ अमलमें लानेमें हमारे यहांके लोगोंकी बराबरी करनेवाली कोअी जाति नहीं है। फौजके सेनापति और जहाजोंके कप्तान भी हमारे यहांके लोगोंके अिस गुणकी मुक्त कंठसे बड़ाअी करते हैं।

यह सब देखकर हम लिंडी पहुंचे, तो वहांके प्रोविंशियल कमिश्नर मि० पाअिकने हमें दोपहरका खाना खिलाया। अुनके साथ वार्तालाप करके हम हिन्दू मंडलमें गये। वहां अधिकांश बहनें ही थीं।

पूर्व अफ्रीकामें हमारे सन्मानमें जो अनेक भोज और चाय-पार्टियां दी जाती थीं, अुनमें युरोपियन अधिकारी बिना किसी संकोचके आते थे। परन्तु किसी युरोपियन अधिकारीने हमें अपने यहां खानेको बुलाया हो, अैसा यह अेक ही अुदाहरण है। मि० पाअिक अत्यन्त सज्जन मनुष्य हैं और अुदार विचारोंके हैं। हममें से जो लोग बिलकुल निरामिषाहारी थे, अुनके लिअे अुन्होंने अपने यहां बहुत

अच्छा अिन्तजाम किया था। अुनके यहां और गोरे मेहमान भी आये थे, अिसलिअे बातचीतका रंग अच्छा जमा।

यहांके अिण्डियन अेसोसियेशनकी चाय-पार्टीमें रिवाजके अनुसार हमारे भाषण हुअे। अुनमें श्री कमलनयन बजाज़का भाषण जरा सख्त और युरोपियन लोगोंको चुभनेवाला था। परन्तु मि० पाअिकने अुस पर जरा भी आपत्ति न की।

रातको किटुंडामें मेघजीभाअीकी कोठी पर बड़ा खाना था। वहां भी गोरे काफ़ी संख्यामें आये थे। वर्धा शिक्षाकी योजना वगैरा अनेक विषयों पर रसिक चर्चा हुअी। श्री मेघजीभाअी अत्यन्त होशियार और संस्कारी अुद्योगपति हैं। अुनके साथ अुनकी लड़की हंसा भी किटुंडा आअी थी।

१३

दुनियाभरके लिअे मूंगफली

युरोपीय महायुद्धके अन्तमें सारी दुनियाकी चिन्ता रखनेवाले होशियार अंग्रेज लोगोंने देखा कि विलायतमें और सब जगह वनस्पतिकी चर्बी यानी तेल और खलीकी कमी पैदा होगी। अुन्होंने खूब जल्दी अनेक देशोंमें मूंगफली बो कर अुस कमीको पूरा करनेका बीड़ा अुठाया और अेकसे अेक अधिक प्रचंड योजनाअें स्वदेशके सामने रखीं। युद्धके कारण हुअी आर्थिक तंगीके बावजूद अिग्लैण्डने पालियामेन्टकी मंजूरी लेकर यह काम शुरू किया। पानीकी तरह पैसा खर्च करके अुन्होंने अिस योजनाको प्रारंभ किया। जमीनका जो सरवे करना था, सो हवाअी जहाजसे कर लिया। हिसाबनवीस मिलनेसे पहले काम शुरू भी हो गया। बड़े बड़े ट्रेक्टर और बुलडोजर लाये गये और जहाजोंमें काम आनेवाली लोहेकी बड़ी बड़ी जंजीरें ट्रेक्टरोंसे बांधकर जंगलके पेड़ जमींदोज करना शुरू कर दिया गया। मूंगफली और सूरजमुखीके फूलोंमें से तेल निकालना शुरू किया गया। सारी योजना देखकर लोगोंको अैसा ही लगता था कि लड़ाअीकी तैयारी हो रही है। जब काम खूब बढ़ा तब पता

चला कि रुपया तो पानीकी तरह खर्च हो रहा है, परन्तु आयके नाम पर शून्य। बादमें जांच होने लगी। पता चला कि हिसाबका कोअी ठिकाना नहीं। जहाजमें काम आनेवाली जंजीरें पुरानी होनेके कारण टूट गअीं। नअी तैयार कराकर लानी पड़ीं। बड़ा शोर मचा। यह भी विचार हुआ कि सारी योजना छोड़ दी जाय क्या? परन्तु बहादुर अंग्रेज जाति युद्धकी तरह आर्थिक योजनामें भी हार मानकर बैठ जाने वाली नहीं थी। अब अिस योजनाको पक्के आधार पर चलानेके लिअे अुसमें आवश्यक सुधार होने लगे हैं।

यह सब काम देखने लायक था, अिसीलिअे हम अिधर आये थे। ८ जूनको सवेरे हम रवाना हुअे। लिंडी होकर ९३ मीलका सफर करके नचिंग्वे पहुंचे। वहां अिस जबरदस्त योजनाको अमलमें आते देखा। रास्तेमें मिन्गोयो और म्टामा दो स्थानों पर रास्ता बदलना पड़ा। पेट्रोलका नल रास्तेके किनारे जाता था। फौजी टैंकोंमें परिवर्तन करके अुनके ट्रेक्टर बनाये गये थे। बड़े बड़े बुलडोज़र जमीनको साफ करते थे। अेक सांकलको दो सिरों पर दो ट्रेक्टर चलाते हैं। अिसलिअे सांकलके जोरसे जंगलके बड़े बड़े आठ दस पेड़ भी अेक साथ अुखड़ कर गिर जाते हैं। यंत्रके जोरसे मनुष्य कितना राक्षसी काम कर सकता है, यह देखकर मैं तो स्तम्भित हो गया। अुसी क्षण मेरे मनमें विचार आया कि गोरोंकी देखभाल भले ही हो, परन्तु अिन ट्रेक्टरों और बुलडोज़रोंको चलानेवाले अफ्रीकी लोग ही हैं। अितना प्रचंड राक्षसी काम जिनके हाथों पूरा कराया जाता है, अुनकी बुद्धिका विकास हुअे बगैर नहीं रह सकता। होशियारीके साथ साथ अुनकी महत्त्वाकांक्षा भी बढ़ेगी। भारतीयोंके सहायक बनकर अिन लोगोंने अब तक बढ़अीगिरी और दर्जी वगैराका काम सीखा। दुकानोंमें बैठकर हिसाब भी रखने लगे। माल बेचते खरीदते अुनमें आधुनिकता आ गअी है। अब मूंगफलीकी अिस विराट योजनाको सफल करनेमें जब वे पूरी तरह भाग लेंगे, तब चाहे जैसे कारखाने वगैरा चलानेकी हिम्मत अुनमें पैदा हो जायगी। फिर अिन लोगोंको दबाकर रखना किसी भी राज्यके लिअे असंभव हो जायगा।

कार्यालयमें जाकर हम वहांके मुख्य अधिकारियोंसे मिले। अुन्होंने बारीक जानकारीवाले नकशों पर सारी योजना हमें पहले समझाअी। फिर वे हमारे साथ घूमे। अुनमें से अेक अनुभवीने कहा : " अैसी कोअी योजना हाथमें लेनेसे पहले अुस जगह पानीकी क्या सुविधा है, यह जांच करनी चाहिये। अिस जांच पर और पानीकी सुविधा पर योजनाकी आधी पूंजी लग जाय, तो भी मुझे आपत्तिकी बात मालूम नहीं होगी। बड़े पैमाने पर खेती करनेके लिअे भूगर्भ-विद्याका अुत्तम ज्ञान होना चाहिये।" अिस भाअीने दो तीन नकशे हमारे सामने रखकर हमें बताया कि यहांकी भूमि हिन्दुस्तान या युरोपकी भूमि जैसी नहीं। ज्वालामुखीकी बनाअी हुअी अिस जमीनमें हिन्दुस्तान जैसी खेती नहीं हो सकती। भाअी स्विन्बर्न और कॉफमेनसे अनेक प्रकारकी तफसील जान लेनेके बाद मुझे तो विश्वास हो गया कि अितनी बड़ी योजनामें भी विकेन्द्रीकरणका सिद्धान्त ध्यानमें रखा जाय, तो सब बातोंको देखते हुअे लाभ ही है।

यह सारी योजना देख लेनेके बाद हमने वहीं भोजन कर लिया। अिस योजनाके सिलसिलेमें जमा हुअे दुकानदार आदि जो भारतीय थे, अुनके साथ बैठकर हमने महत्त्वपूर्ण वार्तालाप किया। अुनके आतिथ्यके लिअे धन्यवाद देकर हम वहांसे विदा हुअे। अिस प्रदेशमें काजूके पेड़ भी बहुत हैं। मैं नहीं जानता कि काजूसे तेल निकल सकता है या नहीं। (अिसके छिलकेमें से जरूर तेज तेल निकलता है) परन्तु अिस मेवेके प्रति मुझे बचपनसे पक्षपात है। हिन्दुस्तानके पश्चिमी किनारे पर काजूकी पैदावार बहुत होती है। ये पेड़ अफ्रीकासे ही हिन्दुस्तान आये दिखते हैं। कहा जाता है कि यह पुर्तगालियोंकी सेवा है।

नचिंग्वेसे लौटते समय मोटरमें से सूर्यास्तकी शोभा कअी तरफसे देखते हुअे यात्राकी बहुत कुछ थकावट हम भूल गये। यहां तक कि रातको सोनेसे पहले मैं छत पर जाकर श्रीमती नलिनीबहन पंतको आकाशके तारे विस्तारपूर्वक बता सका। श्री तात्या अिनामदार भी अिसमें शरीक हो गये।

सवेरे हम किटुंडासे चले। पास ही श्री मेघजीभाओके दो सायसलके कारखाने थे। अेककी मशीनरी पुराने ढंगकी है, जब कि दूसरेकी अद्यतन है।

सायसलका धंधा पहले-पहल युरोपियन लोगोंने शुरू किया था। अिसमें वे कामयाब नहीं हुअे। धीरे धीरे गोरे हट गये और यह धंधा हमारे यहांके लोगोंके हाथमें आ गया।

युगाण्डा ट्रान्सपोर्ट कम्पनीका भी यही हाल हुआ। पहले गोरोंने अुसका ठेका लिया, परन्तु पहले ही साल ७५००० शिलिंगका घाटा खाया। अन्तमें अुन्हें यह ठेका आगाखानी लोगोंको दे देना पड़ा। पहले ही वर्षमें घाटा ७५००० से घटकर ३००० पर आ गया और अुसके बाद तो अब ये हमारे लोग २० या २५ फी सदी मुनाफा बांटते हैं। जहां व्यवस्था-शक्तिमें कोअी जाति अुन्नत हो जाती है, वहां सीधी स्पर्धामें अुसे कौन हरा सकता है? अैसे लोगोंको दबानेके लिअे राज करनेवाली जाति यदि हर बार कानून और मनमानीकी शरण ले, तो अुस जातिका मानस विकृत हो जाता है और समय परिपक्व होते अुसकी अधोगति हो जाती है।

लिंडीसे दारेस्सलाम जानेको रवाना होनेसे पहले दूसरे कितने ही काम करने पड़े। लिंडीके मुसलमान अेक-दो मस्जिदोंका जीर्णोद्धार करना चाहते थे। अिस सिलसिलेमें वे श्री अप्पासाहबको और हमें वहां ले गये। अप्पासाहब तो सभीके आदमी ठहरे। हरअेक काममें अुनकी सहानुभूतिकी आशा रखी ही जाती है और वे भी लोगोंको निराश नहीं करते। कहीं न कहींसे मदद देना अुन्होंने मंजूर किया और मस्जिदका काम आगे बढ़ानेकी सिफ़ारिश की।

लिंडीमें जो सरकारी अिंडियन स्कूल चल रहा है, अुसका संचालन गांवके लोगोंके हाथमें दिया हुआ है। अिस संचालनमें हिन्दू-मुसलमानोंके साथ होनेसे हालमें ही झगड़े पैदा हो गये हैं। अिन झगड़ोंकी तफ़सीलमें मैं नहीं जाअूंगा, परन्तु अुनसे जो निष्कर्ष निकलते हैं वे अुल्लेखनीय हैं। मुसलमानोंमें जब तक जागृति नहीं होती, तब तक वे कुछ नहीं बोलते। जैसे चलता हो चलने देते हैं। जब तक

यह हाल रहता है तव तक हिन्दू मुसलमानोंकी तारीफ करते हैं कि, “ये लोग कितने अच्छे हैं। मतभेद या झगड़ा है ही नहीं।”

अैसी व्यवस्थामें हिन्दुओंके मनमें मुसलमानोंके विरुद्ध हिन्दुओंका पक्षपात करनेकी वात तो नहीं होती, परन्तु मुसलमानोंकी संस्कारिता और बुद्धि-शक्तिके वारेमें आम तौर पर हिन्दुओंमें विशेष आदर नहीं होता। मुसलमानोंमें जागृति आते ही यह वात अुन्हें खलने लगती है। सार्वजनिक कार्योंमें भाग लेकर काम करते करते अपनी योग्यताका असर डालने और अपनी कमियां दूर करनेके वजाय वे तुरन्त साम्प्रदायिकता खड़ी कर देते हैं और मुसलमानोंकी हैसियतसे अपने हक आजमानेकी कोशिश करते हैं। “अधिकांश शिक्षक हिन्दू ही क्यों हों? हमारे शिक्षक भी होने चाहियें।” अैसा आग्रह शुरू होते ही हिन्दू शिकायत करते हैं कि, “चाहे जैसे ठोठ या संस्कार-हीन शिक्षक आप भर दें तो काम कैसे चले? हमारे बच्चोंकी शिक्षा खराब हो, यह हम कैसे सहन करें?” शिक्षकोंकी योग्यता नापनेमें हिन्दू या मुसलमान दोनों व्यवस्थापक तटस्थ होकर विचार नहीं कर सकते। धीरजपूर्वक शिक्षकोंको मौका देकर तैयार होने देना चाहिये, अितनीसी वात हिन्दू नहीं समझते। और अितनासा मुसलमानोंके ध्यानमें नहीं आता कि चाहे जैसे शिक्षक ले आनेसे लड़कोंकी तालीम विगड़ती है। व्यवस्थापक व्यवस्थाका विचार करते समय दोनों जातियोंके बालकोंकी शिक्षाका समान आस्थासे विचार करें और अेक-दूसरेके प्रति विश्वास और आदर रखें तो झगड़े मिट जायें। अपने-अपने स्वार्थोंकी तनातनी हो जाने पर लोग अितने अंधे हो जाते हैं कि वे निरा स्वार्थ भी समझना छोड़ देते हैं और आत्मनाश तक चले जाते हैं। अिसमें भी अगर किसीके सगे-सम्बन्धीकी नियुक्तिका प्रश्न आ जाय, तव तो अंधापन जहरीला वन जाता है। जहां किसी अेक जातिके शिक्षकोंका वहुमत हो, वहां दूसरी जाति यह आग्रह रखेगी ही कि “आवादीके अनुपातमें या विद्यार्थियोंके हिसावसे या रुपयेकी जो मदद दी गअी हो अुसके लिहाजसे हिन्दू या मुसलमान शिक्षकोंकी संख्या रहनी चाहिये।” (अिसमें अगर कोअी पारसी या अीसाअी

शिक्षक आ गये हों, तो अुन्हें अपनी तरफ खींचनेका प्रयत्न दोनों तरफसे होगा ही। और अिसमें से भी झगड़े पैदा होंगे।)

अपनी ही जातिके अंधे स्वार्थका आग्रह रखनेसे किसीका भी स्वार्थ पूरा नहीं होता। केवल अभिमानका पोषण होता है और सार्वजनिक जीवन बिगड़ता है। फिर नेता कहते हैं कि हम लोगोंके लिअे लोकतंत्र अनुकूल ही नहीं है। मेरी जातिके शिक्षकोंका बहुमत हो या अनुपात अधिक हो, तो मैं अवश्य कहूंगा : "शिक्षक योग्यतानुसार नियुक्त होने चाहिये। अनुपातसे क्या होगा ?" परन्तु यदि मेरी जातिके शिक्षकोंकी संख्या कम हो, तो मैं तुरन्त कहूंगा कि, "मुझे स्वयं आपत्ति नहीं, परन्तु मेरी जातिका विश्वास आप खो बैठेंगे। फिर अपनी जातिको समझाना मेरे लिअे कठिन हो जायगा। अिसलिअे वस्तुस्थितिको स्वीकार करके समझदारीके साथ अनुपातका सिद्धान्त कायम कीजिये।" अिसमें भी अनुपात जनसंख्याका, विद्यार्थियोंका या रुपयेकी मददका रहे? अिस सवाल पर झगड़ा रहेगा ही।

नोआखालीमें अेक अस्पतालमें बीमारोंको भरती करनेमें भी जातिका अनुपात रखनेका आग्रह मैंने देखा था और अिस कारण अेक खास जातिके गंभीर रोगियोंको भी निकालकर दूसरी जातिके नामके बीमारोंको बिस्तर दिये गये थे। वहांका अधिकारी कहता था, "अिसमें हमारी कुछ नहीं चल सकती। जातिको और किसी तरह समझाया ही नहीं जा सकता।"

अेक जगह तो मुझे मालूम है कि जेलके कैदियोंके मामलेमें भी जातीय अनुपातकी चर्चा हुअी थी! परन्तु अिन तफसीलोंमें मैं यहां नहीं जाअूंगा।

श्री कमलनयनने सुझाया कि, "व्यवस्थापकोंमें हिन्दुओंका चुनाव मुसलमान करें और मुसलमानोंका हिन्दू करें, तो शायद झगड़ा मिट जाय। थोड़े दिन आजमा कर देखिये।" लोगोंने तुरन्त कहा कि, "अैसा करनेसे तो सभी निकम्मे लोग जमा हो जायंगे।" दोनों जातियोंके स्वभावकी कमजोरी अिस जवाबमें पूरी तरह व्यक्त होती थी। अिस तरह जब मामला बिलकुल बिगड़ जाता है, तब

१४

जंगबारके विविध अनुभव

श्री अप्पासाहब कहने लगे, "झांझीबार अफ्रीकाकी संस्कारदात्री माता है। माता अब वृद्धा हो गअी है। अब अिसके पास पहलेकी-सी शक्ति नहीं रही। परन्तु अिसी कारण हम अुसकी संस्कारिताकी कद्र न करें तो ठीक नहीं।" झांझीबार (गुजरातियोंका जंगबार) हिन्दुस्तानके साथ प्राचीन कालसे सम्बद्ध है। अितिहासके शुरू होनेसे पहलेकी बात छोड़ दें; दो हजार वर्षसे जहाजोंका जो आवागमन जारी है, अुसे भी छोड़ दें; परन्तु वास्को-डी-गामाके हिन्दुस्तान आनेसे पहलेका जंगबार और हिन्दुस्तानका व्यापारिक सम्बन्ध अितिहास-विदित है।

सन् १८३२ के आसपास मस्कतका सुलतान कुछ कच्छी भाटियोंको लेकर झांझीबारमें आकर बसा। तबसे यहां अिस वंशका राज्य है। किसी समय झांझीबारका राज्य पूर्व अफ्रीकामें खूब दूर तक फैला हुआ था। आज सब अंग्रेजोंके अधीन है। अितना ही नहीं, खुद झांझीबारमें भी सुलतानका अधिकार नाममात्रका है। असली सत्ता ब्रिटिश रेजीडेण्टके हाथमें चली गअी है।

झांझीबार आज लौंगके व्यापारके लिअे मशहूर है। किसी समय अफ्रीकी लोगोंको पकड़ लाकर गुलामोंके रूपमें बेचनेके व्यापारका झांझीबार बड़ा केन्द्र था। पकड़कर लाये हुअे गुलामोंमें से कितने ही मर जाते, कुछ भाग जाते और बाकी बाजारमें बेचे जाते थे। अिस व्यापारके अवशेष ठेठ अभी तक रह गये थे। ब्रिटिश लोगोंका दावा है कि अुन्होंने गुलामीका व्यापार मजबूतीके साथ बन्द न किया होता, तो अफ्रीकाकी कुछ जातियां अब तक नामशेष हो गअी होतीं।

मनुष्यको गुलाम बनाकर घरके कामके लिअे, खेती और बगीचेके लिअे, और राजमजदूरके रूपमें रखनेकी प्रथा प्राचीन कालमें हरअेक देशमें थी। हां, गुलामोंके कष्टोंके मामलोंमें भिन्न-भिन्न देशोंमें फर्क था।

दोनों पक्ष अेक पाठशालाकी दो पाठ्शालाअें बना देते हैं। खर्च दुगुना हो जाता है। पराअी सरकारके पास अलग-अलग ग्राण्टकी अर्जियां भेजी जाती हैं और प्रतिष्ठा खोकर अुसकी आलोचनाअें सुननी पड़ती हैं। अैसी परिस्थितिसे लाभ अुठानेका मौका किसी सरकारने नहीं छोड़ा।

अेक दूसरेको प्रेमपूर्वक और आत्मीयताके साथ अपनाकर और थोड़ा नुकसान अुठाकर भी साथ रहनेमें ही श्रेय है। और साथ रहनेके लिअे दूसरे पक्षके प्रति विशेष अुदार रहना चाहिये, अितनीसी बात अगर दोनोंको सूझ जाय तो ही सच्चा अुपाय हो सकता है।

साढ़े बारह बजे तक माथापच्ची करके हम विमानमें बैठे और डेढ़ बजे दारेस्सलाम पहुंचे। रास्तेमें फिर समुद्रके रंगों और छोटे बड़े द्वीपोंने हमारी आंखोंका स्वागत किया। जिन टापुओंका सिर समुद्रसे बहुत अूंचा नहीं आता, अुन टापुओं पर वनस्पति या मनुष्यकी आबादीकी गुंजाअिश नहीं होती। अैसे द्वीपोंमें से धीरे-धीरे अूपर निकल आनेकी कोशिश करनेवाले कच्चे या बच्चे द्वीप कितने होंगे और लहरोंकी मारसे घिसते-घिसते पानीके नीचे डूब चुके जीर्ण और वृद्ध टापू कितने होंगे?

गंगा या ब्रह्मपुत्रा नदीके किनारे रेतके जो टापू समय-समय पर तैयार होते हैं, अुन्हें बंगला भाषामें चर कहते हैं। समुद्रके चर नदीके चरोंसे ज्यादा स्थायी होते होंगे। समुद्रके रंगमें अिस बार गुलाबी छटा अधिक थी और अुसमें आकाशमें दौड़नेवाले बादलोंकी छायाने धूपछांह जैसी शकल पैदा कर दी थी।

१४

जंगबारके विविध अनुभव

श्री अप्पासाहब कहने लगे, "झांझीबार अफ्रीकाकी संस्कारदात्री माता है। माता अब वृद्धा हो गअी है। अब अिसके पास पहलेकी-सी शक्ति नहीं रही। परन्तु अिसी कारण हम अुसकी संस्कारिताकी कद्र न करें तो ठीक नहीं।" झांझीबार (गुजरातियोंका जंगबार) हिन्दुस्तानके साथ प्राचीन कालसे सम्बद्ध है। अितिहासके शुरू होनेसे पहलेकी बात छोड़ दें; दो हजार वर्षसे जहाजोंका जो आवागमन जारी है, अुसे भी छोड़ दें; परन्तु वास्को-डी-गामाके हिन्दुस्तान आनेसे पहलेका जंगबार और हिन्दुस्तानका व्यापारिक सम्बन्ध अितिहास-विदित है।

सन् १८३२ के आसपास मस्कतका सुलतान कुछ कच्छी भाटियोंको लेकर झांझीबारमें आकर बसा। तबसे यहां अिस वंशका राज्य है। किसी समय झांझीबारका राज्य पूर्व अफ्रीकामें खूब दूर तक फैला हुआ था। आज सब अंग्रेजोंके अधीन है। अितना ही नहीं, खुद झांझीबारमें भी सुलतानका अधिकार नाममात्रका है। असली सत्ता ब्रिटिश रेजीडेण्टके हाथमें चली गअी है।

झांझीबार आज लौंगके व्यापारके लिअे मशहूर है। किसी समय अफ्रीकी लोगोंको पकड़ लाकर गुलामोंके रूपमें बेचनेके व्यापारका झांझीबार बड़ा केन्द्र था। पकड़कर लाये हुअे गुलामोंमें से कितने ही मर जाते, कुछ भाग जाते और बाकी बाजारमें बेचे जाते थे। अिस व्यापारके अवशेष ठेठ अभी तक रह गये थे। ब्रिटिश लोगोंका दावा है कि अुन्होंने गुलामीका व्यापार मजबूतीके साथ बन्द न किया होता, तो अफ्रीकाकी कुछ जातियां अब तक नामशेष हो गअी होतीं।

मनुष्यको गुलाम बनाकर घरके कामके लिअे, खेती और बगीचेके लिअे, और राजमजदूरके रूपमें रखनेकी प्रथा प्राचीन कालमें हरअेक देशमें थी। हां, गुलामोंके कष्टोंके मामलोंमें भिन्न-भिन्न देशोंमें फर्क था।

चाणक्यने अपने अर्थशास्त्रमें लिखा है कि आर्योंको दास बनाकर हरगिज नहीं रखा जा सकता — **न आर्यः दासभावं अर्हति।** आजकी दुनियाने यह नियम मनुष्य-जातिके लिअे लागू किया है। अेक मनुष्य दूसरे मनुष्यकी मेहनतसे गलत तौर पर लाभ अुठाकर आड़े-टेढ़े ढंग पर अुसे आज भी गुलामके रूपमें अिस्तेमाल करता है। परन्तु अिसे हम गुलामी नहीं कहते।

दारेस्सलामसे झांझीबार तक केवल ४६ मीलका समुद्री अंतर है। विमानसे अफ्रीकाका किनारा दीखना बन्द होनेसे पहले ही झांझीबार दीखने लगता है। अुड़े और अुतरे, अितनेमें झांझीबार आ जाता है। विमान कंपनीके व्यवस्थापकोंकी चालाकीके कारण बादमें आये हुअे कुछ गोरोंको हमारे वायुयानमें जानेको जगह मिल गअी और बादमें वे कहने लगे कि आप सब अपने सामानके साथ नहीं जा सकते। विमान अितना बोझा अुठा नहीं सकता और जोखम तो अुठाया ही नहीं जा सकता। थोड़ीसी झिकझिकके बाद हमने भलमनसाहत की और तय किया कि हममें से अेक आदमी दोपहरके वायुयानमें आ जाय। हवाअी जहाजवालोंकी चालाकी समय पर पूरी तरह ध्यानमें आ गअी होती, तो हम अैसी भलमनसाहत न दिखाते। शरद पंड्या भी और किसीके विमानमें आ सके। अिस प्रकार हमारा दल तीन टुकड़ोंमें झांझीबार पहुंचा। रहनेके लिअे हम दो घरोंमें बंट गये थे। श्री अप्पा-साहब और नलिनीबहन अपने पुराने मित्र श्री सिधवाके यहां रहने चले गये; जबकि बाकी सब श्री मूलजी वेलजी कंपनीके श्री छगनलालभाअीके यहां ठहरे। सात सात मेहमानोंको अेक साथ घरमें रखना और अुनको सब सुविधायें देना, यह हमारी बहनें ही कर सकती हैं। श्रीमती कान्ताबहन और अुनकी देवरानी लीलमबहन अैसी लगती थीं मानो सगी बहनें ही हों। दोनोंने बड़े प्रेमसे हमारा आतिथ्य किया। घरके बच्चोंको अिस तरह आतिथ्यकी तालीम मिलनेसे हरअेक भारतीय कुटुंबमें अिस परंपराकी सुगंध कायम रहती है।

झांझीबार अेक स्वतंत्र दुनिया है। शहरका मुख्य भाग काठियावाड़के घनी आबादीवाले किसी पुराने शहर जैसा है। बनारसकी

टेढ़ीमेढ़ी तंग गलियोंके साथ अुसकी सहज तुलना हो सकती है। आजकलकी मोटरें अुसमें कैसे जायं? कुछ गलियोंमें घरोंकी दीवारोंके कोने जरा जरा काटकर अैसी सुविधा की गअी है कि छोटी मोटरें निकल सकें। बनारसकी गलियोंमें चलते हुअे अकसर आश्चर्य होता था कि अितना टेढ़ामेढ़ापन मनुष्य कैसे पैदा कर सका होगा? यहां भी यही भावना पैदा हुअी।

जहां जायं वहां स्थानदेवता और वास्तुदेवताके दर्शन तो करने ही चाहिये। अिस हिसाबसे हम यहांके सुलतानसे मिलने गये। रेजीडेण्टसे भी मिल आये। हर जगह सभ्यतानुसार कहनेकी बातें कह दीं। सुलतान अधेड़ अुम्रके संस्कारी मजेदार आदमी हैं। जरा-जरा हिन्दुस्तानी वोल लेते हैं। अुनके घरमें स्थानीय कलाकी कुछ वस्तुअें और कुछ अैतिहासिक तसवीरें देखनेमें आअीं। अुनकी सुलताना युरोपियन पोशाकमें थीं। मुझे तो अेशियाअी पहनाव ही ज्यादा रुआबदार और कलायुक्त लगता है। सुलतानके यहांकी सभ्यता प्रभावशाली थी।

रेजीडेण्ट साहबके यहां हमने शिक्षाके बारेमें बातें कीं। अुनके वंगलेसे समुद्रके दर्शन बहुत ही आकर्षक थे। स्थानीय कारीगरीकी बड़ी-बड़ी वस्तुअें यहां भी रखी हुअी थीं।

झांझीवारमें हमारा कार्यक्रम भरा हुआ होने पर भी आनंददायक था। अेक दिन हम लौंगका कारखाना देखने गये। कुछ लोगोंने कहा था कि बाजारमें जो लौंग मिलते हैं, वे तेल निकाल लेनेके बाद बची हुअी छूंछमात्र हैं। मैं अिसे मान नहीं सका था। लौंगका तीखापन और अुसकी खुशबू तेल निकलनेके बाद टिक ही नहीं सकती। झांझीवारमें हमने देखा कि हम जो लौंग खाते हैं, वह असली लौंगके फूलकी लाल कली होती है। अिस कलीके नीचेके डंठल लौंग जैसे ही तीखे होते हैं। कलियां तोड़ लेनेके बाद नीचेके डंठल अिकट्ठे करके अुन्हें अुवाल लिया जाता है और अुसमें से लौंगका तेल या अर्क तैयार करते हैं। तेल निकाल लेनेके बाद जो छूंछ रह जाती है, वह अुस कारखानेमें ही अींधनके तौर पर काममें ली जाती है। मैं यह नहीं समझ सका कि खादके रूपमें अिसका अुपयोग क्यों नहीं होता। अिस छूंछका ढेर

करके कहां रखा जाय? और खादके रूपमें कोअी ले जाय, तो अींधनसे सस्ता पड़े या महंगा? यही अिसमें मुख्य सवाल है।

पहले दिन हम वहांका कन्या विद्यालय देखने गये। पुराने जमानेमें स्त्रियां अपने लिअे काममें लिये जानेवाले 'अबला' और 'भीरु' वगैरा विशेषणोंसे खुश होतीं, किन्तु आज आप अिस आदर्शको अपनानेके लिअे तैयार हैं? अिस किस्मका सवाल पूछकर मैंने विद्यालयकी कन्याओंके सामने नये जमानेकी बातें कहीं। हमारी लड़कियां नये विचार समझने और स्वीकार करनेमें बड़ी तेज होती हैं। परन्तु सामाजिक रिवाज, रूढ़ि और बंधन देखते-देखते अुनका अचार बना डालते हैं। हमारे लोग शिक्षाका महत्त्व समझने लगे हैं, अिसलिअे जहां तहां कन्या विद्यालय स्थापित हो रहे हैं। परन्तु यह विचार कोअी नहीं करता कि अिस शिक्षा द्वारा कैसी स्त्री तैयार होनी चाहिये। हमारे समाजको कैसी स्त्री चाहिये, यह कोअी नहीं कह सकता। युरोपियन लोगोंमें जो समाज-सेविकाअें हम देखते हैं और वे जैसा तेजस्वी जीवन बिताती हैं, अुसे देखकर हम अुनका आदरपूर्वक गुणगान करते हैं। परन्तु वैसी स्त्रियां हमारे यहां तैयार करनेके लिअे जैसा वातावरण चाहिये, वैसा वातावरण पैदा करनेमें हमारा विश्वास नहीं!

झांझीबारमें अरब लोगोंका असर अधिकके अधिक पाया जाता है। यह पता नहीं कि अीरानके तरफके लोग यहां कब आये होंगे। परन्तु आज जो शीराजी कहलाते हैं, वे तो बिलकुल अफ्रीकियों जैसे ही हो गये हैं। ये लोग स्वाहीली बोलते हैं। मूल निवासी अफ्रीकी लोगोंकी और अिन शीराजी लोगोंकी भाषा और रहन-सहन अेकसी हो जाने पर भी मुझ पर यह असर पड़ा कि अिनके बीच पूरी तरह आत्मीयता पैदा नहीं हुअी। खास व्यक्तित्व न हो और लोग अेक-दूसरेमें घुल-मिल जायं तब क्या परिणाम हो, यह समाजशास्त्रका अेक गंभीर प्रश्न है। अिस बारेमें मनमें विचार बहुत आते हैं, परन्तु अुनमें से अभी कोअी अैसी चीज नहीं निकली, जो समाजके सामने रखी जा सके।

यह हुअी शीराजी कहलानेवाले लोगोंके बारेमें बात। यहांके अरब लोगोंकी स्थिति अफ्रीकी लोगों जैसी नहीं है। हिन्दुस्तानी

लोगोंकी तरह वे भी यहां व्यापार करते हैं। कारीगर भी हैं। अंग्रेजी शिक्षा पाकर अुजले रोजगार भी करते हैं। अुनके पास राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा कितनी टिकती है, यह थोड़ेसे परिचयमें हमें क्या मालूम हो सकता है? पुराना वभव अब रहा नहीं और नअी महत्त्वाकांक्षाका अभी ठीक-ठीक अुदय नहीं हुआ — अैसी हालतमें ये लोग ह। अेशियनके रूपमें अरब लोग भारतीयोंमें मिल सकते हैं। हिन्दुस्तानके मसलमान आसानीसे अुनके साथ अेकरूप हो सकते हैं। अिससे जो नये संस्कार और नये वल पैदा हो जायं सो सही। अिस मुल्कके करोड़ों आदिवासियोंकी सेवा करनेका अेकमात्र आदर्श रखनेवाले लोगोंके लिअे वहुत चिंता करनेकी कोअी बात नहीं। जहां सेवा करके ही जीवन कृतार्थ करना है, वहां जीवन आसान और सरल बन जाता है। हरअेक समाज मनमें संकुचित महत्त्वाकांक्षा रखे और अुसकी पूर्तिके लिअे षड्यंत्र रचे और ज़बरदस्ती करे, तो कठिनाअियोंका अन्त ही नहीं आ सकता। यहांके कुछ अरब नेताओंके साथ बहुत बातें हुअीं। अुनके सामने गांधीजीकी सर्व-धर्म-समभाव और जनताकी जागृतिके लिअे गांधीजी द्वारा प्रसारित रचनात्मक कार्यक्रमकी बातें हमने कीं। अिनसे वे प्रभावित हुअे।

पश्चिमी संस्कृतिसे अगर हम विज्ञान, समाजसेवा और संगठन-विद्या ले लें और अुसका राजनीतिक आदर्श छोड़ दें — भोग और अैश्वर्यके लोभमें फंसकर नीतिके आदर्शको तिलांजलि दे देनेकी भूल न करें — तो ही हम दुनियाकी सच्ची सेवा करके शान्तिकी स्थापनाके लिअे जरूरी वातावरण तैयार कर सकेंगे।

झांझीवार शहरमें अच्छे पानीकी जरा भी मुश्किल नहीं। शहरके पास ही अेक जगह जमीनमें पानी अितना छलाछल भरा है कि जरा खड्डा खोदा कि वहां पानी अिकट्ठा होकर वहने लगता है। अिस प्रकार अनेक झरने तैयार करके अुनमेंका पानी अेक जगह अिकट्ठा कर लिया गया है। अुस स्थानको चमचम कहते हैं। यहांका पानी पंप करके सारे शहरको पहुंचाया जाता है। झांझीवारके समुद्र-द्वारमें जो जहाज आते

हैं, अुन्हें भी अिसी खजानेसे ताजा पानी दिया जाता है। जब जहाज पानी लेने नहीं आते, तब फालतू पानी समुद्रमें छोड़ देना पड़ता है।

यह अितना अधिक पानी आता कहांसे है, अैसा प्रश्न मनमें अुठना स्वाभाविक है।

यही मालूम होता है कि अिस ओर बरसात खूब होती है, अिसलिअे बरसातका पानी जमीनकी अनुकूलताके कारण भीतर ही भीतर जमा होता होगा। परन्तु कल्पनाशील लोगोंको अैसी अुत्पत्ति कैसे जंचे? वे कहते हैं कि अफ्रीका महाद्वीपमें यहांसे लगभग २५० मील दूर स्थित पर्वतराज किलिमांजारोका पानी जमीनके नीचेसे, और समुद्रके नीचेसे भी आकर यहां निकल आता है। पानी अितना अधिक अच्छा है कि वह किलिमांजारोसे ही आया हुआ है, यह माननेमें कल्पनाशक्तिको सन्तोष होता है।

झांझीबारमें नारियलके पेड़ बहुत हैं। नारियलके पेड़ोंकी आबादी ही यहां मुख्य मानी जाती है। यहांके कच्चे नारियलके पानीकी खूब प्रशंसा होती है। हमारे यहां कच्चे नारियलके डाब, अड़सर और शहाळें वगैरा जैसे नाम हैं, वैसे यहां अुसे मडाकू कहते हैं। यहांके लोगोंमें अेक मीठी मान्यता है कि जिसने अेक बार यहांके मडाकूका पानी पी लिया, अुसे अिसे फिर चखने झांझीबार दुबारा आना ही पड़ता है। झांझीबारकी प्राकृतिक शोभा और यहांके लोगोंके आतिथ्यका विचार करते हुअे यहांके मडाकूका अैसा असर हो, तो अिस पर किसीको आपत्ति नहीं हो सकती।

मस्कतके सुलतानके साथ जो भाटिया लोग यहां आये, अुनकी निष्ठा और होशियारी पर सुलतानका अितना विश्वास था कि राज्य-व्यवस्थाके अधिकांश विभाग अुन्हींको सौंपे गये थे। अिस डरसे कि हिन्दू धर्मकी रूढ़ियोंका यहां कैसे पालन होगा, ये भाटिया लोग अपने कुटुम्ब-कबीले यहां नहीं लाते थे। सुलतानने अुन्हें बहुत समझाया कि "आपके धर्मपालनकी सारी सुविधायें मैं कर दूंगा। पानीके सुभीतेके लिअे कहिये तो चांदीके नल लगवा दूं।" परन्तु हमारे 'धर्मनिष्ठ' लोगोंने सुलतानकी बात नहीं मानी!

जब यहां अंग्रेजोंका जोर बढ़ा, तब वे यहांके भाटियोंको ही हिन्दू जातिके प्रतिनिधि मानते थे। आजकलके सार्वजनिक युगमें सब हिन्दू जातियोंने मिलकर हिन्दू-मंडलकी स्थापना की। अिस कार्रवाअीके प्रति भाटिया लोगोंमें अभी तक प्रसन्नता पैदा नहीं हुअी है।

हिन्दू जातिका संगठन भी जहां अितना कठिन है, वहां युगधर्म पुकार कर कहता है कि, 'हिन्दुओंका नहीं, परन्तु तमाम हिन्दुस्तानियोंका संगठन करो।' और यहां अफ्रीकामें तो अिससे भी आगे बढ़कर तमाम अेशियावासियोंका संगठन करनेसे ही काम चलेगा। युगधर्म पहचान कर अद्यतन संगठन करनेके मामलेमें हम दो क्रान्तियोंके बराबर पिछड़े हुअे हैं।

हिन्दुस्तानके स्वतंत्र होते ही पंडित जवाहरलालजीने तुरंत अेशियाके तमाम देशोंके प्रतिनिधियोंको बुलाकर अुन्हें हिन्दुस्तानका संदेश सुनाया कि "हम स्वतंत्रता, शांति और बंधुत्वके लिअे प्रतिज्ञाबद्ध हैं। जहां स्वतंत्रता नहीं वहां अुसे स्थापित करनेकी कोशिश करनी चाहिये। जहां यह कोशिश जारी हो, वहां भारतकी सहानुभूति और नैतिक सहायता मुमुक्षु राष्ट्रके पक्षमें ही होगी; हम साम्राज्यवादके विरोधी हैं। हम अहिंसा द्वारा संसारमें सर्वत्र बंधुत्व स्थापित हुआ देखना चाहते हैं।"

खून बहाये बिना हम अपनी आजादी जबरदस्त ब्रिटिश साम्राज्यसे ले सके, अिस कारण दुनियामें हमारी प्रतिष्ठा बढ़ी है। अेशियाके देश आशाकी नजरसे हमारी तरफ देख रहे हैं। अैसी स्थितिमें जब अेशियाके प्रतिनिधि दिल्लीमें अिकट्ठे हुअे, तब अुन्होंने सुझाया कि हिन्दुस्तानको अेशियाका नेतृत्व स्वीकार करना चाहिये। जवाबमें पंडित नेहरूने कहा कि घरके बड़े भाअी या बुजुर्ग होनेकी हमारी आकांक्षा नहीं है। गांधीजीने भी घोषणा की कि हम संगठन करके अेशियाकी राजनीतिक अिकाअी स्थापित करना नहीं चाहते। सारी दुनिया ही हमारी अिकाअी है।

फिर भी अेशियाके देश मदद मांगें, तो हम अिनकार नहीं कर सकते। अेशियावासी सब अेक हैं, अिस प्रकारकी भावना अेशियासे बाहर जा बसे हुअे अेशियावासियोंके मनमें जाग्रत रहेगी ही। आज नहीं तो

कल वह अवश्य अुदय होगी। अैसी स्थितिमें अफ्रीकामें रहनेवाले हम 'हिन्दू' या 'हिन्दुस्तानी' आदि संकुचित नाम धारण करें, अिसके वजाय यही अुचित होगा कि हम अेशियाअी या अेशियन नाम धारण करें।

अफ्रीकामें वसनेवाले कवीले (ट्राअिव्स) अनेक हैं। अिनके वीच आज कोअी राजनीतिक अेकता सिद्ध नहीं हुअी है। फिर भी 'अफ्रीकी' के समान नामकी महिमासे ही वे अेक होने लगे हैं। युरोपमें भी अनेक देश हैं, जो आपसमें लड़ते भी हैं। फिर भी संस्कृति और महत्त्वाकांक्षाकी दृष्टिसे अुनका अेक खास रवैया होनेके कारण वे युरोपियन नामसे पुकारे जाते हैं। अव अफ्रीकन और युरोपियन अिन दो शब्दोंकी जोड़का हमारा नाम अेशियन ही हो सकता है।

अिसलिअे आअिंदा हमें अपने लोगोंका संगठन अेशियन नामसे करना चाहिये। और अुसमें हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, गोआ आदि घरका भेद भूलकर अरवस्तान, सीलोन, ब्रह्मदेश, चीन, जापान आदि देशोंके जो कोअी थोड़े या वहुत लोग अफ्रीकामें वसते हों अुन सवको भी अपने साथ लेना चाहिये। पाकिस्तानके प्रति सहानुभूति रखनेवाले भारतीय मुसलमानोंको राजी करनेकी खातिर नहीं, लेकिन हमारा स्वाभाविक विशाल नाम धारण करनेके लिअे हम अेशियन नामसे ही पहचाने जायं। अरव आदि हमारे सारे पड़ोसी अिस नामके नीचे हमारे साथ चलनेको रजामंद होंगे। गोअन, जैसे हिन्दुस्तानके निवासियोंकी भी, जो अिस मुश्किलमें पड़े हैं कि वे किस नामसे पुकारे जायं, कठिनाअी मिट जायगी।

अेक वात मुझे स्पष्ट करनी चाहिये, क्योंकि मैं अपने विचार छिपाना नहीं चाहता। गोअन लोगोंको मैं सोलह आने हिन्दुस्तानी मानता हूं। वे खुद भी जानते हैं कि वे हिन्दुस्तानी ही हैं। अुनमें से कुछ लोग धर्मसे अीसाअी हो गये और पुर्तगाली लोगोंके कुछ रिवाज अुन्होंने अपना लिये, अितने हीसे यह वात नहीं हो गअी कि वे हिन्दुस्तानी नहीं रहे। परन्तु आजकलके लोग सांस्कृतिक राष्ट्रीयता जैसी पवित्र वस्तुको भी ताकमें रखकर अपने क्षणिक स्वार्थका विचार करके कभी घोषणा करते हैं कि वे हिन्दुस्तानी हैं और कभी कहते हैं कि नहीं हैं। नौकरीका स्वार्थ, व्यापारमें मिलनेवाली सुविधायें, राजनीतिक प्रतिष्ठा वगैराका विचार

करके लोग पगड़ी बदलनेको तैयार हो जाते हैं। हिन्दुस्तान जब परतंत्र था और परतंत्र देशके नागरिकोंके रूपमें अफ्रीकामें हमारी हस्ती प्रतिष्ठा-हीन थी, तब कुछ भारतीय मुसलमान अपने अरब होनेका दावा करते थे और अिस प्रकार स्वतंत्र नागरिककी प्रतिष्ठा पाते थे!

मोजांबिक और आंगोलामें सफलता प्राप्तिकी दृष्टिसे कुछ गोअन लोग अपनेको हिन्दुस्तानी न बताकर पुर्तगाल निवासी बतानेमें लाभ देखते हैं। अगर कल भारत सरकार यह घोषणा कर दे कि जो पुर्तगालके निवासी हैं अुन्हें हिन्दुस्तानमें विदेशी बनकर रहना पड़ेगा, अुन्हें हिन्दुस्तानके नागरिककी हैसियतसे कोअी हक नहीं मिलेंगे, तो मैं मानता हूं कि यहांके अधिकांश गोअन हिन्दुस्तान जाते ही अैलान कर देंगे कि हम हमेशासे हिन्दुस्तानके ही निवासी हैं। बम्बअी और मंगलोर जैसे शहरोंमें अितने अधिक गोअन रहते हैं और रुपया कमाकर गोआ भेजते हैं कि यह कमाअी बन्द हो जाय, तो वे खुद तो मुश्किलमें पड़ ही जायंगे, परन्तु गोआकी सरकारको भी अपना कामकाज चलानेमें कठिनाअी अनुभव होगी। अीसाअी लोग अीसाअी हैं, अिससे किसीको अिनकार नहीं। जहां पुर्तगालका राज्य है वहां पुर्तगालके कानून चलेंगे, यह भी जाहिर है। परन्तु अिसे वे नहीं समझते कि अपनी हिन्दुस्तानी राष्ट्रीयताकी बात वे सुविधानुसार बदलते रहें, तो अपनी आत्मप्रतिष्ठा खो बैठते हैं।

पाकिस्तान हिन्दुस्तानका ही अेक भौगोलिक अंश है। देश अेक, संस्कृति अेक और हित-संबंध अेक। अैसा होते हुअे भी अलग हो जानेमें स्वार्थ देखकर कुछ लोगोंने अेक ढोंग चलाया; वह चल गया, परन्तु अुससे भयंकर परिणाम पैदा हुअे। जो हुआ सो हुआ। अब अैसी बातोंका विरोध करनेमें सार नहीं। जो आदमी कहे कि, 'मैं हिन्दुस्तानी नहीं', अुसे जबरदस्ती नहीं समझाया जा सकता कि, 'तू हिन्दुस्तानी ही है।' हिन्दुस्तानी होनेके लाभ स्पष्ट होंगे, तब वह अपने आप अपनेको हिन्दुस्तानी कहेगा। वह अपने आपको हिन्दुस्तानी न कहे तो अिसमें हमें क्या हानि? दो घोड़ोंकी सवारी करनेकी नीति पर चलकर जो दोहरा लाभ अुठाना चाहते हैं, अुन्हें हम अुदार बनकर लाभ अुठाने दें तो अन्तमें हमें लाभ ही है। यह लाभ अगर हम न देख सकते हों तो

किसी दिन अुन्हें कह दें कि 'दोनों तरहके लाभ आपको नहीं मिल सकते।' अिससे अधिक हमारे हाथमें क्या है? अगर हममें दूरदृष्टि हो तो हम देख सकेंगे कि लोगोंको दोहरा लाभ अुठाने देनेमें हमारा सच्चा या विशेष नुकसान नहीं है। किसी दिन हमें अिससे लाभ ही होगा। और अगर न हो तो भी क्या हुआ? कोअी मनुष्य स्वार्थसे प्रेरित होकर सुविधाके समय सत्य बोले और अुससे लाभ अुठाये, तो हम अुसका अिनकार क्यों करें? हिन्दुस्तानके मुसलमान हिन्दुस्तानीकी हैसियतसे भारत सरकारसे कुछ लाभ चाहेंगे और अुठायेंगे। और साथ ही साथ पाकिस्तानके प्रति निष्ठा रखकर संतोष मानेंगे। गोअन ओीसाअियोंकी भी यही बात है। यहांके लोग मानते हैं कि गोअन आदमी ओीसाअी ही होता है। सही बात यह है कि गोअन ओीसाअी गोआमें सिर्फ ४५ प्रतिशत हैं। हिन्दू वहां ५२ फीसदीसे ज्यादा हैं।

सिक्ख लोगोंमें भी कुछ कहते हैं, 'हमारा धर्म अलग है, हमारा समाज अलग है, हम हिन्दू नहीं हैं।' मैं खुद मानता हूं कि सिक्ख धर्म हिन्दू धर्मका ही अेक पंथ है। अंग्रेजोंके राज्यकालमें मुसलमानोंको जब ज्यादा अधिकार मिलने लगे और हिन्दू रहनेमें घाटा ही दिखाअी दिया, तब सिक्ख लोगोंने घोषणा की कि, 'हम हिन्दू नहीं, हम अलग हैं।' अुन्हें अिस तरह कहने देनेमें हिन्दुओंको कोअी हानि नहीं दिखाअी दी। मुसलमान भी कोअी अेतराज नहीं कर सके। अिस प्रकार सिक्ख, जो सौ फी सदी हिन्दू थे — और अब भी हैं — अलग हो गये। अैसी हालतमें कोअी सिक्ख जोर देकर कहे कि मैं हिन्दू नहीं, तो मैं जरा भी आपत्ति न करूं। कुछ सिक्ख कहने लगे हैं, 'धर्मसे हम अलग हैं, समाजके रूपमें हम अेक हैं, हमारी राष्ट्रीयता हिन्दू — अथवा हिन्दुस्तानी है।'

मन्दिरोंके देव-द्रव्यको नये कानूनके शिकंजेसे बचानेके लिअे चंद जैन भी कहने लगे हैं कि, 'धर्मकी हैसियतसे हम हिन्दू नहीं, हम अलग हैं।' ज्यों ज्यों कानून बढ़ेंगे, त्यों त्यों धर्म, समाज, नागरिकता और राष्ट्रीयताके मामलोंमें यह खेल जारी रहेगा। कोअी कहेगा: 'हम फलां हैं।' कोअी कहेगा: 'हम नहीं हैं।' यह गड़बड़ी बढ़ते-बढ़ते अन्तमें धर्मोंका महत्त्व अपने आप नष्ट हो जायेगा। 'कोअी व्यक्ति या समूह

दो राष्ट्रोंके अेक साथ नागरिक रहें तो हर्ज क्या?' अैसा पूछनेवाले लोग पैदा होने लगे हैं। वे नहीं समझते हैं कि दोनों राष्ट्र स्थायी मित्र हों या सदाके लिअे अहिंसाकी नीति स्वीकार करते हों, तो ही यह चीज वन सकती है। हिन्दुस्तान और पुर्तगालके वीच लड़ाअी छिड़े और अनिवार्य फौजी भर्ती शुरू हो जाय, तव मनुष्य दोमें से अेक ही देशका नागरिक रह सकता है। जब सव युद्ध मिट जायंगे और सव जगह मित्रता या वन्धुत्व स्थापित हो जायगा, तव मनुष्य विश्व-नागरिक वन सकेगा।

आज भी हर कोअी मनुष्य विश्व-नागरिक बन सकेगा — अिस शर्त पर कि वह घोषणा करे कि, 'किसी भी देशके नागरिकका कोअी विशेष अधिकार मुझे नहीं चाहिये। जिम्मेदार मनुष्यकी हैसियतसे मैं अपने तमाम फ़र्ज अदा करूंगा। और अगर अुनसे ज्यादा या संकुचित फर्ज मुझ पर लादे जायंगे और वे मेरे विश्व-वन्धुत्वमें वाधक होंगे, तो मैं अुन फर्जोंसे अिनकार कर दूंगा और अुससे पैदा होनेवाली तमाम सजायें खुशीसे सहन करूंगा।'

आज मैं पाकिस्तानी लोगोंके साथ, हिन्दुस्तानके मुसलमानोंके साथ, सिक्ख लोगोंके साथ, गोअन या जैन लोगोंके साथ कोअी झगड़ा नहीं करूंगा। मेरी अिस नीतिसे मैं अुन्हें विचार करनेवाले वना सकूंगा। झगड़ा करनेसे मेरी और अुनकी दोनोंकी प्रगति रुक जायगी और तीसरे ही लोग अिससे लाभ अुठायेंगे। मैं दुनियाके सामने नाहक हंसीका पात्र क्यों वनूं? हम सव अेशियन हैं, अेशियन कहलायें, अिसमें जिसे शरीक होना हो हो जाय; न होना हो वह न हो। समय आते सवको शामिल होना ही पड़ेगा। तव तक यही अुत्तम नीति है कि हम धीरज रखें। और हम दूसरा कर भी क्या सकते हैं कि जिससे सार निकले?

जहां जायं वहांकी संस्थाअें देखनेका रिवाज होता ही है। झांझीवारमें अेक अफ्रीकन वेलफेअर सेन्टर हमने देखा। अुसकी अिमारत अच्छी है। लोग अुससे कितना लाभ अुठाते हैं सो भगवान जाने। 'जनताके हितमें कुछ पैसा खर्च कर देनेसे हमारा अच्छापन दिखेगा' — अिस वृत्तिसे अुदासीन सरकारकी तरफसे अैसे काम किये जाते हैं। वहां अेक दवाखाना

(क्लिनिक) हमने देखा। कोअी डॉक्टर न मिलनेके कारण वह वंद पड़ा है! हिन्दुस्तानी डॉक्टरोंको सरकार युरोपियन डॉक्टरों जितना वेतन या अधिकार नहीं देती। कोअी डिग्रियां लेकर पास हुआ हो और सरकारको वह डिग्री जंचती न हो, तो अैसे आदमियोंको सरकार धंधा भी नहीं करने देती। मराठीमें अेक कहावत है, 'मां घरमें खिलाये नहीं और पिता वाहर जाने दे नहीं'—तो अैसी हालतमें वालक करे क्या? यही हालत यहांकी जनताकी हो गअी है। सरकारको अिस स्थितिसे शर्म नहीं आती और जनताको वह असह्य नहीं लगती, यह देखकर मनमें वड़ा आश्चर्य और दुःख हुआ।

जव पास ही अेक प्रसूतिका अस्पताल हमने देखा और यह नजर आया कि वह अच्छी तरह चल रहा है, तव वह दुःख हम कुछ भूल गये। अिस प्रसूतिगृहमें अेक चौंसठ वर्षकी वूढ़ी युरोपियन नर्स काम करती है। मैंने मान लिया कि यह वुढ़िया किसी मिशनकी तरफ़से काम करती होगी। मैंने अुससे पूछा, "आप किस मिशनकी हैं?" अुन्होंने कहा कि, "मैं अिस अस्पतालकी ही हूं।" अिस वृद्धाके कार्यकी लोगोंमें कद्र है। यह अस्पताल वनाया अेक-दो मुसलमानोंने और अुसे चलाती है यहांकी हिन्दू, मुसलमान आदि सारी जनता। अिस प्रकार मिल कर काम होता देखकर वड़ा आनन्द हुआ।

अेक रातको हिन्दू-मंडलकी तरफसे व्यायामके प्रयोग हुअे। प्रयोग अच्छे थे। हाथोंमें मशालें लेकर चलनेके खेल मजेके दिखाअी देते हैं। अैसा नहीं लगता कि अुनमें व्यायामका कोअी विशेष तत्त्व हो, परन्तु नाचती हुअी ज्वाला देखनेका आनंद तो है ही।

दारेस्सलाम और झांझीवार दोनोंमें मेरे लिअे अेक वड़ी दिक्कत पैदा हो गअी। मेरे वनावटी दांतोंकी वत्तीसीमें (सच कहूं तो अूपरकी षोडशीमें) अेक दरार पड़ गअी। वह धीरे-धीरे वढ़ने लगी। खाते समय होनेवाली कठिनाअी सह ली जाती, परन्तु खाते या वोलते समय दरारकी नोकसे जीभ कट जाती थी। यह दुःख हदसे ज्यादा हो गया। अैसे दत्तक दांतोंकी मददके वगैर खाया नहीं जाता और सभाओंमें साफ तौर पर वोला नहीं जाता। वोलने लगें तो कष्ट

हो, और यहां देश देखनेके सिवा हमारा मुख्य काम तो खाना और बोलना ही था। भोजनवीर और भाषणवीर अिस तरह घायल हो जाय, तब जंगमें क्या करे? अंतमें जंगबारके अेक भले गोरे दंत-वैद्यने छुट्टीके दिन होते हुअे भी मेरी बत्तीसी ठीक कर देनेका काम हाथमें ले लिया और कुछ ही घंटोंमें वह ठीक कर दी गअी।

अितना कष्ट अुठानेके बाद ही गांधीजीकी सलाहका महत्त्व मनमें बैठा कि समझदार आदमीको अेक फालतू चश्मा और दांतकी फालतू बत्तीसी हमेशा साथ रखनी चाहिये।

झांझीबारके टापूकी बावन मीलकी लंबाअी और २४ मीलकी चौड़ाअीमें आकर्षक दृश्योंकी अितनी बहुतायत है कि अुसे सौंदर्यका संग्रहालय कह सकते हैं। अेक दिन हम कूम्बाका समुद्रतट देखने गये। बड़े-बड़े शंख, कौड़ियां और सीप देखकर हम आश्चर्यचकित हो गये। प्राणी-सृष्टिमें दो विभाग दिखाअी देते हैं। मनुष्य और पशु-पक्षीकी हड्डियां अुनके शरीरके अन्दर होती हैं और मांस अूपर चिपटा रहता है; जब कि सीप और शंखोंमें मांस अंदर होता है और हड्डियां चमड़ी और घरके स्थान पर होती हैं। कछुअेका भी यही हाल है।

वनस्पति-सृष्टिमें भी क्या अैसा नहीं है? छुहारेमें हड्डीके स्थान पर माना जानेवाला बीज पेटमें होता है और खानेका स्वादिष्ठ भाग बाहर होता है। आमका भी यही हाल है। जब कि बादाम और अखरोट वगैरा फलोंमें मींगी अन्दर होती है और अुसे सुरक्षित रखनेवाला कवच बाहर होता है। नारियलका हाल अिससे भी अलग है। अुसका मगज या खोपरा सबसे अन्दर होता है। टोकसी अुसके अूपर और टोकसीकी रक्षाके लिअे सबसे अूपर जटा होती है। अूंचे पेड़ परसे फल गिर जाय तो टोकसी (खोपड़ी) के टुकड़े टुकड़े ही हो जायं। अुसकी रक्षाके लिअे कुदरतने जटाके रेशोंकी गद्दी बना दी है!

अिस ओरके समुद्र-तटके पत्थर विचित्र प्रकारके होते हैं और लहरें अिन पत्थरों पर प्रहार करके अुन्हें अनेक चित्र-विचित्र आकार दे देती हैं। देखकर मनमें खयाल आता है कि लहरोंकी अिस कारीगरीकी कद्र करें या अिनके धीरजकी?

झांझीवारमें अेक गुफा है। अुसके भीतर पुराने जमानेमें पकड़ कर लाये गये गुलाम रखे जाते थे। हम आम या आलूका ढेर लगाते हैं और अुसे वेचनेसे पहले जो सड़ जायं अुन्हें फेंक देते हैं और फेंकते समय कहते हैं कि 'वहुत नुकसान हो गया', अिसी तरहकी यहां रखे गये गुलामोंकी स्थिति थी। अुनकी रहन-सहनकी हालतमें सुधार कौन करे? जानवरोंसे भी खराव हालतमें अुन्हें रखा जाता था। वस, जो मर गये अुन्हें फेंक दिया और अुनकी कीमत दूसरे जीते रहनेवालों पर चढ़ा दी; हो गया।

झांझीवारका म्यूजियम दो अिमारतोंमें वंटा हुआ है। वनानेवालेने अिस पर वड़ी मेहनत की है। लिविंग्स्टन जैसे पादरी संशोधकोंके अितिहासके साधन यहां मिलते हैं। मनुष्य-सृष्टि, प्राणी-सृष्टि और समुद्र-सृष्टि तीनोंके अवशेष यहां मिलते हैं। तीनोंके जीवनक्रमके अध्ययनके साधन यहां अुपलव्ध हैं। परन्तु अैसा नहीं लगता कि अिन म्यूजियमोंको जीवित अर्थात् अद्यतन रखनेकी कोअी परवाह करता हो। आज अैसे म्यूजियमोंको म्यूजियम न कहकर म्यूजियमोंके ममी कहना चाहिये। हिन्दुस्तानके अधिकांश म्यूजियम अिसी प्रकार ममीका रूप धारण करके पड़े हैं। हमारा पुराना साहित्य, हमारे धर्म, कितने ही रीति-रिवाज और हमारी संस्कृतिके कुछ अंग कभीसे मृत वनकर नष्ट होनेके किनारे खड़े हैं। जव तक रूढ़िवादियोंका आग्रह कायम था, तव तक ये तमाम चीजें ममीके रूपमें भी सुरक्षित रहती थीं। अव अुतनी सुरक्षितता भी नहीं रही। वहुतसी चीजें गिरती जा रही हैं, सड़ती जा रही हैं या मिटती जा रही हैं। अितनी ही आशा रखें कि अव अुनका खादके रूपमें अुपयोग हो सकता है।

पासका पैम्वा द्वीप झांझीवारका अुपनगर कहा जा सकता है। दक्षिणके तरफका माफिया वहुत दूर है, अिसलिअे झांझीवारके जीवन पर अुसका कोअी असर नहीं। समुद्रका किनारा, अिस किनारे पर स्थित शाम्वे (वाड़ियां) और अिन वाड़ियोंमें रहनेवाले हरअेक वंशके लोग सव मिलकर झांझीवारकी शोभा वढ़ाते हैं। और लौंगके पेड़ अुस शोभामें वृद्धि करके सारे टापूको सुगंधित करते हैं।

अेक दिन शामको दिन भरके कार्यक्रमोंकी थकावट मिटानेके लिअे हम समुद्रके किनारे गये। वहां अेक भव्य राजमहल खंडहर होकर पड़ा है। अुसे मरूवी महल कहते हैं। भव्य मकानोंके खंडहर भी भव्य दिखाअी देते हैं। और जब अिन खंडहरोंके बीचमें वृक्ष और लतायें अुग आती हैं और अिन खंडहरोंकी रक्षा करनेका प्रयत्न करती हैं, तब अुनकी शोभा अितिहासके पठन जैसी ही आकर्षक होती है। अिस खंडहरके आसपास योजनापूर्वक लगाये गये पुराने पेड़ और अुनके बीचमें अपने आप अुगे हुअे दूसरे पेड़ सारे वायुमंडलकी गंभीरतामें वृद्धि कर रहे थे। अमराअी हो या नारियलकी बाड़ी हो, अपने-अपने परिपक्व वातावरणका मनुष्यके हृदय पर प्रभाव डाले बगैर नहीं रहती। अिस स्थानको देखनेके लिअे आये हुअे हमारे जैसे और लोग भी वहां मिले। हमें पहचाननेवाले होनेके कारण अुन्होंने बातें छेड़ीं।

हमें महसूस हुआ कि प्रकाश और अंधकारके बीच गंभीर और पवित्र बने हुअे अिस जल और स्थलके बीचके स्थानकी कद्र प्रार्थनासे ही हो सकती है। हम समुद्रके किनारे जाकर बैठ गये। सूर्यास्तके बादका प्रकाश मिट रहा था। लाल संध्या विदा ले रही थी। हमारी प्रार्थना शुरू हुअी। प्रार्थनाके अंतमें बहनोंने भावपूर्ण भजन गाये। हमें यह देखकर विशेष आनन्द हुआ कि हमारी प्रार्थनाके साथ ताल देनेके लिअे किनारेके सात दीपस्तंभ अपनी सफेद और लाल रोशनी झक्झक् झलका रहे थे। प्रार्थनाका असर हृदय पर गंभीर हुआ और समुद्रकी हवाके कारण वह वहां अंकित भी हो गया।

किसी भी स्थान पर दो-चार दिन रहकर अधिकसे अधिक प्राप्त किया हो, तो जिस घरके लोगोंके आतिथ्यके कारण यह सब कुछ आनन्दपूर्वक हो सका, अुन लोगों — बच्चों और बड़ों दोनों — से विदा लेते समय बुरा लगता है। परन्तु ये प्रसंग भी रोजमर्राके हो जानेके कारण मनका विषाद हंसकर निकाल देनेकी कला भी आ जाती है। अिन सब लोगोंके साथ पत्रव्यवहार रखनेको जी तो बहुत चाहता है परन्तु यह हो कैसे? अकसर पुराने दिनोंकी याद करते समय बिजलीकी चमककी तरह अनेक व्यक्तियोंका स्मरण ताजा हो आता है और

मोरोगोरोके पहाड़ अबरकके बने हुअे हैं। अिस पहाड़में श्रीमती विलिस नामकी अेक युरोपियन महिलाने अेक होटल खोल रखी थी। मानो मनुष्योंके लिअे बनाया गया नीड़! पास ही मोरोगोरो नदीका अुद्गम है। वहांसे आगेकी घाटियां और अुसके बादके मैदानका विस्तार अच्छा मालूम होता था। महिला अितनी होशियार है कि कुछ गोरे यहांकी स्वास्थ्यप्रद हवा और अुनकी ममत्वपूर्ण सेवासे लाभ अुठानेके लिअे अपने छोटेसे छोटे बच्चोंको भी कुछ समयके लिअे यहां छोड़ जाते हैं।

नये ही बने हुअे सिनेमाघरमें मोरोगोरोके लोगोंके सामने हमारे भाषण हुअे।

यहांसे हम ३२ मील पर मगोले हो आये। जिस चीजको देखनेके लिअे हम तरस रहे थे, वह चीज हमें वहां मिली। दुकान चलानेके लिअे नहीं, किन्तु बाकायदा खेती करनेके लिअे कुछ होशियार गुजराती भाअी यहां आकर बस गये हैं। ये लोग यहां ५००-५०० अेकड़के ३२ खेतोंमें सहयोगी ढंग पर खेती कर रहे हैं। अिस प्रकार हिन्दुस्तानियों और अफ्रीकियोंके बीच जो जीवन-विनिमय होता है, वह दोनोंके लिअे सचमुच पोषक हो सकता है। हमारे अिन किसानोंने कितनी होशियारीसे अिस कामको जारी रखा है! सरकारी नीतिके कारण अुनकी कठिनाअी कैसे बढ़ गअी है, भारत सरकार और भारतके रुअीके व्यापारी जरासी राहत दें तो कितनी बढ़िया मदद हो सकती है — ये सब बातें तफसीलसे प्रमाण और अुदाहरणों सहित और जोशके साथ समझानेका काम श्री जेठाभाअी पटेलने किया। श्री जेठाभाअीने जीवनकी धूपछांह बहुत देखी है और सब तरहसे मंजे हुअे आदमी हैं।

मोरोगोरोके पास हमने अेक सुन्दर नर्सरी देखी — बच्चोंकी नहीं, किन्तु फलफूलवाले पौधोंकी। अिस प्रकार पहाड़में घूमनेमें जो आनन्द आता है, अुसे अनुभवी ही जान सकता है।

मोरोगोरो छोड़ते-छोड़ते वहांके महाराष्ट्री डॉक्टर म्हैसकरके यहां हमने फलाहार किया। कोअी डॉक्टर मिले तो अुस देश और खास तौर पर अुस स्थानकी जनताके बारेमें, अुसके बीच फैले हुअे रोगोंके विषयमें और साधारण जनताके जीवट ('वैटेलिटी') के बारेमें मैं

पूछे विना नहीं रहता। अूपर-अूपरसे अच्छे लगनेवाले अनेक समाजोंके वारेमें भीतरी वातें जाननेमें आती हैं, अिससे कभी-कभी दुःख होता है जरूर। परन्तु समाजके निरीक्षण और अध्ययनके लिअे यह सारी चीज कीमती होती है। अैसी जानकारी अिकट्ठी करते समय किसी भी व्यक्तिके वावत न पूछने-कहनेका धर्म दोनों ओरसे अच्छी तरह पाला जाता है। हरअेक डॉक्टर अपने वीमारोंकी वातें गुप्त रखनेको वंधा होता है। कुछ डॉक्टर यह चीज नहीं जानते। तव अुन्हें अुनके अिस धर्मका भान कराना पड़ता है। डॉ० म्हैसकर ज़िम्मेदार आदमी दिखाअी दिये, अिसलिअे अुनके साथ अुचित मर्यादामें रहकर मैं वहुतसी वातें जान सका।

तारीख १७ की शामको हमने मोरोगोरो छोड़ा। आसपासके पहाड़ हमारे साथ हमें पहुंचाने दूर तक आये थे और अुनके सिर पर सिंहकी तरह छलांग मारता हुआ चन्द्रमा भी हिरणको पेटमें रखकर हम पर नजर रखता था।

१६

डोडोमा

रेलगाड़ीको क्या है? आधी रातके वाद साढ़े तीन वजे डोडोमा आकर खड़ी हो गअी! अैसे समय हम गाड़ीसे अुतरें और गांवके लोग आकर हमारा सत्कार करें, अैसी व्यवस्था राक्षसोंको तो क्या, भूतोंको भी मंजूर न हो। अिसलिअे हमने रेलवालोंसे अिंतजाम कर रखा था कि हमारा डिब्बा यहीं तोड़ कर गाड़ी चली जाय। परन्तु अितनी सुविधा हासिल करनेके लिअे हमें पहले दर्जेका टिकट होने पर भी दूसरे दर्जेमें सफर करना पड़ा। अुसमें सुविधाअें कम नहीं थीं। प्रतिष्ठा कम हो जाने पर हमें अेतराज नहीं था। सवेरे सात वजे श्री दारा कीका, अुनकी पत्नी शहरवानू और कुछ नगरनिवासी हमको लेने आये। हममें से अेक दल श्री दारा कीकाके यहां रहा। वाकीके हम, सव

तरह सुभीतेवाली डोडोमा रेलवे होटलमें रहे। हां, खर्चकी दृष्टिसे हम भी ग्रामवासियोंके ही मेहमान थे।

हिन्दुस्तानमें क्या और यहां अफ्रीकामें क्या, पारसी जाति संख्यामें छोटी, लगभग नगण्य होने पर भी केवल अपनी भलाअी, चतुराअी और सर्व-समाजितासे अेकदम निखर आती है और अपनी सुगंध फैलाती है। अुसमें केवल व्यापारीकी दूरंदेशी नहीं होती; अिन्सानियतका भी बहुत बड़ा हिस्सा होता है। पारसी लोग देहातमें रहते हों, शराबकी दुकान चलाते हों और काफी नफा कमाते हों, तो भी आसपास किसीका दु:ख देखते ही तुरन्त पिघलकर मदद करने अवश्य दौड़ जायंगे।

कुछ लोग रुपया कमाते हैं, सो केवल पूंजी बनानेके लिअे, जमा करके रखनेके लिअे और पृथ्वीमाताका दिया हुआ धन अुसीके पेटमें फिर गाड़ देनेके लिअे; कुछ लोग कमाते हैं अैश-आराम, मौज-शौक और अशोभनीय व्यसनोंमें अुड़ा देनेके लिअे; कुछ कमाते हैं अपने कुटुम्बियों और बहुत हुआ तो जातिवालोंको हर प्रकारकी मदद देनेके लिअे; अैसे लोग तो विरले ही होते हैं जो जाति-पांति, धर्म या देशका कोअी भेद रखे बिना, जहां भी दु:ख या कठिनाअी हो वहीं अुपयोगी बननेके लिअे धन कमाते हैं। पारसी जाति आरामसे रहनेमें विश्वास करती है। अपनी जातिके गरीबोंको दान भी काफी और व्यवस्थित रूपमें देती है। परन्तु यहीं न रुककर वह दूसरे धर्मों, दूसरी जातियों और दूसरे देशोंके लोगोंको भी दानके समय भूलती नहीं। अिसीलिअे महात्मा गांधीने पारसियोंको 'परोपकारी पारसी' कहा है।

हिन्दुस्तानमें पारसियोंने अेक और तरह भी अपना स्थान सुशोभित किया है। वे हिन्दू और मुसलमान दोनोंमें आजादीसे घुलमिल सकते हैं और अिस तरह कभी दोनोंके बीच प्रेम-शृंखलाकी कड़ी बन जाते हैं। खाने-पीनेमें वे मुसलमानोंके साथ छूटसे शरीक हो सकते हैं। और धार्मिक भावना और तत्त्वज्ञानकी खोज अिन दो बातोंमें वे हिन्दुओंमें अनेक प्रकारसे अेकरूप हो सकते हैं। अीसा मसीहके अुपदेश और मिशनरियोंके कार्यकी भी वे कदर करते हैं और कुशल व्यापारी होनेके कारण हरअेक सरकारके साथ मीठा संबंध भी रखते हैं।

शिक्षाका महत्त्व अच्छी तरहसे जाननेके कारण जहां व्यावहारिक शिक्षाका सवाल आता है, वहां पारसियोंका कदम आगे ही रहता है। चूंकि ये लोग मानते हैं कि अिहलोकका जीवन सुखी बनाया जाय और मनुष्य मनुष्यके बीचका संबंध मिठासभरा बनाया जाय, अिसलिअे पारसियोंका जीवन हिन्दुस्तानके लोगोंको कभी खटका नहीं। सर्व-समाजिताके युगधर्ममें पारसियोंका जीवन अुपयोगी और शोभायुक्त है।

अैसी जातिको हरअेक सामाजिक अवसर पर अपनाना हमारा फ़र्ज़ है। अगर हिन्दू संकीर्ण वृत्ति रखकर पारसियोंको या अीसाअियोंको अपनानेमें संकोच रखेंगे, तो वे साबित कर देंगे कि अुनके विरुद्ध मुसलमानोंके जो आक्षेप हैं वे सच ही हैं।

अूपरकी सब बातें सिर्फ अिसीलिअे लिखनेको प्रेरित नहीं हुआ हूं कि डोडोमामें अेक सज्जन पारसी परिवारके साथ परिचय हुआ। किन्तु अुससे भिन्न कारण है। वह अिस प्रकरणमें यथास्थान आयेगा।

श्री दारा कीकाके यहां बढ़िया नाश्ता करके हम डोडोमाका खनिज संग्रहालय — जियोलॉजिकल म्यूजियम देखने गये। यह संग्रहालय कअी प्रकारसे याददाश्तमें रखने लायक है। अब तक मैंने जितने संग्रहालय देखे, अुनमें से कुछ तो अिस तरहके थे, जो शुरूके अुत्साहमें जितने बन गये सो बन गये और बादमें अुनमें कोअी वृद्धि नहीं हुअी। अिन्हें मैंने ममी-म्यूजियम नाम दिया है (यानी जिनके प्रति अुत्साह मर गया है, परन्तु जिनका कलेवर ज्योंका त्यों कायम है।) दूसरे कुछ म्यूजियम समय-समय पर वृद्धि द्वारा अद्यतन किये जाते हैं। परन्तु अुनका कोअी अुपयोग करता है या नहीं, अिसके बारेमें व्यवस्थापक अुदासीन होते हैं। यह खनिज संग्रहालय अैसा था जिसका अुपयोग ज्ञानकी अुपासनाके लिअे और साथ ही सरकार और जनताको जानकारी देनेके लिअे व्यवस्थापक खुद ही करते थे।

टांगानिकामें खनिज संपत्ति बेशुमार है। हीरे और सोनेकी खानें तो हैं ही। किन्तु यह चीज सचमुच संपत्ति नहीं है, परन्तु संपत्तिके प्रतीकके रूपमें काममें ली जाती है। जिन खनिज पदार्थोंका व्यवहारमें अधिकसे अधिक अुपयोग है, वे पदार्थ यहां अिकट्ठा करके रखे गये हैं

और अुन पदार्थों पर कअी प्रकारके प्रयोग भी हो रहे हैं। खनिज पदार्थोंको सान पर चढ़ाकर पॉलिश करना, तेजाबमें डालकर अुनकी खूवियां जांचना, भट्टीमें पकाकर अुनमें होनेवाले फेरबदल देखना हरअेक पदार्थका पृथक्करण करके खोज निकालना कि अुसमें से क्या क्या मिल सकता है — वगैरा अनेक प्रकारके प्रयोग यहां हो रहे हैं। सी० आअी० डी० विभागके पुलिसवाले जैसे अभियुक्तको धमकाते हैं, फुसलाते हैं, नशेमें चूर कर देते हैं या कअी तरहसे तंग करते हैं और युक्ति-प्रयुक्तिसे अुसका सब रहस्य जान लेते हैं, अुसी तरह ये विज्ञानशास्त्री जड़ पदार्थों, वनस्पतियों और प्राणियोंके पीछे पड़े रहते हैं। यह लंगन अेक बार लगी कि जन्मभर अुससे चिपटे ही रहते हैं। अैसे लोगोंने ही मानव-जातिके ज्ञानमें कीमती वृद्धि की है और भौतिक अुन्नतिको गति प्रदान की है। अैसे प्रयोगों पर प्रयोगशालाओंके और दूसरे बहुतसे खर्च करने पड़ते हैं। जो जाति यह खर्च करनेको तैयार नहीं होती, वह किसी भी क्षेत्रमें आगे नहीं बढ़ सकती। अिस म्यूजियममें किस किस किस्मकी चीज रखी गअी है और अुनमें से कौनसी वस्तुअें दुर्लभ हैं अिसकी सूचियां देनेका यह स्थान नहीं है। हम लोगोंको अभी कितना करना बाकी है, अिसका विचार मनमें करते-करते अुस म्यूजियमसे मैं वापस लौटा। भूमिके पेटमें क्या-क्या भरा है, अिसका विचार करते हुअे अिस बातकी तरफ ध्यान जाना ही था कि भूमि परके पहाड़ोंकी रचना कैसी है। डोडोमाके बिलकुल नजदीक अेक पहाड़ीके सिर पर कुछ चिकने पत्थर अिस तरह रखे हुअे हैं कि अेक खास तरफसे देखने पर हूबहू अैसा भासित होता है मानो सिंह बैठा है और हम अुसकी जांघ देख रहे हैं। अंग्रेजोंने अुसका 'लॉयन हिल' जो नाम रखा है वह ठीक ही है।

रिवाजके अनुसार दोपहरका लंच हुआ अिंडियन अेसोसिअेशनकी तरफसे। अुसमें कअी अंग्रेज आये थे। अिसलिअे मुझे यहां अंग्रेजीमें ही भाषण करना पड़ा। दोपहरको सब अिधरकी मूंगफलीकी योजना देखनेके लिअे डोडोमासे ५२ मील दूर स्थित कांग्वा केन्द्र पर गये। हमारा कितना ही लिखनेका काम चढ़ गया था। अुसे निपटानेके लिअे

सरोज और मैं पीछे रह गये। कांग्वामें भी वैसा ही काम था, जैसा नचिंग्वेमें देखा था। अिसलिअे वहां न जानेमें कुछ खोना नहीं था।

मैं पीछे रह गया तो मेरे भाग्यमें अेक दो सभायें और कुछ मुलाकातें आ गअीं। शामको हिन्दू-मंडलके सामने मेरा भाषण था। दूसरे दिन मुझे स्त्रियोंकी सभामें बोलना पड़ा। श्रीमती शहरबानू कीका हमारे साथ आअी थीं। मैंने देखा कि श्रीमती कीकाको शिक्षामें बड़ी दिलचस्पी है। शादी करनेसे पहले वे शिक्षाका ही काम करती थीं। पूर्व अफ्रीकाकी प्राथमिक शिक्षाका विचार करनेके लिअे अगर कोअी संस्था बनाअी जाय, तो अुसमें श्रीमती कीकाको लेना ही चाहिये। बातों ही बातोंमें अुन्होंने मुझसे कहा कि, "मुझे शिक्षाकी तरह साहित्यमें भी रस है। हम जो कुछ पढ़ते हैं सो अंग्रेजीमें ही। यह भी जाननेमें नहीं आता कि गुजरातीकी अच्छी पुस्तकें कौनसी हैं। मैंने यहांके हिन्दू-मंडलसे कहा कि बाकायदा फीस लेकर मुझे मंडलकी सदस्या बनाअिये, ताकि आपके पुस्तकालयसे पुस्तकें मंगाकर मैं पढ़ सकूं। वे कहते हैं कि, 'मंडलकी सदस्या आप नहीं बन सकतीं। आपको जितनी पुस्तकें चाहिये, हम यों ही पढ़नेको दे देंगे।'"

अब अिस तरह मुफ्त किताबें लेकर पढ़ना हरअेक आदमीको पसन्द नहीं होता। लोगोंको अैसा ही लगेगा कि 'आप हमारे मंडलकी सदस्या नहीं बन सकतीं', यह कहकर हिन्दुओंने अपनी संकीर्णता प्रकट कर दी। हिन्दू कहेंगे कि पारसी लोगोंको हिन्दूके रूपमें कैसे स्वीकार किया जाय? अिधर पारसियोंको यह खयाल होगा कि हिन्दू संस्कृति और हिन्दू रीति-रिवाजके बारेमें हमारे मनमें जो आदर है, अुसकी कुछ भी कदर नहीं? हम पास आना चाहते हैं और ये लोग हमें दूर रखना चाहते हैं।

सही अुपाय यह है कि मंडलके अुद्देश्योंमें यही लिखना चाहिये कि, "जो हिन्दू हैं या जो हिन्दू संस्कृतिके प्रति सद्भाव रखते हैं, वे सब अिस मंडलके सदस्य बन सकते हैं। हिन्दू धर्मकी किसी रूढ़िके सिलसिलेमें चर्चा हो रही हो, अुस समय अिस प्रकारके

बाकीके लोग मत नहीं दे सकते। अन्य सब प्रकारसे अुन्हें संस्थाके सदस्य माना जायगा।"

अितनी व्यापकता न सूझे तो पुस्तकालयके लिअे अलग नियम बनाकर बाहरके लोगोंको अुसके सदस्य बनाया जा सकता है। मुख्य बात यह है कि सबके साथ मिलनेकी अुत्सुकता होनी चाहिये। आम तौर पर हिन्दू लोगोंमें स्वयंपूर्णताका खयाल होता है और अिस कारण वे बिना विचारे दूसरे लोगोंसे दूर रहते हैं। 'हम अलग स्वभावके हैं और हमारा व्यवहार दूसरे लोगोंको खटकता है', अितनी स्पष्ट बात भी हिन्दुओंके ध्यानमें नहीं आती।

Oh, would some power the gift give us,
To see ourselves as others see us.

आज दुनियाके दरबारमें हिन्दू लोगोंके प्रति सहानुभूति रखनेवाली जातियां बहुत कम हैं। सिर्फ किसीके भी हाथका और कुछ भी खाने-पीनेको तैयार हो जानेसे हमने अलग-थलगपन छोड़ ही दिया, अैसा नहीं होता।

अेक बार बम्बअीमें हिन्दूसभाका अधिवेशन हुआ होगा। लाला लाजपतराय अध्यक्ष थे। अुन्होंने अेक सीधा सवाल पूछा: "असलमें हममें जातीय संकीर्णता नहीं है। हम तमाम भारतवासियोंको साथ लेकर चलना चाहते हैं। ये मुसलमान ही साम्प्रदायिकता पैदा करके हमसे अलग रहते हैं, अिसीलिअे हम खुद साम्प्रदायिक बनकर पारसी, अीसाअी वगैरा दूसरी तमाम जमातोंको अपनेसे दूर क्यों रखें? मुसलमानोंको हमारे साथ शरीक न होना हो तो वे न हों, जो शरीक होनेको तैयार हैं, अुन्हें हम आदरपूर्वक क्यों न बुलायें?"

असलमें वह जमाना अैसा था कि अगर हमने पारसी, अीसाअी वगैरा दूसरी कौमोंको आदरके साथ अपने सामाजिक जीवनमें शरीक कर लिया होता, तो मुसलमान भी हमसे दूर न जाते। हममें राजनीतिक संकीर्णता तो थी नहीं। हमारा अपराध, हमारा अलग-थलग-पन सामाजिक क्षेत्रमें था। अुसकी सजाके तौर पर हमें राजनीतिक

अन्याय सहन करना पड़ा; हमारी राष्ट्रीयताका हनन हुआ और मानव-जातिके दरबारमें हम दूसरे लोगोंकी सहानुभूति खो बैठे।

और फिर भी हमने अपना अलग-थलगपन अभी तक नहीं छोड़ा। हमारे कुछ धार्मिक विचार और रिवाज अधार्मिक हैं। अुन्हें हम छोड़ देंगे तभी मनुष्यकी हैसियतसे हम तरक्की कर सकेंगे।

डोडोमामें कोअी प्रचारक आया होगा। अुसने 'आत्मा नहीं, पुनर्जन्म नहीं, अीश्वर अवतार नहीं लेता, मूर्तिपूजा ढोंग है' वगैरा वगैरा बातें कहकर यहांकी बहनोंको भड़का दिया होगा। अिसलिअे अेक बहन अिस बारेमें मेरे विचार जानकर कुछ आश्वासन प्राप्त करने मेरे पास आअीं। मैंने ये सब प्रश्न अुच्च भूमिका पर ले लिये और अुनकी चर्चा की। अुन बहनको संतोष हुआ, अुन्होंने मांग की कि हम स्त्रियोंके सामने भाषण देकर आप ये सब बातें हमें समझाअिये।

खानगी समय लेकर मुझे जो खत-खतूत लिखना था सो रह गया और दोपहरको बहनोंकी सभामें जाना पड़ा। मैंने वहां घर और समाजकी सफाअीके बारेमें, भोजनके बारेमें और अैसे ही दूसरे अिहलोकमें अुपयोगी विषयोंकी बातें कहीं। सर्व-समाजिताके महत्त्व और अफ्रीकी बहनोंको अपनानेके बारेमें तो जरूर कहा ही। अिसे तो मैं किसी जगह भूलता या छोड़ता ही नहीं था।

कांग्वा गये हुअे हमारे साथी चार बजते बजते वापस आये। तुरन्त ही हम मिसेज पाअिकके यहां चायपार्टीमें गये। लिंडीके वर्णनके समय मैंने लिखा है कि 'गोरोंने हमें अपने वहां खानेको बुलाया हो, अैसा मि० पाअिकका अेक ही अुदाहरण था।' अुसमें अितना संशोधन करना चाहिये कि डोडोमामें अुनकी भाभीने भी हमें अपने यहां अपने गोरे मित्रोंसे मिलने बुलाया था।

रातको श्री दारा कीका और श्रीमती कीकाकी तरफसे स्वेच्छा-भोजन था। अिसे फ्रेंच और अंग्रेज लोग 'बुफे' कहते हैं। स्वेच्छा-भोजनकी खूबी यह होती है कि खानेकी सब तरहकी चीजें तैयार करके अेक मेज पर रख देते हैं। पास ही रकाबियां, चम्मच, कांटे, हाथ रूमाल

वगैरा रखे रहते हैं। मेजवान और मेहमान सब अुस मेजके पास जाते हैं और हरअेक आदमी अेक अेक रक़ाबी लेकर अुसे जो और जितना चाहिये, परोस लेता है और जी चाहे वहां बैठकर या घूमते-घूमते खाने लगता है और अलग-अलग लोगोंके साथ बातें करता है। अिस प्रकार आग्रह करके अधिक परोसना और अन्न बिगाड़ना टल जाता है। 'अपना हाथ सो जगन्नाथ' के हिसाबसे हरअेक मनुष्य अपनी रुचिकी चीज पसन्द करके परोस लेता है और अेक जगह बैठनेकी बात न होनेसे बहुतसी कुर्सियों और मेजों या पट्टोंकी व्यवस्था करनेकी जिम्मेदारी नहीं रहती। लोग घूमते घूमते खायं तो कअी लोगोंके साथ थोड़ा-थोड़ा बोल सकते हैं, दोस्ती बढ़ा सकते हैं। गंभीर लोग दो-चार कुर्सियां जमा करके वहां बैठकर खाते-खाते चर्चा कर सकते हैं। श्री अप्पासाहबके अफ्रीका आनेके बाद यह प्रथा हमारे लोगोंमें काफी फैली। यह कअी तरहसे सुविधापूर्ण तो है ही।

भोजनके बाद भाषणमें मैंने कहा कि मनुष्य-जातिका आदर्श त्रिविध माना गया है। स्वतंत्रता, समता और बंधुता। ये तीनों आदर्श सिद्ध करनेके लिअे मनुष्य-जातिको महान क्रांतियां करनी पड़ी हैं।

फ्रांस देशने राजनीतिक समता स्थापित की। परन्तु अुसके लिअे खूनकी नदियां बहाअी गअीं और सामंती प्रथाका, फ्यूडेलिज़मका अन्त किया गया। अुसके बाद रूसने अुतनी ही रक्तरंजित क्रांति करके अपने यहां समताकी स्थापना की और पूंजीपति वर्ग और खानगी संपत्तिका अंत किया। अब बंधुता स्थापित करनेके लिअे अेक अनोखी क्रांति करनेकी बारी हिन्दुस्तानके भाग्यमें आअी है। अिसके लिअे पहले हिंसाका अंत करना पड़ेगा। और शहरी संस्कृतिको सीमित करके गांवोंका अुद्धार करना पड़ेगा। अिस बंधुताकी क्रांतिके परिणामस्वरूप सामाजिक न्याय, आर्थिक न्याय और वांशिक न्याय तीनोंकी स्थापना होगी।

अिसका नतीजा यह होगा कि अफ्रीकाकी भूमि पर भारतकी मिश्रित संस्कृति, युरोपकी अितिहाससिद्ध संस्कृति और अफ्रीकाकी आदिम संस्कृति तीनोंका समन्वय हो जायेगा। और अुसमें से अेक नअी

संस्कृति अुत्पन्न होगी, जिसका प्रधान स्वर होगा बन्धुता, यह बन्धुता मनुष्य मनुष्यके बीच ही नहीं, परन्तु धर्म धर्मके बीच भी स्थापित होगी।

अितने विस्तारसे नहीं परन्तु अिसी प्रकारका भाषण मैंने दिया। अुसके बाद अप्पासाहब बोले। अुनका भाषण बहुत सुन्दर था। अेशिया महाद्वीपकी पुनर्जागृति और अहिंसक पद्धति द्वारा संघर्ष मिटानेकी आवश्यकता अुनका विषय था। दूसरे दिन डोडोमा छोड़नेसे पहले हम दो-तीन पाठशालाअें देख आये। अिंडियन पब्लिक स्कूलके हेडमास्टर श्री कुरेशी फौजसे निवृत्त हुअे आदमी हैं। अिसलिअे अुन्होंने विद्यार्थियोंको कवायद अच्छी सिखाअी है। अिसका लाभ हिन्दुओंकी अपेक्षा मुसलमानोंने ही अधिक प्राप्त किया है, यह असर मेरे मन पर हुआ। यहां लड़कियोंकी शिक्षाके लिअे आगाखानकी कन्यापाठशाला अलग है। वहां श्रीमती टर्नबुल नामकी अंग्रेज महिला बड़ी लगनसे काम कर रही हैं। अिंडियन पब्लिक स्कूलकी लड़कियोंको खड़े-खड़े खो खो खेलते देखकर मुझे बड़ा आनन्द आया।

यहांकी रेलवे दारेस्सलामसे मोरोगोरो और डोडोमा होकर टबोरा पार करके आगे किगोमा तक जाती है। किगोमा टांगानिका सरोवरका पूर्वी किनारेका बन्दरगाह है। वहांसे जहाजमें बैठकर बेल्जियन कांगोमें जाते हैं।

हमारे लोग हिन्दुस्तानसे दारेस्सलाम आते हैं, वहांसे रेलवेके रास्ते किगोमा और वहांसे जहाजके रास्ते अुसुम्बरा। यह आखिरी बन्दरगाह टांगानिका सरोवरके अुत्तर किनारे पर स्थित है।

१७

झ्रोरोंगोरो

पूर्व पश्चिम जानेवाली रेलवेको छोड़कर अब हमने डोडोमासे नैरोवी तक जानेवाला अुत्तरका मोटरका रास्ता पकड़ा। अिस प्रदेशमें न वड़े जंगल हैं और न वड़े पहाड़। हमारे सौभाग्यसे श्री वदरू नामक अेक भाअी अपनी मोटरमें नैरोवी जा रहे थे। अप्पासाहवके प्रति प्रेमके कारण वे हममें मिल गये। अिसलिअे हमारी मंडली तीन सवारियोंमें आरामसे सफर कर सकी। श्री कमलनयनने अेक मोटरगाड़ी टांगामें खरीदी थी। वह डोडोमा आ पहुंची थी। अेक वह और दूसरी भाअी वदरूकी और तीसरी वॉक्स गाड़ी किराये कर ली थी।

वरसातके दिनोंमें रास्ते परसे मोटरें जानेसे कअी खड्डे-खोचरे हो जाते हैं, जो सूखनेके वाद मोटरोंको परेशान करते हैं। यह मुश्किल टालनेके लिअे रास्तेके खड्डे-खोचरोंकी हजामत करनेवाली मोटर मनुष्यने वनाअी है। लोहेका अेक मोटासा अुस्तरा रास्ते पर चलाने लगें, तो सूखे हुअे कीचड़की अुठी हुअी नोकें कट जाती हैं और अुनकी मिट्टी खड्डोंको भरती जाती है।

अिसके सिवा रास्ता सुधारनेका अेक देहाती अुपाय है। जंगलकी झाड़ियां अिकट्ठी करके रास्तेकी आधी चौड़ाअी तक पहुंचने लायक अेक व्रश तैयार कर लिया जाता है। वुनाअीके काममें मांड़ देनेके लिअे जो कूचा तैयार किया जाता है, अुसके जैसा ही यह व्रश होता है। लम्वी रस्सी वांधकर यह व्रश रास्ते पर फेरनेसे रास्ते परकी मिट्टी समान रूपमें फैल जाती है, अिसके कारण मोटरोंकी दिक्कत वहुत कुछ घट जाती है। रास्ते सुधारनेके ये दोनों प्रकार हमने देखे। हमारे यहां कुछ खास स्थानों पर ये जारी किये गये हैं। रास्तेके दोनों ओर दूर दूर तक, जैसे क्रिकेटके क्षेत्रपाल खड़े हों अुसी तरह गोरख-चिंच अर्थात् चिरमुलाके विशालकाय पेड़ खड़े थे अैसे पेड़ पूर्वी किनारे पर भी वहुत हैं। दारेस्सलामके आसपास तो

बहुत ही हैं। अिस अिलाकेका नाम टांगानिका न होता तो मैं अिसे चिरमुला नाम देता।

आधुनिक सभ्यतासे अलग पड़े हुअे अिस देशमें जहां-जहां बस्ती है, वहीं हिन्दू और मुसलमान गुजराती अपनी अपनी दुकानें खोलकर बैठे हैं। अिनके बीच कोअी झगड़ा नहीं है (क्योंकि यहां संस्कृति, सभ्यता और अखबार नहीं पहुंचे हैं!)। रास्तेमें कोन्डोवा नामक अेक छोटासा गांव था। वहां दूरसे पानी लाकर गांवको बड़ी राहत पहुंचाअी है। हम यहां न ठहर कर आगे बबाटी पहुंचे और वहां अेक मुसलमान भाअीके यहां दोपहरका भोजन किया। अिनके छोटेसे दीवानखानेमें अेक सादा जर्मन चित्र था। अुसमें सिंहोंका चित्रण बड़े अच्छे ढंगसे हूबहू किया हुआ था।

यहांसे आगे चलकर सारा प्रदेश बदल गया। बाअीं ओर अेक विशाल खारे पानीका सरोवर था। अुसका नाम मनियारा है। अिस सरोवरके आसपास जंगली शिकारी जानवर बहुत हैं। माफयूनी गांवके पास रास्ता फट गया। वह रास्ता पकड़कर हम आगे बढ़े। बाअीं तरफ़ तालाब और दाअीं ओर लोसिमिगुर पर्वत। पहले आया कराटू गांव, अुसके बाद आया ओल्डियानी। कराटूके पास भाअी बदरूकी मोटर बिगड़ गअी। हमने अुन्हें रास्ते पर छोड़कर आगे जानेसे अिनकार कर दिया। जंगलमें वे अकेले और अिस पर भी अेक पैरमें कुछ कमजोरी। अुन्हें अिस तरह कैसे छोड़ा जाय?

मगर वे माने ही नहीं। कहने लगे, 'मैंने अैसे सफर बहुत किये हैं। मैं अपनी मोटरको पहचानता हूं। वह घंटे भरमें ठंडी हो जायगी और मान जायगी।' आखिर हमने अुनकी बात मान ली और ओल्डियानी चले गये। वहां पहुंचते ही जब अेक बसको भाअी बदरूकी मददमें भेज सके, तभी हमारे मनकी घबराहट कम हुअी।

अिस प्रदेशमें कुछ युरोपियनोंने सुन्दर खेतीबाड़ी की है। कॉफी, चाय, गेहूं वगैराकी खेती करके वे अच्छा कमाते हैं और अच्छी तरह रहते भी हैं। परन्तु हम अिधर जो आये थे सो अुनकी खेतीबाड़ी देखनेके लिअे नहीं, बल्कि यहांके अेक प्रसिद्ध सुप्त ज्वालामुखीके

मुंहके भीतर हाथी और सिंह जैसे वन्य पशु रहते हैं, अुस स्थानको देखनेके लिअे।

अंधेरा होनेकी तैयारी थी। हमने ओल्डियानी छोड़कर झोरोंगोरो जानेका रास्ता लिया। गोरोंके कितने ही शाम्बे पार किये और पहाड़ चढ़ने लगे। प्रारम्भमें ही अेक दो खरगोश मोटरके प्रकाशमें दिखाअी दिये। असलिअे आशा बंधी। थोड़े आगे गये तो अेक तेंदुआ — नहीं, तेंदुआ छोटा होता है — चीता दिखाअी दिया, जिसे अंग्रेजीमें 'लेपर्ड' कहते हैं। मोटरके प्रकाशमें चौंधियाकर वह अेक तरफ हट गया और अुसने अेक पेड़के छोटेसे कोटरमें छिप जानेकी कोशिश की। मोटर नजदीक आअी तो अुसकी जगह पर जरा अंधेरा हो गया। असे लाभ अुठाकर, अिधर अुधर देखकर, जरा दुबक कर अुसने दौड़ लगाअी और देखते देखते जंगलमें गायब हो गया। हम जरा आगे बढ़े। अंधेरा जम गया था। आकाशका चन्द्रमा छाछसे भी पतली चांदनी बरसा रहा था। अितनेमें मोटरके सामने अेक बड़ा जानवर दिखाअी दिया। हाथी है या गैंडा है, असका विचार करें अितनेमें खोपड़ी परके दो सींगोंने बता दिया कि यह वन-महिष है। जंगलके शिकारी हाथी, गैंडे या शेरसे अितने नहीं डरते जितने महिषसे डरते हैं। महिष जबरदस्त ताकतवाला जानवर है। हाथी या शेर भी असका नाम नहीं लेते। शिकारी कहते हैं कि बाकी सब जानवरोंका स्वभाव समझा जा सकता है और अुनसे निपटा जा सकता है। महिष भूखा हो या न हो, अुसे आप छेड़ें या न छेड़ें, वह अकेला हो या झुण्डमें हो, जहां अुसे आपके प्रति शक हुआ कि अुसने आप पर हमला किया ही समझिये। और अुसका झपाटा अितना जोरदार होता है कि अुससे शायद ही कोअी बच सके।

हमारे सामनेका महिष खूब मस्तीमें आया हुआ जानवर दिखाअी देता था। सामने रास्ते पर आड़ा खड़ा रहकर डोल रहा था। दूरबीन लेकर देखा तो अुसके गले और गरदनकी तरफके बाल काफी लम्बे दिखाअी दिये। थोड़े ही समयमें अुसने सिर फेरकर मोटरकी तरफ टकटकी लगाअी। हमने अुसे अच्छी तरह देखनेके बाद मोटरकी रोशनी

वन्द कर दी। काफी समय तक अच्छे चन्द्रप्रकाशमें हम अेक-दूसरेके दर्शन करते रहे। अुसका विचार हम पर हमला करनेका नहीं था। परन्तु हम हमला नहीं करेंगे, अिसका क्या भरोसा? अिसलिअे अुसने थोड़ी देर हमारी वाट देखी। अुसे विश्वास हो गया कि हम कुछ भी नहीं कर रहे हैं, तो वह रास्तेके वाअीं ओरके जंगलमें विलीन हो गया। रास्तेके दाअीं तरफ अूंचा पहाड़ था। वाअीं तरफ अुतार था। दिनका वक्त होता तो यह देखनेको हम ठहरते कि वह कहां गया। हम आगे चले। अेक स्थानसे ङ्गोरोंगोरोके मुखके भीतरका भाग कुछ कुछ दिखाअी देता था। तालाव जैसा था। वहां चांदनीका प्रकाश स्पष्ट हो रहा था। अूपर पहुंचे तव आसपास कुछ भी दिखाअी नहीं दे सकता था। अूपर सरकारकी तरफसे यात्रियोंके लिअे वनाया हुआ दस-वीस झोंपड़ोंका कैम्प था।

अुसमें हमारे रहनेकी सुविधा की गअी थी। अेक व्यापारी अपने यहां से ३०–४० कम्वल ले आये थे। पीनेका पानी तो ढेर सारा था। अेक वड़ी झोंपड़ीमें खानेकी तैयारी की गअी थी। अुसकी दीवार पर महिषोंके सिरकी हड्डियां और सींग टंगे हुअे थे। हम लोगोंने अेक अेक झोंपड़ी पसन्द कर ली और अपने विस्तर आप विछा लिये। सवेरे अुठते ही ४० मील चौड़ा और कोअी १०० चौरस मीलके क्षेत्रफलवाला ज्वालामुखी दिखाअी देगा तव कैसा लगेगा, अिसका विचार करते करते हम सो गये। मनियाराके आसपास हमने असंख्य हिरण, शुतुर्मुर्ग, चित्राश्व (जिब्रा), जिराफ और वुद्दू वगैरा जानवर देखे थे। अव सवेरे क्या क्या दिखाअी देगा, अिसकी कल्पना कर रहे थे। अितनी अूंचाअी पर ठंड तो होती ही है। हम खूव सोकर अुठे, प्रार्थना की और वाहर निकले। जहां देखो वहीं कोहरेका क्षीरसागर था! कोहरा कपाल, आंखों और कानोंको गुदगुदाता और आगे चलने लगें तो दो तीन हाथ हट जाता और पीछेकी तरफसे नजदीक आ जाता। आसपास घूमने पर वड़े-वड़े पेड़ कोहरेमें भूत जैसे लगते और पास जाने पर अुनकी छाल पर जमी हुअी और नीचे लटकती हुअी काअीके कारण वे रीछ जैसे लगते थे। अुन पेड़ोंके नीचे हमारी 'लांग केविन'

वड़ी सुन्दर लगती थी। यह स्थान ८५०० फुट अूंचा है, अिसलिअे ठंड और कोहरा दोनों लम्वे समय तक रहते हैं। हमें दोपहर तक अरूशा होकर मोशी जाना था, अिसलिअे कोहरा मिट जानेकी प्रतीक्षा नहीं की जा सकती थी। हम तुरन्त रवाना हो गये। हमारी पार्टीमें से श्री कमलनयन और कुछ और आदमी पीछे रह गये। १० वजे वाद वे सारा ज्वालामुख (द्रोण) और अुसके भीतरके कुछ जानवर देख पाये।

अफ्रीकाकी भूमिका अितिहास ज्वालामुखियोंका अितिहास कहा जा सकता है। अूपर अेक जगह कहा गया है कि लाखों वर्ष पहले पूर्व अफ्रीकाकी भूमिमें ३०–४० मील चौड़ी और ३००–४०० मील लम्वी और हजारों फुट गहरी दो दरारें पड़ी थीं। वे कैसे पड़ीं, कव पड़ीं, अुस समय अुनका रूप क्या था, यह हम आज नहीं जान सकते। अितना ही जानते हैं कि ये दरारें पड़नेके वाद वीचमें ज्वालामुखी सुलगे। अुन्होंने दरारका कुछ भाग भर दिया। परिणामस्वरूप कुछ सरोवर तैयार हुअे और नदियां वहने लगीं। यह सव कुछ अेक ही समय अेक साथ हुआ हो, सो वात भी नहीं। जो फेरवदल होनेवाले थे, वे स्थायी हुअे हों सो भी नहीं। १९३८ और १९४८ तक कुछ ज्वालामुखियोंने सिर अूंचा किया यानी मुंह खोला और अुसमें से अग्निरस वहने दिया।

झ्गोरोंगोरोका ज्वालामुख कव वना, यह हम नहीं जानते। परन्तु जव अितना वड़ा ज्वालामुख अग्निरससे खदवदा रहा होगा, तव अुसके सिर पर कोअी १०० मील तक पक्षी भी अुड़नेकी हिम्मत नहीं करते होंगे। आज यह सव शांत हो गया है। अिस ज्वालामुखका पेंदा सीधे मैदान जैसा हो गया है। अुसमें पानी जमा होता है और जंगल अुग आये हैं। ये पेड़ यहां किसने वोये होंगे? जंगलके पेड़ोंके वीज खा-पचाकर अनेक छोटे वड़े पक्षी यहां आये होंगे। विष्टामें से ये वीज वोये गये और अुनके वड़े जंगल हो गये। कुछ जानवर यहां आहार ढूंढ़ते हुअे आये होंगे। अितनी अूंचाअी पर वे कैसे चढ़े और यहां अुन्होंने स्थायी निवास कैसे किया, अिसका अितिहास अुन

जानवरोंके वंशज कहांसे जानें? और जानें तो भी हम अुनसे यह अितिहास कैसे प्राप्त कर सकते हैं? नगैः रक्षितं अिति नगरम्; यह नगरकी व्याख्या सच हो, तो अफ्रीकाके श्वापदोंका यह अरण्यनगर है। किसी समयके ज्वालामुखीके सिर पर ठंड और कोहरेका अनुभव करते हुअे हम अेक रात विता सके, यह वात भी हमें वहुत संतोष दे सकी। अुसी रातको अमरीका — ओटावासे आया हुआ चि० सतीशका अेक प्रेमपूर्ण पत्र मुझे अुस स्थान पर मिला, अुसका भी मन पर वड़ा असर पड़ा। कहां हिन्दुस्तान, कहां केनाडाकी राजधानी ओटावा और कहां यह शिकारी जानवरोंका अरण्यनगर! परन्तु लेखनकला और पत्रव्यवहारके आधुनिक साधनोंके कारण अैसी स्थितिमें भी हम अेक दूसरेके साथ हार्दिक सम्पर्क साध सके।

१८

दो पर्वतराज

ङ्गोरोंगोरोसे अरुशा और वहांसे मोशीकी दौड़ लगाकर हमें तीसरे पहर तक व्याख्यानके लिअे पहुंचना था। अिसलिअे सुवह जल्दी नाश्ता करके ङ्गोरोंगोरो छोड़ा। पहाड़ परसे जरा नीचे अुतरे कि कोहरेके वादल अूपर रह गये। अव नीचे ओल्डियानीकी तरफका सुन्दर दृश्य नजरके सामने फैल गया। धूप और वादलोंकी धूपछांहके कारण सारी जमीन स्वर्णभूमि जैसी लग रही थी। कराटू तक वापस आये और फिर जिराफ, शुतुर्मुर्ग और तरह तरहके हिरण बहुत नजदीकसे देखनेमें आये। अेक हिरण हमारे नजदीक पहुंचने तक निर्भय होकर हमें देखता हुआ ही वैठा रहा। परन्तु अन्तिम क्षणमें अुसने विचार वदल दिया और अैसी छलांग मारी मानो हवाअी गोला हो! यहां हमने पहली वार जिराफको दौड़ते देखा। सुवह ही मैंने कहा था कि सर पर दूरवीन जैसे सींग लेकर खड़े हुअे जिराफ हमने वहुत देख लिये। यह प्राणी दौड़ता होगा तव कैसा दिखाअी देता होगा? और कुछ घंटोंमें जिराफ पानीकी लहरोंकी तरह दौड़ता हुआ हमारे

देखनेमें आया। अुसकी सुडौल गति देखकर अैसा ही लगता है कि जान बचानेके लिअे भी यह कलावान प्राणी बेढंगेपनसे दौड़नेको तैयार नहीं होता!

कराटूमें अेक गुजराती भाअीने बड़े प्रेमसे हमें केसरिया दूध पिलाया। जाते समय हम अुनके यहां नहीं ठहरे, अिस पर हमें अुलहना दिया और पक्के केलोंकी अेक फली और तरह-तरहके फल हमारी मोटरमें लाद ही दिये! अिन लोगोंका कैसा निष्काम प्रेम था? हमने अुनके लिअे क्या किया था? क्या कर सकते थे? अुनके या हमारे जीवनमें दुबारा मिलनेकी संभावना भी कम थी। फिर भी घरके आदमियोंकी तरह ये लोग हमारे साथ व्यवहार करते रहे। अपनी सारी होशियारी या बहादुरीका बखान करना भी अुन्हें नहीं सूझता। सारे पूर्व अफ्रीकामें हमें जहां तहां अैसे ही गुजराती भाअी मिले हैं और हर जगह हमने अिसी प्रेमकी बाढ़का अनुभव किया है।

हम अंगारक पर्वत तक सीधे अुत्तरमें गये। मोंडुली गांवको बाअीं ओर रखकर हमने पूर्वकी ओरका रास्ता लिया। थोड़े ही समयमें हमें अफ्रीकानिवासी मेरु पर्वतके दर्शन हुअे। अुसका शिखर बादलोंमें ढंका हुआ था और अुसका विस्तार पौन सौ मील तक फैला हुआ था! फिर आया अरुशा शहर। बड़ा ही सुन्दर। युरोपियन लोगोंने अिसे नंदनवन बना दिया है। हमें यहां तक लानेवाले श्री त्रिलोकीनाथ बोरा यहीं अुतर गये और हम अिन्हींकी मोटर लेकर आगे मोशी गये। रास्तेमें दोनों ओर अंग्रेजोंके अनेक शाम्बाओं (अेस्टेट्स) की शोभा हम देख सके। बीचमें हमने अुपा नदी पार की। कितने ही मीलों तक फैले हुअे घासके बीहड़ देखे। टांगासे अरुशा तक आनेवाली रेलवेको हमने तीन बार पार किया। पहली बार हमने यहां तारके खम्भे देखे। और अन्तमें —

जिसकी धुन बहुत दिनोंसे लगी हुअी थी, वह किलिमांजारो पर्वत नजदीकसे दिखाअी दिया। पहले तो बादलोंमें धनुषकी रेखाकी तरह अेक सफेद सुरेख किनारी दिखाअी दी। मनको यह विश्वास हो जानेके बाद कि यह बादल नहीं परन्तु पहाड़की चोटी है, हमने

पार्टी थी। यहां अप्पासाहबका बड़ा प्रभावशाली भाषण हुआ। अिस प्रदेशमें रहनेवाले चाग्गा अथवा वाचाग्गा लोगोंकी अेक संस्था है। अिन लोगोंको शिक्षा देकर अुन्हें आगे लानेवाले मि० बेनेटके साथ मुलाकात हुआी। अेक आदमी सोच ले तो अफ्रीकी लोगोंके लिअे कितना कर सकता है, अिसका वे अुत्तम नमूना थे।

यहांकी पार्टीमें अेक महाराष्ट्री डॉक्टर, दो गोअन, अनेक सिक्ख भाअी और गुजराती हिन्दू थे। अिस्माअिली भाअी तो बड़ी तादादमें जमा हुअे थे। रातको यहांके हिन्दू भाअियोंके साथ खास वार्तालाप रखा गया था, जो ९ से ११ बजे तक चला। अैसे वार्तालाप हमारी यात्राका सर्वोत्तम भाग माने जायंगे। अिनमें हम कुछ भी संकोच रखे बिना हिन्दू मुसलमानोंके सम्बंधके बारेमें आजादीके साथ बोल सकते थे, लोगोंकी भावनाअें और अुनकी मुश्किलें जान सकते थे और अनेक भूमिकाअें बनाकर हम अपना दृष्टिबिन्दु अुन्हें समझा सकते थे। मोशीमें वहांके डिप्टी कमिश्नर मि० जॉन्स्टन मिले। आदमी स्वभावसे बड़ा सज्जन और विचारोंका अुदार था। कोअी घंटे भर बैठकर अुन्होंने बहुतसी बातें कीं। और अुनसे बहुत कुछ जाननेको भी मिला।

दूसरे दिन हम चाग्गा लोगोंके वेलफेअर सेंटरकी अेक वाड़ी देखने मरांगू गये। अुस बाड़ीके पास चाग्गा लोगोंके अेक नेता — मुखिया पेट्रोका सुन्दर निवासस्थान है। अुनके मेहमान बनकर हमने देख लिया कि अफ्रीकी परिवार कैसे रहते हैं। अुनके नये मकानके पीछेवाली बड़ी गोल झोपड़ी हम भीतरसे देख आये। बिलकुल अंधेरेमें अिन्सान और हैवान साथ-साथ कैसे रहते हैं, यह देखकर हिमालयके पहाड़ी लोगोंकी याद आ गअी। परन्तु वहां अितना अंधेरा नहीं था। अफ्रीकी लोग गायका दूध भी पीते हैं और अुसका खून भी पीते हैं। गाय या बछड़ेको खंभेसे बांधकर अेक बाणसे अुसके गलेकी नस कैसे काटते हैं और आवश्यक लहू निकाल लेनेके बाद घाव कैसे बन्द किया जाता है, अिसके बारेमें हमने विस्तृत बातें सुनीं। प्रत्यक्ष प्रयोग देखनेकी मेरी हिम्मत नहीं हुअी, अिसलिअे मैं वहांसे खिसक गया। हमारे दलके लोगोंने क्या क्या देखा, सो मैंने पूछा भी नहीं। श्री

देखा तो किलिमांजारो अपने सिर परका बादलोंका पटल धीरे धीरे हटा रहा है। कैसा वह गंभीर और भव्य दर्शन था! मानो कर्पूरगौर महादेव वुद्ध भगवानका अवतार लेनेके लिअे अपनी जटा अुतार कर यहां ध्यानस्थ वैठे हों! आज किलिमांजारोके सिर पर हमेशासे ज्यादा वर्फ थी। असलिअे अुसके नीचे अुतरते हुअे रेले खूव दूर तक पहुंचे हुअे दीखते थे। शिखरकी रचना अितनी सुन्दर मालूम होती थी कि यह जानते हुअे भी कि अुसके सिर पर ज्वालामुखीका द्रोण (मुंह) है, यहांसे वह सच्चा प्रतीत नहीं होता था। हृदयके अुद्‌गार निकाल डालनेकी पुरानी आदत रही होती, तो मैंने जरूर कहा होता "अद्य मे सफलं जन्म, यात्रा च सफला अियम्।"

हमारी मोटर हमें सपाटेसे मोशी और अुसके वैभवशाली पहाड़ किलिमांजारोकी तरफ ले जा रही थी। रास्ता टेढ़ामेढ़ा होनेके कारण दर्शनकी खूवियां क्षण क्षण वदल रही थीं। वादमें मैंने जाना कि मोशीका अर्थ धुंआ है। किलिमाका अर्थ पहाड़ और अन्जारोंका अर्थ अूंचा या चमकता हुआ। दोनों अर्थ अिस पहाड़के लिअे जंचते हुअे थे। किलिमांजारोका विस्तार भी वहुत चौड़ा है। अूपर चढ़नेका रास्ता अुसके पीछेकी तरफ है। दूसरे दिन हम अुस रास्तेसे अेक अफ्रीकी मुखियाका घर देखने गये।

मोशीमें हम वहुत ही थोड़े समय रह सके। परन्तु अुस समयका अुपयोग अच्छा हुआ। श्री सदरुद्दीन — माननीय वलीमुहम्मद नजर-अलीके लड़के — के यहां हमारा डेरा था। श्रीमती सदरुद्दीन वड़ी चतुर महिला थीं। अुनके यहां खा-पीकर ताजा होकर हम सभामें गये। अितनेमें श्री कमलनयनकी मंडली भी आ पहुंची। प्लाजा थियेटरमें काफी भीड़ लगी हुअी थी। वहनोंकी संख्या भी अच्छी थी। यहां ...ी वार मैंने अपनी राय जाहिर की कि हिन्दुस्तानके स्वतंत्र होनेके ... अेशियाकी अनेकवंशी जनता हमारी तरफ प्रेम और अुमंगभरी ... देखने लगी है। अिसलिअे अव हमें अेशियाके प्रतिनिधि वनकर ...म धारण करना ही पड़ेगा। अिस सभाके वाद तुरन्त ...ी विलकुल सीढ़ियों पर अेशियन अेसोसियेशनकी चाय-

पार्टी थी। यहां अप्पासाहबका बड़ा प्रभावशाली भाषण हुआ। अिस प्रदेशमें रहनेवाले चाग्गा अथवा वाचाग्गा लोगोंकी अेक संस्था है। अिन लोगोंको शिक्षा देकर अुन्हें आगे लानेवाले मि० बेनेटके साथ मुलाकात हुअी। अेक आदमी सोच ले तो अफ्रीकी लोगोंके लिअे कितना कर सकता है, अिसका वे अुत्तम नमूना थे।

यहांकी पार्टीमें अेक महाराष्ट्री डॉक्टर, दो गोअन, अनेक सिक्ख भाअी और गुजराती हिन्दू थे। अिस्माअिली भाअी तो बड़ी तादादमें जमा हुअे थे। रातको यहांके हिन्दू भाअियोंके साथ खास वार्तालाप रखा गया था, जो ९ से ११ बजे तक चला। अैसे वार्तालाप हमारी यात्राका सर्वोत्तम भाग माने जायंगे। अिनमें हम कुछ भी संकोच रखे बिना हिन्दू मुसलमानोंके सम्बंधके बारेमें आजादीके साथ बोल सकते थे, लोगोंकी भावनाअें और अुनकी मुश्किलें जान सकते थे और अनेक भूमिकाअें बनाकर हम अपना दृष्टिबिन्दु अुन्हें समझा सकते थे। मोशीमें वहांके डिप्टी कमिश्नर मि० जॉन्स्टन मिले। आदमी स्वभावसे बड़ा सज्जन और विचारोंका अुदार था। कोअी घंटे भर बैठकर अुन्होंने बहुतसी बातें कीं। और अुनसे बहुत कुछ जाननेको भी मिला।

दूसरे दिन हम चाग्गा लोगोंके वेलफेअर सेंटरकी अेक बाड़ी देखने मरांगू गये। अुस बाड़ीके पास चाग्गा लोगोंके अेक नेता — मुखिया पेट्रोका सुन्दर निवासस्थान है। अुनके मेहमान बनकर हमने देख लिया कि अफ्रीकी परिवार कैसे रहते हैं। अुनके नये मकानके पीछेवाली बड़ी गोल झोपड़ी हम भीतरसे देख आये। बिलकुल अंधेरेमें अिन्सान और हैवान साथ-साथ कैसे रहते हैं, यह देखकर हिमालयके पहाड़ी लोगोंकी याद आ गअी। परन्तु वहां अितना अंधेरा नहीं था। अफ्रीकी लोग गायका दूध भी पीते हैं और अुसका खून भी पीते हैं। गाय या बछड़ेको खंभेसे बांधकर अेक बाणसे अुसके गलेकी नस कैसे काटते हैं और आवश्यक लहू निकाल लेनेके बाद घाव कैसे बन्द किया जाता है, अिसके बारेमें हमने विस्तृत बातें सुनीं। प्रत्यक्ष प्रयोग देखनेकी मेरी हिम्मत नहीं हुअी, अिसलिअे मैं वहांसे खिसक गया। हमारे दलके लोगोंने क्या क्या देखा, सो मैंने पूछा भी नहीं। श्री

पेट्रोके साथ वर्धाके ग्रामोद्योगों और नअी तालीमके वारेमें वातें कीं। हाथकी कती और वुनी खादी और हाथके वने हुअे कागजके नमूने वगैरा देखकर अुन्हें महसूस होने लगा कि हम भी अैसा ही क्यों न करें? वादमें मैंने अुन्हें वड़े विस्तारसे समझाया कि शहदकी मक्खीका पालन कैसे किया जाता है और अुसका नाश किये विना शहद कैसे निकाला जाता है। और अुन लोगोंने भी खूव ही दिलचस्पीके साथ यह सव सुन लिया।

मुखिया पेट्रोकी वाड़ीके मकअीके गरम-गरम भुट्टे हमने चखे। अुसके दाने अितने वड़े और मीठे थे कि यहांके वीज हिन्दुस्तानमें ले जानेकी जीमें आ गअी। मकअीका आटा अफ्रीकी लोगोंका मुख्य भोजन है। अिसके साथ वे अेक प्रकारके वेमिठास केले पकाकर खाते हैं। और अेक प्रकारके शकरकन्द भी सेंक कर खाते हैं। अिन शकरकंदोंका स्वाद भी हमारे शकरकन्द जितना मीठा नहीं होता। अफ्रीकाकी मकअीका स्वाद हमने कअी जगह लिया है, परन्तु स्वादमें यहांकी मकअीकी वरावरी कोअी नहीं कर सकी।

लौटकर हमने खाना खाया और अरुशाके लिअे रवाना हो गये। रास्तेमें फिर किलिमांजारोके भव्य दर्शन हुअे। अगले दिनके दर्शनोंके कारण आजका दर्शन वासी भी नहीं लगा और अुसका नशा भी कम नहीं हुआ। परन्तु परिचयकी आत्मीयता अवश्य अुमड़ आअी। सारा रास्ता पहचाना हुआ था, अिसलिअे हम आसानीसे पौने चार वजे अरुशा पहुंच गये। वहां हमारे मेजवान श्री नरसीभाअी मथुरादास थे। श्री नरसीदासभाअी श्री नानजी कालिदास मेहताके भतीजे होते हैं। अुनका घर अरुशाभरमें तमाम सुख-सुविधाओंसे भरा हुआ सवसे अद्यतन (अप-टु-डेट) माना जाता है। अरुशामें अिंडियन अेसोसियेशनकी तरफसे चायपार्टी हुअी। अिसमें वहांके प्रांतीय कमिश्नर और अुनकी पत्नी आअी थीं। सारी पार्टीमें जो युरोपियन थे, अुनमें ग्रीक और डेन लोग भी थे। अेशियन लोगोंमें हमारे हिन्दुस्तानी लोगों — गोअनों सहित — के अुपरांत अरव वगैरा थे और अफ्रीकी लोगोंमें स्थानीय अेविसीनियन और सोमाली भी थे। लोग चाय और खाद्य-पदार्थोंके

साथ न्याय करनेमें मशगूल थे, जब कि मेरा सारा ध्यान मेरुकी प्रचंड मूर्तिकी तरफ था। अिन दिनों मेरुके सिर पर बर्फका मुकुट नहीं होता, परन्तु मुकुटके बिना भी वह आसपासके प्रदेशके राजाकी तरह ही सुशोभित था। किलिमांजारो और मेरु जबसे अूपर निकल आये हैं, तबसे अफ्रीकाके शिकारी जानवर और मनुष्य, नदियां और सरोवर — सबके सुदीर्घ अितिहासके वे साक्षी हैं। प्राचीन कालके कितने ही अफ्रीकी नेताओंने अिन दो पहाड़ोंकी शपथ खाकर अपनी मित्रता दृढ़ की होगी या शत्रुसे वैर लेनेकी प्रतिज्ञा पर मुहर लगाओी होगी। ये दो पहाड़ कोओी संकल्प नहीं करते। पक्षपात नहीं करते। अपने सिर पर जितनी वर्षा हो, अुसके छोटे बड़े झरने बनाकर अुषा (usa), पंगानी (pangani), त्सावो (tsavo), जो कोओी नदी अुनसे लाभ अुठाना चाहे अुसे जीवन अर्पण करते रहते हैं।

सार्वजनिक सभामें अनेक पंजाबी और गुजराती बहनें वगैरा मिश्रित श्रोता थे। हिंसा और अहिंसाका प्रश्न तो छेड़ा ही था।

रातके भोजनमें बड़े-बड़े दो सौ लोग मौजूद थे। अंग्रेजोंकी संख्या यहां सबसे ज्यादा थी; Non-violence in peace and war (युद्धकाल और शान्तिकाल दोनोंमें अहिंसाकी नीति) के बारेमें मैं थोड़ा बोला। बहुतसे विदेशियोंने अिस चर्चामें भाग लिया। अुसमें अपने कर्तव्यका गहरा विचार करनेवाला अेक गोरा पुलिस अफसर था। अुसने विशेष बातें करनेके लिअे दूसरे दिन मिलनेकी अिच्छा प्रगट की। सबेरे अपराधों और अुनके लिअे दी जानेवाली सजाओंकी काफी तात्त्विक चर्चा हुओी। अैसा जान पड़ा कि यह आदमी अपने कर्तव्यके बारेमें गहराओीमें जाकर विचार करता है। हमारे लोगोंकी आर्थिक नीतिमत्ता यानी ओीमानदारीके बारेमें अुसका अूंचा खयाल नहीं था। केवल नरसीभाओीके बारेमें अुसने आदरके वचन कहे थे। मुझे वे केवल शिष्टाचारके शब्द नहीं लगे।

सुबहकी चर्चाके बाद हम अेक अैसा तालाब देखने मोशीके रास्ते रवाना हुअे, जो अरुशाके गलेका मोती जैसा लगता है। डेलूटी (Deluti) सरोवरका श्रेय भी ज्वालामुखीको है। अुसका आकार

देखते ही यह मालूम हो जाता था। अिस तालावके किनारे श्रीमती रॉयडन नामकी अेक अंग्रेज महिलाने सुन्दर मकान और अुससे भी सुन्दर वगीचा वनाया है। महिला अितनी होशियार है कि पिछले युद्धके दिनोंमें अपनी और दूसरे गोरोंकी १४ अेस्टेटें वही संभालती थी। और अिस महिलाकी जिज्ञासा अितनी प्रखर कि मिस्रके पिरेमिडों और अुनके संवंधकी गूढ़ विद्याके वारेमें भी वह जानती थी। दीवानखानेमें अुसने जो चित्र रखे थे, वे भी अूंची अभिरुचि व्यक्त कर रहे थे।

१९

ब्रह्मक्षत्री साहस

अव तो नमंगा होकर आम्बोसेलीके रेगिस्तान और अरण्यमें अेक रात बिता कर नैरोवी जाना वाकी था। परन्तु रास्तेमें अेक होशियार भारतीय युवक रजनीकान्त ठाकोरकी खेतीवाड़ी देखनी थी। वह यहां आल्डोनिअू शाम्वाके नामसे पुकारी जाती है। वहां जाते हुअे रास्तेमें ही जो पहाड़ियां दिखाअी दीं, वे हरी, चिकनी और मनोहर थीं। खेतीवाड़ीमें अच्छे अच्छे जानवरोंका पालन हम देख सके। गायें, सांड़ और अन्य पशु यहां खास शास्त्रीय ढंगसे रखे जाते हैं। गायका दूध अिकट्ठा करके अुसमें से मक्खनके सिवा पनीर (चीज) वनाया जाता है। दूधमें से पनीर कैसे वनाया जाता है, अिसकी सारी क्रियायें हमने यहां देखीं। रजनीकान्तके पिता श्री सत्येन्द्र त्र्यंवक ठाकोर यहां वेटेसे मिलने आये थे। अुनसे अिस तरफका वहुतसा अितिहास जाननेको मिला।

हमारे लोग ज्यादातर देहात या शहरोंमें दुकान खोलकर देशी-विदेशी माल वेचनेका ही काम करते हैं। हाल ही में अुन्होंने सायसल, वॉटल या शक्करके कारखाने शुरू किये हैं। परन्तु खेतीवाड़ीका काम करनेवाले लोग नहींके वरावर ही हैं। अिसलिअे मोरोगोरोकी तरफके

मगोलिया पटेल और आल्डोनिअूके ठाकोर दोनों अुज्ज्वल अपवादके रूपमें नजरके सामने आते हैं।

गुजराती ब्रह्मक्षत्रिय जातिकी होशियारीका मैंने वखान किया, तो सत्येन्द्रभाअी कहने लगे : "परन्तु हमारे लोग घरघुस्सू हैं, यह आप क्यों भूल जाते हैं? अितने गुजराती यहां आये हैं, अुनमें ब्रह्मक्षत्रियोंकी संख्या कितनी है? हमारे लोग अभिमान ही अभिमानमें रह गये।" हमारे लोगोंने अभी तक काफी होशियारी नहीं दिखाअी, अैसी आलोचना करके ही अपने लोगोंके प्रति अपनी आत्मीयता अनुभव करनेवाले कुछ लोग होते हैं। मेरी गणना भी अिसी कोटिमें होती है, अिसलिअे मैं सत्येन्द्रभाअीकी अपने लोगोंकी आलोचनाका रहस्य अच्छी तरह समझ सका।

२०

अभयारण्यमें प्रवेश

हम नमंगा पहुंचे। यहांसे आंवोसेली जानेका रास्ता फटता है। नमंगामें मराठी वोलनेवाले दो होशियार कोंकणी मुसलमान भाअी रहते हैं। अिनमें से मोहम्मद अुमर साहवके साथ मेरी बहुत वातें हुअीं। अुनके पिताने और अुन्होंने अंग्रेजोंको कैसा छकाया; अपने लोगोंका होनेवाला अपमान टालनेके लिअे अुन्होंने यहां कैसे देशी होटल खोला वगैरा वातें अुन्होंने कहीं। जंगलके जानवरोंके पीछे भटकनेकी धुनमें अगर किसीको दूसरा नंवर लेना पड़े, तो वह मोहम्मद अुमर साहव नहीं। मोहम्मद साहवने आसपासके आदिवासी मशाअी लोगोंकी अितनी ज्यादा सेवा की है कि ये लोग हरअेक काममें अुनकी सलाह लेते हैं और अुन पर पूरी तरह विश्वास रखते हैं। होटल खोलनेके लिअे जब अुन्हें जमीन चाहिये थी, तब अंग्रेज लोग अुन्हें जमीन मिलने नहीं देते थे। यह मुश्किल मालूम होते ही मशाअी लोगोंने अपनी जमीनमें से अच्छा टुकड़ा निकाल कर दे दिया। सरकारी अफसरोंने मशाअी लोगोंसे धमका कर पूछा कि "हिन्दुस्तानी आदमीके प्रति अितना पक्षपात क्यों करते हो?" मशाअी लोगोंके नेताओंने अुड़ता हुआ जवाब देनेके बजाय

सीधा ही कह दिया कि, "मोहम्मद साहब हमारे पुराने दोस्त हैं, हमारे हितैषी हैं। अुनके प्रति कितना ही पक्षपात करनेमें हमें खुशी ही होती है।"

कअी तरफसे नदियोंका प्रवाह आकर जैसे समुद्रमें मिलता है, वही नमंगामें हमारे काफलेका हुआ। डोडोमासे चले तब श्री अप्पासाहब, श्री अिनामदार, सकुटुंब कमलनयन, सरोज, मैं और शरद पंड्या अितने हम थे। अरुशासे श्री नरसीभाअी और अुनके भाअी हमारे साथ हो गये। ङगोरोंगोरोसे श्री जशभाअी देसाअी, अुनके लड़के निरंजन और श्री शहाणेके लड़के अजित हमारे साथ शरीक हो गये। आल्डोनिअूसे श्री रजनीकान्त और मिल गये। 'सर्व अेव महारथाः!' अलबत्ता यह रथ तैलवाहन था। अब नमंगामें नैरोबीसे आये हुअे डॉक्टर और श्रीमती नाथू, सौ० नलिनीबहन पंतकी सहेली श्रीमती लीला फाटक और चि० सरोजके बचपनके मित्र और सहपाठी श्री जाल कण्ट्राक्टर — ये सब आ पहुंचे। सारा काफला अुमंगके साथ आंबोसेलीके रेगिस्तान और अरण्यमें प्रवेश करने लगा। मोटरें, लारियां और ट्रकों जैसे महारथ और अुनमें बैठे हुअे हम महारथियोंके अस्त्रशस्त्र देखने लायक थे। बन्दूक और पिस्तोलके बजाय हमारे पास टॉर्च और दूरबीन थीं। हम जानवरोंको मारनेके लिअे नहीं, परेशान करनेके लिअे नहीं, परन्तु देखनेके लिअे निकले थे। जो कोअी अिस अभयारण्यमें प्रवेश करता है, अुसे संकल्प कर ही लेना पड़ता है कि 'अभयं सर्व भूतेभ्यः ; शम् नो अस्तु द्विपदे; शम् चतुष्पदे।' झाड़ और झंखाड़में से हम पूर्व दिशामें चले। रास्तेमें थूहरके विशाल वृक्ष हमारा स्वागत कर रहे थे और कुछ कांटेदार पेड़ पक्षियोंको अभयदान दे रहे थे।

सो किस तरह? सांप और दूसरे प्राणी वृक्षों पर चढ़कर पक्षियोंके घोसलोंमें से अंडों और बच्चोंको खा जाते थे। अिसके विरुद्ध अुपायके तौर पर पक्षी अपने घोंसले हमेशा पेड़के सिरे पर, पतली पतली डालियोंके साथ, चीनी लालटेनकी तरह, लटका देते हैं। अैसी डालियोंके नीचे अगर तालाबका पानी हो, तो ज्यादा अच्छा और डालियां अगर

कांटेवाली हों तो तो वह और भी अधिक रक्षण है। अिस प्रकार शत्रुसे हरअेक प्रकारकी रक्षा करनेवाले ये पेड़ तमाम पक्षी जातिका आशीर्वाद लेते हैं।

कोअी ३० मीलका जंगल पार करनेके वाद हमने दक्षिणका मार्ग लिया। वहांसे सूखे हुअे आम्वोसेली सरोवरका रेगिस्तान शुरू होता था। जहां देखो वहां रेत, रेत और रेत! और सामनेकी तरफ अपने पवित्र दर्शनोंका लाभ देनेके लिअे किलिमांजारो खड़े ही थे।

सारा रेगिस्तान पार करके हमने अभयारण्यमें प्रवेश किया। वहां हिंस्र पशुओंने हमें अभयदान नहीं दिया था, परन्तु हमारे जैसे मनुष्योंकी सरकारने वहांके तमाम पशु-पक्षियोंको अभयदान दिया था। लम्बे समयकी सुरक्षितताके कारण यहांके पशु भी मनुष्यके प्रति बड़े सौम्य हो गये हैं। और अिसलिअे हम भी निर्भय हो गये थे। अिस प्रकार सव तरहसे अभयारण्य माने जानेवाले अिस प्रदेशमें हमने अुत्सुक नेत्रोंसे प्रवेश किया। अेक वात स्पष्ट करनी चाहिये। यहांके तमाम पशु-पक्षियों और वृक्ष-वनस्पतियोंको सिर्फ अिन्सानकी तरफसे ही अभय दान है। वे आपसमें अहिंसक होनेके लिअे वंधे हुअे नहीं हैं। और वंधे हों तो खायं क्या? और हाथीको अगर सूंडसे या सिरके धक्केसे पेड़ गिरानेकी लीला करनेको न मिले, तो वेचारेके लिअे सारा जीवन वेस्वाद और भारस्वरूप वन जाय।

पूर्व जन्ममें हमने कौनसे पुण्य किये होंगे कि अनजान मुल्कोंमें अैसे जंगलमें हम किसी धर्मात्मा सम्राट्की तरह भयानकसे भयानक पशुओंका अहिंसक शिकार कर सके। जशभाअीने कहा, "हम जल्दीसे सामनेकी पहाड़ी पर जाते हैं, आप हमारे पीछे पीछे जल्दी आअिये। शामके वक्त अकसर यहां हाथी अिकट्ठे होते हैं। पहाड़ी परसे अच्छी तरह दिखाअी देंगे।" जंगलका अिलाका। यहां किसीने कोअी रास्ते नहीं बनाये हैं। जैसे सूझे और जैसे जंचे वैसी मोटरें चलाना। मेरे मनमें क्षण क्षण पर विचार आता था कि संयोगवश मोटरें यहां अटक जायं तो हमारा क्या हाल हो? कोअी पशु क्रुद्ध होकर हमला कर दे और अुसी समय मोटर फेल हो जाय, तो मनुष्य क्या कर सकता है?

जब तक मृगयाका रंग नहीं जमा था, तभी तक अैसे विचार मनमें आ पाये। अेक बार अुत्साहकी भट्टी गर्म हुअी कि हम वहांके वातावरणके साथ अेकरूप हो गये। जितना हमारा विश्वास अपने पैरों पर था, अुतना ही मोटरों और लारियों पर जम गया। फिर तो खड्डे क्या और टीले क्या; झंखाड़ क्या और पत्थर क्या — हमारे लोगोंने मोटरें चला ही दीं। और मोटरें भी अितनी अुमंगमें आ गअी थीं कि जिधर मोड़िये अुधर मुड़ती थीं। मनुष्योंको भी चढ़ना कठिन प्रतीत हो, अैसे स्थान तक पहाड़ी पर हमारी मोटरें चढ़ गअीं। चार चार छः छः आंखोंसे हमने चारों किनारे देखे, परन्तु अेक भी जानवर दिखाअी नहीं दिया। मानो अुन्होंने हमारे विरुद्ध षड्यंत्र ही कर लिया हो। हम निराश हो गये। कमी पूरी करनेके लिअे संध्याकाल मनानेके खातिर पहाड़ी पर आया हुआ अेक पक्षी हम पर हंसने लगा। अितना गुस्सा आया अुस पर! परन्तु करते क्या? गुस्सेको जेबमें रखकर अुतरे। खूब ही भटके। हाथीकी लीद कहीं भी दिखाअी दे, तो यह देखकर कि वह ताजी है या सूखी हुअी, हम साश या निराश हो जाते।

अब तो अंधेरा भी हो गया। मोटरोंके दीयोंने अपनी आंखें खोलीं, अितनेमें दूर भैंसके जैसी कोअी चीज दिखाअी दी। नजदीक जाने पर निश्चय हो गया कि नाक पर सींगका भार अुठानेवाला अेक जबरदस्त गैंडा है। क्षण भरमें अुसके पास ही हमने अेक बच्चा देखा। विश्वास हो गया कि गैंडी है। अपने बच्चेको संभालती संभालती घूम रही है। हम घड़ी घड़ी में दूरबीन चढ़ाकर देखते, फिर नीचे रख देते। मैंने देखा कि गैंडी लंगड़ाती है। किसी अैसे ही दूसरे जबरदस्त प्राणीके साथ झगड़ा हुआ होगा। हमने विचार किया कि सवेरे अगर अुसके खूनकी बूंदें दिखाअी दें, तो अिसका स्थान ढूंढ़ निकालेंगे।

दूसरी पार्टीमें कमलनयन वगैरा थे। अुन्हें तीन सिंह दिखाअी दिये। हम अुस तरफ पहुंचे तो ये तीनों सिंह अैसे खिसक गये कि अुनमें से अेक ही की पीठ जरा दिखाअी दी। सिंहकी जांघ या अुसकी दुम पहचाननेमें देर नहीं लगती। कहने लगे कि अिस ओर तीन

है। स्वाहिली भाषाके प्रति जगह जगह जो विरोध कहा जाता है, वह कृत्रिम रूपमें पैदा किया गया है। श्री रसेलसे हमने जाना कि जो वुन्योनी सरोवर हम देखने गये थे अुसके भीतर अेक टापू है। अुस टापूमें कुष्ठरोगियोंके लिअे अेक बस्ती बनाअी गअी है। कुछ मिशनरी लोगोंने कुष्ठसेवाके लिअे फकीरी ले ली है। अुनकी सेवाका असर खास तौर पर देखने लायक है। अुस अफसरके साथ मैंने अेक प्रश्न छेड़ा कि अफ्रीकी लोगोंकी संस्कृतिने अुसका जो स्वरूप अिस समय है वह कैसे पकड़ा होगा? अुन्हें भी अिस विषयमें दिलचस्पी थी, अिसलिअे हमारी खूब बातें हुअीं।

कवालेके हिन्दू-मंडलने हमारे लिअे अेक सभाका प्रबंध किया था। अुसमें अफ्रीकी लोगोंकी संख्या अच्छी थी, अिसलिअे मैं अुन्हें ध्यानमें रखकर अधिक विस्तारसे बोला। मेरे अंग्रेजी भाषणका अेक अेक वाक्य अेक अफ्रीकी भाअी वहांकी भाषामें समझाते थे। केवल अनुवाद करनेके बजाय विस्तार भी करते थे। अुन लोगोंकी भाषा जाने बिना भी मैंने देखा कि वे मेरे भाव अच्छी तरह समझ रहे थे और अुनका विकास करके लोगोंके सामने रख रहे थे। सभाके अन्तमें थोड़े प्रश्नोत्तर हुअे। अिस मार्गसे अफ्रीकी लोगोंका दृष्टिकोण समझनेका मुझे अच्छा मौका मिलता था, अिसलिअे अिसका मेरे लिअे अधिक महत्त्व था। प्रश्नोत्तरकी झड़ी लग गअी। अुसमें अेक आदमीने जो प्रश्न पूछा, अुसका अंग्रेजी भाषान्तर करके मुझे समझानेसे हमारे दुभाषियेने अिनकार किया। अुलटे अुसने सभामें अुपस्थित गोरे अफसरसे पूछा कि, 'अैसा सवाल मेहमानोंके सामने जवाबके लिअे रखा जा सकता है?' अफसरने कहा, 'आप मेहमानोंसे ही पूछ लीजिये।' मैंने आग्रह किया कि, 'सवाल कैसा भी क्यों न हो, मुझे अुसका अंग्रेजी करके कहिये। जवाब देनेवाला तो मैं हूं। मुझे अवसरकी रक्षा करना आता है।' अितनी प्रस्तावनाके बाद प्रश्न आया:

"आपके देशके लोग कभी कभी हमारी लड़कियोंसे विवाह करते हैं, तो आपकी लड़कियां हमसे शादी क्यों न करें?" दूसरा सवाल यह था कि, "आपके लोग हमारी लड़कियोंसे ब्याह तो कर लेते हैं, परंतु अुनके

बच्चोंको नहीं अपनाते। परिणामस्वरूप अुनकी स्थिति बड़ी विषम हो जाती है। अिन संतानोंको आप अपने देशमें क्यों न ले जायं?"

मैंने देखा कि प्रश्नकी तहमें कड़वाहट है। प्रश्न सुनकर सभाके हिन्दुस्तानी श्रोताओंने अुत्तेजना नहीं दिखाओी। यह देखकर मुझे संतोष हुआ। अेक गुजराती भाओीने वहीं खड़े होकर कहा कि, "काकासाहब, आप अिन लोगोंको समझाअिये कि हमारी लड़कियां अिन लोगोंके साथ ब्याह करनेकी अिच्छा करें तो हम अेतराज नहीं करेंगे। जबरन तो कोओी किसीकी शादी नहीं कर सकता?"

मैंने कहा कि, "भिन्न भिन्न वंशोंके बीच विवाह हों तो अिसमें मुझे तात्त्विक विरोध नहीं। परंतु यह नाजुक सवाल है, अिसलिअे मैं दोनों ओर अैसे विवाहोंको प्रोत्साहन नहीं दूंगा। अिस महाद्वीपमें अफ्रीकी, युरोपियन और अेशियन तीन नसलोंके लोग अिकट्ठे हुअे हैं। वे अेक-दूसरेको समझने लगें और व्यवहारमें अेक-दूसरेके साथ घुल-मिल जायं, आज तो मैं अितना ही चाहता हूं। आगे चलकर परिचयके परिणामस्वरूप आत्मीयता पैदा हो जानेके बाद अिस सवाल पर दूसरी ही तरहसे विचार होगा।

"अिन्डो-अफ्रीकी सन्तानके बारेमें आपने जो सवाल अुठाया है, अुसके बारेमें मैं अितना ही कहूंगा कि अफ्रीकी लोग हिन्दुस्तानमें न जाते हों सो बात नहीं। आज भी आपके तीस चालीस विद्यार्थी हमारे विश्वविद्यालयोंमें पढ़ रहे हैं। ये लोग अगर हमारे यहां शादी करें और स्थायी हो जायं, तो अुनकी संतानकी हम रक्षा करेंगे। यहांकी सन्तानकी रक्षा आप कीजिये।"

मेरा जवाब सुनकर अफ्रीकी श्रोता भी प्रसन्न हो गये और हमारे देशी भाओी भी खुश हो गये। परंतु मेरा दिमाग जोरसे चलने लगा। अंग्रेज लोग यहांके काले लोगोंके साथ घुलते-मिलते नहीं। शासक बन कर न रहा जा सके तो वे यहांसे चले जायंगे। यहांके लोगोंके साथ केवल प्रजाजनके रूपमें समान भावसे रहनेको तैयार नहीं होंगे। अेक अफ्रीकी सरदारने किसी गोरी लड़कीके साथ शादी कर ली, तो अिस पर दोनों ओरसे शोर मच गया। अमरीकामें गोरे लोगोंने नीग्रो

गुलाम रखे। बादमें अुन्हें स्वतंत्र कर दिया, परंतु वहां यह सवाल अभी तक हल नहीं हुआ। गोरे बाप और काली मांकी संतानका सवाल वहां अभी तक हल नहीं हो सका है। हमारे यहां भी यह सवाल प्राचीन कालसे खड़ा है। हमने यह घोषणा करके देख लिया कि भिन्न जाति और भिन्न नसलके लोगोंका आपसमें विवाह करना अवांछनीय है। वर्णसंकरके विरोधमें कड़वीसे कड़वी भावना पैदा करके अिहलोकमें प्रतिष्ठा खोनेका और परलोकमें नरकका डर बताया; फिर भी हम भिन्न लोगोंको अलग न रख सके।

हमने दूसरा प्रयोग किया। भिन्न जातियों, भिन्न वर्णों, भिन्न वर्गों और भिन्न वंशोंके बीच विवाहोंकी छूट देकर देख लिया। भावनाकी रक्षाके लिअे अिसमें अनुलोम व प्रतिलोमका भेद जारी किया। तमाम जातियां चार वर्णोंसे ही पैदा हुअी हैं, यह कल्पना जमा देनेका प्रयत्न किया। जिसे अंग्रेजीमें 'लिगल फिक्शन' कहते हैं, अुसे सब तरहसे करके देख लिया। फिर भी हमें भिन्न वंशोंके बीचके संबंधका शुद्ध हल अभी तक नहीं मिला।

अूंच-नीच और अपने-परायेके भाव अिन्सानियतके पवित्र खयालके लिअे घातक हैं। परंतु ये दोनों वृत्तियां मनुष्यके स्वभावमें ही मौजूद हैं। अिन वृत्तियोंको स्वीकार कर अुनमें से कोअी समाजोपयोगी रचना खड़ी करनेका भी हमने प्रयत्न किया। अिसका अितिहास पढ़कर दक्षिण अफ्रीकाके राष्ट्रपुरुष जनरल स्मट्स बहुत खुश हो गये। परंतु अिस प्रयोगके द्वारा हम मनुष्य-जातिका कल्याण न कर सके।

जो परेशानी जातिभेद और वंशभेदकी तहमें है, वही परेशानी धर्मभेदकी तहमें भी है।

अेक ही देश और अेक ही धर्मकी संतानोंमें हमने अितने ज्यादा भेद पैदा कर दिये हैं कि हमारा मस्तिष्क भेदमय बन गया है। किसी समय सांसके बिना शायद हम जी सकते हैं, परंतु भेदभावके बिना जीना हमारे लिअे कल्पनातीत वस्तु बन गअी है!

अैसे स्वभाववाले हम लोग अफ्रीकामें आकर बसे हैं। अिनमें भी हिन्दू-मुसलमानका भेद है। मुसलमानोंमें भी तीन चार जातियां हैं।

हमारे लोग यहांके लोगोंके साथ घुल-मिल नहीं जायंगे, तो मुश्किल अवश्य पैदा होगी। परंतु मिल जानेके वाद पैदा होनेवाली संतानोंको हम अपनायेंगे नहीं, तो यह गैर-जिम्मेदारी ही हमें नरकमें पहुंचा सकती है। अफ्रीकामें वसे हुअे हमारे भारतीय लोगोंके नेताओंको मानव-धर्म पहचानकर, दीर्घदृष्टिसे काम लेकर हमारे लोगोंको रास्ता वताना चाहिये।

३०

नये मुल्कमें

अब हम अफ्रीकाके सुन्दरतम प्रदेशमें प्रवेश करनेको अुत्सुक हो गये थे। कवालेके सुंदर और आतिथ्यशील होटलमें मजेसे नहाये, नाश्ता किया। होटलकी भली संचालिकाने हमारी मेज पर बुन्योनी सरोवरके हमारे ही नील कमल सुन्दर रूपमें सजाये थे। वनस्पति-सृष्टिकी परियोंका यह अंतिम दर्शन करके हमने प्रस्थान किया। कलका बुन्योनी सरोवर दाअीं ओर फैला हुआ था। सरोवरकी असली शोभा या तो नावमें बैठकर विहार करते हुअे लूटनी चाहिये या पहाड़ी परसे या पहाड़की अूंचाअीसे अुसके चमकते मुखड़ेका दर्शन करते हुअे पी जानी चाहिये। कवि वाल्मीकिने सरोवरके स्वच्छ जलको सज्जनोंके पारदर्शक, निर्मल चरित्रकी अुपमा दी है। चारित्र्यको गंगाजलकी अुपमा देनेवाले कवि बहुत हैं। परंतु अुपमान और अुपमेय दोनोंका अदल-बदल करना तो वाल्मीकि जैसे कवीश्वरको ही सूझ सकता है। बुन्योनीका प्रसन्न दर्शन करनेके बाद मनमें विचार आया कि अिस सरोवरका वर्णन करनेवाला कोअी वाल्मीकि या बाणभट्ट कब पैदा होगा?

आगे चलकर खेतोंवाली प्रचंड पहाड़ियोंके सिलसिले पूरे हुअे और अूंचे अूंचे परंतु पतले बांसोंका विशाल वन शुरू हुआ। वेळगांव और बेळगुंदी मेरे बचपनके दोनों स्थानोंका नाम 'बेळ' यानी बांबू या बांस परसे ही पड़ा है। कन्नड़ भाषामें बेळका अर्थ है बांस। ठेठ

बचपनसे मैं फव्वारे जैसे बांसके टापुओंको देखता आया हूं। बांसके खम्भे, बांसकी दीवारें, बांसके छप्पर, बांसकी चटाअियां, बांसके बर्तन, बांसके बाजे और औजार, अितना ही नहीं परंतु बांसका साग और बांसका अचार भी वहां था! अैसी संस्कृतिमें पला हुआ मैं बांसके जंगल देखकर पागल-सा हो गया होअूं तो आश्चर्य क्या? बेळगांव, धारवाड़, कारवार वगैरा अनेक स्थानों पर मैं बांसके जंगलोंमें घूमा हूं। जीवित बांसकी दीवारोंवाले गांवोंकी सुरक्षितता मैंने देखी है। पतलेसे पतले और मोटेसे मोटे बांसके दर्शन ठेठ लंकामें किये हैं और दौड़ती रेलमें घंटों तक अटूट वेणुवनके विस्तार पूर्वी बंगालसे आसाम जाते-आते मैंने देखे हैं। अिन तमाम संस्मरणोंको ताजा बनानेवाला यह वेणुवन कल्पनाके लिअे कितना पौष्टिक साबित हुआ होगा, अिसकी कल्पना मेरे जैसे अरण्यक ही कर सकते हैं।

दोपहर हुआ और हम किसोलो या किसोरो पहुंचे। श्री महेताके यहां भोजन करके हम आगे बढ़े। कंपालासे कबाले तक हमारा सारा रास्ता दक्षिण-पश्चिमकी ओर जाता था। कबालेसे किसोलो तक हम लगभग पश्चिमकी तरफ ही जाते थे। अैसे पहाड़ी प्रदेशमें कोअी भी रास्ता सीधा तो हो ही नहीं सकता। परंतु कहनेका आशय अितना ही है कि किसोलो कबालेके पश्चिममें है। हमारे साथी खीमजीभाअी और व्रजलालभाअी कबालेमें आराम लेनेके बजाय रुहेंगेरी चले गये थे। वे वहांसे लौटकर हमें यहां मिले। हमारे शरद पंड्या भी अुन्हींके साथ चले गये थे। अुन्होंने वहांकी सुन्दरताका वर्णन जी भरकर किया। परंतु रुआण्डा-अुरुण्डीकी हमारी यात्रा अुसी रास्तेसे पूरी होनेवाली था, अिसलिअे वहां प्रत्यक्ष देखे हुअेका ही यथास्थान वर्णन करना अच्छा होगा।

अब हमने ब्रिटिश ओीस्ट अफ्रीका छोड़कर बेल्जियन कांगोमें प्रवेश किया। असलमें बेल्जियन कांगोमें नहीं, परंतु बेल्जियन कांगोके अधीन रुआण्डा-अुरुण्डी प्रदेशमें प्रवेश किया। पिछले युद्धके अन्तमें 'यूनो' की तरफसे युरोपियन राष्ट्रोंको जो 'मेण्डेटेड' मुल्क मिले हैं, अुनमें टांगानिका ब्रिटिशोंके हिस्सेमें आया और रुआण्डा-अुरुण्डी बेल्जियन कांगोको

मिला। अितने सुन्दर और समृद्ध प्रदेशका अधिकार बेल्जियमको मिला, अिसके लिअे कोअी भी अिस देशसे अीर्ष्या ही करेगा।

अब आगे राज्य अंग्रेजोंका नहीं, परंतु बेल्जियन लोगोंका है और हम नये ही मुल्कमें दाखिल हो रहे हैं, अिसके तीन प्रमाण हमें यहां तुरंत मिल गये। अब तक मोटर और दूसरी सवारियां रास्तेके बाअीं ओर चलानेका नियम था। अब दाअीं ओरका नियम शुरू हुआ। यह नियम अगर हर क्षण याद न रखा जाय और मनुष्य पुरानी आदतके अनुसार चले तो पग-पग पर दुर्घटनाअें हों। श्री कमलनयनने व्रजलाल-भाअीसे अनुरोध किया कि "आपकी मोटर मैं चलाअूं, परंतु कृपा कर आप मेरे पास बैठिये और हर मौके पर मुझे चेताते रहिये कि मोटर दाअीं ओर चलानी है।"

दूसरा सबूत यह था कि मीलके बजाय मीटरका नाप शुरू हुआ। दो गांवके बीचका अंतर किलोमीटरोंमें ही मिल सकता था। हमें याद रखना पड़ा कि अेक किलोमीटर लगभग पांच फर्लांगके बराबर होता है।

हमने अिस प्रदेशमें प्रवेश किया और हमें अपनी सभी घड़ियां अेक घंटे पीछे करनी पड़ीं। अब हम अफ्रीका महाद्वीपके लगभग मध्य तक पहुंच गये थे।

आगे चलकर जब पैसेका लेनदेन करना पड़ा, तब हमें पता चला कि अब शिलिंगका चलन नहीं परंतु फ्रेंकका है। और फ्रेंकके व्यवहारका अर्थ था बड़ी बड़ी संख्याओंका हिसाब। यहांकी सरकारने महंगाअी काफी रहने दी है। और अुस पर भी फ्रेंककी गिनती! सौ सौ फ्रेंक, दो दो सौ फ्रेंकका व्यवहार करते समय हर वक्त यह खयाल रहता था कि हम कितने फजूलखर्च हैं।

जहां सरहद पार की थी वहां भी हमें गुजराती भाअी ही मिले। ब्रिटिश हद पर छगनभाअी शाह नामक अेक कच्छी भाअी चुंगी अफसर थे। अुन्होंने मेरा नाम सुन रखा था। खूब ही प्रेमसे अुन्होंने हमें मोटरकी परमिट वगैरा लेनेमें मदद दी। अिसके सिवा अुन्होंने अपने पासका अिस प्रदेशका अेक सुन्दर नकशा हमें अिस्तेमालके लिअे दिया। अिससे हमें बहुत ही मदद मिली।

अिस अिलाकेमें जब जब रास्ते दाओीं या बाओीं ओर मुड़ते हैं, तब तब रास्तोंके बीच खूंटियां गाड़कर या छोटे छोटे पौदे लगाकर रास्तेके दो भाग कर दिये जाते हैं, ताकि आमने-सामने आनेवाली मोटरें टक्कर खानेसे बच जायं। यह व्यवस्था हर देशमें दाखिल करने योग्य है।

अब काफी दूर तक अेक सपाट मैदान आया। सुबहसे गोलमटोल पहाड़ियां दीख रही थीं। धीरे धीरे हम अिन पहाड़ियों तक पहुंचे। हम अितने अूंचे पहुंच गये कि अुसका अभिमान होने लगा। आठ या साढ़े आठ हजार फुटकी अूंचाअी पर मोटर लेकर दौड़ना कोअी छोटीसी बात है! अितनी अूंचाअी तो पूर्व अफ्रीकाका सफर पूरा करके जब हम अीथियोपियाकी राजधानी अेडिस-अबाबा गये तभी मिली थी।

अभिमान करनेके बाद नीचे तो अुतरना ही पड़ता है। 'दि ग्रेट गॅप' नामसे प्रसिद्ध घाटीमें होकर हम अितने सपाटेसे अुतरे कि अुसके लिअे अधःपातके सिवा और कोअी शब्द ही काममें नहीं लिया जा सकता! जैसे युद्धके दिनोंमें की गअी कमाअी मंदीके दिन आते ही कोअी व्यापारी खो बैठता है, वैसी ही अूंचाअीके बारेमें हमारी स्थिति हो गअी।

अब हमने अुत्तरकी दिशा पकड़ी और रुटशुरू पहुंचे। परंतु रुअिण्डीके अभयारण्यकी तरफ जानेको हम अितने अुतावले हो गये थे कि रुटशुरू न ठहरकर आगे ही चले गये। यहां हमने रुटशुरू नामकी नदी पार की। यह नदी अेडवर्ड सरोवर और बुन्योनी सरोवर दोनोंको मिलाती है। अब तक हमने आंबोसेली और नैरोबीके ही दो अभयारण्य देखे थे। ङ्गोरोंगोरो जाते हुअे मनियाराके खारे तालाबके किनारे भी हमने असंख्य श्वापद देखे थे। परंतु रुअिण्डीके जंगलमें श्वापदोंकी जो समृद्धि है, वह क्या और कहीं मिल सकती है? अभयारण्यमें प्रवेश करते ही दिलमें अुथल-पुथल मचने लगी। बाओीं तरफ देखते समय दाओीं ओरका कोअी श्वापद बिना देखे रह जाय तो? और बाओीं तरफ देखने पर दाओीं ओर हमें धोखा हो जाय तो? — अिस डरके मारे क्षण क्षण सिरको घुमाते हुअे आगे बढ़े। रास्तेमें हाथियोंकी लीद दिखाअी देते ही विश्वास हो गया कि

आसपास हाथियोंका आगमन हुआ है। फिर तो हम अिसकी जांच करने लगे कि लीद सूखी है या ताजी गीली है।

रास्ते पर जहां वहां फ्रेंच भाषामें और कहीं कहीं अंग्रेजीमें नोटिस लगे थे कि मोटरसे बाहर निकलना खतरनाक है। लेकिन जब हमने रास्तेकी दाओीं ओर गरम पानीके झरने अुबलते और फुदकते देखे, तब हमसे अंदर कैसे रहा जाता? छोटे बड़े अनेक झरने थे। अुनसे दुर्गन्ध आ रही थी। कुछ समय अुनके बीच घूमने पर भापवाली हवा दिमाग तक पहुंचकर अस्वस्थ करने लगी थी। मैंने अेक जगह देखा कि अुबलता हुआ पानी अिकट्ठा हुआ है, परंतु अुसके नीचे काओी जमी हो अैसा हरा रंग दिखाओी दे रहा था। लाठीका सिरा पानीमें डालकर अुस काओीको बाहर निकालकर देखनेकी जीमें आओी। अितनेमें किसी साथीने दूसरी ही तरफ ध्यान खींच लिया और वह बात रह गओी। आसपास देखनेसे भरोसा हो गया कि यह भाग किसी दरार (rift) का ही अेक अवशेष है। हम मोटरमें बैठ रहे थे कि अितनेमें हमारे पीछेकी मोटरवाले मोटर दौड़ाते हुअे आ पहुंचे। अुन्होंने कहा कि, 'दूर हमने अेक हाथी देखा। यह लगने पर कि वह हमारी तरफ आ जायगा हमने दौड़ लगाओी है। आप भी यहां अधिक समय न ठहरिये।' हम रवाना हो ही रहे थे। असलमें यहांके हाथियोंका मनुष्यके पीछे दूर तक हमला करनेके लिअे आनेका अभी तक कोओी अुदाहरण नहीं था। नजदीक जाकर छेड़ें या मनुष्यकी गंध अुन्हें असह्य हो जाय तभी वे हमला करते हैं।

शाम होने आओी और हम आल्बर्ट पार्कके रुअिण्डी कैम्पमें पहुंच गये। पत्थरकी नाटी दीवारसे घिरी हुओी अिस जगहमें अेक होटल और दस पंद्रह गोल गोल झोंपड़ियां थीं। हरअेकमें खाट वगैराकी सुविधा थी। बिजलीका डाअिनेमा अमुक समय तक ही चलता था। झोंपड़ियोंकी गलीके बीचमें थूहरके पेड़ोंकी कतार सुन्दर ढंगसे लगाओी हुओी थी। कैम्पके दो तीन सिरों पर हाथीके मुंहकी हड्डियां रखी हुओी थीं। बरामदेसे दूरके मैदानमें दो तीन जंगली भैंसें चरती दिखाओी दीं। यहांकी भाषामें अिन्हें भोगो कहते हैं। यहांके जंगलमें बसनेवाले

लोग और शिकारी सबके सब जंगली भैंससे जितने डरते हैं, अुतने तो हाथी और सिंहसे भी नहीं डरते — अकल कम और कीना बेहद।

रातको मोटरें लेकर जंगलमें घूम आनेका हमारा विचार था। आम्बोसेली और नैरोबीमें भी हमने निशाचर बननेका आनंद अनुभव किया था। परंतु यहां हमें कहा गया कि, 'रातको तो क्या, सवेरे आठ बजे तक भी आपको कैम्पसे बाहर जानेकी अिजाजत नहीं।'

अितनी निराशा होनेके बाद तो खान-पीने और आरामसे सोनेकी ही बात सूझ सकती थी।

३१

टेम्बो, भोगो और किबोकोका अभयारण्य

हरअेक दिन २४ घंटेका ही होता है, फिर भी 'सब दिन होत न अेक समान'। अिन २४ घंटोंमें कितने और कैसे अनुभव समाते हैं, अिस परसे यह तय होता है कि वह दिन छोटा था या बड़ा। अफ्रीकाकी सारी यात्रामें जंगलके जानवर देखनेके कुल दिन ५–६ ही होंगे। अिन जानवरोंके किसी सवालको हल करनेके लिअे हम वहां नहीं गये थे। हमारे जैसे लोगोंसे अुन वन्य प्राणियोंको लाभ-हानि कुछ भी नहीं थी। अुनके लिअे थोड़ी परेशानी मानी जा सकती थी, परन्तु यह अनुभव तो अुन्हें सदासे था। हम अगर मांसाहारी होते, शिकारके शौकीन होते या स्थानीय खेतीबाड़ीकी रक्षाकी जिम्मेदारी हमारे सिर पर होती, तो अिन जानवरों और अुनके स्वभाव और जीवन-क्रमको जानकर हमें कुछ न कुछ व्यावहारिक लाभ होता। हमारे लिअे अिनमें से कोअी भी कारण नहीं था। फिर भी अितनी दूर जाकर रुपया, समय और प्रभाव खर्च करके हम अिन श्वापदोंके और अुनके निवास-स्थानके दर्शनोंके लिअे अुत्सुक हुअे थे! और मानते थे कि अिससे हमारी जीवनकी अनुभूतियोंमें कीमती वृद्धि होगी। अिस अुत्कंठामें जानकी जोखिम भी अपना भाग अदा कर रही थी। हां, हजारों लोगोंका अनुभव देखते हुअे अिस जोखिमको कुछ भी महत्त्व

नहीं दिया जा सकता था। जहाज या वायुयानके सफरमें क्या जोखिम नहीं होती? और जिस प्रदेशमें कभी कभी भूकम्प आता है अथवा ज्वालामुखी फूट निकलता है, वहां भी चाहे जैसी जोखिम पैदा हो सकती है। समय समय पर अिसके अुदाहरण भी अुपस्थित न होते हों सो बात नहीं। फिर भी हम अैसी जोखिमको कुछ नहीं गिनते। यहांकी भी यही बात मानी जाय।

आठ जुलाअीका दिन निकला। हमारी मोटर-यात्रा शुरू होनेमें देर थी। साढ़े छह पौने सात बजे होंगे। पूर्व दिशाकी लालिमा अितनी आकर्षक थी कि कैम्पमें बैठे रहना असंभव हो गया। मैंने सरोजसे कहा, "चलो हम कैम्पसे बाहर जरा घूम आयें। अभी सूर्योदय होगा।" मेरा वाक्य पूरा भी न हुआ कि दूर क्षितिज पर रक्त सूर्यका चमकता हुआ बिम्ब प्रगट होने लगा। पूर्वी ८०° रेखांशके आसपास रहनेवाले हम आज पूर्वी ३०° रेखांशके आसपास खड़े रहकर सूर्यका दर्शन कर रहे थे। २० से २४ अुत्तरी अक्षांशके आदी हम भूमध्य रेखाके दक्षिणमें पहुंच गये थे, अिस बातका भान भी अुस सूर्योदयको अधिक कीमती और हमारे लिअे अधिक दुर्लभ बना रहा था। अिस सूर्योदयसे अुत्तेजित होकर मैं जल्दी जल्दी कदम आगे बढ़ाने लगा। मेरी अैसी अुत्तेजनाके प्रति सरोजका सदा ही सहयोग होता है। अिसमें भी निसर्गकी सुन्दरता और भव्यताका आकर्षण कम नहीं था। परन्तु हम कैम्पसे दूर जा रहे हैं, अिस तरफ अुसका ध्यान गया। मेरा अुत्साह मन्द किये बिना अुसे मेरा ध्यान अिस ओर खींचना था कि हम सलामतीके क्षेत्रसे बाहर जा रहे हैं। अुसने हंसते हंसते मुझसे पूछा, "Have you an immediate appointment with the lions?" —"अभी सिंहोंके साथ कोअी जरूरी मुलाकात रखी गअी है क्या?"

मैं हंस पड़ा और ठहरकर आगे देखने लगा तो देखता क्या हूं कि चार अलमस्त भोगो (वन-महिष) हमारी मुलाकातके लिअे मौजूद थे! हम कुतूहल और कुछ कुछ आश्चर्यसे अुनकी तरफ देखने लगे। अुनका भी ध्यान हमारी तरफ गया। अपने सुन्दर कान हमारी तरफ फेरकर वे हमारी ही तरह कुतूहल और आश्चर्यसे हमें देखने लगे।

पहले ही क्षण हमारी तरह वे भी अन्दाज लगाने लगे कि सामने-वालोंका क्या मनसूबा है। अिसी अेक क्षणमें युद्ध हो या सन्धि, अिसका निर्णय हो जाता है। हमने अपनी नजर बिलकुल अक्षुब्ध, अहिंसक और मित्रतापूर्ण रखी। अुन्होंने भी अपने चेहरेकी घबराहट अुतार डाली। फिर तो केवल दोनों ओर दर्शनानन्द ही रह गया। अुनके मनमें क्या व्यापार चल रहा होगा, अिसका हमें क्या पता? जी भरकर देख लेनेके बाद अुन्होंने फिर चरनेकी तरफ ध्यान लगाया और हम वापस कैम्पकी तरफ मुड़े। ङ्गोरोंगोरो जाते हुअे रातको अेक भोगो नजदीकसे देखा था, परन्तु अुस समय मोटरकी रोशनीकी मददसे जितना दिखाअी दिया अुतना ही देखा। अिस समय तो सूर्य भगवान सारे प्रदेशको प्रज्वलित कर रहे थे और हमसे कह रहे थे कि 'पश्याद्य सचराचरम्'। और सचमुच अुस दिन 'बहूनि अदृष्ट-पूर्वाणि आश्चर्याणि' सूर्य भगवानकी कृपासे हमने देख लिये।

अितने शुभ-शकुनसे हमारा दिन शुरू हुआ। अेक अेक मोटरमें अेक अेक अस्कारी (सिपाही) लेकर हम चले। आज कितना घूमेंगे अिसका हिसाब न होनेके कारण हमने अपनी मोटरोंको अुनका पेय कण्ठ तक पिला दिया। बहुत समय तक हमें यों ही घूमना पड़ा। फिर दूर अेक जानवर दिखाअी दिया। पिछले भाग परसे यह यकीन नहीं होता था कि यह हाथी है या गैंडा? यहांकी भाषामें कहें तो टेम्बो है या फारु? हम थोड़ेसे आगे निकले तो देखा कि वह अिनमें से अेक भी नहीं था। वह था किबोको (हिप्पोपोटेमस)। गैंडा (फारु) अिसके बाद दिखाअी दिया। तत्पश्चात् यत्रतत्र अनेक जानवर दिखाअी दिये। अेक हाथी घास अुखाड़कर अुसकी जड़ोंकी मिट्टी अपने सिर पर बिखेर लेनेमें आनन्द मान रहा था। कभी-कभी मक्खियोंको हटा देता होगा। अिसके बाद अेक प्रकारके सूअर दिखाअी दिये। अुनके दोनों ओरके बाहर निकले हुअे दांत सीधे आनेके बजाय कॉर्कस्क्रू जैसे बिलकुल टेढ़े थे!

नैरोबीके अभयारण्यमें हिप्पो बहुत कम हैं। अेक ही जगह पानीमें लोटपोट होते हुअे अेक हिप्पोका मुंह और अुसके गुलाबी कान मैंने

देखे थे। अिसलिअे जीमें यह लग रही थी कि हिप्पो कब दिखेगा — कब दिखेगा? पर यहांके अभयारण्ययें अितने अधिक हिप्पो देखनेमें आये कि हमारे कुतूहलमें अुनका भाव अेकदम घट गया। परन्तु वह फिर बढ़ गया — जब हम अिस अरण्यके अेकदम सिरे पर पहुंचे गये और वहांकी नदीमें बहुतसे हिप्पो जलक्रीड़ा करते हुअे देखनेको मिले।

यह जानवर भी जीमें आ जाय तो पागल हमला कर देता है, अिसलिअे अुससे डरकर ही चलना पड़ता है। अिन पशुओंको नजदीकसे देखनेके लिअे हमें अपनी मोटरोंसे अुतरकर नदीके किनारे तक पहुंचनेमें काफी चलना पड़ा। और वह भी अूंचेसे नीचे अुतरना था। हिप्पो हमला कर दे तो मोटर तक सही-सलामत दौड़ा जा सकता है या नहीं, अिसका हिसाब क्षण क्षण करना पड़ता था। मैंने सरोजसे कहा, "तुम अूपरसे ही देखना। हमें नीचे जाने दो।" परन्तु कमलनयनने हमारा यह विचार बदल दिया। अुन्होंने कहा, 'हमें अैसी जगह जिन्दगीमें अेक ही बार आना है। थोड़ीसी जोखिम अुठा लें और सरोज बहनको साथ ले चलें।' हिम्मत कहां तक की जाय और जोखिम किस हद तक अुठाअी जाय — अिस बारेमें कमलनयनकी दृष्टिके प्रति मुझे विश्वास होनेके कारण अुनकी बात मैंने झट मान ली और सरोजको साथ ले लिया। हमारी तरफके हिप्पो पानीमें लगभग सो गये थे। अेकाध हिप्पोको करवट बदलने या स्थानान्तर करनेका अिरादा हो जाता तो बाकीको यह अच्छा न लगता। वे अुसकी जरा भी मदद न करते। नदीके सामनेवाले किनारेकी तरफ जो हिप्पो पानीमें लोट रहे थे वे ज्यादातर अुत्पाती थे। अुनकी जल-क्रीड़ा देखना ही अधिक मजेदार था। सामनेके किनारेके अूंचे पेड़ पर अेक सफेद पक्षी था। वह भी हमारी ही तरह तटस्थ भावसे यह क्रीड़ा देख रहा था और आनन्द ले रहा था।

हमने अस्कारीसे कह रखा था कि बाकीके जानवर कितने भी दिखाअी दें या न दें, हमें अफ्रीकाका अच्छासा अुम्दा सिंह देखना है। और वह भी सिंहनी नहीं बल्कि अयालवाला बड़ा सिम्बो। हमारी यह

ख्वाहिश सुननेके वाद अस्कारियोंकी तीखी नजर सब जगह घूमने लगी। अेक खास जगह हम पहुंचे और दोनों अस्कारी गरज अुठे 'सिम्बा, सिम्बा, सिम्बा।' दूर दूर — दो तीन फर्लांग दूर झाड़ियोंके बीचकी अेक खुली जगहकी तरफ अुन्होंने अुंगली की। पहले तो कुछ दिखाअी ही नहीं दिया। परन्तु वे लोग विश्वासके साथ कहते थे कि वहां बड़ा सिंह जरूर है। धीरे धीरे घासमें मिट्टीके ढेर जैसी कोअी चीज दिखाअी दी। अेक धब्बेसे ज्यादा बड़ी नहीं थी। हम दूरबीनसे देखने लगे। अितनेमें शंका हुअी कि धब्बा सिर हिला रहा है। फिर तो छाती अूंची निकालकर बैठे हुअे सिंहकी समूची भव्य आकृति बन गअी। वह बीच बीचमें सिर घुमाकर देख रहा था। मोटर लेकर अुसकी तरफ जा तो सकते ही नहीं थे, अिसलिअे अितनी दूरसे ही अुस वनराजको देखकर संतोष मानना पड़ा। अुसे जीभर देखनेके बाद हम अन्यत्र देखने लगे। अितनेमें दूरबीनसे ताककर देखनेवाले शरद पंड्याने घोषणा की कि 'सिंह अुठ गया है, अब चलने लगा है।' मैंने तुरन्त अपना दूरबीन चढ़ाया। क्या शोभा और क्या शान थी अुस सिंहके चलनेमें!

वन्दर, हिरण, नीलगाय, तरह तरहके जानवरोंको देखते देखते हमने सारा अभयारण्य छान डाला। असली शोभा तो हाथियोंकी ही थी। कअी जगह हमने कअी जंगली हाथी देखे। और सब तरहसे जी भरनेके बाद लौटे। थूहरके पेड़ोंकी शोभा अिस अरण्यकी खासियतोंमें वृद्धि कर रही थी। जल्दी वापस जानेके लिअे हमने बीचकी दिशा ली। यह तो कहा ही कैसे जाय कि रास्ता लिया? हमारे पहले गअी हुअी किसी मोटरकी लीकको रास्ता कहें तो रास्ता जरूर था। हमारी मोटर आगे थी। सावधानी और जल्दीके बीच रास्ता काट रही थी। अितनेमें सामने बाअीं ओरसे रास्ता लांघता हुआ जंगली भोगों — भैंसों — का अेक झुंड दिखाअी दिया। डेढ़ सौ दो सौ जरूर होंगे। हम अेकदम ठहर गये। यह भी कहा जा सकता है कि ठंडे हो गये। वे सोच लेते तो अेक क्षणमें हमारी दोनों मोटरोंका चूरा कर डालते। अुनका रुख भी दोस्ताना नहीं मालूम होता था। मैंने कमलनयनसे कहा, "नाजुक प्रसंग है। भोंपू तो बजाया ही नहीं जा

सकता। अिस झुण्डमें अुनके छोटे बड़े बच्चे हैं। अुन्हें जरा भी शंका हो जाय कि बच्चोंको जोखिम है तो सारा झुण्ड ही हम पर टूट पड़ेगा। हमारी पीछेवाली मोटर भी नजदीक आ पहुंची थी। हमने अुसे रुक जानेका अिशारा किया। वे भी समझ गये कि रुके बिना चारा नहीं है। अुस समयका हर क्षण कितना अधिक लम्बा था!

हमें निश्चल देखकर बड़े-बड़े भोगोंने रास्ते पर अपनी कतार खड़ी कर दी। सींगोंवाली अिस फौजको देखकर बड़े-बड़े सिंह भी हिम्मत हार जायं। अिस व्यवस्थित पंक्तिके पीछेसे बाकीके सब भोगो और अुनके बच्चे रास्ता लांघकर दाअीं ओर दूर तक पहुंच गये, तब कहीं रक्षक वीरोंकी कतार जरा ढीली पड़ी। ये लोग भी रास्ता छोड़कर दाअीं ओर पहुंच गये। जब हमें विश्वास हो गया कि रास्तेके बाअीं तरफ अेक भी प्राणी अब नहीं रह गया है, तभी हम आगे बढ़े और तुरन्त अैसी दौड़ लगाअी कि सारा झुण्ड हमारे पीछे पड़ जाता तो भी हमें पकड़ नहीं सकता था।

अैसे समय रास्तेमें न कोअी खड्डा आया, न अेंजिन बिगड़ा और न सामनेसे कोअी हाथी आया। यह अीश्वरकी कम कृपा नहीं थी। सचमुच आज वन्य श्वापदोंको देखकर हमारा जी भर गया था! पशु किस परिस्थितिमें रहते हैं, जोखिमके बारेमें वे कितने लापरवाह रहते हैं और खाने और जीने दोनोंकी मुश्किलके बीच जीवनका आनन्द किस तरह लूटते हैं, यह देखकर सचमुच ही जीवनकी अनुभूतियोंमें अेक अपूर्व वृद्धि हुअी थी। अितने सारे प्राणी किसी भी नियमके बिना, राज्य या संरक्षक दलके बिना यहां रहते हैं, बढ़ते हैं, घटते हैं; और प्रकृतिकी योजनाको पूरा करते हैं। न अुनके पास कोअी अितिहास है, न कोअी परम्पराओंका स्मृतिशास्त्र है। प्रकृति देवी जैसी प्रेरणा दे और सुविधा या असुविधा पैदा कर दे अुसीके अधीन वे रहते हैं। प्रकृतिसे अलग क्रम पैदा कर लेनेकी अुनमें अिच्छा नहीं है। जीनेके बारेमें अुन्हें विषाद या थकावट या निर्वेद नहीं है। अिन श्वापदोंका कोअी कमीशन मनुष्य-जातिके बारेमें अपनी राय अिकट्ठी करके लिख ले, तो अुसमें हमारे बारेमें क्या क्या होगा?

अनुभवोंके भारी भारी गुच्छे बटोरकर हम आल्वर्ट नेशनल पार्कसे लौटे। र्‌अिडी और रुटशुरू दोनों नदियां फिर पार कीं। अेडवर्ड सरोवर दिखाअी नहीं दिया अिसका पछतावा रहा। आसपासके पहाड़ोंको "पुनरागमनाय" कहकर नमस्कार किया। छोटी दरारको पार कर लिया। गंधकके झरनोंको 'क्या हाल है?' कहकर खैरियत पूछी और देखते देखते रुटशुरू गांव तक आ पहुंचे। यहांसे हमें तिलोत्तमा या अुर्वशी जैसे रूपराशि कीवू सरोवरकी तरफ जाना था।

३२

कीवूसरकी आधी प्रदक्षिणा

आगेका प्रवास सचमुच अेक सुन्दर सरोसरकी अुलटी परिक्रमा था। अिसके लिअे हम पहले रुटशुरूसे गोमा गये। वहां कीवू सरोवरके प्रथम दर्शन हुअे। गोमाके पास ही किसेनी नामका छोटासा अेक सुन्दर स्थान कीवूके किनारे है। वहां अेक दिन आनन्द लेकर हम अपनी अुलटी प्रदक्षिणा करनेके लिअे वापस गोमा गये और सरोवरकी बाअीं ओरकी सारी यात्रा पूरी करके कालेहे होकर कॉस्टरमन-वील तक गये और वहांसे रुझीजी नदीका सारा दाहिना प्रदेश पार करके टांगानिका सरोवर तक पहुंचे। जैसे कीवूके किनारे किसेनी है, अुसी तरह टांगानिकाके किनारे अुसुम्बरा है। वहां अेक दिन रहकर हम लौट आये और फिर अुत्तरकी दिशा लेकर कीवू सरोवरको बाअीं ओर रखकर नये नये सुन्दर प्रदेशोंमें से कुदरतका अद्‌भुत दर्शन करते हुअे कबाले लौटे। अिस प्रकार हमारी विशाल परिक्रमा पूरी हुअी।

रुटशुरूसे गोमा तकका रास्ता बहुत ही रमणीय था। वनश्री अितनी घनी थी कि अुसमें से रास्ता कैसे तैयार किया होगा अिसका हमें आश्चर्य होता था। कौन जाने कहांसे सारे रास्तेमें पीली तितलियां अिधर अुधर दौड़ रही थीं। अिस रास्तेमें अेक और बड़ा अभयारण्य है और सुना है कि अुसके अेक सिरे पर मनुष्य-कल्प गोरिला वा-नर

रहते हैं। पहाड़ियोंकी शोभाके बीच कॉफीकी खेती शोभा दे रही थी। और बीच बीचमें पेरेथ्रमके सौम्य सफेद फूल अमावसकी रातके तारोंकी तरह घनी बस्ती बनाकर अुगे हुअे थे। यह फूल चमड़ा रंगने और कमानेके काममें आता है, अिसलिअे यहांकी सरकारने अिसकी खेतीको बड़ा प्रोत्साहन दिया है।

जिस सिंकोना पेड़से बुखारकी दवा क्विनाअिन निकलती है, अुसे भी यहांकी सरकारने खूब बोया है। अिस नयन-मनोहर मार्गका अन्त नयी नगरी गोमाके दर्शनसे हुआ। गोमाकी पहाड़ी परसे कीवू सरोवरका विस्तार अच्छा दिखाअी देता है। यहांके छोटे छोटे मकान भी बड़े सुन्दर हैं।

गोमाके पास ही अगर अुसका प्रतिद्वन्द्वी किसेनी न फैला होता, तो गोमाका वैभव हमेशा बढ़ता ही रहता। सुन्दर मकान, अच्छे रास्ते, तरह-तरहके फूल और नावमें बैठकर सरोवरमें सैर करनेका आनन्द — ये सब किसेनीके आकर्षण हैं। सीधे अूपर जानेवाले पेड़ बीच बीचमें खड़े होकर अिस स्थानके लालित्यमें गाम्भीर्यका मिश्रण कर रहे थे।

व्हाअिट रशियाकी अेक महिला फ्रांसमें रहकर फ्रेंच बन गअी होगी। वह वहांकी सरकारकी तरफसे कलकत्तेमें रह चुकी थी। यह महिला किसेनीमें बुगोअी नामका अेक होटल चला रही है। हम अुसीमें ठहरे थे। यहां भी सब सुविधाओंवाली गोल झोंपड़ियां बनाकर अुनमें मुसाफिरोंको रखा जाता है। यह महिला कअी युरोपियन भाषायें जानती है। दुबारा हिन्दुस्तान आने और हिन्दुस्तानके विदेश-विभागमें काम करनेकी अुसकी बड़ी अिच्छा है। दूसरे दिन अिस स्थानके गोरे कर्मचारी हमसे मिलने आये थे। स्थानीय भारतवासियोंने अिन्हें चाय-पार्टी दी थी। गोरे सिर्फ फ्रेंच जानते थे। मैं जितना अंग्रेजीमें बोला वह अुस महिलाने अुनके लिअे फ्रेंच करके सुना दिया। सरोजको थोड़ी बहुत फ्रेंच आती थी। अिसलिअे वह भाषान्तर कैसा हुआ, अिसकी अुसने मुझे कल्पना करा दी। यहांके भारतीयोंको हमारे आनेका पता था, अिसलिअे हिन्दू और मुसलमान दोनों अिकट्ठा

होकर मिलने आये। अुनके साथ वहुत वातें हुअीं। हिन्दू-मुसलमानोंकी मित्रताके वारेमें, सरकारके साथ अच्छे सम्वन्ध रखनेके वारेमें, और अफ्रीकी लोगोंकी अच्छीसे अच्छी सेवा करनेके वारेमें वातें कीं। हमें मालूम था कि किसेनीके पास अेक 'सजीव' ज्वालामुखी है। हमने अिस वातकी जांच की कि वहां तक जाया जा सकता है या नहीं। यह नअी खोज हमारे कार्यक्रममें वैठ नहीं सकती थी, अिसलिअे रातको अंधेरा हो जानेके वाद गांवके वाजारमें से हमने अुस ज्वालामुखीका शिखर देखा। अंधेरेमें भूतकी तरह अपना शिखर अुठाकर अुस पर अेक विराट अंगीठी अुसने धारण की हो, अैसा वह दृश्य था! ज्वालाके कारण आसपासका आकाश भी लाल लाल दिखाअी देता था।

सुना है अफ्रीकामें अैसे दो तीन ज्वालामुखी हैं। वाकीके सव या तो मृत हैं या सो रहे हैं। हरअेकके सिर पर गहरा और विशाल द्रोण या ज्वालामुख तो होता ही है। अैसे सुप्त-शीतल शिखरोंकी शोभा भी कम नहीं होती। अैसे शिखरोंके दर्शन मेरे लिअे केवल प्राकृतिक शोभा नहीं होते, भगवानकी विभूतिके दर्शन ही होते हैं। अुस दिन शामको सरोवरके किनारे की गअी प्रार्थनामें जैसे प्रशांत सरोवरने अपना भाग अदा किया था, अुसी तरह दूसरे दिन सवेरे जव अुसी जगह प्रार्थना करने गये तव प्रार्थनामें सरोवरके अलावा रातका ज्वालामुखी भी अुपस्थित हुआ था। सचमुच प्रार्थना द्वारा ही चेतन और अचेतनके वीचका अैक्य अनुभव किया जा सकता है।

प्रार्थना और नाश्तेसे फारिग होनेके वाद हम स्थानीय मार्केट देखने गये। हमने देखा कि हमारे लोग अफ्रीकी लोगोंको तरह तरहके कपड़े वेचते हैं। खुले मैदानमें जहां अफ्रीकी लोगोंके वीचमें ही लेन-देन होता था, वहां सव चीजें अितनी थोड़ी और सादी होती थीं कि हमें यही खयाल होता कि अितनी-सी वातके लिअे वे वाजार तक क्यों आते हैं? कुछ अफ्रीकी लड़कियां रंग-विरंगे फैशनके कपड़े और मुश्किलसे दो तीन दिन चलनेवाले सस्ते गहने पहनकर अिधर अुधर टहल रही थीं। भगवानने अुन्हें जैसे वाल दिये हैं अुनमें अुस्तरे

और कैंचीकी मददसे तरह तरहकी शोभा पैदा करनेके लिअे भी वे पच रही थीं। वुढ़ियायें सव पुराने ढंगकी थीं। अुनकी पोशाक और व्यवहारसे ही अफ्रीकी लोगोंकी पुरानी रूढ़ संस्कृतिकी कल्पना हो सकती थी। अेक वृद्ध अफ्रीकीने अपने कानकी लोलक अितनी वड़ी कर ली थी कि अुसकी अड़चन मिटानेके लिअे वह अुसे अुठाकर जनेअूकी तरह कान पर रख सकता था!

अैसे अफ्रीकी लोगोंके वीच खड़े रहकर हमने फोटो लिवाये। अैसे फोटोकी तरफ हम अेक नजरसे देखते हैं। अफ्रीकी लोगोंकी नजर दूसरी ही होती है।

सव देख लेनेके वाद अेक वार मोटरमें वैठकर किसेनीका सारा किनारा देखनेकी जीमें आअी। पहले हम वाअीं तरफ जहां अेक रास्ता जा सकता था वहां तक गये। फिर वाअीं तरफ गोमाके वंदरगाह तक गये। वहांसे पासकी पहाड़ी पर जाकर सारा दृश्य आंखें भरकर देखा। अिससे ज्यादा कुछ नहीं किया जा सकता था, अिसीलिअे हम वापस आ गये।

अव हमारी कीवू सरोवरकी परिक्रमा शुरू हुअी। गोमा तक अुत्तरमें जाकर हमने मुड़कर दक्षिणका रास्ता लिया। अुतार-चढ़ाव तो होता ही है। घड़ीभरमें रास्ता सरोवरके पास आ जाता, घड़ीभरमें दूर चला जाता। अैसा लगता था कि दाअीं तरफकी पहाड़ियोंको अिस वातका दुःख हो रहा है कि वे सरोवर तक नहाने नहीं आ सकतीं।

थोड़े आगे गये और हमने देखा कि दो अढ़ाअी वर्ष पहले (सन् १९४८ में) अेक ज्वालामुखीने अुबलकर सरोवर तक आनेका प्रयत्न किया था। अुबलते हुअे लावाका रेला अितनी दूरसे और अितने जोरसे आया कि अुसका अेक बड़ा राक्षसी जत्था सरोवरमें अुतर पड़ा। सरोवरका पानी जल गया। अुसने हाहाकार किया। आखिरकार लावाको सरोवरका अेक खासा वड़ा टुकड़ा मूल तालावसे अलग करके ही संतोष मानना पड़ा। कोयलेकी तरह काले चमकते हुअे लावाके अिस जत्थेको देखकर जी घवरा गया। सुलगते हुअे रसकी लहरें अेकके वाद अेक आ रही थीं। सूखनेके पहले अुसमें

सलवटें पड़ती थीं। किसी किसी जगह यह रस गोल चक्कर काटता और जहा तहां फट जाता। अब ठंडा हुआ यह सारा दृश्य भयानक और विषाद अुत्पन्न करनेवाला था। पेड़, पत्ते, सादी मिट्टी या पत्थर कुछ भी नहीं दीखता था। सब जगह काला स्याह लावा और अुसमें से जाता हुआ हमारा रास्ता था।

हम विषण्ण मनसे आगे बढ़े। वहां अैसा ही परन्तु दूसरी तरहका दृश्य देखनेको मिला। सन् १९३८ अीस्वीमें अेक और लावाका रेला कीवूमें नहाने आया था। अिसका विस्तार भी पहलेकी तरह फैला हुआ था। परन्तु १२ सालकी धूप, बरसात और हवासे अुसका चूरा हो गया था। अुसके अूपर जगह जगह मिट्टीने अपना राज्य जमा लिया था। और मिट्टी आअी अिसलिअे बच्चे वनस्पतिने अुसके अूपर अपनी हरी हरी ध्वजायें फहरा दीं। मनमें विचार आया — मरण और विनाश चाहे जितने भीषण और दुर्धर हों, परन्तु जीवन अुसके अूपर विजयी होता ही है। विनाश अुत्पाती परन्तु क्षणजीवी है, जब कि जीवन सौम्य-सनातन है।

सरोवरकी शोभा देखकर चाहे जितने तृप्त हुअे हों परन्तु, अुससे पेट नहीं भरता। अिसलिअे कालेहेमें हमने खाया-पीया और आगे चले। शामको साढ़े छह बजे हम गंधर्व नगरी जैसे अेक शहरमें आ पहुंचे। अुसका पुराना नाम बुकाफू था। आजकल अुसे कॉस्टरमन-वील कहते हैं।

३३

बच्चा शहर और प्रवाही कन्या

महात्मा गांधीजीने अेक जगह लिखा है कि आकाशके तारे जहां हैं वहां भयंकर गर्मी है। वहां सभी चीजें पिघलकर द्रवरूप ही नहीं वायुरूप हो जाती हैं। हजारों डिग्रियोंकी अुनकी गर्मीकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। परन्तु अिन्हीं तारोंका प्रकाश जब करोड़ों मीलका सफर करके हमारे पास आता है, तब कितनी शीतलता प्रदान करता है! अैसे ही आश्चर्य हमारी पृथ्वी पर भी जहां तहां फैले हुअे हैं। अफ्रीकाके सभी सरोवर और फटी हुअी दरारें भयानक ज्वालामुखीके आभारी हैं। कीवूका सरोवर समुद्रकी सतहसे ४८२९ फुट अूंचा है। अितना अूंचा सरोवर दुनियामें दूसरा नहीं है। अूपर कहे अनुसार ज्वालामुखियोंकी अिस सरोवरके साथ खास दोस्ती है। वे देर-सबेर अिसमें नहाने अुतरते हैं।

प्राचीन कालमें — किसीको पता नहीं कि कब — अिसी तरह कोअी ज्वालामुखी दौड़ आया होगा। अुसने कीवू सरोवरके दक्षिणमें अेक बड़ी पहाड़ी सरोवरमें घुसेड़ दी है। अुस पहाड़ी पर वनस्पतिने अपनी बस्ती बसाअी। अुसके बाद मनुष्यको अुनके बीच जाकर रहनेका सूझा। अिस तरह बुकाफूका गांव पैदा हुआ। अितना रमणीय स्थान गोरोंकी नजरसे कैसे बचता? बढ़िया पानी, स्वास्थ्यप्रद हवा, रमणीय दृश्य और सुविधापूर्ण बन्दरगाह — यह सब देखकर अुन्होंने यहां कॉस्टर-मन-वीलकी स्थापना की। मध्य अफ्रीकामें अितना छोटा और अितना सुन्दर दूसरा शहर शायद ही हो। अफ्रीकामें हम सबसे अधिक पश्चिममें अिसी स्थान पर पहुंचे होंगे। यह नगरी लगभग २८ रेखांश पर स्थित है।

हम अेक अच्छेसे अच्छे यानी महंगेसे महंगे होटलमें जाकर रहे। हमारे देशके लोगोंमें से जान-पहचानवाले यहां कोअी नहीं थे।

होटलमें जाकर हमने समझाया कि हम मांस नहीं खाते, मुर्गे नहीं खाते, मछली नहीं खाते, अंडे भी नहीं खाते, और चर्वी भी हमें नहीं चलेगी। शरावको तो हम छू भी नहीं सकते। अगर अभक्ष्य भक्षणसे बचना हो तो अितनी बातें बताये बिना छुटकारा नहीं होता। हमारी सेवाके लिअे तत्पर और चेहरे व कपड़ोंसे अत्यन्त गंभीर व्यक्ति हमारी यह बात सुनकर भौंचक्का ही हो गया। महंगेंसे महंगे होटलका खर्च देकर ये लोग अेक रात रहने आये हैं और कहते हैं कि ये-ये चीजें नहीं खायंगे। तो अिनको खाना क्या है? शराब? वह भी अिन लोगोंको पीनी नहीं है! अुसे लगा होगा कि यह सारा दल पागलखानेसे भागकर यहां आ गया है। अुसने हमारे साथी शहाणेसे पूछा, "ये सब चीजें आप क्यों नहीं खाते? किसीको भी ये माफिक नहीं आतीं?" शहाणेने कहा कि, "हमारे धर्मके अनुसार ये चीजें नहीं खाअी जा सकतीं।" बेचारा शहाणे! हमारे कारणसे अुसे भी यह परहेज रखना पड़ा! यह कहकर मैंने कमी पूरी की कि, "मैं पनीर भी नहीं खाअूंगा।" शहाणे बोला, "मैं तो खाअूंगा।" होटलवालेको लगा कि अिन लोगोंका यह धर्म कैसा? वह मनमें चिढ़ा। परन्तु कुछ न कुछ खाना दिये बगैर छुटकारा भी नहीं था। और हम अुगाही करने बैठे हुअे पठानकी तरह मेजके आसपास जमकर बैठ गये थे। अुठनेका नाम भी नहीं लेते थे। कड़ाकेकी भूख और खानेके कष्टसे निपटनेके लिअे हममें से कुछ विनोद करके हंसने लगे। वह ज्यादा चिढ़ा। खाली सोडा या ऑरेन्ज स्क्वेश लें, तो भी रुपये दो रुपये देने पड़ें।

खैर, हमने ज्यों त्यों करके खाया और थकावट मिटानेको अपने कमरोंमें चले गये। नहाने-सोने वगैराकी सब सुविधायें शाही थीं। हमारे खयालसे खानेकी सहूलियतसे नहानेका सुभीता ज्यादा महत्त्वका था। मनुष्य जब अपने बूतेसे अधिक खर्च करता है, तब अिन सुविधाओंका अधिकके अधिक अुपयोग करके क्षणभरके लिअे अुसके जीमें यह मान लेनेकी आती है कि 'मैं बादशाह हूं।' अरेबियन नाअिट्सवाले अबूहसनकी मनोदशा समझनेके लिअे यह अनुभव काफी था।

सुवह जल्दी अुठकर सरोज और मैं सैर करनेको निकले। हमारे साथी निद्रानन्द लूट रहे थे। शरद पंड्याको भी अुठाये विना हम चुपचाप वाहर निकल गये और सारे टापूका चक्कर लगा आये। नीचे पानीके किनारे तक गये तो वहां कुछ अफ्रीकी छोटीसी नावमें आ रहे थे। वे हमारी ओर आश्चर्यचकित होकर देख रहे थे। अुनकी कल्पना यह थी कि जिन्हें गरीवीका दुर्दैव भुगतना पड़ता है, वे ही अितनी जल्दी अुठ सकते हैं। अूंचे अूंचे पेड़ोंके वीच घूमते घूमते हम अेक पुराने गिरजे या महलके पास पहुंच गये। अेक कोनेमें रास्तेके अेक तरफ अेक खंभे पर माता मरियमका छोटासा देवस्थान था। परम भागवत वाल-ब्रह्मचारी अीसाकी माता मरियमको हमने प्रणाम किया और पासकी वड़ी वड़ी सीढ़ियोंसे अुतरकर फिर सरोवरके पास गये।

मैंने सरोजसे कहा कि, "मध्यरात्रिके वाद यहां थोड़ासा भूकंप हुआ होगा। मैं नींदसे चौंककर जागा था। पहले अैसा लगा कि कोअी मोटर गुजरी होगी।" सरोजने कहा, "अपने कमरेमें मुझे भी अैसा ही अनुभव हुआ था।" यह धक्का हमारे कुंभकर्णकी जातिवाले साथियोंकी नींद भंग न कर सका। अिसलिअे अुनसे हमारे अनुभवका समर्थन प्राप्त न हो सका।

सुवहके समय आसपास सव जगह घूमकर हमने अनेक स्थान देखे और आगे वढ़े।

कीवू तालावकी लम्वाअी ६२ मील है। जव कि अुसके दक्षिणमें स्थित टांगानिका सरोवरकी लम्वाअी ४५० मील है। दोनोंकी अूंचाअीमें भी अेक हजार तीन सौ फुटका अंतर है। और कुदरतकी खूवी यह है कि अेक सुन्दर नदी कीवूके दक्षिणसे निकलकर टांगानिका सरोवरसे अुत्तरी सिरे पर जाकर मिलती है। अिस छोटी नदीको लगभग अस्सी मीलके अन्दर तेरह सौ फुट नीचे अुतरना पड़ता है। अुसका प्रवाह कितना वेगवान होना चाहिये? अिस रुझीजी नदीका अुद्गम हमारे होटलसे वहुत दूर नहीं था, परन्तु वहां तक जानेके लिअे अेक वहुत वड़ा चक्कर काटनेकी जरूरत पड़ती थी।

कीवूके किनारेसे रास्ता निकालकर जहां रुझीजी छलांग मारती है, अुसी जगह पर अेक अूंचा पुल है। हम वहां गये। नदीका अुद्गम सबसे पवित्र स्थान होता है। कितनी अुत्सुकतासे हम अुसका दर्शन करने गये! परंतु हमारा अुत्साह क्षणभरमें विषादमें बदल गया। अेक सुन्दर चमकती हुअी पुष्ट गाय अुस पुल परसे जा रही होगी। सामनेसे कोअी बड़ी लारी आअी होगी। अुसने जान बचानेके लिअे पुलकी बाजूकी तरफ जानेकी कोशिश की। वह पुलकी किनार थी। वापस लौटे तो कुचल जाय। आगे बढ़े तो अुतनी अूंचाअीसे पानीमें कूदना ही पड़े। भगवान जाने अुस जानवरको क्या सूझा। अुसने छलांग मारकर अपनी तकदीर आजमानेका विचार किया होगा। 'या तो बच जाअूंगी या नीचेके पानीमें छिपे हुअे पत्थरोंसे टकराकर चूर चूर हो जाअूंगी।' बेचारी गायके भाग्यमें दोनोंमें से अेक भी अन्त नहीं था। अुसने छलांग मारी तो सही, किन्तु अिसमें पुलकी किनारकी लोहेकी दो बड़ी पटरियोंके बीच अुसका पिछला पैर फंस गया। वह पिछले अेक पैरसे वहां लटकती ही रह गअी। अिस स्थितिमें अुसने कितनी वेदना सहन की और वह कब मर गअी, सो कौन जाने? हम गये तब वह गाय पुलकी अूंचाअीसे नीचेकी नदीकी तरफ मुंह करके अेक पांवसे निश्चेष्ट लटक रही थी। किसी भी जानवरकी अैसी दशा देखकर हृदय विदीर्ण हो जाता, फिर वह तो अेक गाय थी। अुसे देखकर गहरा आघात लगा। हम पुल पर गये। नजदीकसे देखा कि पैर कैसे फंसा है। गाय मर गअी थी, अिसलिअे अुसकी मदद करनेके लिअे चार आदमियोंको जमा करनेका सवाल ही न था। हमने पुलके दोनों सिरोंसे और ठीक बीचसे नीचेकी नदीको देखा। अुत्सवके दिन हम अैसे विषादके साथ लौटे, मानो सूतक आ गया हो।

अब हमारी यात्रा अिसी रुझीजी नदीकी दिशामें अुसके अुद्गमसे अुसके मुख तककी थी। किनारे किनारे जानेकी बात थी ही नहीं। परन्तु नदीके दाअीं ओरके छोटे बड़े अूबड़-खाबड़ पहाड़ोंके बीचसे जो जोखम-भरा रास्ता तैयार किया गया था अुसी रास्तेसे हम अुतरे। केवल अुतरना ही न था। अनेक बार चढ़ते, अनेक बार अुतरते। कअी बार

जानको मुट्ठीमें लेकर विचार करते कि, 'अरे! अव क्या होगा?' अिस तरह करते करते हम अुवीराके रास्ते चले। वीच वीचमें रुझीजीके दर्शन होते तव दार्जिलिंग कालिंपोंगकी तरफकी तिस्ता नदीकी याद आती थी। अैसे रास्ते पर श्री कमलनयनकी सारथ्य-कलाकी अुत्तम परीक्षा होती थी। सचमुच ,वह अेक होशियार सारथी हैं।

अिस रास्तेमें कुछ भाग अितना तंग है कि दो मोटरें अेक-दूसरीको पार करके नहीं जा सकतीं। अिसलिअे वहां 'वन वे ट्रैफिक' (अेकतरफा यातायात) का प्रवन्ध है। कुछ मोटरोंको अुत्तरसे दक्षिण जाने देते हैं और वे सिरे पर पहुंच जायं तव दक्षिणकी मोटरोंको अुत्तरकी तरफ जाने देते हैं। कितनी मोटरें छूटी हैं और कहां तक आअी हैं, अिसकी खवर दोनों सिरों पर पहुंचानेके लिअे यहां टेलीफोनकी सुविधा भी नहीं है। अिसलिअे जंगलके लोगोंको वैठाकर अुनकी पद्धतिसे ही समाचार पहुंचाये जाते हैं। अनुकूल स्थानों पर लोहेके वड़े वड़े डिव्वे या पीपे रखकर अुन पर नगाड़ेकी तरह आवाज की जाती है। यह आवाज कुछ मील तक पहुंचती है। वहां अिसी तरहका समाचारोंका आदान-प्रदान होता है। और अिस जंगली ढंग पर सुधरी हुअी मोटरों और अुनके मुसाफिरोंको सलामत रखा जाता है। अिस प्रकार पहाड़ अुतर जानेके वाद सीधी भूमि आअी। वहां वाअीं ओर नदीके किनारे अेक छोटीसी रेलवे जाती देखकर हमें वड़ा आश्चर्य हुआ। रुझीजी नदी पहाड़से निकलनेके वाद जिस घाटीमें प्रवेश करती है, वहांकी जमीनकी पैदावारको यह रेलवे लुवुंगी स्टेशनसे चढ़ा कर अुवीरा ले जाती है। और वहां जहाज पर चढ़ाकर किगोमा, आल्वर्ट-वील या ठेठ दक्षिणमें कासंगा तक ले जाते हैं। किगोमासे अेक रेलवे ठेठ दारेस्सलामके वन्दरगाह तक जाती है। हमारे लोगोंके लिअे यह रेलवे बहुत सहायक है, यह मैं पहले ही लिख चुका हूं।

पहाड़ परसे अुतरते अुतरते जब टांगानिका सरोवरके प्रथम दर्शन हुअे, तब अिस ओर आये हुअे बरटन और स्पीक जैसे यात्रियोंको जो आनन्द हुआ होगा, लगभग वैसा ही आनन्द हमें हुआ। हमने माना था कि अुवीरा तक पहुंचनेके वाद ही अुसुंवरा तक जाया जा सकेगा। मगर

साथके नकशोंने हमारा भ्रम मिटा दिया। अुवीराका बन्दरगाह दो-अेक मील दूर रहा होगा कि अितनेमें अेक रास्ता बाओं ओर फटा। अुसने हमें अुसुंवरा तक पहुंचानेका भार सिर पर लिया — सिर पर क्या, छाती पर लिया। यह रास्ता टांगानिका सरोवरके अुत्तरी किनारे पर जाता था और सरोवरकी सतहसे बहुत अूंचा तो था ही नहीं। सरोवरका पानी चार छह फुट चढ़ जाय तो यह रास्ता डूब ही जाय।

अेक-दो छोटे प्रवाह पुलकी मददसे लांघनेके बाद रुझीजी नदीका बड़ा पुल आया। सवेरे जिस सरो-जा नदीके अुद्गमकी तरफके विषादमय दर्शन किये थे, अुसी नदीको यहां सरो-गामिनी होती देखकर मन बहुत ही प्रसन्न हुआ। पानी भी नाचता कूदता दौड़ता था और टांगानिका सरोवर प्रसन्न और शांत-वदन होकर अुसका स्वागत कर रहा था। सरोवर-सुता और सरोवर-कान्ता अिस रुझीजी नदीको कैसे भुलाया जा सकता है?

थोड़े ही समयमें हम अुसुंबरा जा पहुंचे।

३४

अुसुम्बरा और अुसके बाद

हम शामको अुसुम्बरा पहुंचे। रुआन्डा-अुरुन्डीके सफरमें हमारा यह सबसे सिरेका यानी दक्षिणका स्थान था। अुसुम्बराका निमंत्रण लगभग अेक महीने पहले दारेस्सलाममें ही मिल गया था। अगर केवल अुसुम्बरा ही जानेकी बात होती तो रास्ता आसान था। दारेस्सलामसे किगोमा ट्रेन द्वारा और वहांसे जहाज द्वारा अुसुम्बरा। हमारे लोग जब बम्बअीसे आते हैं तब कहते हैं कि अुसुम्बरा भले ही दूर हो, परन्तु जानेकी झंझट कम है। बम्बअीसे जहाजमें बैठे और दारेस्सलाम अुतर गये। वहांसे रेल पकड़ी और किगोमा अुतर गये। फिर जहाजमें बैठे और घर आ गये। परन्तु हमें कम्पालासे अुसुम्बरा तकका मुल्क देखना था। हमारे लिअे पहुंचना महत्त्वकी बात नहीं थी। आनन्द तो जाने और देखनेका ही था।

यह शहर अेक पहाड़ीकी तलहटीमें अतिदीर्घ सरोवरके किनारे वसा हुआ है। चूंकि यह सरोवर प्राग्-अैतिहासिक कालकी अेक दरारसे वना है, अिसलिअे अिसकी गहराअी दूसरे किसी भी सरोवरसे वढ़कर है। अेक जगह तो अिसकी गहराअी ३१९० फुट है। भूगर्भ-शास्त्री कहते हैं कि अिस सरोवरका पृष्ठभाग आजकी अपेक्षा हजार-सवा हजार फुट अधिक अूंचा था। अर्थात् कीवू सरोवर और टांगानिका सरोवरके पृष्ठभागोंमें ज्यादा फर्क नहीं था।

यह सरोवर जैसे अुत्तरमें रुझीजीसे पानी लेता है, वैसे दक्षिणमें लुकुगा नदीको वह पानी देता भी है।

अुसुम्वरामें हम डेढ़ दिन रहे। हमारे यजमान श्री जूठाभाअी वेलजीकी पुत्रवधू प्रतिभा जव छोटी थी तव कराचीमें हमसे मिली थी। हिन्दुस्तानके अेक सिरे पर जिस लड़कीको हमने अपनी स्वाक्षरी (ओटोग्राफ) दी थी, अुसीको अुसुम्वरा जैसे दूरके स्थान पर दुवारा नये सिरेसे स्वाक्षरी देते वक्त आनन्दके साथ आश्चर्य भी हुआ। वादमें मैंने देखा कि अिस जूठाभाअी वेलजीकी लड़कीने ही जंगवारके मणिभाअी मूलजी वेलजीकी पत्नीके रूपमें हमारा आतिथ्य किया था। अिस प्रकारके संवंधोंके कारण अिस घरमें प्रवेश करते ही हम घरके जैसे हो गये। रातको मिलने आनेवाले लोगोंके साथ ही सारा वक्त पूरा हो गया। अिस शहरमें नीचेकी आबादी और अूपरकी आवादी, अिस प्रकारका भेद है। गोरे सव अूपरकी वस्तीमें रहते हैं। हमारे लोग सरोवरके किनारे नीचेकी वस्तीमें रहनेमें सुविधा समझते हैं। और वेचारे अफ्रीकी लोगोंकी झोंपड़ियां तो पासकी अेक पहाड़ी पर अिधर अुधर फैली हुअी दिखाअी देती हैं।

सवेरे उठकर हमारा पहला काम तालावके किनारे वैठकर प्रार्थना करना था। वन्दरगाह जरा दूर था। हमारे साथ प्रतिभा, सुलभा, कमला वगैरा घरकी महिलाअें प्रार्थनामें शरीक हुअी थीं। अुन्होंने प्रार्थनाके अन्तमें जो भजन गाया, अुसमें निराशाके विषादमय स्वर अितने ज्यादा थे कि मुझे अैसा महसूस हुआ मानो अफ्रीकाकी तमाम कौमें अिकट्ठी होकर अपने पिछले सौ दो सौ वरसके अनुभवोंका

निचोड़ यहां अुंड़ेल रही हैं। अपनी संतोष और सादगीवाली संस्कृतिसे
निकलकर पश्चिमकी प्रगतिशील परन्तु अुत्पात-परम्परावाली सभ्यताकी
दीक्षा जबरन लेनेमें अुन्हें कितना कष्ट अुठाना पड़ता है, यही मानो
वे हमारे सामने पेश कर रही थीं।

जूठाभाअीके यहां निरंजन भट्ट नामक अेक शिक्षक हमसे मिले। वे
कसर दारेस्सलाममें रहते हैं। अफ्रीकाके बारेमें अुन्होंने बहुत साहित्य
ढ़ा है। बड़े अध्ययनशील हैं। बहुत जानते हैं और अपने पासकी जान-
कारी व्यवस्थित ढंगसे पेश भी कर सकते हैं। यह दुर्भाग्यकी बात है कि
अैसे लोग हमारी भाषाओंमें यात्राका साहित्य नहीं बढ़ाते और अिस
महाद्वीपकी आदिवासी जातियोंका जीवनक्रम हमें नहीं समझाते। अैसे
लोगोंको कद्र करनेकी बात तो दूर रही, कुछ गृहस्थाश्रमी लोग अिनका
अिकट्ठा किया हुआ साहित्य भी खो बैठते हैं!

हम यहांकी पाठशाला देखने गये। हमारे लोगोंकी शिक्षाके प्रश्नोंकी
वहां कुछ चर्चा की। हमारे लोग वर्तमान परिस्थितिको समझकर और
भविष्यके काल-प्रवाहकी दिशाको पहचानकर योजनापूर्वक जीवनक्रम नहीं
बनाते। जो कुछ पुराना है वह — भला और बुरा सब कुछ — कायम
रखनेका प्रयत्न करते हैं। अिसमें भी सिद्धान्त-प्रेम कम होता है। जो
रूढ़ि पड़ गअी है अुसे बनाये रखना और अैसा करनेमें जो कष्ट अुठाने
पड़ें सो अुठाते रहना, परन्तु परिवर्तनका पुरुषार्थ जहां तक हो सके न
करना, यह हमारे लोगोंका स्वभाव है। परिस्थितिके मजबूर करने पर
कुछ फेर-बदल करते जरूर हैं, परन्तु मौका हाथसे निकल जानेके बाद
ही सब कुछ सूझता है। अिसलिअे अुससे फायदा नहीं अुठा सकते।

जठाभाअीने समाजमें होनेवाले परिवर्तनका वर्णन अेक ही वाक्यमें
र दिया। अुन्होंने कहा कि, "पुराने जमानेमें हमारे लोग बहुत
जल्दी और कदम-कदम पर अपवित्र हो जाते थे। अब नहीं होते।"

लोगोंको धर्मकी परवाह हो तो वह पाठशालामें बोली जानेवाली
प्रार्थनामें ही दिखाअी देती है। अिससे हिन्दू-मुसलमान वगैरा कौमी
झगड़े पैदा होते हैं। मुसलमान पाठशालाओंमें अगर कोअी हमारे बच्चोंको
कुरान सुनाये तो हम नाराज होते हैं। परन्तु हमारी पाठशालाओंमें

मुसलमान वालकोंको हम अपनी प्रार्थना सिखाते हैं और अिन वालकोंको कोअी कठिनाअी नहीं होती तो अिसके लिअे आनन्द प्रगट करते हैं। मुसलमानोंमें भी यही दोप दिखाअी देता है। अीश्वर-भक्ति और सदाचार, ये दो मुख्य चीजें सभी धर्मोंमें समान रूपसे होती हैं। परन्तु हमारे खयालमें यह वस्तु गौण है। हमें अपने चौखटे और अपने लेवलकी परवाह होती है। हमारे लोगोंमें यह दोष पहले अितना अधिक नहीं था। ज्यों ज्यों राजनीतिक जागृति वढ़ी, त्यों त्यों अैसे झगड़े वढ़ते गये।

भिन्न जाति, भिन्न धर्म और भिन्न वंशके लोगोंके साथ घुलमिल जानेकी आवश्यकताके वारेमें यहांके लोगोंके साथ मैंने वहुत वातें कीं। अफ्रीकाके मूल निवासियोंका मूल धर्म कैसा था, अुस पर अिस्लामका क्या असर हुआ और मिशनरी लोगोंने अीसाअी धर्मके साथ कैसी संस्कृति फैलाअी है, अिसकी भी चर्चा की।

दोपहरको वाजारमें जाकर कुछ चित्र और वेल्जियन कांगो सम्बन्धी अेक सुन्दर फ्रेंच पुस्तक खरीद ली। सार्वजनिक वागमें जाकर चिम्पाजी जैसे वन्दर, मोर जैसे दिखाअी देनेवाले विचित्र प्राणी और मगर वगैरा देखे। पहाड़ पर जाकर शहर और सरोवर दोनोंकी शोभा देखी। शामको पाकीदास होटल नामक युरोपियन होटलमें अेक वड़ी पार्टीका प्रवंध किया गया था। प्रांतीय कमिश्नर वगैरा गोरे अधिकारियोंको आमंत्रित किया गया था। अरब और खोजे भी थे। न थे तो सिर्फ अफ्रीकी। अफ्रीकियोंको अैसे सामाजिक व्यवहारमें शरीक करनेकी हमने बहुतसी बातें कीं, परन्तु सफल नहीं हुअे।

यहांके हमारे लोगोंको गोरे अधिकारियोंके साथ मिलने-जुलनेका ज्यादा अभ्यास दिखाअी नहीं दिया। अलबत्ता, जूठाभाअीकी सरकारमें अच्छी प्रतिष्ठा थी। अरब तटस्थ थे। गोरे अफसर केवल फ्रेंच जानते थे। अंग्रेजी नहींके बराबर जानते थे और अिस वारेमें मनमें डर रखते थे कि विदेशसे आये हुअे ये प्रतिष्ठित अतिथि हमारे विषयमें क्या लिखेंगे?

रातको पाठशालामें अेक सभा हुअी। अुसमें बहुतसे मुसलमान आये थे। वहनें भी बहुत आअी थीं। मैंने अिस वारेमें विस्तारपूर्वक

कहा कि हम सब अेशियाअी हैं और हमें मिल-जुलकर अेक होना सीखना चाहिये। प्रश्नोत्तरके अन्तमें मुसलमानभाअी खुश हुअे दिखाअी दिये।

किसेनीसे अुसुम्बरा तक हमारे लोगोंको अेक ही सवाल चिंतित करता जान पड़ा। यहांकी सरकार हमारे लोगोंको यहांसे निकाल देना चाहती है। जिसे फ्रेंच आती हो अुसीको स्थायी निवासका प्रमाण-पत्र मिल सकता है, वगैरा अनेक कष्ट हैं। कहीं कहीं हमारे लोगोंको अेक जगह लम्बे समय तक नहीं रहने देते। यहांसे अुठो और दूसरी जगह जाकर वसो, अिस तरहके हुक्म निकलते रहते हैं। अिसलिअे लोगोंकी अच्छे मकान बनानेकी हिम्मत नहीं होती।

अंग्रेज लोग तरह तरहके विचित्र कानून घड़कर हमारे लोगोंको खूब तंग करते हैं। यहांकी सरकार तो यह कानूनी वुद्धि काममें नहीं लेती, परन्तु अधिकारी मनमाने हुक्म जारी करके अुनका अमल करते हैं। शराबके प्रति अफसरोंकी कमजोरी और रिश्वतकी सम्भावना वगैरा बहुतसी बातें सुननेमें आती थीं। हममें से कुछ स्पष्टवक्ता लोग हमारे लोगोंके दोषोंकी भी खुलकर बातें करते थे। सचमुच सब तरहके लोगोंसे मिलकर दुनिया बनती है। यहांके प्रान्तके गवर्नरने जब देखा कि रुआन्डा-अुरुन्डीके बारेमें मुझे आवश्यक जानकारी मिल नहीं रही है, तो अुन्होंने बड़ी आस्थाके साथ श्री जूठाभाअीके मारफत मुझे अेक खास पुस्तक 'मोनोग्राफी अेग्रीकोल द्यु रुआन्डा-अुरुन्डी' भेजी। मुझे फ्रेंच आती होती तो मैं अुसका बहुत अुपयोग करता। अुसमें नकशे, चित्र और आंकड़े भरपूर हैं। मैंने देखा कि अिस अिलाकेमें बड़े बड़े होटलोंमें पार्टियां देनेसे हमारे लोगोंकी प्रतिष्ठा बढ़ती है। दक्षिण अफ्रीकामें गांधीजीने माननीय गोखलेके लिअे जिन अनेक भोजोंका प्रबंध किया था, अुनका महत्त्व मैं अफ्रीका आनेके बाद ही समझ सका।

हमने १३ जुलाअीको प्रातःकाल अुसुम्बरा छोड़ा और अेक नया ही रास्ता लेकर अस्ट्रीडा, कबगये और रुहेंगेरी आदि सुन्दरसे सुन्दर प्रदेशोंमें होकर वापस कबाले पहुंचे। अुसके आनन्दका यहां अुल्लेख किये वगैर अिस यात्रासे विदा नहीं ली जा सकती।

मुसलमान बालकोंको हम अपनी प्रार्थना सिखाते हैं और अिन बालकोंको कोअी कठिनाअी नहीं होती तो अिसके लिअे आनन्द प्रगट करते हैं। मुसलमानोंमें भी यही दोष दिखाअी देता है। अीश्वर-भक्ति और सदाचार, ये दो मुख्य चीजें सभी धर्मोंमें समान रूपसे होती हैं। परन्तु हमारे खयालमें यह वस्तु गौण है। हमें अपने चौखटे और अपने लेबलकी परवाह होती है। हमारे लोगोंमें यह दोष पहले अितना अधिक नहीं था। ज्यों ज्यों राजनीतिक जागृति बढ़ी, त्यों त्यों अैसे झगड़े बढ़ते गये।

भिन्न जाति, भिन्न धर्म और भिन्न वंशके लोगोंके साथ घुलमिल जानेकी आवश्यकताके बारेमें यहांके लोगोंके साथ मैंने बहुत बातें कीं। अफ्रीकाके मूल निवासियोंका मूल धर्म कैसा था, अुस पर अिस्लामका क्या असर हुआ और मिशनरी लोगोंने अीसाअी धर्मके साथ कैसी संस्कृति फैलाअी है, अिसकी भी चर्चा की।

दोपहरको बाजारमें जाकर कुछ चित्र और बेल्जियन कांगो सम्बन्धी अेक सुन्दर फ्रेंच पुस्तक खरीद ली। सार्वजनिक बागमें जाकर चिम्पाजी जैसे बन्दर, मोर जैसे दिखाअी देनेवाले विचित्र प्राणी और मगर वगैरा देखे। पहाड़ पर जाकर शहर और सरोवर दोनोंकी शोभा देखी। शामको पाकीदास होटल नामक युरोपियन होटलमें अेक बड़ी पार्टीका प्रबंध किया गया था। प्रांतीय कमिश्नर वगैरा गोरे अधिकारियोंको आमंत्रित किया गया था। अरब और खोजे भी थे। न थे तो सिर्फ अफ्रीकी। अफ्रीकियोंको अैसे सामाजिक व्यवहारमें शरीक करनेकी हमने बहुतसी बातें कीं, परन्तु सफल नहीं हुअे।

यहांके हमारे लोगोंको गोरे अधिकारियोंके साथ मिलने-जुलनेका ज्यादा अभ्यास दिखाअी नहीं दिया। अलबत्ता, जूठाभाअीकी सरकारमें अच्छी प्रतिष्ठा थी। अरब तटस्थ थे। गोरे अफसर केवल फ्रेंच जानते थे। अंग्रेजी नहींके बराबर जानते थे और अिस बारेमें मनमें डर रखते थे कि विदेशसे आये हुअे ये प्रतिष्ठित अतिथि हमारे विषयमें क्या लिखेंगे?

रातको पाठशालामें अेक सभा हुअी। अुसमें बहुतसे मुसलमान आये थे। बहनें भी बहुत आअी थीं। मैंने अिस बारेमें विस्तारपूर्वक

कहा कि हम सव अेशियाअी हैं और हमें मिल-जुलकर अेक होना सीखना चाहिये। प्रश्नोत्तरके अन्तमें मुसलमानभाअी खुश हुअे दिखाअी दिये।

किसेनीसे अुसुम्बरा तक हमारे लोगोंको अेक ही सवाल चिंतित करता जान पड़ा। यहांकी सरकार हमारे लोगोंको यहांसे निकाल देना चाहती है। जिसे फ्रेंच आती हो अुसीको स्थायी निवासका प्रमाण-पत्र मिल सकता है, वगैरा अनेक कष्ट हैं। कहीं कहीं हमारे लोगोंको अेक जगह लम्वे समय तक नहीं रहने देते। यहांसे अुठो और दूसरी जगह जाकर वसो, अिस तरहके हुक्म निकलते रहते हैं। अिसलिअे लोगोंकी अच्छे मकान वनानेकी हिम्मत नहीं होती।

अंग्रेज लोग तरह तरहके विचित्र कानून घड़कर हमारे लोगोंको खूव तंग करते हैं। यहांकी सरकार तो यह कानूनी वुद्धि काममें नहीं लेती, परन्तु अधिकारी मनमाने हुक्म जारी करके अुनका अमल करते हैं। शरावके प्रति अफसरोंकी कमजोरी और रिश्वतकी सम्भावना वगैरा वहुतसी वातें सुननेमें आती थीं। हममें से कुछ स्पष्टवक्ता लोग हमारे लोगोंके दोषोंकी भी खुलकर वातें करते थे। सचमुच सव तरहके लोगोंसे मिलकर दुनिया वनती है। यहांके प्रान्तके गवर्नरने जव देखा कि रुआन्डा-अुरुन्डीके वारेमें मुझे आवश्यक जानकारी मिल नहीं रही है, तो अुन्होंने वड़ी आस्थाके साथ श्री जूठाभाअीके मारफत मुझे अेक खास पुस्तक 'मोनोग्राफी अेग्रीकोल द्यु रुआन्डा-अुरुन्डी' भेजी। मुझे फ्रेंच आती होती तो मैं अुसका वहुत अुपयोग करता। अुसमें नकशे, चित्र और आंकड़े भरपूर हैं। मैंने देखा कि अिस अिलाकेमें वड़े वड़े होटलोंमें पार्टियां देनेसे हमारे लोगोंकी प्रतिष्ठा वढ़ती है। दक्षिण अफ्रीकामें गांधीजीने माननीय गोखलेके लिअे जिन अनेक भोजोंका प्रवंध किया था, अुनका महत्त्व मैं अफ्रीका आनेके वाद ही समझ सका।

हमने १३ जुलाअीको प्रातःकाल अुसुम्वरा छोड़ा और अेक नया ही रास्ता लेकर अस्ट्रीडा, कवगये और रुहेंगेरी आदि सुन्दरसे सुन्दर प्रदेशोंमें होकर वापस कवाले पहुंचे। अुसके आनन्दका यहां अुल्लेख किये वगैर अिस यात्रासे विदा नहीं ली जा सकती।

सवेरे जल्दी साढे छह बजे हम रवाना हुअे। यहांकी शोभा कुछ अलौकिक ही थी। सरकारी विभागने यहांके रास्तोंकी तरफ खास ध्यान दिया है। पहाड़की पगदंडीसे जब रास्ता जाता है, तब अेक तरफ पहाड़ और दूसरी ओर खन्दक, अैसी हालतमें गाड़ियों और मोटरोंके खन्दकमें गिर जानेका भय रहता है। बरसात होने पर रास्तेकी मिट्टी बह जानेसे रास्तेमें बड़ा खड्डा पड़ जाता है। यह जोखिम सबसे बड़ी है। खन्दककी तरफ अूंची दीवारें बना देनेका रिवाज होता है, परन्तु सैकड़ों मील तक दीवार बनानेका खर्च कैसे किया जा सकता है? बीच बीचमें पत्थर जमा देनेसे भी सुरक्षितता नहीं रहती, और अगर दीवारके नीचेकी मिट्टी बह जाय तो दीवारकी सलामती भी नहीं रहती। अिन सब मुश्किलोंका अेक अच्छा अुपाय ढूंढ़ निकाला गया है। सीधे अूंचे अुग सकनेवाले चीड़ जैसे पेड़ खन्दककी ओर पास पास लगा दिये जायं, तो शोभा भी बढ़े और जड़ें मिट्टीको अिस तरह पकड़ लें कि रास्ता सदाके लिअे सुरक्षित हो जाय।

रास्ता मोड़ खाते खाते अितना अूंचा चढ़ गया कि बड़े बड़े पहाड़ छोटी पहाड़ियोंकी तरह घाटियोंमें छिपते हुअे दिखाअी देने लगे। अिधर भी पहाड़ोंके अुतार पर खेती होती है। घाटियोंमें बहनेवाले पानीका भी ये लोग अधिकसे अधिक अुपयोग करते हैं।

यहांके सफरमें अेक बात देखकर हमें ग्लानि हुअी। रास्ते परसे कोअी भी अफ्रीकी जाता होगा, तो मोटरमें बैठे हुअे लोगोंको सलाम जरूर करेगा। हमारे जैसे मुसाफिर, सज्जनता हो तो, सलामके बदलेमें सलाम करेंगे। कुछ लोग अफ्रीकियोंके प्रति तुच्छताकी नजर डालकर आगे चले जाते हैं। अिस रिवाजकी तहमें जो अितिहास है वह समझने लायक है।

पश्चिमके लोग व्यक्तिके अधिकारों और अुसकी स्वतंत्रताका ज्यादा खयाल रखते हैं। हमारे लोग नम्रतामें ही संस्कारिताकी निशानी देखते हैं। अिसलिअे कोअी अनजान आदमी सामने दिखाअी दे, तो अुसे भगवानकी तरफसे आया हुआ अेक फरिश्ता समझकर अुसे नमस्कार करेंगे। और अगर कोअी घरमें अतिथिके रूपमें आ जाय, तो अिस वृत्तिसे

कि अुसने हम पर अनुग्रह किया है धन्यता दिखाकर अुसकी सेवा करेंगे। अिसी किस्मकी भलमनसाहत अिन अफ्रीकी लोगोंमें भी होगी। अंग्रेज लोग जहां जाते हैं वहां अपनी धाक जमानेकी कोशिश करते हैं। कोअी अिन्हें 'साहव' न कहे तो अुसे मारते हैं। जो सलाम न करे अुसे 'फसादी' ठहरा देते हैं। धाक जमानेके लिअे लोगोंको पेटके वल भी चलाते हैं। जो सलाम पहले संस्कारिताकी निशानी थी, वह अव गुलामीका चिह्न वन गअी। आगे चलकर जव स्वाभिमानकी भावना वढ़ी, तव लोगोंने अिस प्रकार सलाम करना छोड़ दिया।

हमारे देशमें कुछ सज्जन अंग्रेज लोगोंको यह सलामकी प्रथा अच्छी नहीं लगती थी। कर्नाटकमें अेक कलेक्टर अपने वंगलेसे रोज शामको पैदल घूमने निकलता और अपने मनचाहे रास्ते पर घूम आता। थोड़े दिन वाद अुसने वह रास्ता छोड़ दिया और अेक कम सुन्दर रास्तेसे जाने लगा। अुसके अेक अंग्रेज दोस्तने रास्ता वदलनेका कारण पूछा। अुसने कहा, "पुराने रास्तेसे जाने पर वीचमें फलां रायवहादुरका घर आता है। मेरा समय जानकर वह रोज विलानागा अुसी समय रास्ते पर आकर खड़ा रहता है। मुझे देखते ही जमीन तक झुककर सलाम करता है और खुद धन्य हुआ हो अैसा मुंह वनाकर वापस जाता है। रोजकी अिस कवायदसे मैं तंग आ गया हूं। अिसलिअे मैंने वह रास्ता ही छोड़ दिया!"

दोपहर तक हम आस्ट्रीडा पहुंचे। वहां खाया और आगे न्यांजा होकर कवगये तक पहुंचे। यहां मिशनरी लोगोंका अेक वड़ा केन्द्र है। कवगयेसे हमने वड़ा रास्ता दाहिनी तरफ छोड़ दिया और कच्चे रास्तेसे रुहेंगेरीकी तरफ मुड़े। यह रास्ता जितना रमणीय था अुतना ही जोखिमभरा भी था।

रुहेंगेरीमें पोपटभाअी नामके अेक दुकानदार रहते थे। अुनके यहां हमने थोड़ा आराम किया, खाया और आगे चले। अिन भाअीके यहां कितनी ही साहित्यिक कितावें देखीं। अुन्होंने वहुतसी पढ़ी भी थीं। अुनसे मालूम हुआ कि अुन्होंने अनेक अफ्रीकी लोगोंको अपनी दुकान पर वैठाकर शिक्षा दी है और विश्वास जम जाने पर अपनी

दुकानकी शाखायें खोलकर वहां अुनको बैठा दिया है। कुछ वेतन और कुछ प्रतिशत मुनाफा, अिस शर्त पर ये शाखा-दुकानें अच्छी चलती हैं।

यहांसे थोड़ी दूर पर हम सोडा वाटरका झरना देखने गये। टूटे हुअे हौज जैसा यह स्थान था। अुवलते हुअे पानीमें से वुदवुदे अुठते हों अैसा दीखता पानी विलकुल ठंडा था। हमने प्याले भर भरकर पानी पिया। मुझे डर था कि अुस पानीमें दूसरे क्षार होंगे, जिससे स्वाद विचित्र लगेगा। पर थोड़ा पीते ही मुंहसे खुशीका यह अुद्गार निकला कि अिससे अच्छा सोडा वाटर कहीं पीया हो, अैसा याद नहीं पड़ता।

यहांसे आगे जाने पर तीन वड़े सुप्त ज्वालामुखी अपने रुपहले शिखर अूंचे करके श्रेणीवद्ध खड़े दिखाअी दिये। अेकका नाम मुहावुरा, दूसरेका सेविनियो और तीसरेका गहिंगा। शाम हुअी, अंधेरा होने लगा। ये तीनों ज्वालामुखी भयानक राक्षस जैसे दिखाअी देने लगे। हमें अेककी तलहटीमें होकर ही जाना था। ठीक याद नहीं है, परन्तु वह मुहावुरा होगा। अुसे बाअीं तरफ छोड़कर हम आगे वढ़े। अव तो मोटरकी लाअिट दिखाती थी अुतना ही रास्ता दिखाअी देता था। सारा प्रदेश अितना भयानक था कि डाका डालनेवाले डाकू भी यहां आना पसन्द नहीं करेंगे।

अंतमें हमने कस्टमकी सीमा पार की। अुस कच्छी भाअीका नकशा अनेक धन्यवादके साथ वापस दिया। हमारी घड़ियोंको चावुक लगाकर अेक घण्टे आगे दौड़ाया और मोटरोंको दाहिनी तरफ रखनेका नियम भुलाकर बाअीं तरफ किया और जैसे तैसे वाकीका रास्ता काटकर साढ़े नौ या दस बजे कबालेके होटलमें पहुंच गये। वहांकी भली वाअीने हमारे लिअे अच्छा खाना बनाकर रखा था। बिस्तर भी तैयार कर रखे थे। अितने लम्वे सफरके अंतमें अितनी अच्छी सुविधायें मिलनेके बाद नींदमें स्वप्न भी आनेकी हिम्मत कैसे करते? मुर्दे भी हमसे अीर्ष्या करें, अितनी गहरी नींदमें हम सोये।

३५

कबालेसे कंपाला

जिस रास्तेसे गये हों अुसी रास्तेसे वापस लौटने पर शोभा कम नहीं होती। हरअेक दृश्य अुलटी दिशासे देखनेको मिलता है, अिसलिअे नयेकी तरह ही लगता है। आगे क्या क्या आनेवाला है, अिसका खयाल रहनेके कारण नवीनता चाहे न हो, परन्तु अुत्सुकता मरी हुअी नहीं होती। अिसलिअे रसकी दृष्टिसे यह प्रवास जरा भी घटिया नहीं होता। फिर भी मन तो कहता ही रहता है कि 'यह सब तो अेक बार हो चुका है।' और अिससे ध्यानकी कमानी ढीली हो ही जाती है।

रुआण्डा-अुरुण्डीवाली अिस अंतिम यात्रामें श्रीमती यमुनाताअी शहाणे हमारे साथ थीं। अिन्हें तरह तरहके सवाल छेड़नेमें मजा आता था। महाराष्ट्रकी सामाजिक परिस्थिति संबंधी श्री मोहनरावके और मेरे विचार मिलते रहे हैं। अिसलिअे हम थोड़ेसे अनुभवोंका आदान-प्रदान करनेके सिवा अधिक चर्चा नहीं कर सकते। यमुनाताअी ठहरीं विद्वान पतिकी बहुश्रुत पत्नी। कअी लोगोंकी कअी रायें पेश करके अुनके सम्बन्धमें जानकारी प्राप्त करने और चर्चा द्वारा नअी नअी जीवन-दृष्टि पैदा करनेका अुन्हें बड़ा शौक है। अिसलिअे चर्चा खूब चलती। ब्राह्मण जातिके गुण-दोष, अुसका हुआ पतन और अिस जातिके अुद्धारकी योजनाअें आदि बहुतसे प्रश्नोंकी चर्चा होती। रास्ता काटनेके लिअे सबसे अुपयोगी अिलाज चर्चा ही है। ग्यारह बजे कबाले छोड़कर दो बजे हम म्बरारा पहुंचे। वहां हमारे मेजबान श्री छगनभाअी ठक्करने हमसे ठहर जानेके लिअे बहुत अनुरोध किया, परन्तु हमने जानेका ही आग्रह रखा। अितनेमें हमारे साथ सारी यात्रा वफादारीके साथ करनेवाली मोटरने अैलान कर दिया कि, "मेरे हाथ-पैर अब नहीं चलते।" हालत अैसी हो गअी जैसे सारी लड़ाअी लड़ चुकनेके बाद आखिरी दिन सेनापतिका घोड़ा घायल हो जाय।

म्वरारा अैसा कोअी वड़ा शहर नहीं है कि जहां मोटरको कारखानेमें भेजकर तुरन्त ठीक करा लिया जाय। पहियेके पासका अेक क्लिप ही टूट गया था। स्थानीय कारीगरने कहा कि मोटर अढ़ाअी घण्टेमें तैयार हो जायगी। अढ़ाअी घण्टेके अन्तमें देखा कि अुसने हमारा काम हाथमें ही नहीं लिया था! जिसका आरम्भ ही नहीं हुआ अुसका अन्त कव होगा, अिस प्रश्नका जवाव कोअी वेदान्ती भी नहीं दे सकता। अिस सम्वन्धमें तरह तरहकी विडम्वनाओंका वर्णन करनेसे क्या लाभ? श्री कमलनयनका रसोअिया गोपी वीमार पड़ गया। अुसे चक्कर आये और कुछ न सूझा तो किसीने अुसे ब्रांडी पिला दी। अुसे पीछे छोड़कर कमलनयन आगे जानेको तैयार होते, परन्तु शहाणेने अैसा नहीं करने दिया। वहुतसी चर्चाके अन्तमें हमने तय किया कि जो अेक मोटर अव भी सेवा करनेको तैयार है अुसे लेकर कुछ लोग आगे जायं। कमलनयन, यमुनाताअी, शरद पंड्या और गोपी, अिन चार आदमियोंको साथ लेकर शाह वन्धु अपनी मोटरसे रवाना हुअे। और हम अपनी वीमार मोटरके अच्छी हो जानेकी राह देखते रहे।

फिर तो हमने स्थानीय पाठशालाके व्यवस्थापकोंमें मतभेद कैसे शुरू हुआ, अुससे दो अलग अलग पाठशालायें कैसे वनीं आदि सब वातें विस्तारपूर्वक सुनीं। लिंडीसे हम अैसे किस्से सुनते आ रहे थे। सवाल अेक ही हो तो स्थानीय तफसीलोंमें नवीनता होती ही है। अफ्रीकामें अिस्लामका स्थान क्या है, अिस वारेमें मैंने लम्वा विवेचन किया। फिर भी मोटर अच्छी होती ही नहीं थी। सवेरे नाश्ता करके जानेको तैयार होनेवाले हम लोग ज्यों त्यों करके रातके साढ़े आठ वजे चले। परन्तु वह भी अपनी मोटरमें नहीं। हमारे साथ दिनभर भागदौड़ करके थके हुअे छगनभाअीकी मोटरमें। वह अगर ठीक होती तो हम कभीके म्वरारासे निकल गये होते। हमारा यह आग्रह देखकर कि किसी भी जोखिम पर रात-वसेरा टालना ही चाहिये, छगनभाअीने अपनी मोटर तैयार की। अुसे तैयार होनेमें भी देर तो लगी ही। म्वरारासे वाहर निकले।

दाअीं तरफ पहाड़में भारी आग लगी हुअी थी। अुसका प्रकाश हमारे रास्ते तक आता था। हमारी मोटर वड़ी वहादुरीसे तीस मील तक चली और फिर अटक गअी। अुसे खयाल हुआ होगा कि अेक वीमार मेहमान मोटरको घरमें छोड़कर मेरा अिस तरह जाना अनुचित है।

अुसका पंचर ठीक करनेके लिअे हमने जैक ढूंढ़ा। हमारे परोपकारी शोफरने वीमार मेहमान मोटरकी सेवामें अुसे पीछे रह जाने दिया था! अव क्या हो? सारी रात जंगलमें वितानेके सिवा कोअी चारा नहीं था। किसीने कहा कि यहांके जंगलमें शेर तो होते ही हैं। रातको अेकाधसे भेंट हो जाय तो आश्चर्य नहीं। शेरकी मुलाकातके हम आदी हो गये थे। मोटरके खिड़की दरवाजे वन्द करके हम वैठ सकते थे। परन्तु सारी रात मोटरमें वैठै वैठे हाथ-पैर रह जायं, अिसका क्या किया जाय?

वहुत अिन्तजार करनेके वाद सामनेकी तरफसे अेक मोटर आअी। अुन लोगोंको अेक खास वक्त तक कवाले पहुंचना था। हमारी प्रार्थना वे स्वीकार नहीं कर सकते थे। हमने कहा, 'अच्छा तो जाअिये। जो कुछ होना होगा हो जायगा।' अिस अंतिम वचनका अुन लोगों पर असर पड़ा। अिस वातका भी खयाल आया कि हम कौन हैं। हमारी मोटरका लंगड़ाता हुआ पैर जैककी मददसे अुठाकर अुसकी जगह दूसरा पहिया विठाया। परन्तु हमारा शोफर कहने लगा, 'अभी ६० मीलका सफर है। मेरी हिम्मत नहीं है कि आपको सही-सलामत आगे ले जा सकूं।' हमारे सामने अेक समस्या खड़ी हो गअी। वापस लौटें तो मोटर अच्छी तरह चलेगी ही, अिसका क्या भरोसा? वह कोअी जानवर नहीं थी कि घरका रास्ता देखकर अुमंगमें आ जाय। फिर भी हमने हिसाव लगाया कि ६० मीलकी जोखिमसे ३० मीलकी जोखिम कम है। हम लौट गये। अितनेमें हमारी अपनी मोटर भी अच्छी होकर आ पहुंची। अव मसाका जानेमें आपत्ति नहीं थी। परन्तु सभी सारथी हिम्मत हार गये थे। हमने दूसरा ही हिसाव लगाया। वापस जाते हैं तो वहांके गृहपतिको ११ वजेके पहले ही जगाना पड़ेगा। मसाका जाते हैं तो पिछली रात दो, ढाअी या तीन वजे वहांके

गृहपतिको अचानक जगाना पड़ेगा। अिस हिसावसे वापस जानेमें ही कम हिंसा थी। हम वापस लौट गये। जाकर सोनेमें वारह बज गये। यह सारा दिन हमें बड़ा महंगा पड़ा।

दूसरे दिन मसाका जानेके लिअे हमें भाअी हसनअली और भाअी रजवअलीका साथ मिल गया, क्योंकि हम अुन्हींकी मोटरमें जा सके। अिनमें से हसनअलीभाअी वम्वअीके पास घोलवड़-वोर्डीके स्कूलमें पढ़े हुअे थे। यह सावित करनेके लिअे कि वे राष्ट्रीय वृत्तिवाले हैं, अुन्होंने जोर देकर कहा कि, "मैं वोर्डी स्कूलका विद्यार्थी हूं।" अुनसे म्वरारा स्कूलका विभाजन कैसे हुआ, अिसका दूसरा पक्ष सुना।

मसाका पहुंचते ही हमने कंपाला फोन करनेका प्रयत्न किया, परन्तु अुसमें सफल न हुअे। अितनेमें वहांसे कमलनयनका फोन आया कि हम मरच्युसन फॉल्स देखने जा रहे हैं। ज्यादा लोगोंके लिअे सुविधा नहीं हो सकती। आपके लिअे मोटर भेज रहे हैं।

अव अिस मोटरके लिअे हमें ठहरना ही पड़ा। हमने विचार किया, "बैठेसे वेगार भली! मसाकाके लोगोंकी हमेशाकी शिकायत है कि जितने नेता, मेहमान और साहसी यात्री अिधर आते हैं, वे सब मसाका भोजनके लिअे ही ठहरते हैं। जवानका दूसरा अुपयोग करते ही नहीं हैं।" हमने भी जाते हुअे अैसा ही किया था। कमलनयनकी मोटर म्वरारासे जब हमने आगे भेजी, तब आशा रखी थी कि कमलनयन मसाकामें डेढ़ दो घण्टेका भाषण देकर लोगोंको सन्तुष्ट करेंगे। परन्तु अुन्होंने हमारा हवाला देकर कंपालाका रास्ता पकड़ लिया था। अिसलिअे मसाकाका अुलाहना दूर करनेका फर्ज मेरे सिर आ पड़ा। गांवके जमा होनेमें देर नहीं लगी। श्री अमृतलालभाअी असामान्य होशियार आदमी हैं। केवल मसाकाके ही नहीं परन्तु आसपासके सारे अिलाकेके लोग अुनकी रायको आदरपूर्वक मानते हैं। ३ बजे सिनेमा-हॉलमें सभा हुअी। "हम सब अेशियाअी हैं। हममें अेकता होनी चाहिये। गांधी-शिक्षा द्वारा हमें अफ्रीकी लोगोंकी सेवा करनी चाहिये।" अित्यादि वातें मैंने विस्तारसे समझाअीं। अुन लोगोंको मेरा भाषण पसन्द आया। मुसलमान अधिक प्रसन्न हुअे। अुनमें अेक अलीभक्त

कोअी अिस्माअिली भाअी थे। अुन्होंने अली-माहात्म्यके वारेमें थोड़ासा भाषण दिया।

खीमजीभाअी और व्रजलालभाअीके भाअी हीराचन्द हमारे लिअे कंपालासे मोटर ले आये। कल मोटरकी दुर्घटनाके हम अितने आदी हो गये थे कि अिस नअी मोटरमें कंपाला तककी ८२ मीलकी यात्रा वेखटके पूरी की, अिसका हमें आश्चर्य हुआ। यह कहें कि अपेक्षा-भंग हुआ तो भी हर्ज नहीं। कंपाला जाकर छोटाभाअी पटेलके यहां भोजन किया और रातको नानजीभाअीके यहां आराम किया।

लंवी यात्रा पूरी करनेका संतोष लेकर सोना था, परन्तु वह हमारे भाग्यमें न था। यह समाचार मिलनेसे दिल गंभीर हो गया कि श्री आर० अेस० शाहकी वहनकी छोटी लड़कीने कुनैनकी वहुतसी गोलियां खा लीं और डॉक्टरी अिलाज होनेसे पहले ही अुसका देहान्त हो गया। वर्धा-सेवाग्राममें हमारे आर्यनायकम्‌के लड़केका अैसा ही किस्सा याद आया और मन अुस तरफ दौड़ गया। और अिस विचारसे कि मरनेके लिअे कैसे सादे कारण भी काफी होते हैं और गफलतें कअी वार कितनी महंगी पड़ती हैं, लम्वे समय तक नींद न आअी।

रविवारका दिन पुराना कर्जा चुकाने और पुराने संकल्प पूरे करनेके लिअे विताना था। छोटाभाअी और छोटूभाअी दोनोंको साथ लेकर हम अुस मस्जिदको देख आये। वह मस्जिद दूरसे ही वड़ी अच्छी लगती थी। अूपर चढ़नेके वाद आसपासका प्रदेश दूर दूर तक देखनेको भी मिला। वह मस्जिद दिखानेके लिअे मेजर दीन हमारे साथ आनेवाले थे, परन्तु अुनकी तंदुरुस्ती अच्छी न होनेसे हमीं अुनसे मिलने गये। अुनकी सज्जनता, संस्कारिता और मिलनसारिता तीनों मामूलीसे ज्यादा थीं।

दोपहरको जॉर्ज सली नामक अेक अफ्रीकी युवक हमसे मिलने आये। अुनके साथ अुनके वड़े भाअी और पिता भी थे। भारत सरकारकी तरफसे अुन्हें छात्रवृत्ति मिली है। दक्षिण अफ्रीकाकी अपनी पत्नीको भी हिन्दुस्तान ले जानेका अुनका विचार था।

रुआण्डा-अुरुण्डीकी सारी यात्रामें अपनी मोटर लेकर सेवाभावसे हमारे साथ घूमनेवाले शाहबन्धुओंके यहां हम भोजन करने गये। घरके लोगोंसे मिलकर हमें बड़ा आनन्द हुआ। यह परिवार लम्बा-चौड़ा है। सब मिलाकर बावनकी संख्या है। अितने लोग मिल-जुलकर रहते हैं, अिसकी तहमें कितनी अधिक संस्कारिता और कुशलता होनी चाहिये! श्री खीमजीभाअीने गैंडेका अेक बड़ा सींग मुझे भेंट किया। मैं अुसे अपने साथ न ला सका। बादमें अुसके लानेके लिअे सारी व्यवस्था करनी पड़ी थी।

कंपालाके महाराष्ट्र मंडलसे मुझे कभीसे मिल लेना चाहिये था। परन्तु यह गफलतमें रह गया था। महाराष्ट्र मंडलका कार्यक्रम बहुत ही मजेदार था। संगीत तो अुसमें था ही। श्री गोंधळेकरसे हमने बेल्जियमके बारेमें कुछ जानकारी प्राप्त की। मेरे भाषणके बाद थोड़ेसे प्रश्नोत्तर हुअे। अुसमें हिन्दुस्तानके ही सवाल पूछे गये थे। "भाषावार प्रान्त-रचना होगी तब बम्बअीका क्या होगा?" यह अेक सवाल था। और दूसरा यह कि "हिन्दुस्तानके राजनीतिक आन्दोलनमें महाराष्ट्रका स्थान कहां है?" दोनों सवालोंकी तहमें शुद्ध जिज्ञासा और हितेच्छा थी, अिसलिअे मैंने भी विस्तारसे जवाब देकर अुन लोगोंकी चिन्ता दूर कर दी।

कंपालामें जिन अेक भाअीसे मिलना रह गया था, वे थे श्री धीरुभाअी मारफतिया। वे भारतसे हालमें ही लौटे थे। अपनी लड़की आशाकी शिक्षाके लिअे काफी परिश्रम कर रहे हैं। यहांके सार्वजनिक जीवनमें भी अुनका हाथ है। वे हमारे साथ लुगासी तक आये। रास्तेमें गांधी-स्मारक-कॉलेजके बारेमें हमने बहुतसी चर्चा की। श्री धीरुभाअी मारफतिया चाहें तो कॉलेजकी योजनामें बड़े मददगार हो सकते हैं।

मांग कर ली हुअी मीठी कैद

दो मासकी अद्भुत यात्रा पूरी करके हमने अितने अधिक संस्कार जुटा लिये थे कि अुनका संग्रह न करें तो वे बादलोंकी तरह अुड़ जायंगे, यह डर मनमें पैठ गया। रुआण्डा-अुरुण्डी जानेसे पहले ही मैंने छोटूभाअीसे कहा था कि अफ्रीका छोड़नेसे पहले ही यात्राका वर्णन न लिख डालूंगा, तो हिन्दुस्तानमें जानेके बाद लिखना नहीं होगा। वहां जाते ही वहांके कामोंसे और चिन्ताओंसे घिर जाअूंगा। मुझे किसी अैसे अेकान्त स्थानमें बन्द रहने दीजिये, जहां आरामसे कुछ लिख सकूं। छोटूभाअीने यह जिम्मेदारी सिर पर ले ली और अुन्होंने तय किया कि मैं श्री नानजी सेठके लुगासीके भवनमें आठ दिन बिताअूं। अितनेमें श्री अप्पासाहबने अेतराज किया: "यह न भूल जाअिये कि नैरोबीमें कमिश्नरका दफ्तर नये बने हुअे मकानमें जानेवाला है, अुसका प्रवेश-समारोह आपके हाथों होगा। हम आपको नैरोबीमें भी शांति दे सकेंगे।" सदाकी भांति अिन दोनों मेजबानोंने 'त्वयार्धम् मयार्धम्' का सिद्धान्त लगाकर समझौता कर लिया। यह निश्चय हुआ कि चार दिन लुगासी रहकर हम नैरोबी जायें। अिस निर्णयके अनुसार हम कंपालासे लुगासी पहुंचे। कमलनयनने मरच्युसनसे लौटकर नैरोबीका रास्ता लिया। चि० सरोजिनी, मैं, शरद पंड्या और हमारा हिन्दी करमुद्रण-यंत्र — अितने लुगासीमें रह गये। वहां जाते ही श्री आनंदजीभाअीने हम पर अधिकार कर लिया। हमारी रहने-सहनेकी सब सुविधा कर दी और हमें किसी भी समय कोअी मिलने न आये, अिसकी चौकीदारी अपने हाथमें ले ली। फिर भी कंपालासे या और कहींसे कोअी न कोअी मिलने आते ही थे। अुनके लिअे आनंदजीभाअीने खानेका समय खुला रख दिया। हम अितनी 'कैद' में रहे, अिसलिअे काफी लिख सके।

लुगासी स्थान ही अैसा है कि अेक बार देखनेके बाद मन पर अुसका चित्र जम ही जाता है। ककीरा और लुगासीकी सुन्दर जोड़ी है। मैंने यह नहीं पूछा कि अिन दोनोंमें किसने किसका अनुकरण

किया है। लुगासीकी पहाड़ी पर दो मकान हैं। अेक पुराना, जो पुराना भी है और सादी सुविधाओंवाला है। दूसरा नया अैश-आराम वाला है। पहला मकान पुरुषार्थी मनुष्यकी सादी अभिरुचिवाला है। दूसरा मकान धनी पिताके भाग्यशाली लड़कोंके रहने लायक है। हमने छोटे (अलबत्ता, कदमें छोटे) मकानमें रहकर अेकाग्रतासे लिखना पसन्द किया। रोज सुबह और शाम हम आसपासके दृश्यका — सूर्योदय और सूर्यास्तका सौंदर्य देखकर और दोनों संध्याओंके सूर्यनारायणका अुपस्थान करते हुअे पक्षियोंका गान सुनकर हृदयको अुसकी खुराक देते और बाकीका सारा समय लिखनेमें बिताते।

पहला दिन अेक दो पत्र लिखनेमें, वर्णनके अध्याय बनानेमें और प्रस्तावना लिखनेमें गये। रातको खानेके बाद शिक्षकों-विद्यार्थियोंके साथ थोड़ीसी बातचीत हुअी। 'गुजराती पाठशालामें अफ्रीकी विद्यार्थी आपकी भाषा सीखने आयें, तो आप अुन्हें लेनेको तैयार होंगे या नहीं?' मैंने यह सवाल पूछा। मुझे अिस बारेमें विद्यार्थियोंकी राय जाननी थी। शिक्षकोंसे यह सवाल पूछनेका कोअी अर्थ न था, क्योंकि अिस कारखानेकी पाठशालाकी सारी व्यवस्था मैनेजरके ही हाथमें होती है। भाअी जाजल यहांके जनरल मैनेजर हैं। अुन्होंने परिस्थितिके सम्बन्धमें बड़ी छानबीन की। मुझे जो कुछ कहना था सो सब मैंने चर्चा द्वारा कह दिया।

श्री छोटाभाअी कंपालासे तात्याका अेक पत्र लेकर आये। अुन्हें यह भी जानना था कि हम नैरोबी कब पहुंचेंगे और अुनका तैयार किया हुआ आगेका कार्यक्रम हमें मंजूर है या नहीं। अपने स्वभावके अनुसार मैंने अुनका कार्यक्रम मंजूर कर लिया, क्योंकि कामकी दृष्टिसे वह ठीक था। अिसका अेक परिणाम यह हुआ कि मुझे मरच्युसन फॉल्स देखने जानेका मौका छोड़ना पड़ा और विक्टोरिया सरोवरके किनारेका मशहूर बन्दरगाह किसूमू देखनेकी अिच्छा भी दबानी पड़ी।

श्री नानजीभाअीने अपने कारखानेमें जगह जगहसे लोगोंको लाकर बसाया है। अिनमें से अेक महाराष्ट्री भाअी श्री भोमे हैं। ये असलमें

फल्टन और सताराकी तरफके हैं। शक्करके मामलेमें निष्णात हैं। यहां अुन्होंने तीन साल तक काम किया है। लड़का घरका काम संभालने लायक हो गया है, अिसलिअे ये निवृत्त होकर गुजारेके लायक लेकर राष्ट्रसेवा करना चाहते हैं। अुनकी मैंने यह खासियत देखी कि सिद्धान्त या व्यक्तिगत संबंध कायम रखनेमें व्यावहारिक नुकसान हो जाय, तो अुन्हें अिसका जरा भी पछतावा नहीं होगा। अुनकी मातृभक्ति देखकर मुझे अुनके प्रति विशेष आकर्षण हुआ।

अुसी रात कमलनयन और शहाणे दम्पति मरच्युसन फॉल्सकी यात्रा पूरी करके मोटरके रास्ते नैरोबी जानेके लिअे अिधर आये। रातको लुगासी आनेके बाद कच्चे रास्ते पर कीचड़में फंसकर खूब परेशान हुअे। दूसरे दिन सवेरे अिसीकी बातें मजाकका विषय बन गअीं।

तीसरे दिन किसूमूसे वहांके लोगोंका लम्बा तार आया कि 'हमारे यहां जरूर आअिये।' मसाकाका बदला चुकानेका निश्चय करके मैंने यह काम कमलनयनको सौंप दिया और किसूमूके लोगोंको अेक मीठा पत्र लिखकर मांफी मांग ली। कमलनयन व्याख्यानमें हारनेवाले हैं ही नहीं और विनोदके फव्वारे तो हमेशा अुनके पास मौजूद ही रहते हैं। अुन्होंने जाते ही कह दिया कि, "महादेव खुद न आ सके, अिसलिअे अुनका नांदिया आया है।" अपना ही मजाक अुड़ाकर अुन्होंने जो वातावरण पैदा कर दिया, अुससे वे लोगोंमें मान्य बन गये। अेक बार अपना ही मजाक अुड़ा लिया कि यह औजार औरों पर आजमानेकी तो छूट मिल ही जाती है!

कमलनयनके साथ लुगासीमें ही हमने तय कर लिया कि मुझे भी मिस्र न जाते हुअे अदिस-अबाबा तक जाकर जीबूटी और अदनके रास्ते हिन्दुस्तान लौट जाना चाहिये।

मेरा मिस्र जानेका अिरादा छोड़ देने पर बहुतोंको आश्चर्य हुआ। खर्चकी कठिनाअी भी नहीं थी। वह नानजी सेठकी तरफसे आसानीसे मिल जाता। परन्तु अितने दिन साथ सफर करके आखिरी वक्त कमलनयनको छोड़कर आगे चला जाना मुझे पसन्द नहीं

आया। और अिससे भी अधिक या मुख्य विचार यह था कि मिस्रकी संस्कृति दूसरी है। वहांके सवाल अलग हैं। वहांके पिरामिड देखेंगे, काहिराका अद्‌भुत संग्रहालय देखेंगे और अल-अजहरकी युनिवर्सिटी देखेंगे, तो अितने अधिक भिन्न और विविध संस्कार मन पर पड़ेंगे कि पूर्व अफ्रीकाके संस्कार दब जायंगे। मुझे अैसा नहीं होने देना था।

हिन्दुस्तानका पूर्व अफ्रीकाके साथ जिस किस्मका सम्बन्ध है वैसा मिस्रके साथ नहीं। पूर्व अफ्रीकामें सेवाकी पुकार थी। मिस्रमें संस्कार-समृद्धि और अद्‌भुत परम्पराओंका आकर्षण था। नील नदीका जीवन-चरित्र पढ़े विना, मिस्रकी मिश्रित संस्कृतिके वारेमें ज्ञान ताजा किये विना और मिस्रमें नैपोलियनसे लेकर पश्चिमके अनेक लोगोंने जो पुरुषार्थ फैलाया है अुसकी जानकारी प्राप्त किये विना जाना मुझे जरा जल्दवाजीका कदम मालूम हुआ। अीसाअी धर्मके प्रारंभके दिनोंमें मिस्रने अिस धर्मको जो आश्रय दिया, अुसका अितिहास भी फिरसे याद करने लायक था ही। मैं नहीं जानता कि यह सब कब कर सकूंगा और मिस्र कब जाअूंगा। और जब जाअूंगा तब यह सारी तैयारी करनेका वक्त मिलेगा या नहीं, अिस वारेमें भी मुझे शंका है। हमारे भाग्यमें जितना होता है अुतना ही हमसे बनता है और अुसी मात्रामें हमें लाभ मिलता है। मेरा यह विश्वास दैववादसे अुत्पन्न नहीं हुआ, परन्तु जीवन-परिचयसे अुत्पन्न हुआ है — जिसे लोग कर्मका सिद्धान्त कहते हैं।

अुसी दिन अेक सज्जन और सेवापरायण वृद्ध व्यक्तिका परिचय हुआ। डॉक्टर हण्टर अपनी युवावस्थामें कर्णाटकमें हमारे वेलगांवकी तरफ रह चुके थे। अुनके पिता भी वहीं थे। वेलगांवके पास जिस हिन्डलगा जेलमें मैं रहा था, अुसीके गांवमें अुन्होंने अेक कुष्ठाश्रम चलाया था। हमारे वेलगांवकी तरफके डॉक्टर हण्टर यहां अफ्रीका कैसे आये और कब आये, यह मैंने अुनसे नहीं पूछा। अुन्होंने कहा हो तो याद नहीं। आज अुनकी अुम्र ७२ बरसकी है। थोड़े ही वर्ष हुअे अुनकी पत्नी और अुनका लड़का पूर्व अफ्रीकामें ही गुजर गये। अब वे अकेले ही हैं। नानजी सेठ अुन्हें खर्चके लायक देते हैं, परन्तु वे यह रकम पेन्शनके

रूपमें न लेकर लुगासीके कारखानेमें मजदूरोंकी स्वास्थ्य-सेवा करके सन्तोष मानते हैं। जब मैंने यह कहा कि "अितनी अुम्रमें आप काम करते हैं यह आश्चर्यकारक है", तो अुस वृद्धने बिलकुल मुग्ध भावसे कहा : "After all it is better to wear away than to rust away." (जंग लगनेसे घिस जाना ज्यादा अच्छा है।)

अैसे सत्पुरुषको श्री आनन्दजी मेरे पास ले आये, अिसके लिअे मैंने अुन्हें धन्यवाद दिया। अफ्रीकासे स्वदेश लौट आनेके बाद खबर मिली कि वे डॉक्टर हण्टर जहां अुनकी पत्नी और लड़का गया है वहीं पहुंच गये हैं। परन्तु कितनी सुगंध अपने पीछे छोड़ गये!

सारे दिन लिखनेके बाद विनोदके रूपमें आनन्दजीभाअीसे पूर्व अफ्रीकाके अेमिग्रेशन कानूनकी बहुतसी पेचीदगियां जान लीं। रातको लुगासीकी संस्थाकी तरफसे रिक्रिअेशन क्लबमें थोड़ेसे प्रश्नोत्तर हुअे।

अंतिम दिन कंपालासे श्री काकूभाअी और रमाकान्त आये। अुनके साथ अनेक बातें हुअीं। २१ जुलाअीको हम लुगासी छोड़कर कंपाला गये और अेन्टेबे होकर ४ बजे वायुमार्गसे नैरोबी पहुंच गये।

परन्तु कंपाला हमें आसानीसे छोड़नेवाला नहीं था। खीमजीभाअी कहने लगे कि "आप मेरे भाअीके यहां भोजन कर चुके हैं। मेरा घर आपने कहां देखा है?" अिसलिअे २१ तारीखको हमने अुनके यहां नाश्ता किया। सर्विस स्टोर्समें जाकर कंपालावाले सब भाअियोंसे मिले। वे सब अब घरके लोगों जैसे हो गये थे। श्री शाह, काकूभाअी, रामजीभाअी लद्धा — सबने कंपालाकी यादगारके तौर पर कअी फोटो दिये। रामजीभाअी तो अितने प्रेमी थे कि अेन्टेबे जाकर जब तक हमने विमानमें प्रवेश न किया, तब तक अुन्होंने तरह तरहके फोटो देना जारी ही रखा। कोअी खास शब्द काममें लिये बिना आतिथ्य और स्नेह दिखानेकी अुनकी कला सचमुच अनोखी है। अुन्होंने हमें बिलकुल अपना ही बना लिया।

अिन सब मित्रोंके साथ हम अेन्टेबे जानेके लिअे रवाना हुअे। १९ मीलका रास्ता था। हमारा विमान ११ बजकर २० मिनट पर

चला और १ बजकर १० मिनट पर नैरोबी पहुंचा। अिस बार हमने विशाल विक्टोरिया सरोवरका अंतिम दर्शन किया। अुसके भीतर दिखाअी देनेवाले अेक अेक टापू पर कल्पनासे घर बनाकर अुनमें काफी रहे। सरोवर परसे दौड़ते हुअे बादलोंके साथ बुजुर्ग बनकर बातें कीं, क्योंकि हम अुनसे भी अूंचाअी पर थे। फिर केनियाकी असंख्य पहाड़ियां देखीं। गोरे और अफ्रीकी लोग अुन पहाड़ियोंका किस प्रकार सेवन करते हैं, यह ध्यानपूर्वक देखा। आखिरी समय हमारा विमान खूब हिला। विमान जब अिस तरह हिलता है, तब मुझे वह अधिक सजीव मालूम होता है। और अुसके साथ मेरी कल्पना भी हिलने लगती है। नहीं तो सारा प्रवास अलोना ही होता है। मुसाफिरोंको सोने न देनेके लिअे ही विमान थोड़ेसे अूपर नीचे दचके लगाये तो अिससे क्या होता है?

नैरोबी अुतरते ही तात्या अिनामदार हमसे मिले और अपने घर ले गये।

३७

अुत्कट और समस्त

पूर्व अफ्रीकाकी सारी यात्राके निचोड़के तौर पर नैरोबीमें हमने ११ दिन बिताये। अिन दिनोंमें जितना सोचा अुतना लिखा नहीं गया। परन्तु ग्यारहों दिन अनुभव, संस्कार, जानकारी, परिचय और सेवाकी दृष्टिसे पूरी तरह पूर्ण थे। अिन ग्यारह दिनोंमें यात्राके सभी तत्त्व अेकत्र हो गये थे। जमीनकी रचनाका अध्ययन, प्रपात जैसे प्राकृतिक दृश्योंका दर्शन, वन्य श्वापदोंकी मुलाकात, गांवोंके दर्शन, अफ्रीकी नेताओंसे भेंट, देहातमें अुनके बनाये हुअे समृद्धिशाली घर, अफ्रीकी जनता, अुसके नृत्य, अुसकी महत्त्वाकांक्षाअें, हमारी संस्थाअें, हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न और राजनीतिक विष्टियां, हिन्दुस्तान जानेके बाद करनेके कामोंका अन्दाज, संस्कृतिके अध्ययन और प्रचारके लिअे शिक्षा-सम्बन्धी और धर्म-प्रचारके काम, महाराष्ट्रियोंके मीठे परिचय, अुनके पुरुषार्थका

परिचय, मिशनरियोंकी चलाअी हुअी संस्थायें और अुनकी तहमें अुनकी गहरी नीति, आगाखां और आर्यसमाज दोनोंके शिक्षा-सम्बन्धी आन्दोलन, अफ्रीकियोंके लिअे साहित्य-निर्माणका प्रारंभ, खादी और चरखेका प्रचार और नये मिले हुअे मित्रोंके साथ प्रेमका वार्तालाप —सभी चीजें अिन ११ दिनोंमें अुत्कटतासे अिकट्ठी हुअी थीं। मेरा अब भी खयाल है कि अिन ग्यारह दिनोंमें मैं अेक वर्ष जितना जिया होअूंगा।

शामको थियोसॉफिकल लॉजमें निमंत्रण था। धन कमाने और जीवनके मजे लूटनेसे कुछ अधिक विचार करनेवाले लोग अिकट्ठे होते हैं तब अच्छा तो लगता ही है। मोम्बासामें श्री मास्टर, दारेस्सलाममें जयंतीलाल द्वारकादास शाह और नैरोबीमें श्री शिवाभाअी अमीन और पारसी भाअी बहेरामजी जैसे लोगोंने सात्विक आध्यात्मिक वातावरण अुत्पन्न करने और रखनेका अच्छा प्रयत्न कर रखा है। आम तौर पर पाया जाता है कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवनके शोरगुलमें अैसे लोग केन्द्रमें नहीं होते, परन्तु ये सब प्रवृत्तिकी किनार पर लग जाते हैं और लोगोंकी सत्प्रवृत्तियोंका संगठन करके धार्मिक सुगंध फैलाते हैं। जिस प्रदेशमें हमारे लोगोंने बड़े बड़े हाअीस्कूल बनाये हैं, अस्पताल और टाअुन-हॉल खड़े किये हैं और जातिवार बड़े बड़े हॉल भी बनवा दिये हैं, अितना ही नहीं परन्तु मंदिर और गुरुद्वारे भी स्थापित कर दिये हैं, अुस प्रदेशमें थियोसॉफिकल सोसायटीका अपना अेक भी मकान नहीं, यह चीज ध्यान खींचे बगैर नहीं रहती। अिस प्रवृत्तिमें तेज ही नहीं है या वह अति सात्विक है? यह मध्यमवर्गके गरीब लोगोंकी सात्विक प्रवृत्ति होती है। अिसमें शक नहीं कि अिन लोगोंको अैसी जगह हृदयका आश्वासन मिलता है। और चारित्र्यका अच्छा-सा आदर्श मन पर जमानेमें भी ये स्थान अुपयोगी ही हैं। असाधारण स्वार्थत्याग, जातीय आत्मोत्सर्ग या रजोगुणी वैभव — अिनमें से अेकका भी संसर्ग न होनेसे अिस प्रवृत्तिका विकास नहीं होता, अैसा मैं मानता हूं।

अेक छोटेसे मकानमें कुछ लोग जमा हुअे थे। अुन सबका परिचय सुनकर अुनके प्रति मनमें सद्भाव जम गया। अिसलिअे मैंने

यहां वड़ी अुत्कटतासे वातें कीं। सत्य, सर्वधर्म-समभाव, सव धर्मोंका लघुतम भाज्य (L. C. M.) और महत्तम भाजक (G. C. M.) निकालनेके वारेमें और जप तथा प्रार्थनाके वारेमें भी तफसीलसे वातें कीं। मनको तैयार करनेमें जो गूढ़ शक्तियां ('ऑकल्ट पावर्स') प्रगट होती हैं, वे स्वाभाविक होने पर भी अुनके पीछे पड़नेके खतरेके वारेमें भी मैंने अिशारा किया। मैंने ये खतरे वताये कि अिन शक्तियोंके पीछे पड़नेसे मनमें विकृति आती है, समतुला नहीं रहती और ध्येयसे हम हट जाते हैं। रातको श्री ठाकुरके यहां भोज था, तव पता नहीं कैसे मेस्मेरिजम और अैसे ही अन्य विषयोंकी चर्चा चल पड़ी थी।

पूर्व अफ्रीकाका सारा सफर पूरा करके हमने नैरोवीमें दस दिन विताये यह अेक तरहसे अच्छा ही हुआ। दो अढ़ाअी महीनेके प्रवासके वाद नैरोवीकी अनेक अफ्रीकी पाठशालाअें देख लीं — कुछ सरकार अथवा मिशनरियोंकी चलाअी हुअी और कुछ दूसरी अफ्रीकी नेताओंकी अपने ही पुरुषार्थसे चलाअी हुअी। दोनों तरहके स्कूलोंकी विशेषतायें अलग अलग थीं। ये संस्थायें देखनेके वाद अिसकी काफी कल्पना हो गअी कि अफ्रीकी लोगोंका भावी किस प्रकार वन रहा है। अिस तरह ये दस दिन अढ़ाअी महीनेकी सारी यात्राके संक्षिप्त संस्करणकी तरह थे, क्योंकि अढ़ाअी महीनेमें जितनी विविधता अनुभव की गअी थी अुस सवका प्रतिनिधित्व अिन दस दिनोंमें सामने आया था। अुदाहरणके लिअे, अफ्रीकाके वन्य पशुओंका दर्शन लीजिये। हम लगातार दो दिन अभयारण्यमें हो आये। अव तो वह सारा प्रदेश और अुसके भीतरके स्वतंत्र प्राणी परिचित जैसे प्रतीत होते थे। और वहांके दीर्घग्रीव जिराफ तो मानो हमें खास तौर पर पहचानते हों, अिस प्रकार हमारी मोटरके सामने फोटोके पोजके लिअे आकर खड़े रहते। श्री जशभाअीको यह अुत्सुकता थी कि हम अफ्रीका आकर नैरोवीके सिंह-दर्शनसे वंचित न रह जायें।

अेक वार शामको गये तव अिसका निश्चित पता लगने पर भी कि सिंह कहां है वनराजसे हमारी भेंट नहीं हो सकी। अुनके रहस्य-मंत्रियोंने हमसे कहा कि, "महाराजके यहां आज अच्छी दावत

हुअी है, अिसलिअे कहीं आरामसे सो रहे हैं। आज आपको दर्शन नहीं होंगे।" हम घंटों तक खूब भटकते रहे। परन्तु महाराजके दर्शन किसीको नहीं हुअे सो नहीं हुअे। दूसरे असंख्य पशुओंको हमने अुनकी प्राकृतिक अवस्थामें देखा होगा, परन्तु मुख्य मुलाकातके अभावमें मनमें ग्लानि ही रही।

दूसरे दिन सवेरे अिसका बदला मिल गया। हम बहुत जल्दी आकर अभयारण्यमें पहुंच गये। अेक अस्कारीके साथ अिन्तजाम कर रखा था। ये अस्कारी लोग दुपाये मनुष्य तो जरूर होते हैं, परन्तु पशुओंकी रीति-नीति वगैरा सब बातें खूब जानते हैं और जहां हमारी नजर न पहुंचे वहां वे अचूक किसी भी पशुको ढूंढ़ निकालते हैं। फर्क अितना ही है कि हवा किस तरफकी है, अिसका ज्ञान पशु नथने फुलाकर कर लेते हैं और ये लोग थोड़ीसी मिट्टी अुड़ाकर यह ज्ञान कर लेते हैं। हमारा अस्कारी दस पांच मीलकी दौड़में ही हमें सिंहकी दो रानियोंके सामने ले आया। सूखे हुअे घासमें पीली चमड़ीवाले शेर आसानीसे नजर नहीं आते, परन्तु अेक बार नजर आनेके बाद आप अुन्हें नजरसे हटा ही नहीं सकते। सिंह प्राणी, खासकर मादा, दीखनेमें असाधारण नहीं होती, परन्तु अुसकी चालढाल देखनेके बाद तुरन्त विश्वास हो जाता है कि यह राजवंशी प्राणी है।

मोटर लेकर हम काफी नजदीक चले गये। दोनों रानियोंने हमारी तरफ जरा नजर डाली और 'होगा कोअी मानव प्राणी' अिस लापरवाहीसे नजर फिरा ली। अेक क्षणके लिअे भी विचार करने लायक हमारा महत्त्व अुन्हें न लगा। दोनों रानियां अेक ही फोटोमें आ सकें, अिसके लिअे हम अपनी मोटर दूसरी ओर ले गये। वहां हमारी अिस धृष्टताके प्रति तिरस्कार दिखानेके लिअे अेक रानीने हमारी तरफ देखकर अेक जमुहाअी ली। अिन्सानकी हैसियतसे अैसा अपमान सहन करना किसे अच्छा लगता? परंतु अभयारण्यमें यह सब सहन करनेके सिवा हम और कर भी क्या सकते थे? हम जहां थे वहांसे आगे नहीं जाया जा सकता था, अिसलिअे वापस लौटकर अर्ध-चन्द्राकार रास्ता निकालकर हम अुसी सिंहनीको दूसरी

तरफसे देखने पहुंचे। हमें वार वार अिस तरह पास आते देखकर अुस सिंहनीको न आश्चर्य हुआ, न सताये जानेका क्रोध आया। अुसके खयालमें हमारा कोअी महत्त्व ही नहीं था। अेक सिंहनी धीरे धीरे वहांसे चली गअी और दूसरी आड़ी होकर सो गअी! अिस प्रकार अुनके आगे अपनी प्रतिष्ठा खोकर हम वापस आ गये। सिंहकी भयानकताके वारेमें कितनी सारी कहानियां पढ़ी थीं और अजायवघरोंके पिंजरोंमें वन्दी वने हुअे सिंहोंको मनुष्यों पर क्रुद्ध होते देखा था। परंतु यहां तो अिन प्राणियोंकी अुदासीनता और वेपरवाही ही देखनेमें आअी। अिसका विचार करते करते हम दस-वीस मील दौड़कर जंगलके दूसरे सिरे पर पहुंचे। वहां अचानक लम्वे लम्वे वालोंवाला अेक सिंह दिखाअी दिया। अुठकर जा रहा था। 'ठहर, ठहर' हमने वहुतेरा कहा, परंतु अुसे कहीं समय पर जाना होगा। वह चला ही गया। परंतु जो दो चार पल हम अुसे देख सके, अुसीसे अुसकी तसवीर हमारे मन पर पूरी तरह अंकित हो गअी। 'यह सारा राज्य मेरा ही है', अिस स्वाभाविक दवदवेके साथ सिंह जव लम्वे लम्वे डग भरते हैं, तव अुनके वारेमें आदर पैदा हुअे विना नहीं रहता।

मैंने कहा, 'सिंह कुछ वूढ़ा मालूम होता है।'

अिस पर चर्चा हुअी। 'आपने कैसे जाना?' साथी पूछने लगे। श्री जशभाअीने भी मेरे साथ मतभेद प्रगट किया। अन्तमें अुन्होंने अस्कारीसे अुसकी भाषामें पूछा। जवाव मिला कि 'वात सही है। सिंह वूढ़ा है। हम वीस वर्षसे देख रहे हैं। वह यहीं रहता है। पहले जितना अुत्साही अव नहीं है।' सवने मुझसे पूछा, 'आपको कैसे पता चला?' मैंने कहा कि, 'जानवर जवान होते हैं तव अुनके वालों पर तेलकी-सी चमक होती है। वे जव वूढ़े हो जाते हैं, तो अुनके वाल सूखे हुअे घासकी तरह बेचमक हो जाते हैं। अिस सिंहके वालोंकी चमक घटती दिखाअी दी। अिसके सिवा अिस सिंहके गलेके पासकी अयालके कुछ वाल मैंने गिरे हुअे देखे। अिसलिअे अनुमान लगाया कि अिस सिंहका वुढ़ापा शुरू हो गया है।' अुस दिन हम कृतार्थ होकर लौटे। राजा और रानी दोनोंसे मुलाकात हो गअी। फिर भी लौटते समय जरखोंके

वड़े झुण्डसे भेंट कर ली। चित्राश्व, वुद्‌दू और अिसी तरहके कितने ही जानवर दिखाअी दें, तो भी अब वहां ध्यान कैसे जमे? हमारी अिस तृप्ति पर आशीर्वादकी मुहर लगानेके लिअे किलिमांजारोने हमें अन्तिम दर्शन दिये।

जिन्हें राजनीतिक माना जा सकता है, अैसी तीन प्रवृत्तियोंका यहां अुल्लेख कर देना चाहिये। २३ जुलाअीको श्री अप्पासाहवका दफ्तर अुसके लिअे खास तौर पर वनाये हुअे मकानमें पहुंच गया। पंजावी ठेकेदार श्री मंगतने नैरोवीके दो मुख्य रास्तोंके कोने पर अेक भव्य मकान वनाकर अुसकी अूपरकी सारी मंजिल अप्पासाहवके लिगेशनके लिअे किराये पर दे दी है। अिस मकानका नाम 'अिंडिया आफिस' रखा गया है। अिस मकानका अुद्‌घाटन मेरे हाथसे हुआ। १९ तारीखको होनेवाला था सो २३ को हुआ। अिसलिअे संगमरमरकी लिखावटमें तारीखकी गड़वड़ी रह ही गयी। अिस शुभ अवसरके लिअे लोग दूर दूरसे आये थे। भारत स्वतंत्र हो गया, अिसीलिअे यहांके हिन्दुस्तानियोंको अेक कमिश्नर मिले। और वे भी अप्पासाहव जैसे! अिसलिअे लोग वेहद खुश थे। अेक आदमीने प्रासंगिक कविता सुनाअी। श्री मंगतका, अप्पासाहवका और मेरा अिस तरह तीन भाषण हुअे। अिस अवसरका लाभ अुठाकर मैंने अप्पासाहवके वारेमें, अुनके प्रकाशन-मंत्री (अिन्फर्मेशन ऑफिसर) श्री शहाणेके वारेमें और अुनके निजी मंत्री श्री तात्यासाहव अिनामदारके वारेमें थोड़ासा कहा। रातको श्री मंगतके यहां ही भोजन किया। अिन भाअीकी होशियारी अनेक क्षेत्रोंमें काम कर रही है।

दूसरे दिन यहांके अमेरिकन कौन्सल जनरल मि० ग्रॉथके यहां हम दोपहरको भोजन करने गये। हल्की हल्की वातोंमें और हंसी-मजाकमें हरअेक मनुष्यका रुख पहचानने और आवश्यक जानकारी निकलवा लेनेकी कलामें ये लोग कुशल होते हैं। हिन्दुस्तानके लोग धर्मचर्चासे खिलते हैं और योगके वारेमें अुन्हें आस्था होती है, अित्यादि भारतीयोंकी ख्याति अमरीका तक पहुंच गअी है। अिसलिअे अमरीकी लोग हमारे साथकी वातचीतमें अैसे विषय जरूर लाते

परन्तु मुझे लगा कि मि० ग्रॉथको अिन विषयोंमें सचमुच ही दिलचस्पी होगी। अफ्रीकियोंकी सेवा करनेवाले मिशनरियोंके बारेमें, कम्युनिस्ट लोगोंके बारेमें और स्वीडनके बारेमें तरह-तरहकी बातें हुअीं। हम मांसादि नहीं खाते, अिसलिअे हमारे वास्ते रोचक निरामिष आहार तैयार करानेकी तरफ मि० ग्रॉथने काफी ध्यान दिया था। सामाजिक समानताके असरके कारण अमरीकी लोग अंग्रेजोंसे अधिक मिलनसार होते हैं। अेक बार जब हम नैरोबीमें नहीं थे तब मि० ग्रॉथने हमारे शरद पण्ड्याको अपने यहां नाश्तेके लिअे बुलाया था और अुनके साथ भी योग, प्राणायाम और सूर्य-नमस्कारके बारेमें बहुत बातें की थीं।

तीसरा राजनीतिक प्रसंग २९ तारीखको आया। श्री कुरेशी नामके पंजाबके अेक पाकिस्तानी भाअी अुस दिन मिलने आये। कुछ ही पहले कराचीसे वापस लौटे थे। किसी समय शिक्षक थे। अब राजनीतिक बातोंमें प्रमुख भाग लेते हैं। अुन्होंने पूर्व अफ्रीकामें हिन्दू-मुस्लिम झगड़े संबंधी सारा अितिहास अपनी दृष्टिसे विस्तारपूर्वक बताया। अुनकी बड़ी शिकायत आर्यसमाजियोंके खिलाफ थी। झगड़ा अुन्होंने शुरू किया। मना करने पर मानते नहीं थे। अिसलिअे मुसलमानोंने 'ऑब्जरवर' नामक अखबार निकाला। अुन्होंने भी अुतना ही बिगाड़ा। कुरेशी खुद तटस्थ रहे। फिर निवृत्त हो गये —— वगैरा प्रारंभिक बातें अुन्होंने बतायीं। आगे चलकर संबंध कैसे बिगड़ते गये और अुन्होंने समझौता करनेके लिअे क्या क्या निष्फल प्रयत्न किये, यह भी कहा। अन्तमें अुन्होंने मुसलमानोंके लिअे अलग निर्वाचक मंडल तैयार करनेकी सरकारसे मांग की। 'आप गांधीजीके आदमी, तटस्थ और देवता पुरुष हैं। आप बीचमें पड़कर हिन्दुओंको समझायें तो हमारा झगड़ा निपट जाय।' वगैरा बहुतसी बातें अुन्होंने कीं। मैंने अुनसे पूछा कि, "अप्पासाहबसे तो आप मिले ही होंगे। वे भी हिन्दू-मुस्लिम अेकताके लिअे पच रहे हैं। अुन्होंने आपसे क्या कहा?" "अप्पासाहब तो अुच्च कोटिकी ('हायर लेवल' की) बातें करते हैं। मुझे तुरन्त समझौता चाहिये।" मैंने अुनसे कहा कि "सच्ची और स्थायी अेकता 'हायर लेवल' पर ही होगी।

दूसरी तरहसे कामचलाअू दोस्ती नहीं हो सकती सो बात नहीं। स्वार्थी लोग भी कअी बार संघर्षके बाद सहयोग करते ही हैं। परन्तु अुसके लिअे दूसरे लोग चाहिये। मैं गांधीजीका आदमी हूं। सर्वधर्मी हूं। केवल हिन्दुओंका नेतृत्व मुझसे नहीं होगा। पूर्व अफ्रीकामें हिन्दुओं और मुसलमानोंके हितोंमें कोअी भी फर्क नहीं।"

फिर मैं आगे बढ़ा, "मुझे अेक अत्यंत व्यावहारिक अुपाय सूझता है। हिन्दुस्तानसे आये हुअे हम हिन्दू-मुसलमान सब यहांकी सरकारसे लड़-लड़ कर यहांके राजकाजमें आखिर कितने स्थान जुटा सकते हैं? अंग्रेजोंकी सत्ता और अफ्रीकियोंकी संख्या दोनोंके आगे हमारी बिसात ही क्या? हमारे पास जब अैसी छाप है ही नहीं कि हम यहांकी राज्य-व्यवस्था पर असर डाल सकें, तो हम आपसमें खींचातानी करनेके बजाय यह क्यों न तय कर लें कि हिन्दुस्तानी लोगोंके लिअे जितनी सीटें (जगहें) मिलें, अुनके लिअे हम अच्छे अफ्रीकी लोगोंको ही चुनकर भेज दें? अैसा करके हम अफ्रीकी लोगोंके सामने साबित कर देंगे कि अुन पर हमारा विश्वास है, अुनके हाथोंमें हम अपनेको सुरक्षित मानते हैं और वे अपने देशमें हमें जैसे रखें वैसे रहनेको हम तैयार हैं। हम यहांकी धारासभामें अपने ही आदमी भेजेंगे, तो हम दरियामें खशखशकी तरह गुम हो जायंगे। अिस पर भी आपसमें लड़े तो दुनियामें हंसीके पात्र बनेंगे। अिसके बजाय अफ्रीकियोंको ही हम अपने प्रतिनिधि बना लेंगे, तो सभी अफ्रीकी मत (वोट) हमारे लिअे अनुकूल हो जायंगे। अपने मत देकर अुनके बदलेमें अफ्रीकी मत प्राप्त कर लेना कोअी बुरा सौदा नहीं।

"मैं यह नहीं कहता कि हम धारासभामें जायं ही नहीं। अगर अफ्रीकी लोग अपने प्रतिनिधिके रूपमें हममें से किसीको चुनें, तो अुस चीजका हम जरूर स्वागत करें। दक्षिण अफ्रीकामें कानूनकी रूसे काफरों और हिन्दुस्तानियों दोनोंको अपने प्रतिनिधिके तौर पर गोरोंको ही चुनना पड़ता है। अिसके बजाय अगर अफ्रीकी लोग स्वेच्छासे हममें से किसीको सेवाके कारण चुन लें, तो यह नया ही अुदाहरण बनेगा।"

मेरी बात भाअी कुरेशीके गले नहीं अुतरी। आजकी स्थितिमें किसीके भी गले नहीं अुतरेगी, यह मैं जानता हूं। क्योंकि अिसके लिअे अुच्च भूमिकावाली कल्पना-शक्तिकी जरूरत है।

अुसके बाद हिन्दुस्तानकी स्थितिके बारेमें बातें हुअीं। अुन्होंने कहा कि, "हिन्दुस्तान पाकिस्तान अेक हो जाय, यह तो आप जरूर चाहेंगे।" मैंने कहा, "नहीं। हिन्दुस्तान पाकिस्तान अेक राज्य हो या न हो अुसकी मुझे परवाह नहीं। मुझे अेकदिली चाहिये। भारत और पाकिस्तानके अेक राज्य बननेके लिअे मैं प्रयत्न नहीं करूंगा। अितना ही नहीं, परन्तु अैसी प्रार्थना भी नहीं करता। जो अेक बार दे दिया सो दे दिया। अब अगर पाकिस्तानके मुसलमान ही अेकताका विचार करें और अैसा सुझाव मेरे सामने लायें, तो अिस दिशामें मेरा दिमाग काम करेगा। अेकता रखनेके लिअे हम लोगोंने बहुत प्रयत्न किये। वे आपने माने नहीं। अब प्रयत्न करेंगे तो आप कहेंगे कि देखिये, ये लोग पाकिस्तानकी हस्तीके दुश्मन हैं। और आपको अैसी शंका रहेगी तो दिलकी अेकता नहीं होगी।"

भाअी कुरेशीके विदा लेकर जानेसे पहले केनियाकी किकूयू जातिके दो अफ्रीकी नेता — श्री जोमो केन्याटा और श्री पीटर कोयनांगे मुझसे मिलने आये। मैंने अुनसे हमारे बीच हुअे संवादका सार कहा। मेरा सुझाव स्वीकार हो या न हो, परन्तु मुझे अिसका अेक नमूना पेश करनेका संतोष मिला कि तीन महान जातियोंके बीच सम्मानपूर्वक अेकता करनी हो तो किस दिशामें प्रयत्न करना चाहिये। मैंने अपना यह विचार नैरोबीके कअी नेताओंके सामने रखा। और आज तो अितना ही कह सकता हूं कि मैंने अुन्हें विचार करनेमें लगा दिया।

अिसके बाद जोमो केन्याटा और पीटर कोयनांगेके साथ बहुत बातें हुअीं, परन्तु वे सब खास तौर पर शिक्षा और रचनात्मक कार्योंके विषयमें थीं। मैंने अुन्हें अपना चरखा चलाकर दिखाया और अुन्हें भेंट कर दिया। काममें न लेनेके कारण वह जरा भारी चलता था। श्रीमती ताअी अिनामदारने अुसे हलका कर देनेका काम अपने जिम्मे ले लिया। समाज-सेवाके कार्यमें (१) कष्ट-निवारणका काम और (२) समाज-

निर्माणका रचनात्मक काम अिन दोनोंके वीच गांधीजी जो भेद वताते हैं अुसकी भी वात मैंने की।

अफ्रीकामें 'अिन्डिपेन्डेन्ट अफ्रीकन्स' नामक अेक आन्दोलन चल रहा है। अिसे चलानेवाले लोग अफ्रीकी ओसाओ होते हैं। गोरे मिशनरियोंके प्रति कृतज्ञता रखते हुअे भी अुनके विरुद्ध अिन लोगोंकी अेक शिकायत होती है। ये अुन्हें कहते हैं, "हम सब ओसाओ जरूर हैं, परन्तु जब तक हमारे प्रति होनेवाले दो अन्याय आप दूर नहीं करा सकेंगे, तव तक हम अेक जगह बैठकर प्रार्थना कैसे कर सकते हैं?

"अेक तो यह कि चमड़ीके रंगके कारण सफेद और कालेका जो वर्णभेद आपके लोग करते हैं अुसे दूर करा दीजिये; और दूसरा यह कि हमारी सर्वोत्तम अुपजाअू और ठंडी आवहवावाली जमीन गोरे हजम कर वैठे हैं वह हमें वापस दिलाअिये। अितना प्रायश्चित्त कीजिये, तभी हम साथ साथ प्रार्थना कर सकेंगे।"

अफ्रीकाकी भूमिके पुत्रोंके हृदयका यह रुदन गोरे क्यों नहीं समझते होंगे? अन्यायकी वुनियाद पर खड़ी की गअी अुनकी सभ्यता और संस्कृति कहां तक कल्याणकारी सिद्ध होगी? जव जव गोरोंसे मिलनेका मुझे मौका मिला, तभी मैंने अुनसे यह अनुरोध अवश्य किया कि 'हिन्दुस्तानमें अुच्च वर्णके लोगोंने आप जैसी ही जो भूलें की थीं और जिनके वुरे फल हम भोग रहे हैं, अुनका अितिहास आप देखिये और अुससे कुछ सवक लीजिये।"

अप्पासाहवके साथ सारी यात्राका सांस्कृतिक परिणाम जोड़नेके लिअे मैंने अेक दिन विताया। हमारी चिन्ताके तीन चार विषय थे। अफ्रीकामें क्या क्या करना चाहिये अिस सिलसिलेमें; और हिन्दुस्तानमें क्या क्या होना चाहिये अिस विषयमें।

छात्रवृत्तियां लेकर जो अफ्रीकी विद्यार्थी हिन्दुस्तान जाते हैं, अुन्हें अच्छी तरह रास्ता दिखाकर यहांके अच्छेसे अच्छे परिवारोंमें रहनेका अवसर दिलाना, अुन्हें हमारी संस्कृतिका परिचय करानेके प्रसंगोंका प्रवंध करना, रचनात्मक कार्यका स्वरूप और अुसके भीतर जो दृष्टि है अुसे समझानेके लिअे अुन्हें हमारी संस्थाओंमें घुमाना और

हमारे लोगोंको अफ्रीकाकी स्थितिसे वाकिफ करना वगैरा वहुतसी वातें अिसमें आ गअीं। अफ्रीकामें कॉलेज खोलनेकी वात सबसे मुख्य थी। अुसके हरअेक पहलू पर हमने चर्चा की।

हमने यह भी सोचा कि अिस देशमें हम अपनी तरफसे आश्रम खोलने न वैठ जायं। हमारे आश्रम देखकर आये हुअे अफ्रीकी लोग अपने देशके अनुकूल पड़नेवाली आश्रम जैसी संस्थाअें खोलें यही ठीक है। हमें अितनेसे संतोष कर लेना चाहिये कि गांधीजीके विचार और अुनके कार्यक्रम आदि सव वातें यहांके नेता और महत्त्वाकांक्षी युवक जान लें। फिर अिस वातका तो यही लोग निश्चय करें कि यहांके लोगोंको लाभ पहुंचानेके लिअे क्या क्या करना चाहिये। वाहरसे लादी हुअी चीज वोझ वन जाती है। भीतरसे पैदा हुअी चीज ही प्राणदायक होती है। अफ्रीकी लोगोंकी भाषामें साहित्य पैदा करनेके वारेमें भी हमारा यही दृष्टिकोण होना चाहिये। जैसे अंग्रेजी पढ़ाअी द्वारा अफ्रीकियोंको युरोपियन संस्कृतिका परिचय होता है, वैसे ही अेशियाअी संस्कृतिके वारेमें भी अिन्हें ज्ञान होना चाहिये। अभी वह ज्ञान अंग्रेजी द्वारा ही हो सकता है। हमारे देशकी कुछ अच्छी पुस्तकोंका स्वाहिलीमें अनुवाद करा कर अिन लोगोंको अिस चीजका स्वाद चखायें। अिसके वाद अिच्छा हो तो ये लोग भले ही हिन्दी वगैरा भाषाअें सीखें। किसी दिन ये संस्कृत भी सीखेंगे। अभी तो अुनके पास हिन्दी और गुजराती भाषा सीख लेनेकी स्वाभाविक सुविधा है। हम अपनी भाषाका खास तौर पर प्रचार करने न निकलें। परन्तु जिन लोगोंको सीखना हो अुन्हें सिखानेकी तैयारी हमारी संस्थाओंको रखनी चाहिये। हमारे लोग यहां जो अिंडियन अेसोसिअेशन चला रहे हैं, अुसे वदल कर अेशियन अेसोसिअेशन कर दिया जाय, तो हिन्दुस्तान-पाकिस्तानका अलगाव यहां न रहेगा। अरबस्तानके लोग भी हममें शरीक हो सकते हैं। गोआके लोगोंको भी हम खुशीसे ले सकते हैं और कोअी अेकाध चीनी होगा तो वह भी संस्थाके विना नहीं रहेगा। अफ्रीकाकी परिस्थिति अच्छी तरह जान लेनेके लिअे और अपनी सेवाशक्ति वढ़ानेके लिअे हमारे लोगोंका अेक वड़ा

सेक्रेटेरियट यहां होना चाहिये। अुसमें सब प्रकारकी पुस्तकें, मासिकपत्र, रिपोर्टें, जनगणनाके विवरण वगैरा सब कुछ रखा जाय और यहांकी तीनों जातियों सम्बन्धी सवालोंका गहरा अध्ययन करनेवाले कुछ निष्णात तैयार किये जायं।

हमने असकी भी चर्चा की कि पीटर कोयनांगेके हाथों चलनेवाली अनेक पाठशालाओंमें बुनियादी शिक्षा कैसे जारी की जा सकती है। हमारी अिस चर्चामें से क्या क्या अमलमें आता है, और क्या हवामें ही रह जाता है, यह तो भगवान जाने। हमारे देशकी कार्यशक्ति बढ़नी चाहिये और कोअी काम करना चाहता हो तो अुसका विरोध करनेके बजाय अुसे भरसक मदद देनेकी नीति सब धारण कर लें, तो ही हमारा देश दूसरे देशोंकी पंक्तिमें खड़ा रह सकेगा और विदेशोंमें वहांके लोगोंकी सेवा करनेमें समर्थ होगा।

२३ जुलाअीको डॉ० कारमन नामक अेक बड़े मशहूर डॉक्टर मिलने आये। क्लोरोफार्म आदि दवाअें सफल ढंगसे देनेमें अिस आदमीकी ख्याति विशेष है। अुनके साथ अढ़ाअी घंटे बातें हुअीं। युद्धविरोधी शांतिवाद, साम्यवाद, गरीबोंको होनेवाली तकलीफ, अंग्रेजोंका अफ्रीकामें मिशन वगैरा अनेक विषयों पर हमने चर्चा की। आदमी बहुत ही सज्जन हैं, परन्तु बाअिबलके अक्षरार्थसे चिपटे रहनेवाले हैं। अीसाअी लोगोंकी जो अेक यह भविष्यवाणी है कि अीसा मसीह फिर अिस दुनियामें आयेंगे और सारी पृथ्वीके राजा बनकर सर्वत्र शांति और बंधुता फैलायेंगे, अिसमें अुनका बड़ा विश्वास है। चर्चामें अपनी दृष्टि क्षणभरके लिअे भी अलग रखनेकी अुनकी तैयारी नहीं थी।

अिसी दिन अेक महाराष्ट्र परिवारके साथ भोजन करने गया। वहां भी लोगोंने भाषाका प्रश्न छेड़ा। हिन्दीके बजाय मैं गुजरातीका अितना पुरस्कार क्यों करता हूं, अिस बारेमें मुझसे पूछा गया। मैंने दुबारा समझाया कि हिन्दीका प्रचार तो मैं करता ही हूं। परन्तु यहांके हिन्दुस्तानियोंमें ८० फीसदी लोगोंकी जन्मभाषा गुजराती है। अुसी भाषाके द्वारा यहांका विविध-धर्मी सामाजिक जीवन बगैर झगड़ेके विकसित किया जा सकता है।

अनेक मिशनों द्वारा मिलकर अफ्रीकियोंके लिअे चलनेवाला अेक अलायन्स हाअीस्कूल हम देख आये। अिसे सरकारकी तरफसे सहायता मिलती है। हर विद्यार्थी पर साठ पाअुण्ड वार्षिक खर्च आता है। अिसमें सब कुछ आ जाता है। अिस स्कूलकी विशेषता यह थी कि यहांके विद्यार्थी अंग्रेजी संगीत तो सीखते ही थे, परन्तु अुन्होंने शुद्ध अफ्रीकी संगीतके कुछ राग शामिल करके अैसा सुन्दर संगीत तैयार किया है कि अुसमें युरोपीय संगीतकी सारी भव्यता आ गअी है। और फिर भी वह अफ्रीकी गूढ़ भाव अच्छी तरहसे व्यक्त कर सकता है। दो संस्कृतियोंके समन्वयका यह असर देखकर मुझे मदुराका तिरुमल नाअीकका राजमहल याद आ गया, जिसमें हिन्दू, अिस्लामी और अीसाअी तीनों स्थापत्योंका अच्छा मेल हुआ है। स्वाभिमान और आत्मीयता नष्ट किये बिना जब अेक संस्कृति दूसरी संस्कृति पर असर डालती है, तभी अैसे सुन्दर परिणाम पैदा होते हैं। अैसे अनोखे प्रयोग करनेके लिअे मैंने अिन अफ्रीकी गायकोंकी प्रशंसा की और अिस प्रयोगको अुत्साहके साथ आगे बढ़ानेका सुझाव दिया।

अुसी रातको अिंडियन जिमखानेमें भोज था। यहां जातिपांति और धर्मके भेदके बिना लोग सदस्य बनते हैं और जिमखाना ही होनेके कारण अैश-आराम करते हैं। हर जगह जातीय संगठनोंसे घबराये हुअे हम यहां खुश हुअे और खुलकर बोले। कमलनयनका यहांका भाषण विनोदपूर्ण आलोचनाका था। वह सभीको पसन्द आया।

दूसरे दिन हम जीन स्कूल देख आये। केवेटेवाली सरकारी संस्थासे अिसका संबंध है। प्रिंसिपाल मि० अेस्क्विथ अफ्रीकी लोगोंके प्रति सद्भाव रखते हैं। अफ्रीकी जीवनका अुन्होंने गहरा अध्ययन किया है। हमने संस्थाकी सारी व्यवस्था देखी। बहुत कम संस्थाओंमें अितनी सुन्दर व्यवस्था और अितनी सुविधाअें होती हैं। अपनी ही मोटरबस रखकर विद्यार्थियोंको अनेक प्रवृत्तियां बताने ले जाते हैं। अिस संस्थाकी विशेषता यह है कि अफ्रीकी लोगोंके नेता, अुनकी पत्नियां और अुनके बालक यहां शिक्षा पाते हैं। कुटुम्बीजनसे अलग हुअे बिना यहां शिक्षा पाते हैं, अिसलिअे यहां होनेवाला जीवन-परिवर्तन सदाके लिअे टिकता है।

प्रिंसिपाल अेस्क्विथ धुरंधर विद्वान और समाजशास्त्रके विद्यार्थी होनेके कारण अुनके साथ चर्चा करनेमें बड़ा आनन्द आया। अफ्रीकी भाषाओंके विकासके बारेमें और अंग्रेजीके बजाय स्वाहिलीके ज़रिये कब पढ़ाया जा सकता है, अिस बारेमें बहुतसी बातें हुआीं।

युरोपियन लोगों द्वारा संचालित अैसी संस्थाअें देखनेके बाद यह विचार मनमें आये बिना नहीं रहता कि हमारे लोग अपने ही बालकोंके लिअे भी अैसी व्यवस्था क्यों नहीं करते।

आर्यसमाजी लोगोंका शिक्षा-संबंधी अुत्साह प्रशंसनीय होता है। आगाखानी संस्थाओंमें कअी जगह युरोपियन शिक्षकों और व्यवस्थापकोंको रखा जाता है। और अिससे कुछ व्यवस्था, टीमटाम और दक्षता आ ही जाती है। फिर भी कहना पड़ता है कि भारतीय संस्थाओंके व्यवस्थापकोंकी दृष्टि संकुचित और अुनका हस्तक्षेप बाधक होनेके कारण जितनी होनी चाहिये अुतनी प्रगति नहीं होती। शिक्षक जब जब दिल खोलकर बातें करते हैं, तब सारी परिस्थिति ध्यानमें आती है। और फिर यह कहे बिना नहीं रहा जाता कि 'हमीं अपनी शिक्षाके शत्रु हैं।'

आर्यसमाजका रवैया कैसा होना चाहिये, अिस बारेमें आर्यकन्या पाठशालामें खास बातें कीं। क्योंकि वहांके शिक्षक और व्यवस्थापक अैसे थे, जो अिस सारी वस्तुको ग्रहण कर सकते थे। अुसी दिन हम स्थानिक आगाखानी कन्या-पाठशालामें गये। लड़कियोंने हमारे देखते देखते कुछ सुन्दर वानगियां तैयार कीं और हमें खिलाअीं। ड्रिल, कवायद, संगीत वगैरा सारे काम और वर्ग विस्तारपूर्वक बताये। और खूबी यह कि अुन्होंने हममें से किसीसे भाषण देनेका आग्रह नहीं किया! यहांकी मॉण्टेसोरी पद्धतिवाली छोटीसी शिशुशाला बड़ी आकर्षक थी।

नैरोबीके जिस महाराष्ट्र मण्डलके मकानकी नींव मैंने रखी थी, अुसकी अिमारत अब लगभग पूरी होने आयी। यह यहांके महाराष्ट्रियोंकी कार्य-कुशलताकी अच्छी निशानी थी।

अुसी स्थानके पीछे श्री शिवाभाअी अमीन रहते थे। मुझे अुनसे फुरसतसे मिलना था, क्योंकि पूर्व अफ्रीकाकी तरफ मेरा ध्यान पहले-पहल

खींचनेवाले वही थे। शुरूके दिनोंमें हमारे लोगोंका पथप्रदर्शन करनेका काम और अुनके पक्षमें अखबारोंमें लिखनेका काम शिवाभाअीने ही किया था। तारीख २७ को अुनके यहां खानेका निमंत्रण स्वीकार किया। हमें वहुतसी वातें करनी थीं, परन्तु दोनों स्वभावसे ठहरे हिन्दू। अेक युरोपियन महिला अुनके घर पर मेहमान वनकर आअी हुअी थीं। वे वीमारीकी कमजोरी मिटा रही थीं। हमने अुन्हींके साथ वातें करनेमें वक्त विता दिया। अुनके कुशल शिक्षाशास्त्री और मानसशास्त्री होनेके कारण वातें जम गअीं और हमें जो आपसमें विचार-विनिमय करना था सो रह ही गया। अुन्होंने हमें अितनी चेतावनी दी कि पूर्व अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके मनमें शिक्षाका महत्त्व जम तो गया है, परन्तु अभी अिस मुल्कमें आर्थिक मंदी है। साधारण आदमी खुले हाथों रुपया नहीं दे सकता।

जैसे विक्टोरिया सरोवरके किनारे पर स्थित किसुमु देखना रह ही गया, अुसी प्रकार हमें डर था कि रिफ्ट वेलीमें स्थित नकुरु भी रह जायगा। परन्तु हमारा हवाअी जहाज हमें पहली अगस्तसे पहले नहीं ले जा सकता था। अिसलिअे आखिरी दिनोंमें २९ जुलाअीको हम तात्याके साथ नकुरु हो आये। कोअी मनुष्य अफ्रीका जाय और यह रिफ्ट वेली न देखे, तो कहा जायगा कि अुसने वहुत कुछ खो दिया। नैरोवीसे हम दो अढ़ाअी हजार फुट अुतर कर रिफ्ट वेलीमें पहुंचे। अेक वार नीचे अुतरनेके वाद सारा रास्ता सीधा सपाट है। अितनी वड़ी लम्वी-चौड़ी घाटीमें सुन्दरसे सुन्दर रास्तेसे गुजरना ही अेक आनन्दका विषय था। आसपासकी पहाड़ियोंके सिर पर अनेक ज्वालामुख — द्रोण थे। ज्वालामुख पहचाननेकी कला हमारे हाथमें — या असलमें आंखोंमें — आ गअी थी। रास्तेमें अेकके बाद अेक हमने तीन सरोवर देखे — नैवाशा, गिलगिल और नकुरु। चमकते हुअे पानीका प्रसन्न वदन किसी भी मनुष्यको (और पशुपक्षियोंको भी) अवश्य प्रसन्न करता है। सपाट भूमि पर स्थित ये सरोवर देखते-देखते अपना संकोच भी कर सकते हैं और विस्तार भी कर सकते हैं। जब संकोच करते हैं तव अुनका खुला हुआ पेंदा अध्ययन करनेवालोंके लिअे वड़ा आकर्षक होता है। लोभी मनुष्य वहांसे तरह-तरहके क्षार भी

ले सकता है। नैवाशाके वारेमें दूसरी आकर्षक बात यह थी कि अफ्रीका और युरोपके बीच आने-जानेवाले समुद्री विमान यहींसे रवाना होते हैं।

समुद्री विमान जमीन पर पैर नहीं रखते। अिस तालाव जैसे पानीके विस्तार ही अुनके लिअे अड्डेका काम देते हैं। पानीमें तैरते-तैरते पंख फड़ फड़ाकर अुड़ जानेवाले वतख, वगुले और हंस या राजहंसकी जातिके ये समुद्री विमान देखनेमें वड़ा मजा आता है। चढ़ते हैं तव नहाकर निकले हुअे प्राणियोंकी तरह पानीके रेले नीचे छोड़ते हैं। परन्तु जब अूपरसे आकर पानी पर अुतरते हैं, तव शांत पानीको अैसा विलोते हैं कि मछलियोंको लगता होगा कि यह क्या आफत आ गअी?

नकुरुमें हम श्री मगनलाल ठाकरके यहां पहुंचे। वक्त थोड़ा होने पर भी हमें दो जगह थोड़ा-थोड़ा खाना ही पड़ा। सिक्ख गुरुद्वारेमें सभा की गअी। अुसमें थोड़ेसे गोअन भाअी भी थे। अुनका नाम आगे करके लोगोंने मुझसे अंग्रेजी भाषणकी मांग की। मैं पहले हिन्दीमें वोला, वादमें अंग्रेजीमें। सब जगहोंकी तरह यहां भी हमारे लोगोंमें दो दल हैं। विशेषता अितनी ही थी कि अिन्होंने अिन दलोंके लिअे अद्यतन नाम रखे हैं — अेक पूंजीपतियोंका दल और दूसरा मजदूरोंका दल। मैं नहीं मानता कि पूंजीपति दलमें सभी लक्षाधीश हैं। मजदूर दलमें थोड़े भी अगर हाथसे काम करते होंगे तो मैं अुन्हें वधाअी दूंगा।

वापस घर पहुंचनेमें रातके पौने नौ वज गये। फिर भी श्री गुलावभाअी देसाअी और ललिताबहनका आतिथ्य स्वीकार करना वाकी ही था। खाते-खाते भगिनी समाजके वारेमें थोड़ी-सी वातें कीं। श्री कुरेशीके साथ हुअी चर्चाका सार डॉ० अडालजासे कहा। और अुन्होंने भी कहा कि आपका सुझाव अत्यंत व्यावहारिक होने पर भी मुझे आशा नहीं कि अुस पर आज अमल हो सकता है।

श्री तात्या अिनामदार और अुनके कुटुम्बके साथ हम अितने दिन रहे, परन्तु अुनके साथ अेकाव दिन फुरसतसे वितानेकी भूख रह ही गअी थी। अिसलिअे सार्वजनिक कामोंसे पूरी छुट्टी लेकर रविवारके दिन हम "चौदह प्रपातों" वाली जगह गोठ करने चल दिये। विनयकुमार

(भाअू) हमारे साथ नहीं आ सके। तात्याके कुटुम्बके बाकी सब लोगोंके साथ हम रवाना हुअे। श्री सूर्यकान्त पटेल और अुनकी पत्नी भारती भी साथ थीं। घरसे बयालीस मील दूर यह स्थान है। थीकासे चौदह मील है। वहींकी अेक नदी यहां चट्टानके अर्धचन्द्रमें १४ धाराओंमें कूदती है और आसपासके प्रदेशके लोगोंको विनोद करनेका आमंत्रण देती है। थीका और चनिया — ये दो नदियां अितनी छोटी हैं कि हमारे यहां अुन्हें नदीका नाम शायद ही कोअी दे। चौदह प्रपातोंके स्थान पर हमें बहुत शांति मिली। हम नीचे अुतरे, अूपर चढ़े, अनेक चट्टानें पार कीं, फोटो लिये, पेटभर खाया, बे-सिर-पैरकी बातें कीं और वहां नहीं रहा जा सकता था अिसीलिअे अन्तमें लौट आये।

पूर्व अफ्रीकाकी सारी यात्रामें जो चीज मुझे सबसे आकर्षक और महत्त्वपूर्ण लगी, वह थी पीटर कोयनांगेके घरमें अुनके पिता और दूसरे कुटुम्बियोंकी मुलाकात और गिथुंगुरी तथा अन्य अेक स्थान पर पीटरकी तरफसे खोली हुअी पाठशालाओंका अवलोकन। गिथुंगुरीका अवलोकन केवल अेक पाठशालाका अवलोकन नहीं था। परन्तु अफ्रीकी समाजके समस्त जीवनका, अुसके भूत, वर्तमान और भविष्यका अेक शुद्ध दर्शन था। श्री पीटर कोयनांगे, अुनके वृद्ध पिता, अुनके साथी लोकनेता जोमो केन्याटा और दूसरे बहुतसे अफ्रीकी वृद्ध और युवक यहां अिकट्ठे हुअे थे। अनेक पाठशालाओंके विद्यार्थियोंके विशाल समूहके बीच हमने तरह-तरहके अफ्रीकी नृत्य देखे। हरअेक जातिके छात्र अपने अलग-अलग नृत्य दिखाते, चाहे जब अलग हो जाते, अव्यवस्थित रूपमें घूमते फिरते बातें करने लग जाते और देखते देखते किसी कप्तानके हुक्मके बिना सुन्दर रचनामें गुंथ जाते। कुछ विद्यार्थी किकूयू जातिके थे। कुछ कुंबा जातिके थे। बाकी जातियोंकी संख्या कम थी। अिन सब नर्तकोंने अपनी प्राचीन संस्कृतिकी प्रणालीके अनुसार चित्र-विचित्र पोशाकें पहन रखी थीं। तरह-तरहकी छापोंसे मुंह रंगे थे। घुटनों पर टीनके डब्बोंमें कंकर डालकर बनाये हुअे घुंघरू बंधे हुअे थे। ठेका लगाकर नाचते तब घुंघरूका मन पर बड़ा असर होता था। अिस सारे नाचका नशा अितना चढ़ा कि हम सब अपने-

अपने आसन छोड़कर अुनके बीच जा खड़े हो गये। तात्याकी अुपा और लता स्त्रियोंके बीचमें शरीक होकर खुद भी नाचने लगीं!

आखिरी नाच वृद्धाओंका था। नियमानुसार जिनकी ६० बरससे कम अुमर हो, वे अिसमें सम्मिलित नहीं हो सकती थीं। अिन सब बहनोंने पुराने ढंगकी रंग-बिरंगी पोशाकें पहनी थीं। तरह-तरहकी पींछियां बांधी थीं। अुस्तरेसे सिर साफ करके तेल लगाकर चमकदार बनाये थे। गलेके हार छाती पर ही नहीं परन्तु पीठ पर भी लटक रहे थे। कमर पर आगे और पीछे कोलोबसके चमड़े बांधे थे। यह नृत्य प्रार्थना-नृत्य था। वृद्धाओंके नृत्यका अेक नियम यह था कि वे किसी भी तरह नाचें, परन्तु पैरका अंगूठा जमीनसे लगा ही रहना चाहिये। (मुझे तुरन्त याद आया कि हमारे यहांके सितार बजानेवाले खानदानी लोग हाथका अंगूठा सितारसे लगा हुआ ही रखते हैं।) अेक वृद्धाकी अुम्र नव्वे सालसे ज्यादा थी। परन्तु नाचनेमें अुसका अुत्साह जरा भी कम नहीं था। अिन लोगोंका अेक नियम बड़ा मजेदार लगा। अगर किसी लड़कीकी किसी बूढ़ेसे शादी हुअी हो, तो अुसकी अुम्र कम होने पर भी अुसे अिस वृद्धाओंके नृत्यमें भाग लेनेकी प्रतिष्ठा मिलती है! नृत्यमें भाग लेनेवाली बुढ़ियाओंमें अैसी कोअी 'वृद्ध युवती' है या नहीं, यह हमने नहीं पूछा। हमींको लगा कि अैसा पूछना असभ्यता होगी।

अिन तमाम राष्ट्रीय नृत्योंके अन्तमें दो वृक्ष लगानेकी धर्मविधि हुअी। अुस विधिका हमारे मन पर गहरा असर हुआ। खुले मैदानमें छोटे-छोटे पत्थर जमाकर अेक तरफ अफ्रीका महाद्वीपकी अेक मोटी आकृति बनाअी गअी थी और थोड़े अन्तर पर अुचित दिशामें अैसे ही पत्थरोंसे हिन्दुस्तानका नकशा खींचा गया था। हिन्दुस्तानसे आये हुअे दो मेहमानोंके हाथों अिन दो आकृतियोंके भीतर दो धर्मवृक्ष ('सेरिमोनियल ट्रीज') बोये जानेवाले थे। यह सारी कल्पना देखकर मैं गद्गद हो गया। अफ्रीकाकी आकृतिमें पेड़ बोनेका काम मेरे हिस्से आया। हिन्दुस्तानके नकशेमें कमलनयनने बोया। अफ्रीकाके नेताओंने कहा कि, "दोनों देशोंके बीच सौहार्द्र और शांति रहे, अिसके ये दो वृक्ष

द्योतक हैं। हम अिन वृक्षोंको अुत्साह और लगनसे बढ़ायेंगे, क्योंकि ये वृक्ष महात्मा गांधीके साथ रहे हुअे लोगोंके हाथसे बोये जा रहे हैं।" यह विधि पूरी होनेके बाद मैं जो कुछ बोला, अुसके अेक-अेक वाक्यका अनुवाद स्वयं श्री जोमो केन्याटाने किया। अपनी जातिमें वे बड़े वक्ता माने जाते हैं। अुन्होंने हमारी बातें थोड़ा विस्तार करके लोगोंको समझायीं। अपनी पसन्दका वाक्य आता, तो वृद्धायें अपने गाल बजाकर 'हुलुलू' शब्द करतीं। जो लोग पूर्वी भारतमें घूमे हों अुन्हें 'हुलुलू' जयध्वनिके बारेमें विस्तारसे कहनेकी जरूरत नहीं। मैंने अन्तमें जब अुन वृद्धाओंसे हिन्दुस्तान और अफ्रीकाके बीचकी हार्दिक अेकताके लिअे अुनके आशीर्वादकी याचना की, तब अुन्होंने बहुत ही अुत्साहसे मिनिट दो मिनिट चलनेवाला लम्बा 'हुलुलू' शब्द किया। यह प्रसंग कभी भी नहीं भुलाया जा सकता।

अिसी स्थान पर कमलनयनने अपने भाषणके अन्तमें 'जय अफ्रीका' का नया जयघोष शुरू किया, जिसे वहांके जवान-बूढ़े, स्त्री-पुरुष, सबने अुत्साहके साथ अपना लिया। यह जयघोष अिस महाद्वीपमें चल पड़े, तो वह गांधीजीके विश्वप्रेमी अहिंसा-धर्मका प्रतीक होगा।

गिथुंगुरीके अिस अनुभवसे हम अितने अधिक प्रभावित हुअे कि हमने श्री पीटर कोयनांगेसे अुनकी कोअी और पाठशाला चलती हुअी देखनेकी मांग की। तदनुसार हम २७ ता० को रवाना हुअे। पीटर खुद हमें साथ ले गये। यहां लड़के-लड़की साथ पढ़ते थे। कुल मिलाकर १०३० विद्यार्थी पढ़ते थे। हमने कअी कक्षाओंमें जाकर अुनका काम देखा। यहां भी सभी विद्यार्थियोंके अक्षर अच्छे थे। व्याख्यान सुननेके लिअे जब विद्यार्थियोंको सामने बैठाया गया, तब मैंने मांग की कि जो लड़कियां पीछे बैठी हैं वे सामने आ जायं। अवश्य ही यह बात लड़कियोंको खूब पसन्द आअी। जो लड़के पुराने ढंगके कपड़े पहनकर नाच रहे थे, वे भी तुरन्त शर्ट और हाफपेन्ट पहनकर और सिरके बाल ठीक करके सामने आकर खड़े हो गये और अंग्रेजीमें जवाब देने लगे, तब मुझे अिस बातका खयाल आया कि अिन लोगोंने दो युगोंके बीचका अन्तर कितनी जल्दी काट दिया

है। बढ़अी-कामकी कक्षा चलानेवाले भाअीका परिचय कराते हुअे श्री पीटरने कहा कि, 'ये भाअी हमारे बढ़अी भी हैं, राज भी हैं, और धर्मोपदेशक ('प्रीस्ट') भी हैं।' मेहनत-मजदूरी करनेवाले अिस पादरीको देखकर मुझे सेन्ट पॉलका स्मरण हो आया।

अिस स्थान पर अफ्रीकी लोगोंको संबोधन करके मैंने कहा कि 'अन्न, वस्त्र और घर मनुष्यकी मुख्य आवश्यकताओंमें से अन्न और घरके मामलेमें आप स्वावलम्बी हैं। जब आप अपने कमाये हुअे वल्कल और चमड़े पहनकर फिरते थे, तब आप स्वावलम्बी यानी सुधरे हुअे थे। आज अच्छीसे अच्छी रुअी पैदा करके भी आप कपड़ेके मामलेमें परावलम्बी हैं, यह दयाजनक स्थिति है। आप जिस दिन चरखा चलाकर हाथके करघेसे कपड़ा तैयार कर लेंगे अुस दिन स्वावलम्बी हो जायेंगे। अैसा हो जायगा तो हम अपने देशका अेक बड़ा ग्राहक जरूर खो बैठेंगे। परन्तु अपंग पड़ोसीसे व्यापार करके धनवान बननेके बजाय स्वावलम्बी और समर्थ पड़ोसीके साथ दोस्ती पैदा करना दोनोंके लिअे श्रेयस्कर है।' अपने पासका चरखा अुन्हें दे देनेकी बात मैंने यहीं की, जिसका महत्त्व पीटर कोयनांगेने विद्यार्थियों और शिक्षकोंको विस्तारपूर्वक समझाया।

श्री पीटर अपनी ये दो और अैसी दूसरी बहुतसी पाठशालाअें किसी सरकारी मददके बगैर चला रहे हैं। अुनकी कार्यपद्धतिका नमूना नीचे लिखे किस्सेसे ध्यानमें आ जायगा।

अेक जगह भाअी पीटर पाठशालाके लिअे चन्दा कर रहे थे। वहां अुपस्थित अेक देहाती बुढ़ियाके पास देनेको कुछ नहीं था। अिसलिअे अुसने आगे आकर अनाजकी अेक फली चन्देमें दी। पीटरने अुसकी अिस भावनाका आदर करके वहीं अुस फलीको नीलाम किया। (बापूजीकी यह कला अिस देशमें भी पैदा हो गअी!) नीलाममें अेक भाअीने अच्छी रकम देकर वह फली खरीद ली! परन्तु खूबी तो अुसके बादकी है। श्री पीटरने अिस रकमकी रसीद अुस भाअीके नाम पर नहीं, परन्तु बुढ़ियाके नाम पर दी! और सभामें ही

अुन्होंने अुससे कहा कि, 'अव तुम्हें हमारी संस्थाका हिसाव जव चाहो आकर देखनेका अधिकार है।'

यहांसे हम श्री जोमो केन्याटाका घर देखने गये। अुनके पास वहुत जमीन है। पास ही अुनके ससुरकी भी जमीन है। कोलोवस नामक अेक किस्मके काले और लम्वे वालोंवाले वन्दर होते हैं। अुनके कमाये हुअे चमड़े घरमें जमीन पर विछे हुअे थे। अुनमें से अेक वढ़िया चमड़ा अुन्होंने मुझे भेंट किया। अेक वार अिस प्रदेशमें अफ्रीकी लोगोंने क्रोधमें आकर दो युरोपियनों और पुलिसवालोंको मारा था। अिसका वड़ा काण्ड हो गया था। अुसी स्थान पर लोगोंके लगाये हुअे दो वृक्ष हमें वताये गये।

अफ्रीकी लोगोंके साथ अिस प्रकारकी दोस्ती और माननीय माथूके यहां अफ्रीकी युवकोंके साथ हुअी मुलाकात मेरे खयालसे पूर्व अफ्रीकाकी यात्राकी अधिकसे अधिक हार्दिक आनन्द देनेवाली घटनायें हैं। किलिमांजारोकी गोदमें मुखिया पेट्रोके यहां गये थे, वह प्रसंग भी मैं अुतने ही महत्त्वका मानता हूं।

नैरोवीके दस दिनके अनुभवोंकी कितनी ही वातें मैंने जान-वूझकर छोड़ दी हैं। भाअी जाल द्वारा हमारे सम्मानमें दिया गया विना शरावका खाना, 'फ्रेण्ड्स सर्कल' (मित्र-मंडल) में हुआ वार्तालाप, श्रीमान और श्रीमती कौलके यहां चखी हुअी काश्मीरी वानगियां, अरुशावाले नरसी-भाअीके साथ हुअी चर्चाअें वगैरा अनेक मीठे प्रसंग मैंने छोड़ दिये हैं। अलवत्ता, भाअी जालके दिये हुअे भोजके समयके नृत्योंकी सुन्दर कलाके वारेमें वहुत कुछ लिखा जा सकता है। जानेका दिन ज्यों-ज्यों नजदीक आने लगा, त्यों-त्यों हमें अैसा ही लगने लगा कि मानो वह सजाका दिन आ रहा है। किसी दिन यमुनाताअीका गांधी-अलवम देखा करता, तो किसी दिन तात्याके कुटुम्वीजनोंके साथ कांगोके तोते किसुकूके साथ फोटो खिचवाता, किसी दिन सूर्यकान्त और अुनके डॉक्टर भाअीके साथ तरह तरहकी वातें करता। भाअी वहेरामजीके साथ अुनका समाज-सेवाका काम देख आता, अदीस-अवावाकी ठंडसे

डरकर थोड़े गर्म कपड़े खरीद लेता। अिस तरह करते करते जानेका दिन अनिवार्य रूपमें आ ही गया। मन अुदास हो गया, खुशमिजाज अप्पासाहब भी गमगीन दिखाअी देने लगे। अिस प्रकार जुलाअीका महीना बिदा लेकर चला गया और पहली अगस्तका अुदय हुआ।

जिस हवाअी अड्डेके नजदीक रेडियो पर मैं अेक भाषण दे आया था, अुसीसे हमें रवाना होना था। सवेरे जल्दी अुठकर हम तैयार हुअे। हमें कल्पना नहीं थी कि हवाअी अड्डे पर अितने अधिक लोग जमा होंगे। सिर्फ नैरोबीके ही नहीं परन्तु कंपालाके भी कुछ भाअी अचानक आ पहुंचे थे। हरअेक यात्रीके भाग्यमें बिदाअीकी घटनायें होती ही हैं। नये स्थान पर नये मित्र और नये अनुभव मिलनेकी अुत्सुकतामें बिदाअीका दुःख अिन्सान भूल जाता है। आज अैसा नहीं हुआ।

जब हम पहले-पहल नैरोबी पहुंचे थे, तब हिन्दुस्तानसे आये हुअे मेहमानके तौर पर हमारे सम्मानमें बहुत लोग स्टेशन पर जमा हुअे थे। आज जब हम नैरोबी छोड़कर जा रहे थे, तब अुससे भी अधिक लोग हवाअी अड्डे पर अेकत्रित हुअे। परन्तु आदर करनेकी भावनासे नहीं बल्कि प्रेमके आकर्षणसे। कितने ही लोग हमारे स्थायी मित्र जैसे बन गये थे। कितने ही कुटुम्बोंमें हम स्वजन जैसे हो गये थे। सवेरे ७ से ८ बजे तकका सारा समय बिदाअीकी बातें करने और अलग-अलग टोलियोंके फोटो लेनेमें ही हमने बिताया। कअी लोगोंने प्रेमके चिह्नस्वरूप हमें फूल और फोटो दिये, परन्तु अडालजा दम्पतीने मुझे 'दि अकिकूयू' नामक कीमती पुस्तक भेंट की। पीटर कोयनांगे, जोमो केन्याटा वगैरा पूर्व अफ्रीकाके नेता अिसी किकूयू वंशके हैं। कैथोलिक मिशनरियोंकी तरफसे लिखी गअी अिस पुस्तकमें अिस जातिका जीवन सुन्दर रूपमें प्रतिबिंबित हुआ है और चित्र अितने ज्यादा हैं कि सारा जीवन प्रत्यक्ष होते देर नहीं लगती। अिन लोगोंके घरोंमें जाकर हमने जो कुछ आंखोंसे देखा, अुसका असर सबसे ज्यादा था। अुनकी पाठशालाओं और अुनके म्यूजियमोंमें हम जो देख सके, वह अुसमें मूल्यवान वृद्धि थी; और अुसमें जो कुछ कमी रह गअी

होगी, वह अिस पुस्तक द्वारा पूरी हो जाती थी। हमारी यात्राकी सफलता चाहनेके लिअे अिससे अधिक सुन्दर भेंट क्या हो सकती थी?

'पुनरागमनाय च' कहकर भारी हृदयके साथ हमने पूर्व अफ्रीकासे विदा ली।

३८

जूड़ा केसरीके देशमें

अगर हम मिस्र गये होते तो रास्तेमें अिथियोपियाकी राजधानी अदीस-अवावा (नवपुष्प) जाना क्रमप्राप्त था। मिस्र जाना मौकूफ करनेके वाद अदीस-अवावा जानेका विशेष प्रयोजन नहीं था। परन्तु कमलनयनकी अिच्छा थी कि हम वहां होकर जायं।

सारे अफ्रीका महाद्वीपमें युरोपियन लोगोंका ही राज्य या अधिराज्य है। सिर्फ अिथियोपिया या अेबिसिनिया ही अुसमें अपवाद है। यहांका राजा या वादशाह धर्मसे ओसाओ है अिस कारण हो या यहांका मुल्क पहाड़ी और दुर्गम होनेसे फौज या व्यापार यहां तक ले जानेमें कठिनाओ होगी अिस कारण हो, परन्तु यह राज्य स्वतंत्र जरूर रह गया। बीचमें अिटलीकी नियत बिगड़ी। अुसने १९३५ के अरसेमें अिथियोपिया पर चढ़ाओ की और यह देश जीत लिया। वहांके सम्राटको स्वदेश छोड़कर अिंग्लैंड जाकर रहना पड़ा। युरोपका दूसरा महायुद्ध शुरू होते ही अिंग्लैंडने अिटलीको हराकर अिथियो-पियाका राज्य वहांके वादशाहको लौटा दिया और अपनी राजनीतिके अनुसार अुसके हर विभागमें अेक अेक ब्रिटिश सलाहकार नियुक्त कर दिया। बादशाहने यह व्यवस्था तीन वर्ष तक निभाओ। अुसके बाद अुसने हरअेक महकमेके लिअे युरोप और अमरीका दोनों खंडके अलग अलग देशोंके गोरोंको सलाहकारके तौर पर मुकर्रर कर दिया है। अिस प्रकार अुसे पश्चिमके होशियार आदमियोंकी सलाह भी मिलती है और किसी अेक देशके प्रभावमें अुसका राज्य आता भी नहीं। अिथियो-

पियामें वहांके बादशाहने रूसियोंको अलग नहीं रखा, अिस पर अंग्रेज अुस पर नाराज रहते हैं। परन्तु आजकी स्थितिमें कुछ कर नहीं सकते। अिथियोपियाके बादशाह हाअिले सेलासी शिक्षाको अितना ज्यादा महत्त्व देते हैं कि अुन्होंने यह विभाग खास तौर पर अपने ही अधीन रखा है। अिस विभागमें विदेशियोंकी मदद काफी मात्रामें ली जाती है। अुसमें हिन्दुस्तानी शिक्षकोंकी संख्या खासी है।

अिथियोपिया देश अितना पिछड़ा हुआ है कि सारे देशमें अेक भी कॉलेज नहीं है। अदीस-अबाबामें बादशाहकी तरफसे अपने खर्च पर अेक हाअीस्कूल चलाया जा रहा है। दूसरे दो-चार शहरोंमें छोटे-छोटे हाअीस्कूल हैं। शिक्षा वहांकी आम्हारिक भाषा और अंग्रेजीके द्वारा दी जाती है। मैंने मान रखा था कि आम्हारिक भाषाके लिअे अुर्दू जैसी ही कोअी लिपि होगी। परन्तु आम्हारिक लिपि नागरी या रोमनकी तरह बाअीं ओरसे दाअीं ओर लिखी जाती है।

तमाम अफ्रीका महाद्वीपमें अिथियोपिया ही अेक स्वतंत्र देश होनेके कारण मैं मानता था कि अफ्रीकी लोगोंमें जो स्वतंत्रताकी भूख जगी है और गोरोंका जुआ अुतार फेंकनेकी जो तमन्ना कुछ अफ्रीकी लोगोंके दिलोंमें है, अुसका नेतृत्व प्रगट या गुप्त रूपमें अिथियोपियन लोग करते होंगे। परन्तु अिस देशमें प्रत्यक्ष पहुंचनेके बाद अैसा कुछ महसूस नहीं हुआ। अिथियोपियन लोग अपने ही सवालोंके नीचे दब गये हैं। शायद पूर्व-पश्चिम या दक्षिण अफ्रीकाके लोगोंके साथ अिथियोपियन लोगोंके वंशका मेल भी न हो। जब मिस्र जाअूंगा और वहांके हालातकी जांच करूंगा, तब अिस सवाल पर अधिक प्रकाश पड़ेगा।

अिथियोपियाका मौजूदा राज्य ३५,००० वर्गमीलका है। और जनसंख्या पौन करोड़से जरा ज्यादा है। अिस हिसाबसे प्रति वर्गमील आबादीका अनुपात बाअीस भी नहीं है। फिर भी यहांकी सरकार बाहरके लोगोंको अपने राज्यमें आकर बसने देनेको रजामंद नहीं है। युरोपियन लोगोंने दुनियामें जहां तहां जिस प्रकार पैर फैलाये हैं, अुसे देखते हुअे सभी लोगोंका दूसरे देशोंके प्रति सशंक रहना आश्चर्यकी बात नहीं है।

अिटालियन लोगोंके अिथियोपिया जीतनेसे पहले अिस देशमें हमारे हिन्दुस्तानी लोगोंकी संख्या लगभग चार हजार थी। अिटालियन लोगोंने अिन सबको यहांसे निकाल दिया। आज अिस देशमें हमारे लोगोंकी तादाद पांच सौसे ज्यादा नहीं। अिनमें से साढ़े तीन सौ तो अदीस-अबाबामें ही रहते हैं। अिनमें ज्यादातर गुजरात-काठियावाड़की तरफके हिन्दू-मुसलमान ही हैं। शिक्षकोंमें कुछ महाराष्ट्री हैं, जब कि अधिकांश गोआ या कोचीनके किरिस्तांव (अीसाअी) हैं। कुल मिलाकर सत्तरसे ज्यादा नहीं हैं। यहांका साठसे सत्तर फीसदी व्यापार हमारे लोगोंके हाथमें है। हां, अुद्योगमें गोरोंका अनुपात अधिक है। यहांकी सरकार बहुत चाहती है कि हिन्दुस्तानी लोग अपनी पूंजी लगाकर अिथियोपियाकी खेतीवाड़ी, अुसका व्यापार और अुसके अुद्योग बढ़ानेमें मदद दें। कपड़ेकी मिलें, शक्करके कारखाने, सीमेण्ट, दियासलाअी, चमड़ा कमानेका काम वगैरा बहुतसे अुद्योगोंके विकासके लिअे यहां सुविधा है। मकअी, कॉफी, शहद, मोम और तरह तरहके फलोंके बगीचे — ये सब कमाअीके अुत्तम क्षेत्र हैं। मुश्किल अेक ही है कि यहां कानूनका नहीं, परन्तु बादशाह और अुनके अधिकारियोंकी मर्जीका राज्य है। अिसलिअे हमारे लोग यहां पूंजी लगानेमें हिच-किचायें, तो अिसमें जरा भी आश्चर्य नहीं।

अैसे अिस देशके लिअे हमने पहली अगस्तको नैरोबी छोड़ा। नैरोबीसे अदीस-अबाबा, वहांसे दिरेदवा, जीबुटी, अदन, कराची और बम्बअी — अितने हवाअी जहाजके सफरका टिकट १९०० शिलिंगका था।

हमारा हवाअी जहाज ठीक आठ बजे अुड़ा। हमें ७१२ मील तुरन्त जाना था। हम ज्यों ही अुड़े कि थोड़े ही समयमें बादलोंमें फंस गये। अूपर, नीचे, आसपास — सर्वत्र क्षीरसागर! अिस स्थितिकी अद्भुतताके आदी हो जानेके बाद अुसमें बहुत मजा नहीं रहता। अिसलिअे जब हमारा वायुयान अिन बादलोंमें से अूपर निकला तब हमें संतोष-सा हुआ। बादमें तो हमारा विमान मानो अिन बादलोंकी गद्दी पर लोटता हुआ चला — परन्तु गद्दीके किनारेसे। सारे बादल

दाअीं तरफ फैले हुअे थे; बाअीं ओर केनियाकी अुपजाअू जमीन दिखाअी दे रही थी।

थोड़े समय बाद दाअीं ओर माअुण्ट केनियाका गर्वोन्नत शिखर अपने लम्बे-चौड़े आसन पर विराजमान दिखाअी दिया। अुस शिखरके पीछे अनेक बादल होनेसे सारा दृश्य बहुत ही अुठावदार दिखाअी देता था। जो पर्वत हम नेरीकी तरफसे जाकर देखनेवाले थे, वह अब हमने आखिर विमानमें बैठकर देख लिया। किलिमांजारोकी अूंचाअी १९,००० फुटसे ज्यादा है। केनियाकी १७,००० से कम नहीं। हवाअी जहाजसे जहां तक केनियाकी चोटियां दिखाअी दीं, वहां तक और कुछ देखनेको जी ही नहीं चाह सकता था। कअी छोटे बड़े शिखरोंके बीच अेकदम आकाशको छेदनेवाला केनियाका मुख्य शिखर अैसा लगता था, जैसे साधारण मनुष्योंके बीच किसी महात्माकी विभूति खड़ी हो। दुनियाके बड़े बड़े पहाड़ोंमें भी केनियाका पर्वत पुराण-पुरुष माना जायगा। वह अितना पुराना है कि अुसका सिर घिसते घिसते अुसकी अूंचाअी तीन हजार फूट तक कम हो गअी है। अुसके सिर पर ज्वालामुखीका जो द्रोण (मुंह) था, वह भी कभीका घिस गया और फिर भी आज वह १७,००० फुटकी अभ्रभेदी अूंचाअी दिखा सकता है। अैसे पहाड़का ही नाम आसपासके मुल्कको दिया गया हो तो अिसमें आश्चर्य क्या? गोरे लोग तो अिस पहाड़के चारों तरफ लिपट गये हैं।

अन्तमें महान केनिया भी पीछे रह गया और आखिरमें ओझल हो गया। अब केवल बादल ही रह गये। अुसके बाद सादी जमीन आअी। यह सब देखकर आंखें थक गअीं और हमसे पूछे बिना ही नींदमें डूब गअीं।

ताजा होकर आसपास देखा तो दारेस्सलामकी तरफका अेक गोरा वकील हिन्दुस्तानके बारेमें कोअी पुस्तक पढ़ रहा था। अुसके साथ बातें शुरू हुअीं। रोजगारके सिलसिलेमें अुसे कराची और अीरानकी खाड़ीकी ओर जाकर वापस आना था।

और कुछ न सूझनेके कारण मैंने हवाअी जहाजमें फिरसे नाश्ता किया। अितनेमें दाअीं ओर सुन्दर सुन्दर सरोवर अेकके बाद अेक

अस्तित्वमें आने लगे। कुल मिलाकर कोअी पांच सरोवर हमने पार किये होंगे। नकशेमें देखने पर अिनके नाम चामो, अवाया, औसा, शाला, लांगाना और जवाअी थे। अिन सरोवरोंके पीछे मेण्डेवो पहाड़की कतार दिखाअी दे रही थी। सरोवरोंके कारण अिथियोपियाकी भूमिके बारेमें मनमें विशेष आकर्षण पैदा हुआ। नकशेमें सरोवरोंके नाम ढूंढ़ते ढूंढ़ते पता नहीं चला कि हम अदीस-अबाबाके नजदीक पहुंच रहे हैं। परन्तु हवाअी जहाज जल्दी जल्दी अूंचा ही अूंचा चढ़ने लगा, तब विश्वास हुआ कि अब अदीस-अबाबा आना ही चाहिये। यह दुनियाके अूंचेसे अूंचे शहरोंमें से अेक है। समुद्रकी सतहसे नौ हजार फुटकी अूंचाअी पर बसे हुअे शहर संसारमें कितने होंगे? सचमुच अदीस-अबाबा अेन्टोटो पहाड़ पर खिला हुआ मनोहर और खुशबूदार नया फूल ही है। अदीस-अबाबाका वहांकी भाषामें अर्थ होता है — नया फूल। खुशबूदार अिसलिअे कि सारे शहरमें जहां तहां युकेलिप्टसके अूंचे अूंचे पेड़ हैं।

ठीक साढ़े बारह बजे हम अदीस-अबाबाके हवाअी अड्डे पर पहुंचे। हमारी सरकारकी तरफसे हालमें ही अेलचीके रूपमें नियुक्त हुअे सरदार संतसिंह, अुनकी प्रौढ़ा पत्नी और बहुतसे हिन्दुस्तानी हमें लेने आये थे। सरदार साहबने पूछा कि, 'मेरे मेहमानके तौर पर मेरे यहां रहेंगे या यहांकी सबसे बढ़िया होटलमें ठहरना है? तैयारी दोनोंकी की गअी है।' मैंने कहा, 'मैं तो आश्रमवासी हूं। कहीं भी अेक कोना मिल जाय तो आरामसे रह सकता हूं। और हम असुविधाजनक मेहमान साबित नहीं होंगे। शाकाहारी हैं।' अितनेसे विनोदके साथ हमने तय किया कि सरदार संतसिंहके यहीं रहना है। अुनकी पत्नी खुद अन्नाहारी ही थीं। अिसलिअे खुराकके बारेमें कोअी कठिनाअी नहीं थी। हमारे डेढ़ दिनके कयाममें तीन चार जगह खाना था, अिसलिअे होटलमें ठहरनेका कोअी अर्थ नहीं था। और होटलमें ठहरनेसे प्रतिष्ठाका बहिष्कार भुगतना पड़ता है। किसीके साथ खुलकर बातें करनेका समय ही नहीं मिलता।

मुझे सरदार संतसिंहके साथ अिथियोपियाकी ही नहीं, परन्तु हिन्दुस्तानकी स्वराज्यकी लड़ाअीके विषयमें भी बहुतसी बातें करनी थीं। वे दिल्लीकी बड़ी धारासभाके अेक सदस्य थे। आठ वर्ष तक सरकार-विरोधी दलके नेता थे। अंग्रेज कर्मचारियोंके साथकी नोंकझोंकमें दिखाअी हुअी अुनकी बुद्धिकी तीक्षणता मैं अखबारोंमें दिलचस्पीके साथ पढ़ता था। अिसलिअे वे सारे प्रसंग दुबारा याद करनेमें मुझे बड़ा रस आ सकता था।

अिथियोपियामें वे भारतके राजदूत मुकर्रर हुअे, अुससे पहले भारत सरकारकी तरफसे १९४८ में अिस देशमें जो सौहार्द मंडल ('गुडविल मिशन') भेजा गया था अुसके वे प्रमुख थे।

हमारे कार्यक्रममें खाना, बोलना, देखना और खानगीमें चर्चा करना अितना ही था। शामको अिंडियन अेसोसियेशनकी तरफसे म्युनिसिपल हॉलमें बड़ी सभा रखी गअी थी। जहां तहां अिथियोपियाके झण्डे दीवारों पर शोभा दे रहे थे। अिथियोपियन झण्डेके रंग और हिन्दुस्तानके झण्डेके रंग लगभग अेकसे ही हैं। सरदार साहब स्वयं ही अुस सभाके अध्यक्ष थे। मैं जान-बूझकर गुजरातीमें बोला, क्योंकि श्रोताओंमें करीबन् सभी स्त्री-पुरुष — हिन्दू और मुसलमान — गुजराती थे। दूसरे लोगोंके साथ खानगीमें अंग्रेजीमें बात करके काम चलाया जा सकता था। सरदार संतसिंह गुजराती ज्यादा नहीं समझते थे। परन्तु मेरे बाद श्री कमलनयन बजाजका भाषण हिन्दीमें हुआ। सरदार साहबको वह बहुत ही पसन्द आया। सभाके बाद अिंडियन अेसो-सियेशनकी तरफसे अिम्पीरियल होटलमें भोज था। कोअी बीस आदमी होंगे। शाकाहारी भोजन वहां अच्छा तैयार किया गया था।

अदीस-अबाबा पहुंचने पर मुझे विशेष आनन्द यह हुआ कि यहांकी भारतीय जातिके अेक कुशल सेवकके रूपमें जिन रतिलाल सेठका नाम मैंने कअियोंके मुंहसे सुना था, वे मेरे अेक पुराने युवक मित्र निकले। अेक बार मैं कराची गया था, तब करसनदास माणेक, फोटोग्राफर जीवराज महेता वगैरा मेरे किसी समयके विद्यार्थियोंके संग युवक रतिलाल सेठ भी हमारी मनोराकी सैर पर आये थे।

अितने पुराने सम्बन्धके वाद दिल खोलकर वातें करनेमें मुश्किल क्या हो? अुनसे वहांकी सब परिस्थितिके वारेमें बहुतसी वातें अधिकृत रूपमें जान लीं।

अैसे ही आनन्दका अेक और विषय यह था कि सरदार साहबके मंत्री श्री गुणवंतसिंह मलिक भी चि० सरोजिनीके बालमित्र निकले। ये लोग भी बचपनमें सिन्धमें ही अेक-दूसरेसे मिले थे। मनुष्यका स्वभाव अैसा विचित्र है कि नये अनुभव प्राप्त करनेकी अुसे जितनी अुत्सुकता होती है, अुतनी ही पुराने संस्मरण ताजा करनेकी होती है। नव-कुसुम-पुरमें हम दोनोंको दोनों प्रकारका आनन्द पूरी तरह मिला।

हिमालयकी निवृत्ति छोड़नेके वाद मेरी तमाम यात्रायें हमेशा जल्दीमें ही हुअी हैं। कहीं भी जाना हो तो पहलेसे अुस स्थानके वारेमें जो पढ़ा हो अुतना ही ज्ञान होता है। अुस प्रदेशमें बैठकर अुसके वारेमें फुरसतसे पढ़नेका वक्त ही नहीं मिलता। अदीस-अवावा या अिथियोपिया जानेका विचार ही नहीं था, अिसलिअे अुसके वारेमें कुछ भी नहीं पढ़ा था। सरकारी दृष्टिसे लिखी गअीं परन्तु बहुत अच्छी दो-अेक पुस्तकें सरदार संतसिंहने मुझे दीं। परन्तु अुन्हें पढ़ूं कब? समयाभावकी खीजमें सुबह तीन बजे अुठा और जितना पढ़ सकता था अुतना पढ़ लिया। हमारे ॠषि-मुनियोंने अेक समझदारीका नियम बनाया है कि प्रातः ब्राह्ममुहूर्तमें अुठकर वेदब्रह्मका अध्ययन करनेके बाद थकनेके कारण वापस सो नहीं जाना चाहिये। 'न निशान्ते परिश्रान्तो ब्रह्माधीत्य पुनः स्वपेत्'। कारण स्पष्ट है। सुबहके अध्ययनके बाद सो गये तो पढ़ी हुअी चीजें भी सो जाती हैं। मैं यह नियम जानता था, अिसलिअे फिर सोनेका विचार छोड़कर प्रार्थना वगैरासे निपटकर हम यहांका गुजराती स्कूल देखने गये। प्रधान अध्यापक रोग-शय्या पर थे। अुनकी पत्नीने पाठशाला दिखाअी। मेरे खयालसे हमारी पाठशालाओंमें सिर्फ अच्छे शिक्षक रखनेसे काम नहीं बनता। बच्चोंके लिअे घरका वातावरण सुधरे और घर पर अच्छे संस्कार जड़ पकड़ें, तो ही पाठशाला पर की गअी मेहनत सफल होती है। आगेसे पाठशालाओंमें कक्षाओंके शिक्षकोंके सिवा अेक अधिक शिक्षक रखनेका नियम होना

चाहिये। अुसका काम बच्चोंके मां-बापसे मिलकर अुन्हें अधिक खर्चमें डाले बिना घरका वातावरण बदलनेमें मदद देना हो।

यहांसे दो मोटरोंमें घूमने निकले। अदीस-अबाबासे अदीस-आलम —पुरानी राजधानीके रास्ते दूर तक खुले प्रदेशमें हम सैर कर आये। रास्तेकी हरियाली, आसपासके पहाड़, अुनमें बाअीं ओरके अेक पहाड़का सुडौल आकार — सभी कुछ आकर्षक था। सरदार संतसिंहकी मोटर-का तिरंगा झंडा अिथियोपियन झंडे जैसा ही दूरसे लगता था, अिसलिअे रास्ते पर भोले लोग नीचे झुककर अुस झण्डेको सलाम करते थे। अुस सलामकी तहमें सरकारी हुकूमतका डर नहीं, परन्तु अपने राज्य और राजपुरुषोंके प्रति भक्ति स्पष्ट दिखाअी देती थी।

रास्तेमें भी सरदार साहबके साथ ज्यादातर हिन्दुस्तानके बारेमें ही बातें हुअीं। अितना सुन्दर और अितना विस्तृत रमणीय प्रदेश अितनी अूंचाअी पर है, अिससे मनमें अीर्ष्या तो होती ही थी। यहांके लोग सोच लें तो यहांकी जमीन और यहांकी आबोहवाकी अिस सुविधासे आला दर्जेकी समृद्धि जुटा सकते हैं।

दोपहरको सरदार साहबकी तरफसे रास होटलमें भोज था। अिसमें अिथियोपियन सरकारके खास खास मंत्री थे। बादशाह हाअिले सेलासी बाहर गये हुअे थे, अिसलिअे अुनसे मिलना न हो सका। अुनके प्राअिवेट सेक्रेटरी आये थे। अर्थमंत्री और व्यापार-अुद्योगके मंत्रीके साथ थोड़ीसी बातें हुअीं। अिस देशमें शहद और मोम भी आयके अच्छे साधन हैं, यह मैंने सुबह ही पढ़ा था। अिसलिअे मैंने अिसकी भी यहां बातें कीं। हिन्दुस्तान और अुसके स्वराज्यके बारेमें अुन लोगोंका बातें करना और अनेक प्रश्न पूछना स्वाभाविक था। दो मंत्री अपनी अपनी पत्नियोंके साथ आये थे। अंग्रेजी भाषा और रीति-रिवाजसे वे परिचित थे, अिसलिअे अुनके साथ बातें करनेमें मुश्किल नहीं हुअी। अुनमें बहन अेलिजाबेथ अितनी ममतावाली थीं कि अुन्होंने हमें अदीस-अबाबाके बड़े बड़े प्रसिद्ध अीसाअी गिरजे दिखानेका जिम्मा लिया। शहरके भीतर अेक बड़ा गिरजा हमने बाहरसे ही देखा। दूसरा अन्दरसे देखा। अुसके पूजा और अुपदेशके स्थान और बैठनेकी

सुविधायें विलकुल दूसरे ही ढंगकी होनेके कारण मुझे वहुत आकर्षक लगीं। यह भी विचार आया कि अैसी रचना हमारे यहां क्यों न जारी करें ?

अदीस-अवावाके पासकी अेक अूंची पहाड़ी पर अेक पुराना औसाअी गिरजा और अुसके साथ अेक मठ है। हमारे जंगलोंमें स्थित किसी मंगल-मंदिर जैसा यहांका वातावरण था। अूपरसे आसपासका अिलाका दूर दूर तक दिखाअी देनेके कारण मंदिरकी अूंचाअी भव्य लगती थी। हमने अंदर जाकर प्रदक्षिणा की। दीवार परके चित्र — औसा मसीहके और साथ ही अुनके अनेक शिष्यों और संतोंके चित्र — विलकुल हिन्दू ढंगके थे। मंदिरके अुत्सव, पूजाविधि वगैरा वहुत कुछ हमारी ही पद्धतिके हैं, अिसलिअे अिस देशके कॉप्टिक चर्चका अितिहास जान लेनेका कुतूहल वढ़ गया।

औसाअी लोगोंकी आधुनिक संस्कृतिका श्रेय ज्यादातर विज्ञान और विशाल संगठनको है। अुसकी जड़में औसाअी धर्मकी अपेक्षा यूनानी लोगोंका तत्त्वज्ञान और रोमन लोगोंकी साम्राज्यप्रियता ही है। असली औसाअी धर्म अेशियाअी वृत्तिका है। अुसके भी कितने ही नये नये संस्करण हो चुके हैं। पीटर, मेथ्यु, जॉन वगैरा शिष्योंको ताकमें रखकर सेण्ट पॉलने औसाअी धर्मको नया ही रूप दे दिया। अिसके वाद अुसके अनेक संस्करण होते गये। मैं तो मानता हूं कि औसाअी धर्मका असली स्वरूप अच्छी तरह समझकर अुसमें वेदान्त और अभेद भक्तिकी बुनियाद डालनेका काम किसी दिन हिन्दुस्तानके औसाअी ही करेंगे। वंगालके ब्रह्मबांधव अुपाध्यायने अैसा थोड़ासा प्रयत्न किया था। यहांके मठमें रहनेवाला अेक औसाअी साधु वहां आया। अुसके कपड़े, अुसकी दाढ़ी, वातें करनेका तरीका, सब कुछ हमारे यहांके देहाती साधु जैसा ही था। आसपासके लोगोंके मनमें अिस साधुके प्रति वड़ा आदर था। साधुके व्यवहारमें अुस आदरकी जरा भी कद्र दिखाअी नहीं देती थी !

रातका भोजन घर पर ही था, अिसलिअे मैं तो जल्दी खाकर सो ही गया। कमलनयनने अफ्रीकाके वन्य-जीवन सम्वन्धी अपनी लाअी

हुअी फिल्में दिखाअीं और अिथियोपियामें रहनेवाले हमारे लोगोंको आनन्द दिया।

अितनी दूर विदेशमें रहनेवाले हमारे भारतीय लोगोंको जब पता चलता है कि स्वदेशसे कोअी आया है, तब वे अुससे मिलनेके लिअे बहुत ही आतुर होते हैं और निमंत्रण भेजनेकी धांधली मचा देते हैं। अदीस-अबाबामें ही दिरेदवाके भारतीयोंके पत्र आ गये थे। हमारा कार्यक्रम पहलेसे ही निश्चित हो चुकनेके कारण दिरेदवामें अेक दिन बिताना भी असंभव था। हमने अुनसे अितना ही कहा कि हवाअी अड्डे पर जो दस-पांच मिनट मिल सकेंगे, अुन्हींमें स्वदेशके भाअियोंसे मिलनेका आनन्द प्राप्त कर लेंगे।

दूसरी अगस्तको हमने अदीस-अबाबा छोड़ा। परन्तु अुस राजधानीकी नियत हमें आसानीसे जाने देनेकी नहीं थी। सवेरे जल्दी अुठकर नाश्ता वगैरा करके चले। सरदार साहबकी तबीयत अच्छी नहीं थी। अुन्हें हवाअी अड्डे तक न आनेके लिअे मैंने बहुतेरा कहा, परन्तु वे क्यों मानने लगे? अड्डे पर सबके साथ आनन्दसे बातें कीं। भाअी रतिलाल सेठने यहांकी यादगारके रूपमें अेक छड़ी मुझे दी। यहांके खुशबूदार युकेलिप्टसकी ही यह पतली छड़ी थी और अुसकी हाथीदांतकी मूठ थी। बिलकुल सादी छड़ी थी, परन्तु सुन्दर थी और प्रेमकी सुगन्ध धारण किये हुअे थी।

हमारा हवाअी जहाज रवाना हुआ। वह कोअी मुसाफिरोंके लिअे आरामकी बैठकोंवाला जहाज नहीं था। भारवाही भी नहीं कहा जा सकता। अेक तरफ थैले और तरह तरहका माल बड़े बड़े रस्सोंसे बांध रखा था और सामनेकी ओर टीनकी बेंच पर हम चौदह यात्री बैठे थे। मेलगाड़ीमें बैठनेके आदी लोगोंको मालगाड़ीके डिब्बेमें कोअी बन्द कर दे, तब अुनके चेहरे जैसे दिखाअी देते हैं वैसे ही हमारे हो गये थे! हम रवाना हुअे और हमारे मेजबान अपने अपने घर गये। हमारा जहाज कोअी २५ मिनट चलकर नीचे अुतरा। रास्तेमें खूब ही बादल होनेके कारण अितना ही दिखाअी दे सकता था कि किस बादल पर सूर्य-प्रकाश अधिक है। सूर्य-प्रकाशकी दिशा बदली तब मुझे

जरा अटपटासा तो लगा, परन्तु मेरा ध्यान अुस तरफ नहीं था। दिरेदवा अितना जल्दी आ नहीं सकता था। मैं चिन्तामें पड़ गया कि बीचमें कोअी छोटासा स्टेशन है या क्या? विमान ठहर गया और सीढ़ियोंसे अुतर कर बाहर देखता हूं तो सामने अदीस-अबाबा! जाग रहे हैं या स्वप्नमें हैं? यह हुआ क्या! . . .

अितनेमें विमानवालोंने कहा कि, "हम कोअी पचास मील गये होंगे कि अितनेमें हमारा अिंजन जरा आवाज करने लगा। हमें विश्वास नहीं रहा कि यह जहाज दिरेदवा तक सही-सलामत जायगा। अदन तक पहुंचनेकी तो हिम्मत ही कैसे की जा सकती थी? अिसलिअे आगे सौ मील जानेके बजाय वापस पचास मील जानेमें ही समझदारी है, अैसा निश्चय करके हम गोल चक्कर काटकर वापस लौटे। आप मुसाफिरोंको जोखिममें कैसे डाला जा सकता है?" पच्चीस मिनटकी सैर करके हम जहां थे वहीं आ पहुंचे! कंपनी दूसरा हवाअी जहाज लाअी और अुसमें सारा माल बदलकर रख दिया और हम दूसरी बार रवाना हुअे।

यह जहाज भी कैसा निकला? आप कहें अुतना जमीन पर दौड़नेको वह तैयार था। अड्डेके मैदानमें अुसने दो चक्कर लगाये, परन्तु अुड़नेका नाम ही न लेता था! चालकोंने अुसकी बहुत खुशामद की, परन्तु वह माना ही नहीं। हम फिर नीचे अुतरे। कंपनीवालोंने हमसे कहा कि, 'अब आप जरा आरामसे नाश्ता कीजिये। अिसके दाम कंपनी देगी।' गोदाममें शेष अब अेक ही विमान था। अुसे अच्छी तरह जांच कर यह भरोसा किया कि वह अच्छा है। फिर अुसे ले आये। मालका ढेर अुसमें रखा और फिर हम भी तीसरी बार सवार हुअे। विश्वास नहीं था कि यह जहाज रवाना होगा। परन्तु ठीक साढ़े नौ बजे जहाज रवाना हुआ और कोअी आनाकानी किये बिना डेढ़ घण्टेके भीतर दिरेदवा पहुंच गया।

वहांके लोगोंने अड्डे परका अेक हॉल गलीचों, झंडों वगैरासे खूब सजाया था। अड्डा गांवसे काफी दूर था। वहांसे सब चीजें लाना आसान नहीं था। दिरेदवाके सभी हिन्दुस्तानी अिकट्ठे हुअे थे। और दो घण्टेसे बैठे हमारी राह देख रहे थे। अीश्वरने खाने और बोलनेके

लिअे हमें अेक ही अिन्द्रिय दी है। अिसकी असुविधा यहां स्पष्ट दीख रही थी। लोगोंका बड़ा आग्रह था कि हम कुछ खायें। और अिसके लिअे भी वे अुत्सुक थे कि हम दो शब्द बोलें। अच्छा हुआ कि मुख्य मेहमान हम दो थे। सरोजिनीके पास खाने या बोलने अेकका भी अुत्साह नहीं था! हमने श्रम-विभाग किया। कमलनयनने नगर-निवासियोंका आतिथ्य स्वीकार किया और मैंने अुनके कान भर दिये।

दिरेदवासे अेकाध घंटे आगे अुड़े और जीबुटी पहुंचे। अिसे अफ्रीकाका सिरा कह सकते हैं। विमानसे अुतरकर अेक मोटरमें बैठकर सभाके लिअे अेकाध फर्लांग गये। वहांके लोगोंके सामने मैंने कोअी दस मिनट गुजराती भाषण दिया। लोगोंने कहा कि, "यहांके मुसलमान हमारे साथ शरीक नहीं होते। पाकिस्तानी मनोवृत्ति रखते हैं।" मैंने अुन्हें समझाया कि हमारी वृत्ति कैसी होनी चाहिये। मैंने देखा कि कहींके भी हों, गुजराती लोग गांधीजीकी दृष्टिको आसानीसे समझ लेते हैं और यथाशक्ति अुस पर अमल भी करते हैं।

जीबुटीसे रवाना हुअे और मेरी अुत्कंठा बहुत ही तीव्र हो गअी। क्योंकि अदनकी खाड़ी पार करने पर हम अैसी जगह पहुंचे, जहांसे अेक ओर अफ्रीका महाद्वीपकी भूमि दिखाअी देती थी और दूसरी तरफ अेशियाकी। और नीचे छोटे छोटे द्वीपोंसे सजा हुआ हरा पानी! हवाअी जहाजका आविष्कार न हुआ होता, तो अैसा विराट-भव्य काव्य मुझे आंखों देखनेको कहांसे मिलता? मैंने मनमें प्रार्थना शुरू की कि भगवान! दो महाद्वीपोंका अिकट्ठा दर्शन करने जितनी अूंचाअी पर मैं पहुंचा हूं। दोनों महाद्वीपोंकी पक्षपात-रहित सेवा करनेकी वृत्ति और शक्ति मुझे दीजिये।

समुद्रकी शोभा देखते देखते हम आगे चले। अफ्रीकाने — अढ़ाअी महीनेंसे परिचित अफ्रीकाने — हमसे विदा ली और हम अेशियाके मेहमान बने।

हमारे खयालसे दो महाद्वीपोंका अर्थ है दो अलग दुनिया। परन्तु दो महाद्वीप जहां पास आते हैं, वहां रहनेवाले लोगोंको वे दो नाम सुनकर बहुत बड़ा अन्तर या फर्क जैसा नहीं लगता। जीबुटीके

लोग और अदनके लोग अितने नजदीक हैं, अुनका जीवन अितना अधिक ओतप्रोत है कि यहांसे वहां और वहांसे यहां आनेमें अुन्हें अैसा लगता ही नहीं कि हमने कोअी भारी देशान्तर या खंडान्तर किया है। और अगर मनुष्यका जीवन राजनीतिक संगठनसे विभक्त न हुआ होता, तो आज जो थोड़ासा अन्तराय है, कचहरियोंका, शिक्षण-संस्थाओंका और कानूनका, वह भी न रहता। यह विचार आया और मेरा मन भी, जो महाद्वीपोंका अन्तर हो जानेकी कल्पनासे अूंचा अुड़ा था, मानवताकी विशाल भूमि पर नीचे अुतर गया। अदनके सिर पर आने पर नीचे नमक पकानेके 'आगर' दिखाअी देने लगे। अदनके वनस्पतिहीन पहाड़, अुनके बीचका बड़ा ज्वालामुख और अदनको अरबस्तानके साथ जोड़ देनेवाली रेतीली संयोगभूमि — ये सब देखते देखते अढ़ाअी बजे हम अरबस्तानकी जमीनका स्पर्श कर सके।

और देखते ही देखते यहांके भारतवासियोंने हमें घेर लिया।

३९

पैगम्बर साहबके देशमें

अदनकी भूमि पर पैर रखनेसे पहले मनमें दो-चार विचार आये। सबसे पहला यह कि हमारा कितना भाग्य है कि जिस भूमि पर मुहम्मद पैगम्बरने दीन और ओमानका प्रचार किया अुस पर हम पैर रख रहे हैं। दूसरा खयाल यह आया कि अदनकी भूमि अरबस्तानके प्रदेशके साथ पहलेसे जुड़ी हुअी थी या दोनों ओरके समुद्रकी लहरोंने रेत फेंकनेका खेल खेलते खेलते यह संयोगभूमि तैयार कर दी? अदनके ज्वालामुख देखकर अैसा ही लगता है कि असलमें यह द्वीप अफ्रीकाका ही भाग होगा। अफ्रीकाकी भूमिमें प्राग्-अैतिहासिक कालमें जो दो दरारें पड़ीं, अुन्हींका अेक सिरा लालसमुद्र होकर जॉर्डन नदी तक पहुंचा होगा। और तीसरा विचार यह आया कि राजनीतिक

दृष्टिसे अदनकी भूमि किसी समय (मेरे बचपनके दिनोंमें) हमारे बम्बअी अिलाकेका ही अेक भाग था। अुन दिनों मैं कह सकता था कि मैं अपने ही प्रान्तकी भूमि पर पैर रख रहा हूं। अमरीका और युरोपका सफर पूरा करके स्वामी विवेकानन्द जब स्वदेश लौट रहे थे, तब अदनमें आते ही स्वदेशकी भाषा हिन्दुस्तानीमें बात करनेका अवसर प्राप्त करनेके लिअे अेक पानवालेकी दुकानके आगे बैठ गये थे और पान खाते खाते अुन्होंने अपने युरोपियन शिष्योंसे कहा था कि अितने दिनोंके बाद स्वदेशके आदमीसे बातें करनेमें अनोखा आनन्द आ रहा है।

विमानसे बाहर निकलते ही श्री सबनीस, जोशी, भट वगैरा स्वकीय लोग मिले। भारत सरकारकी तरफसे यहां रहनेवाले हमारे कमिश्नर श्री थडानी, अुनकी पत्नी सावित्री और लड़की शीला, सब मिले। विमानमें से सामानका कब्जा लेना, चुंगीवालोंकी जांचसे गुजरना वगैरा सब झंझटोंसे हम बिलकुल बच गये। मित्रोंने यह सारा काम अपने जिम्मे ले लिया।

यहांके अिंडियन अेसोसियेशनके प्रेसिडेंट श्री दीनशा अदनवाला यहांके पुराने निवासी हैं। चि० सरोज १८ वर्ष पहले जब पिताके साथ युरोप गअी थी, तब अिन्हीं भाअीके पिताने अुनका स्वागत किया था। अिसलिअे अिस खानदानने मानो सरोज पर अधिकार ही कर लिया।

अरब सागर यहांसे शुरू होनेके कारण अैसा लग रहा था, मानो अुसे अपने सारे रंग यहां खिलाकर बतानेका खास शौक हो। नअी अथवा प्रतिष्ठित बस्ती समुद्रके किनारे पर फैली हुअी है। हां, पुरानी साधारण लोगोंकी 'नेटिव' बस्ती ज्वालामुखके भीतर तंग मकानोंमें बसी हुअी है। यह सारा भाग यहां क्रेटरके नामसे ही मशहूर है। हमें अपना डेरा यहांके समुद्र-तटके सबसे बढ़िया 'क्रेसेंट' होटलमें रखना पड़ा। अितने अधिक आतिथ्यशील स्वदेशी लोगोंके होते हुअे भी सिर्फ प्रतिष्ठाके खयालसे हमें होटलमें धकेल दिया गया। यह हमें अच्छा तो नहीं लगा, परन्तु हमारे कमिश्नर अुसी होटलमें

रहते हैं, अिसलिअे अुनकी सूचनाके आगे झुकना शहरियोंके लिअे अनिवार्य था।

अदनमें हमें छब्बीस ही घण्टे बिताने थे। नहाकर तैयार होते होते थडानीके यहां चायकी व्यवस्था हो गअी। चुनिंदा अरब और भारतीय — हिन्दू, मुसलमान, पारसी और अीसाअी नेता अिकट्ठे हुअे थे।

सार्वजनिक सभाके लिअे हम तैयार होंगे या नहीं, अिस विषयमें सन्देह होने पर भी यहांके लोगोंने सभाकी घोषणा कर ही दी थी।

ज्वालामुखके अेक कोनेमें अिगलाज देवीका मंदिर है। अुस मंदिरके सामने बड़ी सभा हुअी। लोगोंकी संख्या देखकर मैं तो दंग ही रह गया। अधिकांश गुजराती भाअी-बहन ही थे। थोड़ेसे अरब और दूसरे लोग थे। मैंने गुजराती और अंग्रेजी, अिस प्रकार दो टुकड़े करके भाषण दिया। और हिन्दीमें बोलनेकी जिम्मेदारी कमलनयन पर छोड़ दी।

मैंने कहा : "अदन तो अित्तिफाकसे, अनायास ही आना हो गया है, परन्तु पैगम्बरकी भूमि पर पैर रखते हुअे धन्यता महसूस करता हूं। आजकल देश-देशके बीच अविश्वास बढ़ गया है। और लोग स्व-पर-भाव प्रयत्नपूर्वक पैदा करते हैं। हिन्दुस्तानका स्वभाव अिससे भिन्न है। हमने अरबस्तानसे आये हुअे अिस्लामका स्वागत किया। हिन्दुस्तानमें जिस अिस्लामका विकास हुआ है, वह दूसरे धर्मोंके साथ दोस्तीकी भावना रखता है। हमारे स्वराज्यकी लड़ाअी जब पूरे जोरसे चल रही थी, तब अरबस्तानसे आये हुअे अेक विद्वान मुसलमानको हमने अपनी कांग्रेसके अध्यक्षके आसन पर बिठाया था। आज हमारे देशका शिक्षा-विभाग हमने अुनके हाथोंमें सौंप रखा है। हम चाहते हैं कि अरबस्तानके साथ हमारी हमेशा दोस्ती रहे और बढ़ती जांय। यहां रहनेवाले भारतीयोंको महात्माजीका सन्देश है कि आप यहांके लोगोंके साथ अिस तरह घुलमिल जाअिये जिस तरह दूधमें शक्कर।"

सभाके बाद रातको हमने सबनीसके यहां भोजन किया। अुनके यहां खूब बातें हुअीं। भूगोलकी शौकीन मेरी आंख दीवार परके अेक

नकशे पर पड़ी। वह नकशा अरब-सागरका था। अेक सिरे पर अफ्रीकाका सींग और दूसरे सिरे पर हिन्दुस्तान। अूपरकी ओर विशाल अरवस्तान और वीचमें सारा पश्चिम महासागर। अैसा सुन्दर नकशा देखकर मेरी नीयत विगड़ी। आज वह नकशा मेरे कमरेमें दीवार पर रहकर अदनमें विताये हुअे अेक दिनकी आनन्ददायी घड़ियोंकी याद दिला रहा है।

क्रेसेण्ट होटलमें हमने सिर्फ अेक ही रात बिताअी और दो बार नहाये। खाना तो मित्रोंके यहीं था। फिर भी रहनेके लिअे २५ रुपये देने पड़े। सुवह श्री जोशीके यहां नाश्ता किया। अुनका घर मानो समुद्रके विलकुल किनारे पर लटक रहा था। महाराष्ट्रियोंके साथ खानेमें वानगियोंकी विविधता तो होती ही है, परन्तु देखते देखते लोग अेक-दूसरेके साथ घुलमिल कर हंसी-मजाक तक पहुंच जाते हैं!

सुवहका सारा वक्त अदनके भ्रमणका होनेके कारण हमने अुसकी पूर्व-तैयारी की और निकले। मुख्य वस्ती क्रेटरके द्रोणमें ही है। यह नीचेवाला क्रेटर है। अुसके आसपास जो पहाड़ी दीवार है, अुसके अूपर अेक और क्रेटर है। क्रेटरसे वाहर निकलनेके लिअे अेक घाटी और दो वोगदे (टनेल) हैं। पहाड़की ओर पुराने जमानेके राजाओंने वड़े वड़े तालाव बनाये हैं। अिसलिअे अिन तालावोंका महत्त्व है। यहांसे दस वारह मील दूर शेख अुस्मान नामक अेक स्थान है। वहां मौजूदा सरकारने जो पाताल-कुअें — 'टच्यूब वेल' — खोदे हैं वे भी हम देख आये। अिस तरफ अेक सादा मामूली वाग है। यहांके अूजड़ प्रदेशमें अैसे वागकी भी प्रतिष्ठा और कद्र कम नहीं है।

क्रेटरमें हम देशी लोगोंकी पुराने ढंगकी वस्ती देख रहे थे, तव वीच वीचमें कुछ घर विलकुल जले हुअे और लूटे हुअे मालूम होते थे। मुझे आश्चर्य हुआ। जांच करने पर पता लगा कि कुछ ही समय पहले यहांके अरव लोगोंने यहूदी लोगों पर क्रोध करके अुन्हें यहांसे निकाल दिया। अुनके घर जला दिये। अुसी अत्याचारका यह अवशेष है। अव अदनमें यहूदी नहीं रहे। दो-चार वचेखुचे होंगे तो वे डरके मारे जान हथेली पर रखकर रहते हैं।

हिन्दुस्तान-पाकिस्तानकी तनातनीका भयानक अनुभव होनेके कारण यह दृश्य मुझे आश्चर्यकारक नहीं लगा। दुःख बहुत हुआ। मुसाफिर देखें सब कुछ, परन्तु अुसके बारेमें जहां तक हो सके बोलें नहीं, अिस सूत्रका पालन करनेमें ही श्रेय था।

हमारा दोपहरका भोजन कुछ मित्रोंने रखा था और वह भी पारसियोंकी अेक अगियारीके हॉलमें। मैंने सोचा नहीं था कि अितने ज्यादा लोग जमा होंगे। चौबीस घण्टोंके भीतर हम कितना अधिक देख सके, कितने संस्कार जुटा सके! अदनके जीवनके लगभग सभी पहलुओंके साथ हमारा परिचय हुआ।

अब हम चार बजे हिन्दुस्तान जानेके लिअे रवाना हुअे। हवाअी अड्डे पर बहुत लोग आये थे। वहां स्थानीय अरब लोगोंकी तरफसे अेक संदेश मिला कि, "कलके आपके सार्वजनिक व्याख्यानका हमें पता नहीं था। जो थोड़ेसे अरब लोग अुपस्थित हो सके थे, अुनकी जबानी आपके व्याख्यानका सार सुना। हमें वह खूब पसन्द आया। हम आपका अेक व्याख्यान रखना चाहते हैं। आजके दिन ठहर जायं तो अच्छा।"

रहना असंभव था। "हिन्दुस्तानके बनिये हमें लूटते हैं। ब्रिटिश सरकारको चाहिये कि अुनसे वह हमारी रक्षा करे।" अिस किस्मका आन्दोलन कुछ अरबोंकी तरफसे हो रहा है। अैसे समय अरब लोगोंका यह निमंत्रण! रह सकता तो यहांके अरबोंके साथ जरूर परिचय पैदा करता। मैंने अितना ही कहा कि, "मिस्र देखने जानेका संकल्प है। अुस समय अदन अेक दिन ठहरूंगा और आपसे खास तौर पर मिलूंगा।"

हमने चार बजे जमीन छोड़ी। जब तक प्रकाश था हमारा हवाअी जहाज अरबस्तानके दक्षिणी भागके अूपरसे जा रहा था। नीचेके भागमें विरान पहाड़ियां ही थीं। न कोअी पेड़ था, न घास या मिट्टी। पत्थर और रेतके सिवा कुछ भी नहीं दीखता था। कभी कभी अेकाध घाटीमें पानीकी लकीर दिखाअी देती थी। अुसके

किनारे थोड़ीसी झोपड़ियां और हरीभरी पहाड़ियोंकी कतार वहुत ही सुन्दर लगती थी। धूपकी छाया जैसे जैसे लम्बाती गअी, वैसे वैसे वह कतार और भी अुठावदार दीखने लगी।

हम पश्चिमसे पूर्वकी ओर जा रहे थे, अिसलिअे हमें अपनी घड़ियां अेकदम अढ़ाअी घण्टे आगे करनी पड़ीं। अिंग्लैंडमें अेक वार पंचांग सुधारनेके लिअे वहांकी सरकारने अेक महीनेमें ग्यारह दिनकी छलांग मारी (२ तारीखके वाद अेकदम १३ तारीख कर दी) थी, तव अपढ़ लोगोंने झगड़ा मचाया था और 'हमें अपने ग्यारह दिन लौटा दो' के नारे लगाये थे। मुझे अपनी घड़ी आगे करते समय अिस घटनाकी याद आ गअी, परन्तु वह सूर्यास्तके वादके अंधेरेमें डूव गअी।

हमारा हवाअी जहाज टाटा कंपनीके अेयर अिन्डिया कांस्टेलेशन-वाला था, अर्थात् दुनियाके सर्वोत्तम अमीरी हवाअी जहाजोंमें से अेक था। यात्रियोंकी भीड़ न थी। सूर्यास्तके वाद अच्छा भोजन किया। टाटा कंपनीके नैरोवीके अेजेन्टकी सिफारिशसे कांस्टेलेशनमें मेरे सोनेकी सुविधा वहुत अच्छी कर दी गअी थी। जमीन और पानीसे हजारों फुटकी अूंचाअी पर किसी फरिश्ते या गंधर्वकी तरह आकाशमें सो जानेका अनुभव अनोखा ही था।

रातको डेढ़ वजे कराची पहुंचे। अव वह हमारा पुराना कराची नहीं रह गया था, जो कराची कांग्रेसके दिनोंमें हमने देखा था। आज वह पाकिस्तानकी राजधानी था। कोअी डेढ़ घंटा वहां विताकर हम फिर चल दिये और ५ अगस्त १९५० को सवेरे ठीक ५-२० वजे स्वराज्यनगरी वम्वअीमें आ पहुंचे। तीन महीनेमें तीन दिन कम — अितना समय स्वदेशसे दूर रहे। परन्तु अितनेसे समयमें अितने अधिक अनुभव और संस्मरण अिकट्ठे हो गये थे मानो वरसों वीत गये हों!

वम्वअी पहुंचने पर वड़ा आनन्द हुआ। मेरे साथ हाथीदांतकी अफ्रीकी कारीगिरीकी तीनेक चीजें थीं, जिन पर मुझे पचहत्तर फीसदी जकात देनी पड़ी। चूंकि मैं जानता था कि यह रुपया स्वराज्य

सरकारके ही खजानेमें जा रहा है, अिसलिअे पचहत्तर रुपया देनेमें मुझे जरा भी बुरा न लगा।

जिन्दगीमें पहली बार विदेश जाकर आया था। पूर्व अफ्रीकामें स्वतंत्र भारतके स्वतंत्र नागरिककी हैसियतसे भ्रमण कर सका था। वहांके हिन्दुस्तानियोंका आतिथ्य चख सका था। और खास तौर पर अफ्रीकानिवासी अफ्रीकी लोगोंके कुछ नेताओंका विश्वास सम्पादन कर सका था। ये सभी धन्यताके विषय थे। हिन्दुस्तान और अफ्रीकाके बीच स्नेह-सम्बन्ध बढ़ानेकी जिम्मेदारी सिर पर लेकर स्वदेशको आया हूं, अिसलिअे हिन्दुस्तानकी आजादीकी गहराअी भी अधिक अनुभव करने लगा हूं।

हमारे कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

आरोग्यकी कुंजी	०.४४
खादी	२.००
गांवोंकी मददमें	०.४०
नअी तालीमकी ओर	१.००
बापूकी कलमसे	२.५०
बापूके पत्र — १ : आश्रमकी बहनोंको	१.२५
बापूके पत्र — २ : सरदार वल्लभभाअीके नाम	३.००
बापूके पत्र — ३ : कुसुमबहन देसाअीके नाम	१.२५
बापूके पत्र मीराके नाम	३.००
बुनियादी शिक्षा	१.५०
मंगल-प्रभात	०.३७
मेरे सपनोंका भारत	२.५०
यरवडाके अनुभव	१.००
रचनात्मक कार्यक्रम	०.३७
विद्यार्थियोंसे	२.००
शिक्षाकी समस्या	२.५०
सच्ची शिक्षा	२.००
सत्यके प्रयोग अथवा आत्मकथा	१.५०
सत्य ही अीश्वर है	०.८०
सर्वोदय (रस्किनके 'अन्टु दिस लास्ट' के आधार पर)	०.३५
स्त्रियां और अुनकी समस्याअें	१.००
हिन्द स्वराज्य	०.७०
सरदार पटेलके भाषण	५.००
विचार-दर्शन — १	१.५०
विवेक और साधना	४.००
सरदार वल्लभभाअी — भाग १	६.००
सरदार वल्लभभाअी — भाग २	५.००
महादेवभाअीकी डायरी — भाग १	५.००
महादेवभाअीकी डायरी — भाग २	५.००

महादेवभाओीकी डायरी — भाग ३	६.००
जीवन-लीला	३.००
धर्मोदय	१.२५
बापूकी झांकियां	१.००
सूर्योदयका देश	२.५०
हिमालयकी यात्रा	२.००
गांधी और साम्यवाद	१.२५
गीता-मंथन	३.००
जीवन-शोधन	३.००
तालीमकी बुनियादें	२.००
शिक्षाका विकास	१.२५
शिक्षामें विवेक	१.५०
संसार और धर्म	२.५०
स्त्री-पुरुष-मर्यादा	१.७५
अेकला चलो रे	२.००
बा और बापूकी शीतल छायामें	२.५०
बिहारकी कौमी आगमें	३.००
ग्रामसेवाके दस कार्यक्रम	१.२५
आत्म-रचना अथवा आश्रमी शिक्षा — भाग १	१.५०
,, ,, ,, — भाग २	१.५०
,, ,, ,, — भाग ३	१.५०
अैसे थे बापू	१.७५
गांधीजी और गुरुदेव	०.८०
गांधीजीकी साधना	३.००
ठक्करबापा	३.००
बापूकी छायामें	४.००
राजा राममोहनरायसे गांधीजी	२.००
हमारी बा	२.००

नवजीवन ट्रस्ट,
अहमदाबाद–१४